

टोबा टेकसिंह

सआदत हसन मण्टो

सम्पादक तथा अनुवादक
प्रकाश पण्डित



निधि प्रकाशन

1980
प्रकाश पण्डित



मूल्य
25 रुपये



प्रकाशक
निधि प्रकाशन
1590, मदरसा रोड, कस्मीरी गेट,
दिल्ली-110006



मुद्रक
शान प्रिंटर्स
गाहदरा, दिल्ली 110032
TOBA TEK SINGH (STORIES COLLECTION)
by Saadat Hasan Manto

क्रम

परिचय	7
नया कानून	9
खुगिया	22
खोल दो	31
ठण्डा गोश्त	36
काली सलवार	44
बू	61
धुआ	69
मोजेन	79
बाबू गोपीनाथ	104
टोवा टर्कमिह	122
मम्मी	131
नगी आवाजें	175
हतक	183
ममद भाई	207

मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना मेरी जन्म थी। मैं पंजाब के एक अज्ञात गांव 'समराला' में पैदा हुआ। यदि किसीको मेरी जन्म-तिथि से दिलचस्पी हो सकती है तो वह मेरी मां थी, जो अब जीवित नहीं है। दूसरी घटना 1931 में हुई जब मैंने पंजाब यूनिवर्सिटी से दसवीं की परीक्षा लगातार तीन साल फेल होने के बाद पास की। तीसरी घटना वह थी जब मैंने 1939 में शादी की, लेकिन यह घटना दुःखद नहीं थी और अब तक नहीं है। और भी बहुत सी घटनाएँ हुई, लेकिन उनसे मुझे नहीं दूसरों को फट पहुँचा। उदाहरणस्वरूप मेरा कलम उठाना एक बहुत बड़ी घटना थी, जिससे 'शिष्ट' लेखकों को भी दुःख हुआ और 'शिष्ट' पाठकों को भी।

मैंने कुछ साल बम्बई में गुजारे और फ़िल्मी कहानियाँ लिखीं। आज-कल लाहौर में हूँ और फ़िल्मी नहीं, केवल साधारण कहानियाँ लिख रहा हूँ। लगभग दो दर्जन कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम गिनवाकर आपको परेशान नहीं करना चाहता। अपना मौजूदा पता भी इसीलिए नहीं लिख रहा, क्योंकि स्वयं भी परेशान नहीं होना चाहता।

यह संक्षिप्त परिचय मटो ने मुझे उस समय लिख भेजा था जब 1954 में मैं उर्दू की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ का चयन कर रहा था। अब तो सचमुच मटो के निवास-स्थान का कोई पता नहीं है क्योंकि इस ज्वाले क्रांतिकार का 1955 में अकाल देहांत हो गया था।

मटो उर्दू का एकमात्र ऐसा कहानी-लेखक था जिसकी रचनाएँ जितनी पसंद की जाती हैं उतनी ही नापसंद भी। और इसमें किसी सदेह की गुंजायश नहीं है कि उसे गालियाँ देने वाले लोग ही सबसे अधिक उसे पढ़ते हैं। ताबड़-तोड़ गालियाँ खाने, और 'काली सलवार', बू, 'धुआँ', 'ठंडा गोश्त' इत्यादि 'अश्लील' रचनाओं के कारण बार-बार अदा-

लता के कटहरो में घसीट जलने पर भी वह बराबर उस वातावरण और उन पौत्रों के सम्बन्ध में कहानियाँ लिखता रहा जिन्हें 'सम्य' लोग धृणा की दृष्टि से देखते हैं और अपने समाज में कोई स्थान देने की तयार नहीं। यह सही है कि जीवन के बार में मटो का दृष्टिकोण कुछ अस्पष्ट और एक सीमा तक निराशावादी है। स्वस्थ पात्रों की बजाय उमन अधि-कतर अस्वस्थ पात्रों को ही अपना विषय बनाया है और अपने युग का वह बहुत बड़ा Cynic था लेकिन मानव मनोविज्ञान का समझने और फिर उसके प्रकाश में बनावट और झूठ का पर्दाफाश करने की जो क्षमता मटो को प्राप्त थी वह निःसन्देह किसी अन्य उद्-लेखक का प्राप्त नहीं है।

जहाँ तक कलात्मक प्रौढ़ता का सम्बन्ध है मेरे विचार में उद् के आधुनिक युग का कोई कहानी लेखक मटो तक नहीं पहुँचता। हम उसके सिद्धांत से मतभेद हो सकता है। हम यह कह सकते हैं कि कोई कला कृति उस समय तक महान नहीं हो सकती जब तक कि कलात्मक प्रौढ़ता के साथ-साथ उसमें रचनात्मक पहलू न हो। लेकिन उसकी लेखनी पर उगली रखकर कभी यह नहीं कह सकते कि कला की दृष्टि से उसमें कोई भील है या यह कि लेखक अपने सिद्धांत और मान्यताओं के प्रति निष्पक्ष नहीं।

—प्रकाश पण्डित

नया कानून

मगू कोचवान अपने अड्डे में बहुत अवलमद आदमी सुम्भा जाता था, हालांकि उनकी शिक्षा शून्य के बराबर थी और उनमें कभी स्कूल का मुह भी नहीं देखा था। लेकिन इसके बावजूद, उसे दुनिया भर की बातों का पता था। अड्डे के वे भारे कोचवान, जिनको यह जानने की इच्छा होती थी कि दुनिया के अंदर क्या हो रहा है, उस्ताद मगू की विस्तृत जानकारी से लाभ उठाने के लिए उसके पास जाते थे।

पिछले दिना, जब उस्ताद मगू ने अपनी एक सवारी स स्पेन में जग छिड़ जान की अफवाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौड़े कंधे पर थपकी देकर जानिया के स अंदाज में भविष्यवाणी की थी, 'देख लेना चौधरी थोड़े ही दिना में स्पेन के अंदर जग छिड़ जायेगी।'।

और जब गामा चौधरी ने उससे यह पूछा था कि यह स्पेन कहाँ पर है तो उस्ताद मगू ने बड़ी गम्भीरता से जवाब दिया था, 'विलायत में, और कहा ?'

स्पेन में जग छिड़ी और जब हर आदमी को इसका पता चला गया तो स्टेशन के अड्डे में जितने कोचवान घेरा बनाए हुक्का पी रहे थे, मन ही मन में उस्ताद मगू की 'महानता' स्वीकार कर रहे थे और उस्ताद मगू उस समय माल रोड की चमकीली सड़क पर तागा चलाते हुए अपनी सवारी में ताजा हिंदू मुस्लिम फसाद पर 'विचार विनिमय' कर रहा था।

उस दिन गाम के करीब, जय वह अड्डे में आया तो उसका चेहरा गैर-मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था। हुक्के का दौर चलते चलते, जब हिंदू-मुस्लिम दंगे की बात छिड़ी तो उस्ताद मगू ने सिर पर से छाकी पगड़ी उतारी और बगल में दाबकर बड़े 'विचारका' के अंदाज में कहा

'यह किसी पीर की बद दुआ का नतीजा है कि आए दिन हिंदुओं

और मुसलमाना मे चाबू छुरिया चलते रहते है और मैंने अपन बडी से सुना है कि अक्बर बादशाह ने किसी दरवेश का ग्लि दुलाया था और उम दरवेश ने जलकर यह बंद दुआ दी थी—जा, तरे हि दुस्तान मे हमेशा फसाद ही होत रहेंगे। और देख लो जब स अक्बर बादशाह का राज खतम हुआ है हि दुस्तान मे फसाद पर फसाद होत रहत हैं।' यह कहकर उसने ठण्डी सास भरी और फिर हुक्मे का दम लगाकर अपनी बात कहनी शुरू की, 'ये कायसी हि दुस्तान को आजाद कराना चाहत ह। मैं कहता हूँ अगर ये लोग हजार साल भी सर पटकते रहत कुछ न होगा। बडी मे बडी बात यह होगी कि अंग्रेज चला जाएगा और कोई इटलीवाला आ जाएगा, या वह रूम वाला, जिसके बारे मे मैंने सुना है कि बहुत तगदा आदमी है। लेकिन हि दुस्तान सदा गुलाम रहेगा। हा, मैं यह कहता भूल ही गया कि पीर न यह बंद दुआ भी दी थी कि हि दुस्तान पर हमेशा बाहर के आदमी राज करत रहेंगे।'

उस्ताद मगू को अंग्रेजा स बडी नफरत थी। इस नफरत का कारण वह यह बतलाया करत था कि व उसके हि दुस्तान पर अपना मिक्का चलाते हैं और तरह तरह के जुल्म डालत है। मगर उसकी नफरत की सबसे बडी बजह यह थी कि आदमी क गोरे उसे बहुत सताया करत थे। वे उसके साथ ऐसा बर्ताव करत थे जैसे वह एक जलील कुत्ता हो। इसके अलावा उसे उनका रंग भी बिलकुल पसंद न था। जब सभी वह किसी गोरे के सुख सफेद चेहरे को देखता तो उसे मतभी सी आ जाती न जान क्या। वह कहा करत था कि उनके गाल भुरिया भरे चेहरे देखकर उम वह लाश याद आ जाती है, जिसके जिस्म पर स ऊपर की भित्ती गल गलकर भड रही हा।

जब किसी शराबी गोरे से उसका झगडा हो जाता तो सारा दिन उसकी तन्त्रियत नाखुश रहती और वह गाम को अड्डे मे आकर लम्प मार्का मिगरे पीते या हुक्कं क बग लगाते हुए उस गोरे को जो भरके सुनाया करत।

मोटी सी गाली देने के बाद वह ढीली पगडी समेत अपन सिर को भटका देकर बहा करत था, आग लन आए थे, अब घर के मालिक

ही बन गए हैं। नाक म दम कर रखा है इन ब दरों की आलाद ने। ऐसे रोव गाठते है, जैसे हम उनके बाबा के नौकर हा ।

इसपर भी उसका गुस्मा ठण्डा नहीं होता था। जब तक उसका कोई साथी उसके पास बैठा रहता, वह अपने सीन की आग उगलता रहता।

‘शकल देतात हो न तुम उसकी जस कोड हो रहा हो। तिलकुल मुदार—एक धप्प की मार। और गिट पिट, गिट पिट यो बक रहा था, जैसे मार ही डालेगा। तरी जान की कसम, पहले पहल जी म आई कि साले की खोपड़ी के पुजे उडा द, लेकिन इस खयाल से टाल गया कि इस मरदूद की मारना भी अपनी हक है।’ यह कहते-कहते वह छोड़ी देर के लिए खामोश हो जाता और नाक की खाकी कमीज की आम्नीन से साफ करने के बाद फिर बड़बड़ाने लग जाता।

‘कसम है भगवान की, इन लाट साहबा के नाज उठात उठात तग आ गया हू। जब कभी इनका मनहूस चहरा देखता हू रग मे छून लौलने लग जाता है। कोई नया कानून-बानून बन तो इन लोगों से छुटकारा मिले। तरी कसम, जान मे जान आ जाए।’

और जब एक दिन उस्ताद भगू ने बचहरी से अपने ताग पर दो सवा रिया लादी और उनकी बाना मे उस पता चला कि हिंदुस्तान मे नया कानून लागू होने वाला है तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा।

दो मारवाडी, जो बचहरी मे अपने दीवानी के मुकदमे के सिरमिने मे आये थे, वापस घर जात हुए नय कानून यानी ‘इण्डिया ऐक्ट’ के मार मे बातें कर रहे थे।

सुना है कि पहली मप्रत से हिंदुस्तान मे नया कानून चलेगा ? नया हर चीज बदल जाएगी ?

‘हर चीज तो नहीं बदलेगी, मगर कहते है कि बहुत कुछ बदल जाएगा और हिंदुस्तानिया की आजादी मिल जाएगी।’

‘क्या आज़ के वारे मे भी नया कानून पास होगा ?’

‘यह पूछने की बात है। कल किसी वकील से पूछेंग।’

उन मारवाड़िया की बातचीत उस्ताद भगू के दिल मे नावाबिले-बयान खुशी पैदा कर रही थी। वह अपने छोटे की हुमेगा गालिया देता

जब नरयू गजा पगड़ी वगन में दशाए अट्टे में दाखिल हुआ तो उस्ताद मगू बाहर उमस मिला और उमका हाथ अपने हाथ में लेकर ऊंची आवाज में कहने लगा, 'ला हाथ इधर। ऐसी खबर सुनाऊ कि तेरा जी खुश हो जाए। तेरी इस गजी खोपड़ी पर बाल उम आए।'।

और यह कहकर मगू न बड़ मजे ले लेकर नये कानून के बारे में अपने दोस्त से बातें शुरू कर दी। बातों के दौरान उसने कई बार नरयू गजे क हाथ पर जोर स अपना हाथ मारकर कहा 'तू देलता रह, क्या बनता है। यह रुस वाला बादशाह कुछ न कुछ जरूर करवे रहगा।'।

उस्ताद मगू मौजूदा मोवियन रुम की समाजवादी सरगमियों के बारे में बहुत कुछ सुन चुका था और उसे वहा के नये कानून और दूसरी नई चीजें बहुत पसंद थी। इमोलिए उसने 'रुस वाले बादशाह' को 'इण्डिया ऐक्ट' यानी नये विधान के साथ मिला दिया और पहली अप्रैल को पुराने निजाम में जा नई फेर बदल हान वाली थी, वह ठम 'रुम वाले बादशाह' के असर का नतीजा समझता था।

कुछ असे से पशावर और दूसरे शहरा में सुखपोशा (गफ्तार खा के मुदाई विदमतगारा) का आदोलन चल रहा था। उस्ताद मगू ने उस आदोलन की अपने दिमाग में 'रुस वाले बादशाह' और फिर नये कानून के साथ खून-मल्ल कर दिया था। इसके अनाया, जब वभी वह किसीसे में सुनता कि अमुक शहर में इतने बम बनाने वाले पकड़े गए हैं या फरार जगह इतने आदमियों पर बगावत के इल्जाम में मुकदमा चलाया गया है तो वह इन सारी घटनाओं को नये कानून की पूबभूचना समझता था और मन ही मन बहुत खुश होता था।

एक दिन उसके तांग में बैठे दो बैरिस्टर नये विधान की बहुत बड़ी आलोचना कर रहे थे और वह तामोशी से उनकी बातें सुन रहा था। उनमें से एन दूसरे से कह रहा था

'नये कानून का दूसरा हिस्सा फेडरेशन है जो मेरी समझ में अभी तक नहीं आया। एमा फेडरेशन दुनिया की तारीख में आज तक न सुना, न देखा गया है। मियासी नजरिये से भी यह फेडरेशन बिल्कुल गलत है, बल्कि या कहना चाहिए कि यह फेडरेशन है ही नहीं।'।

उन वरिस्टरा के बीच जो बातचीत हुई क्योंकि उसमें ज्यादातर शब्द अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मगू सिर्फ ऊपर के जुमले को ही किसी कदर समझ पाया और उसने खयाल किया, य लोग हिंदुस्तान में नया कानून के आन को बुरा समझते हैं और नहीं चाहते कि इनका वतन आजाद हो। चुनावों इस खयाल के अमर में उसमें कई बार उन दो वरिस्टरो को हिंकारत की नगरा से देखकर मन ही मन कहा 'टोडा बच्चे'।

जब कभी वह किसीको दबी जवान में 'टोडी बच्चा' कहता तो दिल में यह महसूस करके बहुत खुश होता था कि उसने इस नाम का सही जगह इस्तेमाल किया है और यह कि उसमें शरीफ आदमी और टोडी बच्चे में फर्क करने की 'योग्यता' है।

दस घण्टा के तीसरे दिन वह गवर्नमेण्ट कालेज के तीन विद्यार्थियों को अपने तागे में बठाकर मजग आ रहा था कि उसने उन तीनों लड़कों को आपस में ये बातें करते सुना

नया कानून न मेरी उम्मीदें बड़ा दी है। अगर साहब एसेम्बली के मम्बर हो गए तो किसी सरकारी दफ्तर में नौकरी जरूर मिल जाएगी।

वैसे भी बहुत सी जगह और निकरेंगी। शायद इसी गडबड में हमारे हाथ भी कुछ आ जाए।

हां हा, क्यों नहीं।

ये बेकार प्रेजुएंट जो मार मार फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कमी होगी।'।

इस बातचीत में उस्ताद मगू के दिल में नया कानून का महत्त्व और भी बढ़ा दिया और वह उसको ऐसी चीज समझने लगा, जो बहुत चमकती हो। 'नया कानून'। वह दिन में कई बार सोचता 'यानी कोई नयी चीज'। और हर बार उसकी नजरों में सामने अपने छोटे का वह नया माज आ जाता था उसमें दो दरम हुए चौधरी मुदावारा से बड़ी अच्छी तरह ठोक बजाकर खरीदा था। उस माज पर जब वह नया था, जगह जगह लोह की निक्कन चढ़ी हुई थीनें चमकती थी और जहां जहां

पीतल का काम था वह तो सोने की तरह दमकता था। इस लिहाज से भी 'नये कानून' की चमकता दमकता होना जरूरी था।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मगू ने नये विधान के पक्ष और विपक्ष में बहुत कुछ सुना। पर उसके बारे में जो खाका वह अपने मन में बना चुका था, उस वह बदल न सका। वह समझता था कि पहली अप्रैल का नये कानून के आते ही सब मामला साफ हो जाएगा और उसका विश्वास था कि उसके आने पर जो चीजें नजर आएंगी उनमें उसकी आखी की जहर ठण्डक पहुंचेगी।

आखिर माघ के इक्तीस दिन खत्म हो गए और अप्रैल के शुरू होने में रात के चंद खामोश घण्टे बाकी रह गए। मौसम आम दिनों की प्रति-रवत ठण्डा था और हवा में ताजगी थी।

पहली अप्रैल की सुबह सवेरे उस्ताद मगू उठा और अस्तबल में जाकर उसन तागे में घोड़े को जोता और बाहर निकल गया। उसकी तबियत आज असाधारण रूप से प्रमत्त थी। वह आज नये कानून को देखन वाला था।

उसने सुबह के सड़ धुधलने में कई तग और खुले बाजारों का चक्कर लगाया मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई। आसमान की तरह पुरानी उसकी निगाह आज खास तौर पर नया रंग देखना चाहती थी, पर सिवाय उस कलगी के, जो रंग बिरंगे परास बनी थी और उसके धांडे के सिर पर जमी हुई थी, बाकी सब चीजें पुरानी नजर आती थी। यह नयी कलगी उसने नय कानून की खुशी में इक्तीस माघ को चौधरी खुदाबग्श स साढ़े चौदह आने में सरादी थी।

घोड़े की टापो की आवाज, काली सड़क और उसके आसपास थाड़ा-थोड़ा फासला छोड़कर लगाए हुए बिजली के खम्भे, दुकानों के बोर्ड, उसके घोड़े के गले में पड़े हुए धुधरुआ की झनझनाहट, बाजार में चलते-फिरते आदमी—इनमें से कौन सी चीज नयी थी? जाहिर है कि कोई भी नहीं। लेकिन उस्ताद मगू निराश नहीं हुआ।

अभी बहुत सवेरा है। दुकानें भी तो सबकी सब बंद हैं। इस सयाल में उस तसवीन दो। इसने अलावा, वह यह भी सोचता था, 'हाँ

कोट में तो नौ बजे के बाद ही शाम घुस होता है। अब इससे पहले क्या कानून क्या नजर आएगा ?'

जब उसका तागा गवनमेण्ट कालेज के दरवाजे के धरीब पहुँचा तो कालेज के घड़ियाल न बड़े घमण्ड से नौ बजाए। जो विद्यार्थी कालेज के बड़े दरवाजे से बाहर निकल रहे थे, सुन-पीस थ, पर उस्ताद मगू को न जाने क्या उनके कपड़े मले मल स नार आए। 'गायद इसका कारण यह था कि उसकी निगाह आज आरतो को चौंधिया देने वाले रिमी जलवे का इंतजार कर रही थी।

ताग को दायें हाथ मोड़कर वह थोड़ी देर के बाद फिर अनारवनी में चला आया। बाजार की आधी दुकानें खुल चुकी थी और अब लोमा की आमद रफ्त भी बढ़ गई थी। हलवाई की दुकानों पर ग्राहकों की सूब भीड़ लगी थी। मनिहारी वाला की नुमायशी चीजें लीशे की अलमारियाँ में से लोगों को अपनी ओर खींच रही थी और बिजली के तारों पर कई कबूतर आपस में लड़ भगड़ रहे थे, पर उस्ताद मगू के लिए इन तमाम चीजों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। वह नया कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह जिस तरह कि वह अपने घोड़े को देख रहा था।

जब उस्ताद मगू के घर बच्चा पैदा होने वाला था तो उसने चार पाँच महीने बड़ी बेचैनी में गुजारे थे। उसको विश्वास था कि बच्चा किसी न किसी दिन जहर पैदा होगा। पर वह इंतजार की घड़िया नहीं काट सकता था। वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ एक नजर देख ले। इसके बाद वह पना होता रहे। बुनाचे इसी घर में लूब इच्छा के तहत उसने कई बार अपनी बीमार बीबी के पेट को दबा दबाकर और उसके ऊपर जान रख रखकर अपने बच्चे के बारे में कुछ जानना चाहा था। पर वह नाकाम रहा था। एक बार तो वह इंतजार करते करते इतना तंग आ गया था कि अपनी बीबी पर चरम भी पड़ा था।

'तू हर वक्त मुर्दे की तरह पड़ी रहती है। उठ और जरा चल फिर, तरे अंगों में थोड़ी सी ताकत तो आए। या तरता बन रहने से कुँ नहोगा। तू समझती है कि इस तरह लटे लटे बच्चा जन देगी ?'

उस्ताद मगू तबियत से बहुत जल्दबाज था। वह हर चीज का

असली रूप देखने के लिए न मिफ इच्छुक था, बल्कि उसे खोजता भी रहता था। उसकी बीबी गंगादेई उसकी इस किम्मे की बकगारिया को देखकर ग्राम तीर पर यह कहा करती थी, 'अभी कुछा खोदा ही नहीं गया और तुम प्यास से बेहाल हो रह हो।'।

कुछ भी हो, पर उस्ताद मगू नये कानून के इतजार में इतना बेचैन नहीं था जितना कि उसे अपनी तबियत के लिहाज में होना चाहिए था। वह आज नये कानून को देखने के लिए घर से निकला था, ठीक उसी तरह, जस वह गांधी या जवाहरलाल के जुलूम को देखने के लिए निकलता था।

नेताजी की महानता का अनुमान उस्ताद मगू हमेशा उनके जुलूस के हंगामा और उनके गले में डाली हुई फूलों की मालाओं से किया करता था। अगर कोई गीडर गेंद के फूलों से लदा हो तो उस्ताद मगू के नजदीक वह बड़ा आदमी था और जिस नेता के जुलूस में भीड़ की यजह से दो-तीन दगे होते होते रह जाते, वह उसकी नजर में और भी बड़ा था। अब नये कानून को वह अपने जेहन के इसी तराजू में तोलना चाहता था।

अनारकली से निघनकर, वह माल रोड की चमकीली सड़क पर अपने हाथों की धीरे धीरे चला रहा था कि मोटरों की दुकान के पास उसे छावनी की एक मवारी मिल गई। किराया तय करने के बाद उसने अपने घोड़े को चाबुक दिखाया और मन में सोचा, 'चला यह भी अच्छा हुआ।'। 'गायद छावनी से ही नये कानून का कुछ पता चल जाय।'।

छावनी पहुंचकर उस्ताद मगू ने मवारी को उसकी मजिल पर उतार दिया और जेब में सिगरेट निकालकर दाहिने हाथ की आखिरी दा उगलिया में दबाकर सुनगाया और पिछली सीट के गद्दे पर बैठ गया।

जब उस्ताद मगू को किमी मवारी की तलाश नहीं होती थी या उस किमी बीना हुई घटना पर गौर करना होता तो वह ग्राम तीर पर अपनी सीट छोड़कर पिछली सीट पर बैठ जाता और बड़े इतमीनान से अपने घोड़े को लगाम दाहिने हाथ के गिद नपेट लिया करता था। ऐसे अंगरेज पर उसका छोड़ा छोड़ा सा हिन्दिनाने के बाद बड़ी घीभी चाल

चलना मुट्ट कर देता था, मानो उसे कुछ दूर के लिए भाग दौड़ से छुट्टी मिल गई हो।

घोड़े की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग में खयालों की आमद बहुत सुस्त थी जिस तरह घोड़ा धीरे धीरे बंदम उठा रहा था उन्ही तरह उस्ताद मगू के जेहन में नये बानून के बारे में नये अनुमान दाखिल हो रहे थे।

वह नये बानून के आने पर म्यूनिसिपल कमेटी से तागा के नम्बर मिटाने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तलव बात को नये विद्यान की रोशनी में देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में डूबा था जब उसे ऐसा लगा जैसे किसी सवारी ने उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखने पर उसे सड़क के उम पार दूर बिजली के लम्बे के पास एक गौरा सड़ा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा कि कहा जा चुका है उस्ताद मगू को गौरा से बेहद नफरत थी। जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप में देखा तो उसके मन में नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसके जी में आई कि बिलकुल ध्यान न दे और उसका छोड़कर चला जाय, पर बाद में उसकी खयाल आया कि इनके पसे छाड़ना भी बेवकूफी है। कलगी पर जो मुफ्त में साठे चौदह आने खर्च कर दिए हैं इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए। चलो चलत हैं।

खाली सड़क पर बड़ी सफाई में तागा मोड़कर उसने घाड़े को चातुक दिखाया और पलक भपकते ही वह बिजली के लम्बे के पास पहुंच गया। घोड़े की लगाम खींचकर उसने तागा ठहराया और पिछली सीट पर बैठे बैठे गोरे से पूछा

‘साहब बहादुर कहा जाना मांगता है?’

इस सवाल में गजब का तजिया (व्यंग्य भरा) अंदाज था। साहब बहादुर बहुत समय उसका ऊपर का मूछो भरा हाठ नीचे की ओर गिब गया और पास ही गाल की इस तरफ जो मद्धिम सी लकीर नाक के नयून से ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कनवपी के

साथ गहरी हो गई, जसे किसीन नोकीले चाबू से शीशम की सागली लकड़ी में धार-मी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हम रहा था और अपन अदर उसने उस गोरे को सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था।

जब गोर ने, जो बिजली के खम्भे की ओट में हजा का मग बचाकर सिगरेट सुलगा रहा था, मुड़कर तागे के पायदान की तरफ बरम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मगू की गोर उसकी निगाहें चार हुइ और ऐसा लगा कि एकसाथ आगन सामने की बटूका स गोलिया निक्ली और ग्रापस में टकराकर, आग का एक जगना बनकर, ऊपर का उड़ गई।

उस्ताद मगू जो अपने दायें हाथ स लगाम के बत खालकर तागे से नीचे उतरने वाला था, अपन सामन खड़े गोरे को यू देख रहा था जैसे वह उसके बजूद के जर्दे जर्दे को अपनी निगाहा से बदा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर स गनदमी चीजें भांड रहा था जैसे वह उस्ताद मगू के इस हमले से अपने बजूद के कुछ हिस्स बचा लेन की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरेट का धुआ निगलने हुए कहा, 'जाना भागटा या फिर गडबड करगा ?'

'वही है।' य शब्द उस्ताद मगू के दिमाग में पदा हुए और उसकी बीड़ी छाती के अदर नावने लगे। 'वही है' उसन य शब्द अपने मुह के अदर दाहराय और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा, जो उसके सामन एडा था, वही है जिसमें पिछले बरस उसकी भडप हुई थी और उस खाहमवाह के भगडे में जिसकी बजह गोरे के दिमाग में चटी हुई शराब थी उस लाचार होकर बहुत-सी बातें सहनी पटी थी। उस्ताद मगू न गोर का दिमाग दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उडा दिए होते, पर वह किसी खास कारण स चुप हो गया था। उसकी पना था, इस तरह के भगडों में अदालत का नजला आम तौर पर कोचवाना पर ही गिरता है।

उस्ताद मगू ने पिछले बरस की लड़ाई और पहली अप्रैल के नय कानून पर गौर करत हुए गोर स पूछा, 'कहा जान भागटा है ?' उस्ताद मगू के लहजे में चाबुक जैसी तंजी थी।



चलना शुरू कर देता था, मानो उसे कुछ देर के लिए भाग दौड़ से छुट्टी मिल गई हो।

घोड़े की चाल और उस्ताद मगू के दिमाग में सयालो की आशय बहुत सुस्त थी जिस तरह घोड़ा धीरे-धीरे बंदम उठा रहा था उसी तरह उस्ताद मगू के जेहन में नय बानून के बार में नये अनुमान दाखिल हो रहे थे।

वह नय बानून के आने पर म्यूनिसिपल कमेटी से तागो के तम्बर मिलने के तरीके पर गौर कर रहा था और इस गौर-तलब बात को नय विधान की रोशनी में देखने की कोशिश कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में डूबा था, जब उसे ऐसा लगा जैसे किसी सवारी न उसे बुलाया है। पीछे पलटकर देखने पर उसे सड़क के उस पार दूर बिजली के खम्भे के पाम एक गौरा खड़ा नजर आया, जो उसे हाथ के इशारे से बुला रहा था।

जैसा कि कहा जा चुका है उस्ताद मगू को गौरा से बहुत नफरत थी। जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे के रूप में देखा तो उसके मन में नफरत के भाव जाग उठे। पहले तो उसके जी में आई कि विल-कुल ध्यान न दे और उसको छोटकर चला जाय, पर बाद में उसको सयाल आया कि इनके पाम छोड़ना भी बेवकूफी है। कलगी पर जो मुफ्त में साढ़े चौदह आने खच कर दिए हैं इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए। चलो चलत हैं।

गाली सड़क पर बड़ी सफाई से तागा मोड़कर उसने घाड़े को चानुब दिखाया और पनक भपकते ही वह बिजली के खम्भे के पास पहुंच गया। घोड़े की लगाम खींचकर उसने तागा ठहराया और पिछनी सीट पर बैठे बैठे गोरे से पूछा

साहब बहादुर कहा जाना मायता है ?

इस सवाल में गजब या तजिया (व्यंग्य भरा) आंदाज था। 'साहब बहादुर' कहते समय उसका ऊपर का मूछो भरा होठ नीचे की ओर खिंच गया और पाम ही गाल की इस तरफ जो मॉडिम सी लकीर नाव के नयून में ठोड़ी के ऊपरी सिरे तक चली आ रही थी, एक कपकपी :

साथ गहरी हो गई, जैसे किसीने नोकिले चाकू से शीशम की मावली लकड़ी में धार-सी डाल दी हो। उसका सारा चेहरा हस रहा था और अपने अंदर उसने उम गोरे को सीने की आग में जलाकर राख कर डाला था।

जब गोर ने, जो बिजली के खम्भे की ओट में हवा का ग्ल बचाकर सिगरेट सुनगा रहा था, मुड़कर तांगे के पायदान की तरफ कदम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मगू की ओर उसकी निगाह चार हुई और ऐसा लगा कि एकसाथ आत्म मानन की बंदूक से गोलीया निकली और आपस में टकराकर, आग का एक बगुना बनकर, ऊपर को उड़ गई।

उस्ताद मगू, जो अपने दाहिने हाथ से लगाम के बल खोलकर तांगे से नीचे उतरने वाला था, अपने सामने खड़े गोर का यूँ देख रहा था जैसे वह उसके बजूद के जर्न जर्न को अपनी निगाहा से चबा रहा हो और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर स अनदम्यी चीजें भण्ड रहा था जैसे वह उस्ताद मगू के इस हमले से अपने बजूद के कुछ हिस्से बचा लेने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरट का धुआँ निगलते हुए कहा, जाना मागटा या फिर गडबड करेगा ?'

वही है। ये शब्द उस्ताद मगू के दिमाग में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अंदर नाचने लग। 'वही है' उमने ये शब्द अपने मुह के अंदर दाहराये और साथ ही उसे पूरा यकीन हो गया कि गोरा जो उसके सामने खड़ा था वही है जिसमें पिछले वरस उसकी भड़प हुई थी और उस साहसवाह के भगड़े में जिसकी बजह गोर के दिमाग में चढ़ी हुई गराज थी, उम लाचार होकर बहुत-सी बातें सटनी पड़ी थी। उस्ताद मगू ने गोरे का दिमाग दुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उठा दिए होते, पर वह किसी खास धारण में धुप हो गया था। उसको पता था, इस तरह के भगडा में बदालत का नजला ग्राम तौर पर कोचवाना पर ही गिरता है।

उस्ताद मगू ने पिछले वरस की लन्गार्ड और पहली अप्रैल के नय कानून पर गौर करत हुए गोरे में पूछा, 'कहा जान मागटा है ?' उस्ताद मगू के सहजे में चाबुक जैसी तेजी थी।

गोरे ने जवाब दिया—‘हीरा मण्डी ।’

‘किराया पाच रुपया होगा ।’ उस्ताद मगू की मूर्छें थरथराई ।

यह सुनकर गोरा हैरान हो गया । वह चिल्लाया, ‘पाच रुपये ! क्या टुम ?’

‘हां-हां, पाच रुपये ।’ यह कहते हुए उस्ताद मगू के बाला भरे दाहिने हाथ न भिचकर एक भारी घूस का रूप ले लिया । ‘क्यों, जात हो या बेकार बातें बनाओगे,’ उस्ताद मगू का सहजा और भी ज्यादा सरन हो गया ।

गोरा पिछले वष की घटना का खयाल करके उस्ताद मगू के सीने की चौड़ाई तजरदान कर चुका था । वह सोच रहा था—इसकी खोपड़ी फिर खजला रही है । हौसला बलाने बाने इस खयाल के महत्त वह नाग की और अकड़कर बठा और अपनी छड़ी से उसन उस्ताद मगू को तागे से नीचे उतरन का इशारा किया ।

बैत की वह पालिंग की हुई पतली सी छड़ी उस्ताद मगू की मोटी रान के माथ दोस्तान बार छुई । उसने खड़े खड़े नाटे कद के गोर का ऊपर से नीचे देखा जैसे वह अपनी निगाहा के भार ही स उसे पीत डगना चाहता हो । फिर उसका घूसा, कमान में तीर की तरह ऊपर को उठा और पतक भपकते ही गोरे की ठाडो के नीचे जम गया । धक्का देकर उसन गोरे को परे हटाया और नीचे उतरकर उस धडाधड पीटना शुरू कर दिया ।

गोरा हक्का बक्का रह गया और उसन इतर उधर सिमरकर उस्ताद मगू के वजनी घसा से बचन की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मगू की हालत पागलो भी हो गई है और उसकी आखा से अगार बरस रहे हैं तो उसन जोर जोर से चिल्लाना शुरू किया । उस चीख पुकार न उस्ताद मगू की वाहा का काम और भी तेज कर दिया । वह गार की जो भरके पीट रहा था और साथ साथ यह कहता जाना था

‘पहली अप्रैल को भी वही अक्ड फू पहली अप्रैल को भी वही अक्ड फू
फू अत्र हमारा राज है उच्चा ।’

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहिया ने बनी मुश्किल से

गोरे को उस्ताद मगू की पकड़ से छुड़ाया। उस्ताद मगू उन दो सिपाहियों के बीच खड़ा था। उसकी चौड़ी छाती फूटी हुई सास की वजह से ऊपर-नीचे हो रही थी। मुह से भाग बह रहा था और अपनी मुस्कुराती हुई आवाज से हैरतजदा भीड़ की तरफ देखकर वह हाफती हुई आवाज में बह रहा था

‘वो निन गुजर गए, जब खलील खा फारुखा उठाया करते थे।

अब नया कानून ह मिया, नया कानून ।’

और बेचारा गोरा अपने बिगड़े हुए चेहरे के साथ, बेवकूफी की तरह, कभी उस्ताद मगू की तरफ देखता था और कभी भीड़ की तरफ।

उस्ताद मगू को पुलिस के सिपाही याने में ले गए। रास्ते में और याने के अंदर कमरे में वह ‘नया कानून, नया कानून चिल्लाता रहा, पर किसीने एक न सुनी।

‘नया कानून, नया कानून क्या बक रहे हो। कानून वहीं है—पुराना ।’ और उसने हवालात में बदल कर दिया गया।

खुशिया

खुशिया सोच रहा था।

बनजारी में काले तम्बाकू वाला पान लेकर वह उसकी दुकान के साथ उस पत्थर के चबूतरे पर बैठ गया जो जिन के बगल टायर और माटर के मुक्तनिष्क पुर्जों में भरा होता है। रात को साढ़े आठ बजे के करीब माटर के पुर्जे और टायर बेचने वालों की यह दुकान बंद हो जाती है और यह चबूतरा खुशिया के लिए खाली हो जाता है।

वह काले तम्बाकू वाला पान धीरे धीरे चबा रहा था और सोच रहा था। पान की गाढ़ी तम्बाकू मिली पीक उसके दाता की रीखा से निकलकर उसके मुंह में धड़ उधर फिसल गयी थी और उसे एसा लगता था कि उसके ब्याल, दातो नने पिमकर, उसकी पीक में घुल रहे हैं। शायद यही वजह है कि वह उस फेंकना नहीं चाहता था।

खुशिया पान की पीक मुंह में गुनगुना रहा था और उस घटना के बारे में सोच रहा था, जो उसके साव अभी अभी पटी थी, यानी आध घण्टे पहले।

वह उस चबूतरा पर रोज की तरह बैठने से पहले सेतवाड़ी की पाचवी गली में गया था। अगलीर में जो नई छांवरी कान्ता आई थी, उसी गली के नुककड़ पर रहती थी। खुशिया से किमीन रहा था कि वह अपना मकान बदल रही है इसीलिए वह इसी गली का पता लगाने के लिए गया था।

कान्ता की मोली का दरवाजा उसने खटखटाया। अंदर से आवाज आई, 'कौन है?'

इसपर खुशिया ने कहा 'मैं, खुशिया।'

आवाज दूसरे कमरे से आई थी। थोड़ी देर के बाद दरवाजा खुला। खुशिया अंदर दाखिल हुआ। जब कान्ता ने दरवाजा अंदर से बंद किया

सब खुशिया ने मुड़कर देखा। उसकी हैरत की कोई इतहा न रही, जब उसने काता को बिलकुल नगी देखा। बिलकुल नगी ही समझो, क्याकि वह अपने अगा को सिर्फ एक तौलिय स छिपाए हुए थी। छिपाए हुए भी तो नहीं कहा जा सकता क्याकि छिपाने की जितनी चीजें होती हैं वे तो सब की सब, खुशिया की चकित आखा के सामन थी।

‘कहो खुशिया बस घ्राए ? मैं बस अब नहाने ही वाली थी। बैठो-बैठो बाहर वाले स अपने लिए चाय के लिए तो कह आए होत जानत तो हो वह मुझा रामा यहां स भाग गया है।’

खुशिया जिसकी आखा न कभी औरत को यू अचानक नगा नहीं देखा था, यह घबरा गया। उसकी समझ म न आता था कि क्या कहे। उसकी निगाह, जो एकदम नग्नता स चार हो गई थी अपने आपको कहीं छिपाना चाहती थी।

उमन जरदी जल्दी सिफ इतना कहा, ‘जाओ जाओ तुम नहा लो। फिर एकदम उमकी जवान मुल गई, ‘पर जब तुम नगी थी ता दरवाजा खोलने की क्या जरूरत थी ? अदर स वह दिया होता मैं फिर आ जाता लकिन जाओ तुम नहा लो।’

काता मुस्कराई, ‘जब तुमने कहा—खुशिया है तो मैंने सोचा क्या हज है अपना खुशिया ही तो है आन दो

202

कान्ता की यह मुस्कराहट अभी तक खुशिया के दिलो दिमाग म तैर रही थी। इस वक्त भी काता का नगा जिस्म मोम के पुतले की तरह उसकी आखो के सामन लड़ा था और पिघल पिघलकर उसके अदर जा रहा था।

उसका जिस्म सुंदर था। पहली बार खुशिया की मालूम हुआ था कि जिस्म बेचन वाली औरतें भी ऐसा सुडोल वदन रखती हैं। उसको इस बात पर हैरत हुई थी, पर सबसे ज्यादा ताज्जुब उस इस बात पर हुआ था कि नग घटग वह उसके सामने खड़ी हो गई और उसको ताज तक न आई—क्या ?

इसका जवाब काता ने यह दिया था—



है तो मैंने सोचा, क्या हज है भपना मुशिया ही तो है आन दो ।'

का ता और खुगिया एक ही पक्षे म शरीक थे । वह उसका दलाल था, इम लिहाज से वह उसीका था पर यह कोई वजह नहीं थी कि वह उसके सामन नगी हो जाती । बाई खास बात थी । काता न जो बात कही थी उममे खुगिया कोई और ही मनलब कुरेद रहा था ।

यह मतलब एक ही वक्त इतना साफ और धुधला था कि मुशिया किसी खास नताजे पर नहीं पहुच सका था । उम समय भी, वह काता के नगे जिस्म का दख रहा था, जो ढाल के ऊपर मडे हुए चमडे की तरह तना हुआ था—उसकी लुडक्ती हुई निगाहा से बिलकुल बेपरवाह । कई बार अचरज की हालत म भी उसन उसके साबने मलने बदन पर टोह लेने वाली निगाह गाड़ी थी पर उसका एक रोआ भी न कपकपाया था । बस, वह ऐसे साबले पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ी रही, जो एहसास-रहित हो ।

भइ एक मद उसके सामने खड़ा था—मद, जिसकी निगाह कपडो म भी औरत के जिस्म तक पहुच जाती है और जो परमात्मा जाने, खयान-ही खयाल म जाने कहा कहा पहुच जाता है । लेकिन वह जरा भी न घबराई और उसकी आँखें ऐसा समझ ली कि अभी साण्डी से धुलकर आई है उसको थोड़ी सी लाज तो आनी चाहिए थी । जरा सी सुर्खी तो उसकी आँखो मे पैदा होनी चाहिए थी । मान लिया, कस्वी थी, पर कस्बिया यू नगी तो नहीं खड़ी हो जाती ।

दस बरस उस दलाली करते हो गए थ और इन दम बरसो मे वह पेना करान वाली लडकियो के सारे भेदो से बाकिफ हो चुका था । मिसाल के तौर पर, उसे यह मालूम था कि पापघोनी के आखिरी सिरे पर जो छोकरी एक नौजवान लडके को भाई बनाकर रहती है इसलिये 'अल्लूत क'या' का रिक्काड—काहे करना मूरख प्यार प्यार प्यार—अपने टूटे हुए वाजे पर बजाया करती है कि उमे अशोक कुमार से बुरी तरह इश्क है । कई मनचने लौण्डे, अशोककुमार से उसकी मुताकात कराने का आसा दवर अपना उल्लू सीधा कर चुके थे । उसे यह भी मालूम था कि दादर मे जो पजाबिन रहती है सिफ इसलिये कोट पतलून पहनती है

कि उसके यार न उससे कहा था कि तेरी टांगें तो विलकुल उस अग्नेज ऐक्ट्रेस की तरह हैं, जिसन 'मराको उफ 'खून-तमना' म काम किया था। यह फिल्म उसन कई बार देखी और जब उसके यार ने कहा कि मालिन डीट्रिच इसलिए पतलून पहनती है कि उसकी टांगें बहुत खूबसूरत हैं और उसने उन टागा का दो लाख का बीमा करा रखा है तो उसन भी पतलून पहननी शुरू कर दी, जो उसके नितम्बों म बहुत कमकर आती थी और उसे यह भी मालूम था कि मजगाव वाली दक्षिणी छोकरी सिफ इस लिए कालेज के खूबसूरत लौण्डो को फासती है कि उसे एक खूबसूरत बच्चे की मा बनन का शौक है। उसको यह भी पता था कि वह कभी अपनी इच्छा पूरी न कर सकगी इसलिए कि बाफ है और उस काली मद्रासिन को बाबत जो हर ममय काना मे हीरे की बूटिया पहन रहती थी, उसे यह बात अच्छी तरह मालूम थी कि उमका रंग कभी गौरा नहीं होगा और वह उन दवाभा पर बेकार रुपया बर्बाद कर रही है जो वह घाए दिन खरीदती रहती है।

उसको उन सभी छोकरियो के अदर-बाहर का हाल मालूम था जो उसके पक्षे म शामिल थी। मगर उसको यह खबर न थी कि एक दिन उसका कुमारी, जिसका असली नाम इतना मुश्किल था कि वह उन्न भर याद नहीं कर सकता था उसके सामन नगी खड़ी हो जाएगी और उसको जिदगी के सबसे बड़ ताज्जुब से दो चार कराएगी।

सोचत सोचत उसके मुह म पान की पीक इस कदर जमा हो गई थी कि अग वह मुश्किल से छालिया क उन नहे नह रेजो को चबा सकता था, जो उसका दाता की रीखा म से इधर उधर फिमलकर निबल जाते थे। उसके तग माये पर पसीने की नही-नही बूँदें उभर आई थी जम मल-मल म पनीर की धीरे से दबा दिया गया हो। जब-जब वह बाता के नग जिस्म की अपनी कल्पना म देखता था, उसकी मर्दानगी को धक्का सा पहुँचता था। उसे महसूस होता था जैसे उसका अपमान हुआ है। एकदम उसन अपने मन म कहा—भई, यह वेइज्जती नहीं है तो क्या है यानी एक छोकरी नग घडग तुम्हारे सामने खड़ी हो जाती है और कहती है इसम हज ही क्या है तुम खुशिया ही तो हो खुशिया न

हुआ, साला वह बिल्ला हो गया, जो उसके निस्तर पर हर समय ऊबता रहता है और क्या।

अब उसे विश्वास होना लगा कि सचमुच उसका अपमान हुआ है। वह मद था और अनजान ही उसको इस बात की आशा थी कि औरतें, चाहे शरीफ हा चाहे बाजारू, उसकी मद ही समझेंगी और उसके और अपन बीच वह पर्दा कायम रखेंगी जो एक मुद्दत से चला आ रहा है। वह तो सिर्फ यह पता लगाने के लिए कात्ता के यहाँ गया था कि वह कब तक मकान बदल रही है और कहा जा रही है। कात्ता के पास उसका जाना बिलकुल विजयस से सम्बन्धित था। अगर खुशिया कात्ता के बार में सीचता कि जब वह उसका दरवाजा खटखटाएगा तो वह अदर क्या कर रही होगी तो उसकी कल्पना में ज्यादा से ज्यादा इतनी ही बातें आ सकती थीं

—मिर पर पट्टी बांधे लेटी होगी।

—बिल्ले के बालों से पिस्सू निकाल रही होगी।

—उस बाल-सफा पाउडर से अपनी बगला के बाल उड़ा रही होगी, जो इतनी बास मारता था कि खुशिया की नाक बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

—पलंग पर अकेली बैठी ताश फलाए पेश-स खेलने में मशगूल होगी।

बस इतनी चीजें थी, जो उसके दिमाग में आती। घर में वह किसीको रखती न थी इसलिए उस बात का खयाल ही नहीं आ सकता था। पर खुशिया ने तो यह सोचा ही न था। वह तो काम से कहा गया था कि अचा नव कात्ता—यानी कपड़े पहनने वाली कात्ता—मतलब यह कि वह कात्ता, जिसको वह हमेशा कपड़ा में दखा करता था उसके सामने बिलकुल लगी खड़ी हो गई—बिलकुल नगी ही समझो, क्योंकि एक छोटा सा तोलिया सब कुछ तो छिपा नहीं सकता। खुशिया को यह दृश्य देखकर ऐसा महसूस हुआ था जैसा छिलवा उसके हाथ में रह गया है और बेसे का गूदा बिछनकर उसके सामने आ गिरा है। नहीं उसे कुछ और ही महसूस हुआ था जब वह गुद नगा हो गया है। अगर बात यही तक खरम हो जानी तो कुछ भी न होता। खुशिया अपनी हैरत को किसी न किसी हीले से दूर कर देता। मगर यहाँ मुर्गीबत यह आन पही थी कि उस लोण्डिया ने मुस्करा

वह गुद नगा हो गया है। अगर बात यही तक खरम हो जानी तो कुछ भी न होता। खुशिया अपनी हैरत को किसी न किसी हीले से दूर कर देता। मगर यहाँ मुर्गीबत यह आन पही थी कि उस लोण्डिया ने मुस्करा

कर कहा था जब तुमन कहा खुशिया है तो मैं सोचा, अपना खुशिया ही तो है आन दो बस यही बात उसे खाए जा रही थी।

साली मुस्करा रही थी ' वह बार बार बड़बड़ाता। जिस तरह कात्ता नगी थी उसी तरह उसकी मुस्कराहट खुशिया को नगी नजर आई थी। यह मुस्कराहट ही नहीं, उस कात्ता का जिम्मा भी इस हद तक नगा दिखाई दिया था जैसे उसपर रदा फिरा हुआ हो।

उस बार बार वचपन क व दिन याद आ रहा था जब पड़ोस की एक औरत उससे कहा करती थी, 'खुशिया बेटा जा दौड़कर जा, यह बाल्टी पानी से भर ला। जब वह बाल्टी भरकर लाया करता था तो वह धोती से बनाए हुए पदों के पीछे से कहा करती थी, 'अंदर आकर यहाँ मेरे पास रख दे। मैं मुह पर साबुन मला हुआ है। मुझ कुछ सुभाई नहीं देता। वह धोती का पर्दा हटाकर बाल्टी उसके पास रख दिया करता था। उस समय साबुन की भाग में निपटी हुई नगी औरत उस नजर आती थी पर उसके मन में किसी तरह की उभल पुथल पदा नहीं होती थी।

'भई मैं उस समय बच्चा था। वितकुल भोला भाला। बच्चे और मद में बहुत फक होता है। बच्चा से कौन पर्दा करता है। मगर अब तो मैं पूरा मद हूँ। मरी उम्र इस वकन लगभग अट्ठाईस बरस की है और अट्ठाईस बरस के जवान आदमी के सामन तो कोई बूढ़ी औरत भी नगी खड़ी नहीं होती।'

कान्ता ने उस क्या समझा था ? क्या उसमें वे सारी बातें नहीं थी, जो एक नौजवान मद में होती हैं ? इसमें कोई शक नहीं कि वह कात्ता को एकाएक नग घडग देखकर बहुत घबरा गया था लेकिन चोर निगाहों से क्या उसने कात्ता की उन चीजा का जायजा नहीं लिया था, जो रोजाना इस्तमाल के बावजूद अमानी हालत पर कायम थी। क्या चकित रह जान के बावजूद, उसके दिमाग में यह खयाल नहीं आया था कि दस रुपये में कात्ता बिलकुल महंगी नहीं और दशहरे के दिन बक का वह बाबू जो दो रुपये की रिमायत न मिलने पर वापस चला गया था, बिलकुल गधा था ? और इन सबके ऊपर, क्या एक क्षण के लिए उसके सारे पुटों में एक अजीब किस्म का तनाव नहीं पैदा हो गया था ? और

उसने एक एमी अगडार्ड नहीं लेनी चाही थी, जिससे उसकी हठिया तक चटपट लगें ? फिर क्या वजह थी कि मगलौर की उस सावली छोकरी ने उमरों मद न समझा और सिर्फ सिर्फ खुशिया समझकर उसको अपना सब कुछ दसन दिया ?

उमन गुस्से में आकर पान की गाढ़ी पीक थूक दी, जिसने फुटपाथ पर कई बल टूट बा दिया। पीक थूककर वह उठा और ट्राम में बैठकर अपने घर चला गया।

घर में उसने नहा धाकर नई घोंती पहनी। जिस बिल्डिंग में वह रहता था उसकी एक दुकान में सलून था। उमर आदर जाकर उसने आइने के सामने अपने बालों में कंधी की। फिर एकाएक कुछ समय आया तो वह कुर्सी पर बैठ गया और बड़ी गम्भीरता से उसने नाई से दाढ़ी मूढ़ने के लिए कहा। आज चूँकि वह दूसरी बार दाढ़ी मुढ़वा रहा था, इसलिए नाई ने कहा, 'अर भाई खुशिया, भूल गए क्या ? सुबह मैंने ही तो तुम्हारी दाढ़ी मूढ़ी थी।'।

इसपर खुशिया ने बड़ी शान से दाढ़ी पर उल्टा हाथ फेरते हुए कहा, 'खूटी अच्छी तरह नहीं निकली।'।

अच्छी तरह खूटी निकलवाकर और चेहर पर पाउडर मलवाकर, वह सलून से बाहर निकला। सामने टैक्सी का अड्डा था। बम्बई के खास आदम में उमने सी सी करके एक टक्सी ड्राइवर को अपनी आर आकृष्ट किया और उमली के इशारे से उसे टक्सी लाने के लिए कहा।

जब वह टक्सी में बैठ गया तो ड्राइवर ने धूमकर उससे पूछा, 'कहा जाना है साव ?'

इन चार शब्दों ने और खास तौर पर 'साव' शब्द ने खुशिया को सचमुच खुश कर दिया। मुस्कराकर उसने बड़े दोस्ताना लहजे में जवाब दिया बताएंगे। पहल तम आपेरा हाउस की तरफ चलो—लेमिंगटन रोड में होते हुए समझे ?

ड्राइवर ने मोटर की लाल मण्डी का सिर नीचे दबा दिया। टन टन' हुई और टक्सी ने लेमिंगटन रोड का रुख किया। लेमिंगटन रोड का जब

आखिरी सिरा आ गया तो खुशिया ने ड्राइवर को हिदायत दी, 'बायें हाथ मोड़ लो।'

टैक्सी बायें हाथ मुड़ गई। अभी ड्राइवर ने गियर भी न बदला था कि खुशिया ने कहा, 'यह सामने वाले खम्भे के पास रोक लेना जरा।'

ड्राइवर ने ठीक खम्भे के पास टैक्सी खड़ी कर दी। खुशिया दरवाजा खोलकर बाहर निकला और एक पान वाले की दुकान की तरफ बढ़ा। यहाँ से उसने पान लिया और उस आदमी से जो कि दुकान के पास खड़ा था, चन्द बातें की और उसे अपने साथ टैक्सी पर बैठाकर ड्राइवर से बोला 'सीधे ले चलो।'

देर तक टैक्सी चलती रही। खुशिया ने जिधर इशारा किया, ड्राइवर ने उधर हैण्डल फेर दिया। रौनक वाले कई बाजारों से होते हुए टैक्सी एक नीम रोशन गली में दाखिल हुई, जिसमें बहुत कम लोग आ जा रहे थे। कुछ लोग सड़क पर बिस्तर जमाए लेते थे, उनमें से कुछ बड़े इत्मीनान से चम्पी करा रहे थे। जब टैक्सी उन चम्पी कराने वाला से आगे निकल गई और काठ के एक बगलेनुमा मकान के पास पहुँची तो खुशिया ने ड्राइवर को ठहरने के लिए कहा 'बस, अब यहाँ रुक जाओ।'

टैक्सी ठहर गई तो खुशिया ने उस आदमी से, जिसकी वह पान वाले की दुकान से अपने साथ लाया था, धीरे से कहा, 'आम्मा, मैं यहाँ इंतजार करता हूँ।'

वह आदमी, बेवकूफी की तरह खुशिया की तरफ देखना हुआ टैक्सी से बाहर निकला और सामने वाले लकड़ी के मकान में घुस गया।

खुशिया जमकर टैक्सी के गद्दे पर बैठ गया। एक टांग दूसरी टांग पर रखकर उसने जब से बीड़ी निकालकर सुलवाई और दो कश लेकर बाहर सड़क पर फेंक दी। वह अब बड़ा बेचैन था इसलिए उसे लगा कि टैक्सी का इंजन बंद नहीं हुआ। उसके सीने में चूँक फन्फनाहट-सी हो रही थी इसलिए वह समझा कि ड्राइवर ने बिल बढाने के लिए पेट्रोल छोड़ रखा है। चुनाचे उसने तेज़ी से कहा, 'थो बेकार इंजन चालू रखकर तुम कितने पस और बढा लोगे ?'

ड्राइवर न घूमकर खुशिया की ओर देखा और कहा, 'सेठ, इजन तो बन्द है।'

जब खुशिया को अपनी गलती का अहसास हुआ ता-उमकी बेचनी और भी बढ गई और उसने कुछ कटन की बजाय होठ चवान शुरू कर दिए। फिर एकाएकी मिर पर किशनीनुमा काना टोपी पहनकर, जो अब तक उसकी बगल में दबी हुई थी, उसने ड्राइवर का कंधा हिलाया और कहा 'दसो, अभी छोकरी आएगी। जैस ही अदर आए तुम माटर चला दना समझे ? घबरान की कोई बात नहीं है, मामला ऐसा बसा नहीं।'

इतने में सामने लकड़ी वाले मकान से दो आदमी बाहर निकले। आगे आगे खुशिया का दोस्त था और उसके पीछे पीछे काता, जिसने शोख रंग की साड़ी पहन रखी थी।

खुशिया भट से उस तरफ को सरक गया, जिधर अधेरा था। खुशिया के दोस्त ने टैक्सी का दरवाजा खोला और काता को अदर दाखिल करके दरवाजा बन्द कर दिया। उसी समय काता की हैरत-भरी आवाज सुनायी दी जो चीख से मिलती जुलती थी, 'खुशिया, तुम ?'

हा मैं लेकिन तुम्हें रुपये मिल गए हैं न ?' खुशिया की मोटी आवाज बुलंद हुई, 'देखो ड्राइवर जूटू ले चलो।'

ड्राइवर ने सस्फ दबाया। इजन फडफडाने लगा। वह बात तो काता ने कही, सुनाई न द सकी। टैक्सी एक घबरे के साथ आगे बढ़ी और खुशिया के दोस्त को सड़क के बीच चक्कि विस्मित छोड़ उस नीम रोशन गली में गायब हो गई।

इसके बाद फिर किसीन खुशिया की माटरो की दुकान के उस परधद के चबूतरे पर नहीं देखा।

खोल दो

अमतसर न स्पेशन ट्रेन दोपहर दा बजे चली और आठ घण्टो के बाद मुगलपुरा पहुची। रास्ते म कई आदमी मारे गए बहुत से घायल हुए और कुछ इधर-उधर भटक गए।

सुबह दम बजे कम्प की ठण्डी जमीन पर जब सिराजुद्दीन ने आखें खोली और अपने चारो ओर मद औरता और बच्चा का ठाँ मारता समुंदर दखा तो उसके सोचने ममझने की शक्तिया और भी क्षीण हो गई और वह काफी देर तक मटमल आसमान को टकटकी बाधे घूरता रहा। या तो कम्प मे चारा ओर शोर सा मचा हुआ था लेकिन बूढ़े सिराजुद्दीन के कान जैसे बंद थे, उसे कुछ सुनाई नहीं देता था। कोई उसे देखता तो यही समझना कि वह किसी गहरी सोच मे डूबा हुआ है, लेकिन वास्तव मे ऐसा नहीं था। असल म उसके सारे हौशोहवास शिथिल हो चुके थे बल्कि पूरा शरीर, सारा अस्तित्व शून्य मे लटक गया था।

मटमले आसमान की ओर बिना किसी उद्देश्य के देखते देखते सिराजुद्दीन की नजरें सूरज से जा टकराईं। तज रोशनी उसके जजर शरीर की नस नस मे उतर गई और वह जाग उठा। और उसके दिमाग मे एक के बाद एक कई तस्वीरें घूम गईं—लूट मार, भाग, भाग दौड़, स्टेशन, गोलिया, रात और सकीना सिराजुद्दीन एकदम खड़ा हो गया और उसने पागला की तरह अपने चारो ओर फैले हुए समुंदर को खगालना शुरू कर दिया।

पूरे तीन घण्टे वह 'सकीना सकीना' पुकारता कैंप की धूल छानता रहा लेकिन कही भी उसकी जवान इकुलीती बेटी का पता नहीं चला। चारो ओर एक घाघली सी मची थी। कोई अपना बच्चा ढूँढ रहा था, कोई मा, कोई बीबी और कोई बेटी। सिराजुद्दीन थक हारकर एक तरफ बैठ गया और अपने दिमाग पर जोर देकर सोचने लगा कि सकीना उससे

कब और कहा बिछुड़ी थी। इसी सोच-विचार में उसका दिमाग बार-बार सकीना की माँ की लाश पर जम जाता, जिसकी सारी अतडिया बाहर निकली हुई थी और फिर इसके आगे वह कुछ न सोच पाता।

सकीना की माँ मर चुकी थी। उसने मिराजुद्दीन की आँखों के सामने दम तोड़ा था, लेकिन सकीना कहाँ थी, जिसके बारे में सकीना की माँ ने मरते समय कहा था, 'मुझे छोड़ो और सकीना को लेकर जन्दी से यहाँ से भाग जाओ।'।

सकीना उसके साथ ही थी। दोनों नये पाव भाग रहे थे। फिर सकीना का दुपट्टा गिर पड़ा था और उसे उठान के लिए सिराजुद्दीन ने रुकना चाहा था। इसपर सकीना ने चिल्लाकर कहा था, 'अम्माजी, छोड़िए।' लेकिन उसने दुपट्टा उठा लिया था, और यह साचत माचत उसने अपने कोट की उभरी हुई जेब की तरफ देखा और उसमें हाथ डालकर कपड़ा निकाला—सकीना का वही दुपट्टा था, लेकिन सकीना कहाँ थी?

सिराजुद्दीन ने अपने धके हुए दिमाग पर बहुत जोर दिया लेकिन वह किसी भी नतीजे पर न पहुँच सका। क्या वह सकीना को अपने साथ स्टेशन तक ले आया था? क्या वह उसके साथ ही गाड़ी में मगार थी? रास्ते में जब गाड़ी रोकੀ गई थी और बसवाई भीतर घुस आए थे तो क्या वह बेहोश हो गया था, जो वह सकीना को उठा ले गए?

मिराजुद्दीन के दिमाग में सवाल ही सवाल थे जवाब कोई नहीं था। उस हमदर्दी की ज़रूरत थी लेकिन चारों ओर जितने भी इमान फले हुए थे उन सबकी हमदर्दी की ज़रूरत थी। सिराजुद्दीन ने रोना चाहा मगर आँखों ने उसकी सहायता नहीं की—आँसू न जाने कहाँ गायब हो गए थे।

छ दिन के बाद होशो हवास कुछ ठिकाने आए तो सिराजुद्दीन उन लौंगो से मिला जा उसकी सहायता करने को तैयार था। आठ नौजवान थे जिनके पाम लारी थी बट्टे की। सिराजुद्दीन न उठे साख लाख दुआए दी और सकीना का हुनिया बताया। गौरा रंग है और बहुत ही खूब सूरत है। मुझपर नहीं अपनी माँ पर थी। उम्र यही सत्रह बरस के

करीब आखें बड़ी बड़ी, बाले बाल, दाहिने गाल पर मोटा-सा तिल मेरी इकलौती लडकी है, दूढ़ लाओ खुदा तुम्हारा भला करेगा।'

रजाकार (स्वयंसेवक) नौजवानों न बड़ी हमदर्दी के साथ बूढ़े सिराजुद्दीन को विश्वास दिलाया कि अगर उसकी बेटी जिंदा हुई तो दो चार दिन में ही उसके पास पहुंच जाएगी।

आठो नौजवानों ने कोशिश की, जान हथेली पर रखकर वे अमृतसर गए। कई औरतो, कई मदों और कई बच्चा को निकाल निकालकर उन्हें सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया, लेकिन दस दिन हो गए सकीना उन्हें वही न मिली।

एक दिन वे इसी सेवाकाय के सिलसिले में तारी पर अमृतसर जा रहे थे कि छहरे के पास सड़क के किनारे उन्हें एक लडकी दिखाई दी। लारी की आवाज सुनकर वह बिदकी और उसने सरपट भागना शुरू कर दिया। रजाकारों न भी तुरन्त लारी रोक और उतरकर सबके सब उसके पीछे भागे। एक छेत में उन्होंने उस लडकी को जा पकड़ा। देखा तो बहुत खूबसूरत थी, दाहिने गाल पर एक मोटा सा तिल भी था। एक नौजवान ने उससे कहा, 'बबराओ नहीं, क्या तुम्हारा नाम सकीना है?'

लडकी का रंग पीला पड़ गया और उसने कोई जवाब न दिया। फिर जब दारी-बारी सारे नौजवानों ने उसे दम दिलासा दिया तो उसकी बबराहट कुछ दूर हो गई और उसने मान लिया कि उसका नाम सकीना है और वह सिराजुद्दीन की बटी है।

आठ रजाकार नौजवाना न हर तरह से सकीना को दिलजोई की। उसे खाना खिलाया, दूध पिलाया और लारी में बिठा लिया। एक ने अपना कोट उतारकर उसे दे दिया क्योंकि दुपट्टा न होने के कारण वह बड़ी उत्तमन महसूस कर रही थी और बार बार बाही में अपने सीने को ढापने की असफल कोशिश कर रही थी।

कई दिन गुजर गए—सिराजुद्दीन को सकीना की कोई खबर न मिली। वह दिन-भर यहां वहां कम्पा और दफ्तरो के चक्कर काटता रहा

ठण्डा गोश्त

ईशरसिंह न होटल के कमरे में प्रवेश किया ही था कि कुलवत कौर तुरंत पलंग पर से उठ खड़ी हुई। अपनी तेज-तेज नजरो से उसने घूरकर ईशरसिंह की ओर देखा और वठकर दरवाजे की चटखनी चला दी। रात के बारह बज चुके थे। चारा ओर बड़ा रहस्यपूर्ण सनाटा छाया हुआ था।

कुलवत कौर पलंग पर आलथी पालथी मारकर बठ गई। ईशरसिंह जो शायद अपने छिन्न भिन्न विचारों के उलझे हुए धागे खोल रहा था, अभी तक हाथ में करपान लिए एक कोने में खड़ा था। कुछ क्षण तक इसी प्रकार चुप्पी छाई रही। कुलवत कौर को थोड़ी देर के बाद अपना आसन पसन्द न आया और वह दोनों टांगें पलंग से नीचे लटकाकर उठें हिलाने लगी। ईशरसिंह फिर भी कुछ न बोला।

कुलवत कौर भरे भरे हाथ पैरों की ओरत थी। चौड़े चकल कूल्हे थलथलाते गोश्त से भरे हुए। कुछ बहुत ही ज्यादा ऊपर की उठ हुए सीन, तेज आँखों ऊपर के होठ पर सुरमई गुबार और ठोड़ी की वनावट से पता चलता था कि बड़ी घडल्लेदार ओरत है।

ईशरसिंह यद्यपि कोन में मिर भुकाए चुपचाप खड़ा था सिर पर बसकर बधी हुई पगड़ी कुछ ढीली हो रही थी और उमका करपान वाला हाथ भी कुछ कुछ काप रहा था फिर भी उसके नैन नक्श और डीलडौल से पता चलता था कि वह कुलवत कौर जैसी ओरत के लिए मायतार पुरुष था।

कुछ क्षण जब इमी नरह चुप्पी में निकल गए तो कुलवत कौर छलक पड़ी। लेकिन तब तेज आँखों को नचाकर वह केवल इतना कह सकी, ईशरसिंह !

ईशरसिंह ने गदन उठाकर कुलवत कौर की ओर दखा फिर उसकी नजरो की ताब न लाकर मुह दूसरी ओर मोड़ लिया।

कुलवत कीर चिल्लाई, 'ईशरसिंह', फिर तुरन्त ही स्वर को भीचत हुए पलंग पर से उठकर उसकी ओर बढ़ते हुए बोली, 'कहा गायब रह तुम इतने दिन ?'

ईशरसिंह न अपने सूखे हाठों पर जबान फेरी, 'मुझे मालूम नहीं।

कुलवत कीर भिना गई 'यह कोई भा-या जवाब है ?'

ईशरसिंह न करपाज एक आर फेंक दी और पलंग पर लेट गया। ऐसा मालूम होना था कि वह कई दिनों का बीमार है। कुलवत कीर ने पलंग की ओर देखा जो अब ईशरसिंह म लबालब नरा हुआ था, उसके मन में महानुभूति पदा हो गई, उसके माथे पर हाथ रखकर उसने बड़े प्यार में पूछा, 'जानी, क्या हुआ है तुम्ह ?'

ईशरसिंह छन की ओर देख रहा था। उसी नजरों हटाकर कुलवत कीर के चिरपरिचित चेहर की ओर देखा, 'कुलवत', वह बस इतना ही कह पाया।

आवाज में पीडा थी। कुलवत कीर सारी की सारी सिमटकर अपने ऊपर बैठे होठ में आ गई। 'हा जानी' कहकर वह उसे हल्के हल्के दाता से बाटन लगी।

ईशरसिंह ने पगड़ी उतार दी। फिर कुलवत कीर की ओर सहाय लेने वाली नजरों से देखा। उसके गोस्त-भरे कून्ह पर जोर से घप्पा मारा और सिर को झटका देकर अपने आपसे कहा, 'यह कुडी-या दिमाग ही खराब है।'

झटका देने से उसके केश खुल गए। कुलवत कीर उगलियों में उनमें कपी करने लगी। ऐसा करते हुए उसने बड़े प्यार से पूछा, 'ईशरसिंह, कहा रहे तुम इतने दिन ?'

'तुरे की भा के घर,' ईशरसिंह न कुलवत कीर को धूरकर देखा और फिर एकाएक उसके उमरे हुए सीने की मनने लगा, 'कमम बाह गु' की बड़ी जानदार औरत हो।'

कुलवत कीर ने एक अंदा के साथ ईशरसिंह के हाथ झटक दिए और पूछा, 'तुम्हें मेरी वसम है, बताओ, कहा रहे ? सहर गए थे ?'

ईशरसिंह ने एक ही लपेट में अपने बालों का जूड़ा बनात हुए उतर दिया, 'नहीं !'

कुलवत कीर चिढ़ गई, 'नहीं, तुम जरूर बहर गए थे, और तुम बहुत सा रपया लूटा है, जो मुझमें छुपा रहे हो !'

'वह अपने बाप की तुलना न हो जो तुमसे झूठ बोले !'

कुलवत कीर थोड़ी दूर के लिए मौन हो गई, फिर एकदम भड़ककर बोली, लेकिन मेरी समझ में नहीं आता, उस रात तुम्हें क्या हुआ था ? अच्छे भले मेरे साथ लेट थे, मुझे तुमने वह सारा गहने पहना रहे थे जो तुम शहर से लूटकर लाए थे, मरी भविष्या से रहे थे, पर न जान तुम्हें एकदम क्या हुआ, उठे और कपड़े पहनकर बाहर निकल गए !'

ईशरसिंह का चेहरा उतर गया। यह परिवर्तन देखते ही कुलवत कीर न बर्हा, दस्ता कैसे रंग पीला पड़ गया है—ईशरसिंह, कसम वाहि गुरु की, जरूर दाल में कुछ काला है !'

तेरी जान की कसम, कुछ भी नहीं !'

ईशरसिंह की आवाज बजान थी। कुलवत कीर का सदेह और भी दृढ़ हो गया। ऊपर का हाठ भीचकर उसने एक-एक शब्द पर जोर दते हुए कहा, 'ईशरसिंह, क्या वान है ? तुम वह नहीं रहे जो आज से आठ दिन पहले थे।'

ईशरसिंह एकदम उठ बैठा जिस किसीने उसपर हमला कर दिया हो। कुलवत कीर को अपनी शक्तिशाली बाहा में समेटकर उसने पूरे जार से उसे नभोड़ना शुरू कर दिया, जानी, वही हूँ घुट घुट पा जाकिया, तेरी निकले टुट्टा दी गर्मी

कुलवत कीर ने कोई हस्तक्षेप न किया लेकिन वह शिवायत करती रही, 'तुम्हें उस रात क्या हो गया था ?'

धुरे की भा का वह हो गया था।

बताओगे नहीं ?'

कोई बात हो तो बताऊँ।'

'मुझे अपने हाथ से जताओ जो झूठ बोलो !'

ईशरसिंह ने अपनी बाहें उमकी गदन के गिद्ध डाल दी और हाँ

उसके हाथों में गाड़ दिए। मूछा के बाल कुलवत कौर के नथुना में धसे तो उस छींक आ गई।

दोनों हसा लगे।

ईशरसिंह ने अपनी फतूही उतार दी और कुलवत कौर की मार वासना भरी नजरो से देखकर कहा, 'आओ जानी, एक बाजी तांग की हो जाए।'

कुलवत कौर के ऊपरी होठ पर पमीने की न-ही-न-ही मूढ़ें फूट आई। एक अंदा के साथ उसने अपनी आंखों की पुतलिया घमाई और बोली 'चल दफान हो।'

ईशरसिंह ने उसके भरे हुए कूल्हे पर जोर से चोटकी भरी। कुलवत कौर तड़पकर एक ओर हट गई, 'न कर ईशरसिंह, मेरे बदन होता है।'

ईशरसिंह ने आगे बढ़कर कुलवत कौर का ऊपरी होठ अपने दातों तले दबा लिया और कचकचाते लगा। कुलवत कौर बिलकुल पिघल गई। ईशरसिंह ने अपना कुता उतारकर फेंक दिया और कहा, 'लो, फिर हो जाए तुम चाल।'

कुलवत कौर का ऊपरी होठ कपकपात लगा। ईशरसिंह ने दोनों हाथों से कुलवत कौर की कमीज का घेरा पकड़ा और जिस तरह बकरे की खाल उतारते हैं, कमीज उतारकर एक ओर रख दी। फिर उसने धूर-धूर उसके नंगे बदन को देखा और जोर से उसके बाजू पर चोटकी भरते हुए कहा, 'कुलवत, कसम बाहू गुरु की, बड़ी करारी औरत है तू।'

कुलवत कौर अपने बाजू पर उभरते हुए लाल घबघ को देखते हुए चाली, 'बड़ा जालिम है तू ईशरसिंह।'

ईशरसिंह अपनी घनी काली मूछा में मुस्कराया 'होने दे आज जुम' और यह कहकर उसने और अधिक जुलूम डाने शुरू किए। कुलवत कौर का ऊपरी हाठ दातों तले कचकचाया, कान की लवा को काटा, उभरे हुए सीने को म-भौड़ा, भरे हुए कूल्हा पर आवाज पैदा करने वाले चाट मार, गालों के मुह भर भरके घुम्बन लिए। चूस चूस के उसका सारा सीना चूको से लयेठ दिया। कुलवत कौर तेज आँच पर चढ़ी हुई हाण्टी की तरह

उबलने लगी, लेकिन यह सब करने पर भी ईशरसिंह अपने आपमें गर्मी पैदा न कर सका। जितने गुर और जितने दाव उसे याद थे सबके सब उसने पिट जान वाले पहलवान की तरह आजमा डाले पर कोई भी बार-बार न हुआ। कुलवत कौर जिम्मे वदन के सारे तार तनकर आप ही आप बज रहे थे—‘आवश्यक छेड़ अड़ स तग आकर बोली, ‘ईशरसिंह, काफी फेट चुका, अब पत्ता फेंक।’

यह सुनते ही ईशरसिंह के हाथ में जैम ताश की सारी गड़ड़ी नीचे फिमत गई। हाफना हुआ वह कुलवत कौर के पहलू में लट गया और उसके माथे पर ठण्डे पसीने के लप होन लगे।

कुलवत कौर ने उस गमाने की बहुत कोशिश की लेकिन असफल रही। अब तक सब कुछ मुह से बहे बिना होता रहा था, लेकिन जब कुलवत कौर के तन हुए अगो को घोर निराशा हुई तो वह झटका पलंग से उतर गई। सामने खूटी पर चादर पड़ी थी, उस उतारकर उसने जल्दी जल्दी अपने शरीर के गिद सपेटा और नथुने फुलाकर बिफरे हुए स्वर में बोली, ईशरसिंह वह कौन हुरामजादी है, जिसके पास तू इतने दिन रहकर आया है, जिसने तुझे निचाड़ डाला है?’

ईशरसिंह उमी तरह पलंग पर लेटा हाफना रहा। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुलवत कौर को बवश उबलने लगी, ‘मैं पूछती हूँ, कौन है वह चुडल, कौन है वह लिपती, कौन है वह चोर पत्ता?’

ईशरसिंह ने निढाल स्वर में उत्तर दिया ‘कोई भी नहीं कुलवत, कोई भी नहीं।’

कुलवत कौर ने अपने भरे हुए कूल्हा पर हाथ रखकर बड़ी दबता से कहा, ईशरसिंह आज सब झूठ जानकर रहूंगी—खाओ बाह गुरुजी की वसम—क्या इसकी तह में कोई औरत नहीं?

ईशरसिंह ने कुछ कहना चाहा, लेकिन कुलवत कौर ने उससे बोलने से पहले एक बार फिर कड़े स्वर में कहा ‘वसम खान से पहले सोव ले कि मैं भी सरदार निहालसिंह की बटी हूँ बोटी बोटी नोच डालूंगी अगर तूने झूठ बोला—ले अब खा बाह गुरुजी की वसम क्या इसकी तह में

कोई धीरत नही ?'

ईशरसिंह न बड़े दुःख के साथ 'हाँ' में अपना गिर हिनाया। कुलवत कौर बिलकुल सीवानी हो गई। लपककर कौन में से करपान उठाई। म्यान को केने के छिनवे की तरह उतारकर एक धार फेंका और ईशरसिंह पर बार कर दिया।

दूसर ही क्षण लड़का फव्वारा छूट पड़ा। कुलवत कौर की इसमें भी तसल्ली न हुई तो उसी जगली गिल्लियों की तरह ईशरसिंह के बाल नोचने शुरू कर दिए। साथ ही माथे वह अपनी अनात सीत की मोटी-माटी गालिया देती रही। ईशरसिंह ने थोड़ी देर के बाद क्षीण स्वर में प्रार्थना की, 'जाने दे कुलवत, अब जाने दे।'

आवाज पीछा से परिपूर्ण थी। कुलवत कौर पीछे हट गई।

लड़का ईशरसिंह के गले से उड़-उड़कर उमकी मूछों पर गिर रहा था। उमने अपने कापते हुए हाठ खोले और कुलवत कौर की धार धरवाह और उलाहने की मिली-जुली नज़रों में देखते हुए बोला, 'मेरी जान, तुमने बहुत जल्दी की, लेकिन जो हुआ, ठीक ही हुआ।'

कुलवत कौर की ईर्ष्या फिर भड़की, 'मगर वह कौन है तुम्हारी मा ?'

लड़का ईशरसिंह की जवान तक पहुंच गया। जब उमने उसका स्वाद चखा तो उसके बदन में झुंझुरी-सी दौट गई।

'और मैं मैं मैनी-या छ आदमिया को कल कर चुका हू इसी करपान में'

कुलवत कौर के दिमाग में केवल दूसरी धीरत थी, 'मैं पूछती हूँ, कौन है वह हरामजादी ?'

ईशरसिंह की आँखें धुंधला रही थी। एक हल्की-सी चमक उनमें पैदा हुई और उमने कुलवत कौर में कहा, 'गाली न दे उस भड़की को।'

कुलवत चिल्लाई 'मैं पूछती हूँ, वह है कौन ?'

ईशरसिंह के गले में आवाज रुक गई, 'बताता हूँ,' कहकर उसने अपनी गदन पर हाथ फेरा और उसपर अपना जिंदा लड़का देखकर मुस्कराया, 'इंसान माना भी अजीब चीज है।'

कुलवत कौर उसने उत्तर की प्रतीक्षा में थी, 'ईशरसिंह, तू मनलव

की बात कर ।

ईशरसिंह की मुस्कराहट उसकी लहू भरी मूछा में और अधिक फैल गई, मतलब ही की बात कर रहा हूँ गता चिरा हुआ है मा-या मेरा, अब धीरे धीरे ही सारी बात बताऊंगा ।'

और जब वह बात बताने लगा तो उमक माये पर फिर ठण्डे पसीने के लेप होन लग, 'कुलवत ! मर जाऊँ मैं तुम्हें उही बना सकता, मेरे साथ क्या हुआ इसान कुडी-या भी अजीब चीज है शहर में लूट मत्ती तो सब लोग की तरह मैंने भी उसमें हिस्सा लिया गहन पाते और रुपये पैस जा भी हाथ लग, वह मैंने तुम्हें दे दिए लेकिन एक बात तुम्हें न बताऊँ ।'

ईशरसिंह ने घाव में पीड़ा हुई और वह कराहने लगा । कुलवत कौर ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया और बड़ी निदयता से पूछा, 'कौन-सी बात ?'

ईशरसिंह ने मूछा पर टपकते हुए लहू को फूँक मारकर उड़ाते हुए कहा, 'जिस मकान पर मैंने घावा बोता था उसमें सात उसमें मात आदमी थे सब मैंने मार कर दिए इसी करपान में जिससे तुने मुझे छोड़ इस मुन एक लड़की की बहुत सुंदर उसकी उठाकर मैं अपने साथ ले आया ।'

कुलवत कौर चुपचाप सुनती रही । ईशरसिंह ने एक बार फिर फूँक मारकर मूछा पर से लहू उड़ाया, 'कुलवत जानी, मैं तुमसे क्या कहूँ, कितनी सुंदर थी, मैं उसे भी मार डालता, पर मैंने कहा, नहीं ईशरसिंह, कुलवत कौर के लहू हर रोज मजे लता है, यह मवा भी खल देल ।' कुलवत कौर ने केवल इतना कहा, 'हूँ !'

और मैं उस वधे पर डालकर चन दिया रास्त में क्या कह रहा था मैं ? हा रास्त में नहर की पटरी के पास बीहड़ की झाड़ियाँ तले मैंने उसे तिरा दिया पत्ल गावा कि फेंटू लेकिन सयाल आया कि नहीं 'यह कहते-कहते ईशरसिंह की जगान सूग गई ।

कुलवत कौर ने धूँक निगलकर अपना कण्ठ तर किया और पूछा, फिर क्या हुआ ?'

ईशरसिंह के कण्ठ से बड़ी मुश्किल से ये शब्द निकले, 'मैंने पत्ता फेंका लेकिन लेकिन उसकी आवाज दूँ गई।

कुलवत कौर ने उसे झभोड़ा, 'फिर क्या हुआ ?'

ईशरसिंह ने अपनी बद होती हुई आँखें खोली और कुलवत कौर के शरीर की ओर देखा, जिसकी बोटी-बोटी फड़क रही थी 'वह मरी हुई थी लाश थी बिलकुल ठण्डा गोस्त जानी मुझे अपना हाथ दे '

कुलवत कौर ने अपना हाथ ईशरसिंह के हाथ पर रखा, जो वफ से भी ज्यादा ठण्डा था।

काली सलवार

दिन्नी आन से पहल वह अम्बाला छावनी मे थी, जहा कई गोरे उसके याहूक थे। उन गोरे घाटका के कारण वह अंग्रेजी के दम-बारह बाक्य मीप गई थी। उन बाक्या का वह साधारण बोल चाल म इस्ते-मा नही करती थी, लेकिन जब वह दिल्ली मे आई और उसका कारोबार न चला तो एक दिन उमने अपनी पड़ोमिन तमचा जान से कहा

‘दिस लैफ बरो बड यानी यह जिन्दगी बहुत बुरी है जबकि खाने का ही नही मिलता।’

अम्बाला छावनी म उसका घधा बहुत अच्छी तरह चलता था। छावनी के गोरे शराब पीकर उसके पास भी घा जान थे और वह बीस-तीस रुपय पैदा कर लिया करती थी। ये गार उसके देशवासियों के मुकाबले मे बहुत अच्छे थे। इसमे सदेह नही कि वे एमी भाषा बोलात थे जिनका मतलब सुलताना की समझ म नही आता था, लेकिन उनकी भाषा स यह अज्ञानता उसके लिए बड़ी हितकर सिद्ध होती थी। अगर वे उममे कुछ रियायत चाहते तो वह मिर हिलाकर कह दिया करती, ‘साय हमारी समझ म तुम्हारी बात नही आनी।’

और, अगर वे जल्द से उगादा छेड छाड करने तो वह उनको अपनी भाषा म गालिया दना शुरू कर देती थी। आश्चर्य मे उसके मुह की आग दमते तो वह उनसे कहती

‘साय, तुम एकदम उल्लू का पटठा है। हरामजादा है समझा।’ यह कहते हुए वह अपन स्वर म सल्ली पदा नही करती थी बल्कि बड़े प्यार स यह सब कहती थी। गोरे हस दंत और हसते समय वे सुलताना की बिल्कुल उल्लू का पटठे दिखाई देत।

लेकिन यहां दिल्ली मे वह जब स आड थी, एक गोरा भी उसके यहां नही आया था। तीन महीने उम हिंदुस्तान के इस गहर मे रहत हो

गए थे, जहा उसने मुना था कि बड़े साट माहब रहते हैं, जो गर्मिया में शिमले चले जाते हैं। इन तीन महीनों में केवल छ आदमी उसके पास आए थे—केवल छ, अर्थात् महीने में दो—और इन छ आदमियों से उसने मुदा झूठ न बुलवाए तो साढ़े अठारह रुपये बसूल किए थे।

साढ़े अठारह रुपये तीन महीना में। बीस रुपये मासिक तो उम बोठे का किराया ही था, जिसे भकान भालिक अंग्रेजी भाषा में फ्लैट कहता था। उस फ्लैट में ऐमा पाखाना था जिसमें जमीर खींचने से सारी गंदगी पानी के जोर से एकदम नीचे नल में गायब हो जाती थी और बड़ा शोर होना था। 'गुरू गुरू' में ता हम शोर ने उसे बहुत डराया था। पहले दिन जब वह पाखाने में गई तो उसकी कमर में बड़ा दर्द हो रहा था। उसने लटकी हुई जमीरा का सहारा ले लिया, जिसके बांधे में उसका खमाल था कि उस जमीरी औरता के सहारे के लिए ही लगाई गई थी, लेकिन उपा ही उस जमीर को पकड़कर उठना चाहता ऊपर लट खट सी हुई और फिर पानी इस शोर के साथ बाहर निकला कि डर के मारे उसने मुह से चीख निकल गई।

खुदावरस दूसरे कमरे में अपना फोटोग्राफी का सामान ठीक कर रहा था और एक साफ बोतल में हाइड्रोक्वीनीन डाल रहा था कि उसने सुनताना की चीख सुनी। दौड़कर बाहर निकला और सुनताना में पूछा

‘क्या हुआ ? यह चीख तुम्हारी थी ?’

सुनताना का दिल धड़क रहा था। उसने कहा, ‘यह मुझा पाखाना है या क्या है ? बीच में यह गैसगाडियो की तरह जमीर क्या लटका रमी है ? मेरी कमर में दर्द था, मैंने कहा, चलो इसका सहारा ले लूंगी, पर इस मुई जमीर को छेड़ना था कि वह धमाका हुआ कि मैं तुमसे क्या कहूँ।’

इसपर खुदावरस बहुत हंसा था और उसने सुनताना को उम पाखाने की भावत सब कुछ बता दिया था कि वह नये फ्लैट का पाखाना है, जिसमें जमीर खींचने से सारी गंदगी नीचे जमीन में चली जाती है।

खुदावरस और सुनताना का आपस में बने सम्बन्ध हुआ, यह एक

लम्बी कहानी है। खुदाबख्श रावलपिण्डी का था। मद्रिब पास धरन के बाद उसन लारी चलाना सीखा और फिर चार साल तब रावलपिण्डी और कश्मीर के दरमियान लारी चलान का नाम करता रहा। उसके बाद कश्मीर में उसकी दोस्ती एक औरत से हो गई और वह उस भगा-कर लाहौर ल आया। लाहौर में चूकि उस कोई काम न मिला, इसलिए उसन उम औरत का पेशे पर बिठा दिया। दो-तीन साल तक तो यह सिलमिला चलता रहा फिर वह औरत किसी और के साथ भाग गई। खुदाबख्श को पता चला कि वह अम्बाला में है। वह उसकी तलाश में अम्बाला आया। यहां उस औरत की बजाय उस सुलताना मिल गई। सुलताना ने उसको पसंद किया अतएव दोनों में सम्बन्ध हो गया।

खुदाबख्श के आने से सुलताना का कारोबार एकदम धमक उठा। औरत चूकि अधविश्वासी थी, इसलिए उसने समझा कि खुदाबख्श बड़ा भाग्यवान है जिसके आने से इतनी उन्नति हो गई, अतएव उसकी दृष्टि में खुदाबख्श का महत्त्व और भी बढ़ गया।

खुदाबख्श आदमी मेहनती था। सारा दिन हाथ पर हाथ रखकर बैठना उसे पसंद नहीं था, इसलिए उसन एक फोटोग्राफर से दोस्ती पैदा कर ली, जो रेलवे स्टेशन के बाहर कमरे में फोटो खींचा करता था। उससे खुदाबख्श ने फोटो खींचना सीखा, फिर सुलताना से साठ रुपये लेकर कैमरा भी खरीद लिया। धीरे धीरे एक पर्दा बनवाया, दो फुसिमा खरीदी और फोटो धोने का सारा सामान लेकर उसने अलग से अपना काम शुरू कर दिया।

काम चल निकला और कुछ दिनों के बाद ही उसने अपना अट्टा छावनी में कायम कर लिया। यहां वह गोरों के फोटो खींचता। एक महीने के भीतर भीतर छावनी के बहुत से गोरों से उसका परिचय हो गया, अतएव वह सुलताना को भी वही छावनी में ले गया और खुदाबख्श ही के माध्यम से कई गोरों सुलताना के स्थायी ग्राहक बन गए।

सुलताना ने काना के बुंदे खरीद। साढ़े पांच ताल की आठ बगनिया भी बनवाई। दस पन्द्रह अच्छी अच्छी साड़ियां भी खरीद ली। घर में

फर्नीचर भी आ गया। मतलब यह कि अम्बाला छावनी में वह काफी खुशान थी कि एकाएक न जान मुदावररा के दिल में क्या समझ कि उसने दिल्ली जाने की ठान ली। सुलताना कैसे इनकार करती जबकि मुदावररा का वह अपने लिए बड़ा शुभ मानती थी। उसने तुशी-मुशी दिल्ली जाना मान लिया, बल्कि उसने यह भी सोचा कि इतने पड़े राह में, जहालाट माहव रह न हैं, उसका पधा और भी खलेगा। अपनी सहेलिया स वह दिल्ली की प्रशंसा सुन चुकी थी। फिर वहा हजरत निजामुद्दीन औलिया की दरगाह भी थी जिसके प्रति उसके दिल में बड़ी श्रद्धा थी। अतएव जल्दी-जल्दी घर का भारी सामान बेच याचकर वह मुदावररा के साथ दिल्ली आ गई। यहा पहुचकर मुदावररा ने बीस रुपये मामिक पर यह पनैट लिया, जिसमें दोना रहने लगे।

एक ही ठग के नय भक्तानों की लम्बी सी पकि मंडव के साथ-साथ चली गई थी—मुनिसिपल बमेटी न शहर का यह भाग विशेष रूप से बेव्याधों के लिए मुखरर कर दिया था ताकि वे शहर में जगह जगह अपने अड्डे न बनाएं। नीचे दुकानें थी और ऊपर दोमजिना रिहाइशी पनट। सारी इमारतें चूकि एक ही डिजाइन की बनी हुई थी, इसलिए धुरू गुरू में सुलताना की अपना फ्लैट बूखन में बहुत कठिनाई हुई थी, लेकिन फिर जब नीचे के लाण्डरीवाले ने अपना भारी-भरकम बोड ऊपर लटका दिया तो उसे एक पक्की निशानी मिल गई—यहा मले कपडा की धुलाई की जाती है यह बोड पडते ही वह अपना पनैट तलाश कर लिया करती थी। इसी प्रकार उसने और भी बहुत सी निशानिया पायम कर ली थीं। उदाहरणन जहा बड़े-बड़े अक्षरा में 'कोपने की दुका' लिखा हुआ था, वहा उसकी सहेली हीराबाई रहती थी, जो कभी-कभी रेडियो घर में गाने जाती थी। जहा 'शुल्फा (सज्जनी) के खाने का आला इतिजाम है' लिखा था, वहा उसकी सहेली मुन्नार रहती थी। निवाड के बारखान के ऊपर अनचरी रहती थी, जो उनी बारखाने के सठके पास 'मुलाजिम थी। सठ साहब का चूकि रात के समय अपने कारखाने की देखभाल करनी होती थी, इसलिए वे अन-वगी के पास रहते थे। दुकान खोलत ही ग्राहक थोड़े ही आत हैं—जब

सुलताना एक महीन तक बेकार रही तो उसने यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी। जब दो महीने गुजर गए और कोई आदमी उसके कोठे पर न आया तो उसे बड़ी चिन्ता हुई। उसने खुदाबरश से कहा

‘क्या बात है खुदाबरश, पूरे दो महीने हो गए हैं हमें यहाँ आए हुए, किसीने इधर मुह भी नहीं किया। मानती हूँ, आजकल बाजार बहुत मँदा है, पर इतना मँदा भी तो नहीं कि महीने में एक भी गवन देखने में न आए।’

खुदाबरश को भी यह बात बहुत पहले से खटव रही थी लेकिन वह चुप था। सुलताना न जब स्वयं ही बात छोड़ी तो उसने कहा ‘मैं कई दिनों से इस बारे में सोच रहा हूँ। एक ही बात समझ में आती है कि जग की वजह से लोग बाग़ दूमर घघों में पड़कर इधर का रास्ता भूल गए हैं या फिर यह हो सकता है कि’

वह इसके आगे कुछ कहने ही वाला था कि सीढियाँ पर किसीक चढ़ने की आवाज़ आई। खुदाबरश और सुलताना दोनों के कान खड़े हो गए। थोड़ी देर के बाद दरवाजे पर दस्तक हुई। खुदाबरश ने सपककर दरवाजा खोला, एक आदमी भीतर आया। यह पहला ग़ाहक था। इसके बाद पाँच आए अर्थात् तीन महीने में कुल छ, जिनसे सुलताना ने केवल साढ़े अठारह रुपये वसूल किए।

बीस रुपये मासिक तो फलट के किराय में चले जात थे, पानी का टैंक और बिजली का बिल अलग। इसके अतिरिक्त घर के आम खर्च, खाना पीना कपड़े-लत्ते दवा दारू और आमदनी कुछ भी नहीं थी। तीन महीने में साढ़े अठारह रुपये आए तो इस आमदनी तो नहीं कहा जा सकता। सुलताना परेशान हो गई। साढ़े पाँच तोले की आठ कगनियाँ, जो उसने अवाले में बनवाई थी एक-एक करके बिक गई। जब आखिरी कगनी की बारी आई तो उसने खुदाबरश से कहा

‘तुम मेरी गुनो और चलो वापस आगले—यहाँ क्या धरा है? भई होगा, पर हम तो यह ग़हर रास नहीं आया। तुम्हारा काम भी वहाँ खुब चलता था। चलो वही चलते हैं। जो नुकसान हुआ है उस अपना सिर-सदका समझो। इस कगनी को बेचकर आगला, मैं सामान बगैरा थापकर

रखनी हूँ। आज ही रात की गाड़ी में यहाँ से चल दोगे।'

सुदावहन ने कमनी सुलताना के हाथ में ले ली और कहा, 'ग़ी जाने मन। अचानक नहीं जाएंगे। यही दिल्ली में रहकर बमाएंगे। ये तुम्हारी चूड़ियाँ सबकी सब यहीं बापस आएंगी। अल्ताह पर अरोगा रणो, वह बड़ा कारनामा है। यहाँ भी कोई न कोई सबब बना ही देगा।

सुनताना चुप हो रही थी और या आगिरी कमनी भी हाथ में उतर गई। कुछे हाथ दसकर उगयो बहुत दुःख होना था, पर क्या करती। पैर भी तो किमो होले भरना था।

जब पांच महीने गुजर गए और आमदनी छब के मुकाबले में चौथाई से भी कम रहो तो सुलताना की परेशानी और अधिक बढ़ गई। सुलताना को इसका भी दुःख था। इसमें कोई शक नहीं कि पहाग में उसकी दोस्तान मिलने वालीया भोजूद थी, जिनके साथ वह अपना समय काट सकती थी, लेकिन प्रतिदिन उठने यहाँ जाना और घण्टो बैठे रहना उगयो बहुत बुरा लगता था। अतएव धीरे धीरे उसने उन गहेलियाँ में मित्रता-जुनना भी बढ़ कर दिया और मारा निज अपने सुनमान मजान में बैठे रहती। कभी छानिया बाटती रहनी, कभी अपने पुरान और फटे हुए कपडा को सीती रहती और कभी बाहर बानकनी में आकर जपले के साथ लगकर गवड़ी हो जाती और मामने देनवे शेड में चुपचाप सहे या इधर-उधर घट करत हुए इजनों की ओर निहारती रहती।

मक्क के दूसरी ओर मालगोदाम था जो हम बोन से उम बोन तक फैला हुआ था। दाहिने हाथ की ओर की छन व नीचे बड़ी बड़ी गाँवें पड़ी रहती थी और हर प्रकार के माल गमबाय के ढेर में लग रहत थे। बायें हाथ की मुला मैदान था जिसमें देन की अनमिनत पटरियाँ बिछी हुई थी। धूप में लोहे की ये पटरियाँ चमकती तो सुनताना अपने हाथों की ओर देखती जिस पर नीली नीली नाडियाँ जिसकुन उन पटरियों की तरह उभरी रहती थी। इस लम्बे और मुले मैदान में हर समय इजनों और गाड़ियाँ चलती रहती—कभी इधर, कभी उधर। बानावरण में इजनों और गाड़ियाँ की छक छक, फर फर गूजती रहनी थी। सुबह-सवेर जब वह उठकर बानकनी में आती तो इधर उधर सहे इजनों के

मुह से गाढ़ा गाढ़ा घुआ निकलकर गदले आकाश में भारी भरकम आद-
मिया की तरह उठता नजर आता । आप के बड़े-बड़े वादल भी गोर
मचात हुए पटरिया से उठते और आख भपकने की देर में हवा में धूल-
मिल जाते । फिर कभी कभी जब वह गाड़ी के किसी डब्बे को, जिसे डजन
ने धक्का देकर छोड़ दिया होता था, अकेले पटरियों पर चलना हुआ
देखती तो उसे अपना खयाल आ जाता । वह सोचती कि उसे भी
किसीन जि दगी की पटरी पर धक्का देकर छोड़ दिया है और वह आप
ही आप बड़ी चली जा रही है—न जाने कहा, किधर ? और फिर एक
दिन ऐसा आएगा जब वह कहीं रुक जाएगी । किसी ऐसे स्थान पर जो
उसको दखल भाला नहीं होगा । अम्बाला छावनी में भी उसका घर स्टेशन
के पास था, लेकिन वहां कभी उसने इन चीजों को इस नजर से नहीं
देखा था । और अब तो कभी कभी वह यह भी सोचने लगती थी कि
यह जो सामन रेन की पटरिया का जाल-सा बिछा है और जगह जगह
से आप और घुआ उठ रहा है यह एक बहुत बड़ा चक्का है जिसमें गाड़ी
रूपी अनगिनत वेश्याएं वास करती हैं । कई बार मुलताना को ये डजन
सेठ मालूम होत जो कभी कभी अम्बाला में उसके यहां आया करते थे ।
फिर कभी कभी जब वह किसी डजन को धीरे धीरे गाड़ियों की पंक्ति के
पास से गुजरता देखती तो ऐसा लगता कि कोई आदमी चक्का के किसी
बाजार में से ऊपर कोठी की ओर देवता हुआ चला जा रहा है ।

मुलताना समझती थी कि इस प्रकार के विचार आने का कारण
दिमाग की सराबी है, अतएव जब ऐसे विचार बहुत अधिक आने लगे तो
उसने बालकनी में जाना ही छोड़ दिया । खुदावक्श से उसने कई बार
कहा

‘देखो मेरे हाल पर रहम करो । यहां घर में रहा करो, मैं सारा
दिन यहां बीमारा की तरह पड़ी रहती हूँ ।’

लेकिन वह हर बार यह कहकर मुलताना की तसल्ली कर देता,
‘जानेमन मैं बाहर कुछ बमाने की फिर कर रहा हूँ । अन्लाह ने चाहा
तो कुछ बिना मैं ही बेडा पार हो जाएगा ।’

पूर पाच महीन हो गए थे, मगर अभी तक न सुलताना का बेटा पार हुआ था न खुदावन्ग का। मुहरम का महीना सिर पर आ रहा था और सुलताना के पास काले कपड़े बनवाने के लिए फूटी कौड़ी भी न थी। मुस्तार ने लेडी हेमिस्टन की एक नई काट की कमीज बनवाई थी जिसकी आस्तीनों काली जार्जेट की थी। उसके साथ मैच करने के लिए उसके पास काली साटन की सलवार थी, जो काजल की तरह चमकती थी। अनवरी न रेसमी जार्जेट की एक बड़ी नफीस साड़ी खरीदी थी। उसने सुलताना को बताया था कि वह इस साड़ी के नीचे सफ़द बोस्की का पेट्री-कोट पहनगी क्योंकि यह नया फैशन है। इन साड़ी के साथ पहनने के लिए अनवरी काली मलमल का जूता लाई थी, जो बड़ा नाजुक था। सुलताना ने जब ये सारी चीजें देखी तो उसे इस एहसास से ग्रस्त हो कि वह हुआ कि मुहरम मनाने के लिए ऐसा लिबास खरीदन की उसमें सामर्थ्य नहीं है।

अनवरी और मुस्तार के पास यह लिबास देकर जब वह घर आई तो उसका मन बड़ा खिन्न था। कुछ ऐसा लगता था कि उसके भीतर एक फोड़ा-सा पैदा हो गया है। घर बिल्कुल खाली था। खुदावन्ग नियमानुसार बाहर गया हुआ था। काफी देर तक वह दरी पर गावतकिया सिर के नीचे रहे चुपचाप सेटी रही। ऊँचाई के कारण जब गदा अकड़-सी गई तो बाहर बालकनी में चली गई ताकि चितावद्दक विचारों को मन से निकाल सके।

सामने पटरियों पर गाड़ियां कड़ियाँ खड़े थे पर इज्जत कोई भी न था। शाम का समय था। मडक पर छिड़काव हो चुका था और ऐंसे लागी का आवागमन शुरू हो गया था जो ताक भाक करने के बाद चुपचाप अपने घरों का रास्ता पकड़ते थे। ऐंसे ही एक आदमी न गदन उठा कर सुलताना की ओर दवा। सुलताना मुस्करा दी। लेकिन शीघ्र ही उसकी नज़रें उसपर म हट गई क्योंकि अब सामने की पटरियां पर वही स एव इज्जत निबल आया था। सुलताना बड़े ध्यान से इज्जत की ओर देखन लगी और ऐंसे ही यह विचार उसके मन में आया कि इज्जत ने भी काला लिबास पहन रखा है—यह विचित्र विचार मन से भटकने के लिए उसने

सड़क की ओर देखा तो वही आदमी एक बेलगाड़ी के पाम खड़ा नजर आया जिसमें थोड़ी दूर पहले ललचाई हुई नजरों से सुलताना की ओर देखा था। सुलताना ने हाथ से उस इशारा किया। उस आदमी ने इधर उधर देखकर एक हलके से इशारे से पूछा—'बिघर में आऊँ ?' सुलताना ने सीढ़ियाँ का रास्ता बता दिया। वह आदमी कुछ दूर तो वही खड़ा रहा और फिर बड़ी फुरती से ऊपर चला आया।

सुलताना ने उस दरवाजे पर बिठाया। जब वह बैठ गया तो बात चलापन के लिए सुलताना ने पूछा

'आप ऊपर आते हुए डर क्या रहे थे ?'

वह आदमी मुस्कराया, 'तुम्हें कैसे मालूम हुआ ? भला इसमें डरने की क्या बात है ?'

'यह मैंने इसलिए पूछा क्योंकि आप डेर तक वही खड़े रहे थे।'

यह सुनकर वह फिर मुस्कराया और बोला, 'तुम्हें गलतफहमी हुई है। मैं तुम्हारे ऊपर वाले पनट की तरफ देख रहा था जहाँ कोई भीरुरत खड़ी एक मद की ठेगा दिखा रही थी। यह देखकर मुझे बड़ा मजा आया। फिर बालकनी में हरा बत्तव जला तो मैं कुछ दूर के लिए रुक गया। हरी रोशनी मुझे पसंद है। आला को बहुत अच्छी लगती है।' यह कहकर उसने सुलताना के कमरे में इधर-उधर देखना शुरू कर दिया। फिर एकाएक उठ खड़ा हुआ।

सुलताना ने पूछा 'आप जा रहे हैं ?'

उस आदमी ने उत्तर दिया, 'नहीं, मैं तुम्हारे इस मकान को देखना चाहता हूँ। चलो मुझे सारे कमरे दिखाओ।'।

सुलताना ने उस तीनों कमरे एक एक करके दिखा दिए। उस आदमी ने बिलकुल खामोशी से उन कमरों का मुआयना किया। जब वे दोनों फिर उसी कमरे में आ गए जहाँ पहले बैठे थे तो उस आदमी ने कहा

मेरा नाम शकर है।

सुलताना ने पहली बार गौर से शकर की ओर देखा। वह साधारण शयन सूरत का आदमी था, लेकिन उसकी आँखें असाधारण रूप से स्वच्छ और निमल थी और कभी कभी उनमें एक विचित्र प्रकार की

चमक भी पदा हो जाती थी। गठीला और बसरती बदन था। कनपटियो पर उमके बाल सफेद हो रहे थे। भूरे रंग की गम पतलून पहने हुए था। कमीज मफे थी और उसका कालर गदन पर से ऊपर की उठा हुआ था। गकर कुछ इस प्रकार दरी पर बैठा हुआ था कि मालूम होता था गकर की बत्ताय सुलताना ग्राहक है। इस एहसास ने सुलताना की कुछ परगान कर दिया, अनएव उसने शकर से कहा, 'फर्माइए'

गकर बैठा हुआ था। यह सुनकर लेटते हुए बोला, 'मैं क्या फर्माऊ, कुछ तुम ही फर्माओ। बुलाया तुम ही ने है।'

जब सुलताना कुछ न बोली तो वह उठ बैठा, 'मैं समझा, लो अय मुझमे सुनो। जो कुछ तुमने समझा, गलत है। मैं उन लोगो से नहीं हूँ जो कुछ देकर जात हैं। डाक्टरों की तरह मेरी भी फीस है। जब मुझे बुलाया जाए तो फीस दनी ही पड़ती है।'

सुलताना यह सुनकर चकरा गई, लेकिन फिर भी उसे बेइस्तियार हमी आ गई। पूछा, 'आप काम क्या करते हैं?'

शकर ने उत्तर दिया, 'यही जो तुम लोग करते हो।'

'क्या?'

'तुम क्या करती हो?'

'मैं मैं मैं कुछ नहीं करती।'

'मैं भी कुछ नहीं करता।'

सुलताना ने भिनाकर कहा, 'यह तो कोई बात न हुई—आप कुछ न कुछ तो जरूर करते होगे।'

शकर ने बड़े इत्मीनान से उत्तर दिया, 'तुम भी कुछ न कुछ जरूर करती होगी।'

'भक मारती हूँ।'

'मैं भी भक मारता हूँ।'

'तो आओ दोनो भक मारें।'

'हाजिर हूँ, लेकिन मैं भक मारने के दाम कभी नहीं दिया करता।'

'होश की दवा करो, यह लगरखाना नहीं है।'

'और मैं भी बालण्टियर नहीं हूँ।'

मुलताना यहा रक गई। उमने पूछा, 'यह बालण्टियर कौन होते हैं ?'

शकर न उत्तर दिया, 'उल्लू के पट्टे।'

'मैं उल्लू की पट्टी नहीं।'

'मगर वह आदमी खुदावरस जो तुम्हारे साथ रहता है, जरूर उल्लू का पट्टा है।'

'क्या ?'

'इसलिए कि वह कई दिना से एक ऐसे पट्टे हुए फकीर के पाम अपनी किस्मत खुलवाना जा रहा है, जिसकी अपनी किस्मत जम लगे ताने की तरह बंद है।'

यह कहकर शकर हसा। इसपर मुलताना ने कहा 'तुम हिंदू हो, इसलिए हमारे बुद्दुगों का मजाक उड़ात हो।'

शकर मुस्कराया, 'ऐसी जगहो पर हिंदू मुस्लिम सबाल पैदा नहीं हुमा करत। बड़े बड़े पण्डित और मौलवी भी यहा आए ता गरीफ आदमी बन जाए।'

'जाने क्या ऊटपटांग बातें करत हो बोलो रहोगे ?'

एक घात पर।'

'शत तुम लगाओगे, मुलताना खीजकर उठ खड़ी हुई। 'जामो अपना रास्ता पकड़ो।'

शकर आराधन से उठा। पतलून की जेबो में अपने दोना हाथ डाले और जात हुए बोला, 'मैं कभी कभी इस बाजार से गुजरा करता हूँ। जब भी तुम्हें मेरी जरूरत हो, बुला लेना, बहुत काम का आदमी हूँ।'

शकर चला गया और मुलताना वाले सिवास को भूलकर दर तक उसके बारे में सोचती रही। उस आदमी की बातों ने उसके दुख को बहुत हल्का कर दिया था। अगर वह अवाले में आया होता, जहा वह खुशहाल थी तो उसने किसी और ही रूप से इस आदमी को देखा होता और बहुत संभव है कि उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया होता लेकिन यहा चूंकि वह बहुत उदास रहती थी इसलिए उसे शकर की बातें पसंद आई।

शाम को जत्र खुदावरुश आया तो सुनताना ने जमसे पूछा, 'तुम आज मारा दिन बिघर गया है ?'

खुदावरुश खवान म चूर चर रहा था। कहने लगा, 'पुरान किले के पास से आ रहा हूँ। वहाँ एक बूजुग कुछ दिना से ठहरे हुए हैं। रोज उहीवे पास से आ रहा हूँ, ताकि हमारा दिन फिर जाए।'

कुछ उहीवे तुमम कहा ?'

'नहीं, अभी वह मेहरवान नहीं हुए, पर सुनताना, मैं जो उनकी सिद्धमत पर रहा हूँ, वह बेकार नहीं जाएगी, भल्लाह की मेहरबानी से जल्द ही वारे 'मारे' हो जाएंगे।'

सुनताना के दिमाग म मुहरम मनान का ब्यास समाया हुआ था। खुदावरुश से रोनी आवाज में बोली

'सारा-सारा दिन बाहर सापब रहत हो, मैं यहाँ पिजर म कैद रहती हूँ, कहीं आ-जा नहीं मारती। मुहरम सिर्फ पर आ गया है, कुछ तुमने उसकी फिक्र भी की कि मुझे काल कपड़े चाहिए। घर में फूटी कौड़ी तक नहीं। कगनिया यी सो एक एक करने 'रिक्' गई। अब तुम ही बताओ क्या होगा ? यो फकीरो के पीछे कब तक मारे मारे फिरते रहोगे। मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि यहाँ दिल्ली में खुदा ने भी हम-से मुह मोड़ लिया है। मेरी सुनो तो अपना काम शुरू कर दो। कुछ तो सहारा ही ही जाएगा।'

खुदावरुश दरी पर सेट गया और बहने लगा

पर यह काम' धुट करने के लिए भी तो थोड़े बहुत पैस चाहिए, खुदा के लिए अब ऐसी दुःख भरी बातें न करो, मुझमें अब बर्दाश्त नहीं हो सकती। मैं सचमुच अपना छोड़ने में सन्न गलती की, पर जो करता है भल्लाह ही करता है और हमारी भलाई के लिए ही करता है। क्या मालूम कुछ देर और दुःख भोगने के बाद हम '

सुनताना ने बात काटने हुए कहा, 'तुम खुदा के लिए कुछ करो। चोरी करो, डाका डालो पर मुझे अब सलवार का कपड़ा जहर ला दो। मेरे पास सफेद बोम्बी की कमीज पड़ी है, मैं उसे रंगवा लूँगी। सफेद नैनून या एक नया दुपट्टा भी मेरे पास मौजूद है—वही जो तुमने मुझे

दीवाली पर लाकर दिया था। उसे भी कमीज के साथ रगवा लूगी। बस, एक सलवार की कसर है सो तुम किसी न किसी तरह पैदा कर दो देखो तुम्हें मेरी जान की कसम किसी न किसी तरह जरूर ला दो।

खुदावरश उठ बैठा।

‘अब तुम रवाहमरवाह कसमे दे रही हो—मैं कहा से लाऊंगा, मरे पास तो अफ्रीम खाने के लिए भी एक पैसा नहीं।’

‘कुछ भी करो मगर मुझे साढ़े चार गज की काली साटन ला दो।’

‘दुआ करो कि आज रात ही अल्लाह दो तीन आदमी भेज दे।’

‘लेकिन तुम कुछ नहीं करोगे, तुम अगर चाहो तो जरूर इतने पैसे पैदा कर सकते हो। जग से पहले यह साटन बारह चौदह आने गज में मिल जाती थी। अब मवा रुपये गज के हिसाब से मिलती है। साढ़े चार गजा पर कितन रुपये बच हो जाएंगे?’

‘अब तुम कहती हो तो मैं कोई हीला करूंगा।’ यह कहकर खुदावरश उठा, लो अब इन बातों को भूल जाओ। मैं होटल से खाना ले आऊँ।’

होटल से खाना आया। दोना ने मिलकर जहर मार किया और सो गए। सुबह हुई, खुदावरश पुराने किले वाले फकीर के पास चला गया और मुलताना अकेली रह गयी। कुछ देर लेटी रही, कुछ देर सोती रही और कुछ देर इधर उधर कमरा में टहलती रही। दोपहर का खाना खाने के बाद उसने सफेद बोस्की की कमीज निवाली और नीचे लाण्डी वाले को रगने के लिए दे आयी। कपड़े धोने के साथ साथ वहाँ रगने का काम भी होना था। यह काम करने के बाद उसने वापस आकर फ़िल्मों की किताबें पढ़ी, जिनमें उसकी देखी हुई फ़िल्मों की कहानियाँ और गीत छपे हुए थे। किताबें पढ़ते पढ़ते वह सो गयी। जब उठी तो चार बज चुके थे, क्योंकि धूप आगन में से मोगी के पास पहुँच चुकी थी। तहाँ धोकर निबटी तो गम चादर ओढ़कर बालकनी में आ खड़ी हुई। लगभग एक घण्टा मुलताना बालकनी में खड़ी रही। अब शाम हो गई थी। बत्तियाँ जलन लगीं और फिर नीचे सड़क पर रौनक बढ़न सभी और फिर एका-

एक उसे शकर नजर आ गया। तागा और मोटरो से बचता हुआ जब वह मकान के नीचे पहुँचा तो वन ही की तरह उसने गदन उठाई और सुलताना की ओर देखकर मुस्करा दिया। न जाने क्यों आप ही आप सुलताना का हाथ उठ गया और उसने शकर को ऊपर आने का इशारा कर दिया।

जब शकर आ गया तो सुलताना बहुत परेशान हुई कि उससे क्या बहे? उधर शकर बड़ा प्रसन्न नजर आ रहा था जैसे अपने ही घर में आ पहुँचा हो। पहले दिन की तरह ही वह बड़ी बेनकल्लुफी से सिर के नीचे गावतकिया रखकर लेट गया। जब सुलताना ने देर तक कोई बात नहीं की तो वह स्वयं ही बोल पड़ा, 'तुम मुझे सौ बार बुला सकती हो और सौ बार कह सकती हो कि चले जाओ। मैं ऐसी बातों पर कभी नाराज नहीं हुआ करता।'।

सुलताना असमजस में पड़ गई। बोली, 'नहीं, बैठो, तुम्हें जाने की कौन कहता है।'

शकर मुस्कराया, 'तो मेरी शर्तें तुम्हें मजूर हैं?'

'कौसी शर्तें?' सुलताना ने हसकर कहा, 'क्या निकाह कर रहे हो मुझसे?'

'निकाह और शादी कौसी। न तुम उम्र भर किसीसे निकाह करोगी न मैं। ये रस्म हम लोगो के लिए नहीं। छोड़ो इन बातों को, कोई काम की बात करो।'।

बोली क्या बात करूँ?'

'तुम औरत हो, कोई ऐसी वान शुरू करो जिससे दो घड़ी दिल बहल जाए। इस दुनिया में सिर्फ दुकानदारी ही दुकानदारी नहीं, कुछ और भी है।'।

सुलताना अब दिल ही दिल में शकर को स्वीकार कर चुकी थी। बोली, 'साफ साफ कहो, तुम मुझसे क्या चाहते हो?'

'जो हमारे चाहते हैं।' शकर उठकर बैठ गया।

'तुममें और दूसरा मे फिर फज ही क्या रहा?'

'तुममें और मुझमें कोई फज नहीं। उनमें और मुझमें जमीन और

आसमान का फक है। ऐसी बहुत-सी बातें होती हैं जो पूछनी नहीं चाहिए, खद समझना चाहिए।'

सुलताना ने थोड़ी देर तक शकर की इस बात को समझने की कोशिश की। फिर कहा

'मैं समझ गयी।'

'तो कहो क्या इरादा है?'

तुम जीते मैं हारो—पर मैं कहती हूँ, आज तक किसीने ऐसी बात कुबूल न की होगी।'

'तुम सलत कहती हो, इसी मुहल्ले में तुम्हें ऐसी बेवकूफ औरतें भी मिल जाएंगी जो कभी यकीन नहीं करेंगी कि औरत ऐसी जिल्लत कुबूल कर सकती है जो तुम बिना महसूस किए कुबूल करती हो। लेकिन उनके यकीन न करने के बावजूद तुम हजारा की ताबाद में मौजूद हो, तुम्हारा नाम सुलताना है ना?'

'सुलताना ही है।'

शकर उठ खड़ा हुआ और हसते हुए बोला, 'मेरा नाम शकर है, यह नाम भी अजीब उटपटाग होते हैं। चलो आओ अंदर चलें।'

शकर और सुलताना जब घरी वाले कमरे में वापस आए तो दोनों हस रहे थे, न जाने किस बात पर। जब शकर जाने लगा तो सुलताना ने कहा, शकर मेरी एक बात मानोगे?'

'पहले बात बताओ।'

सुलताना कुछ झेंप गई, तुम कहोगे कि मैं दाम बमूल करना चाहती हूँ मगर

कहो, कहो, एक क्यों गई?'

सुलताना ने साहस स बाम लेते हुए कहा बात यह है कि मुहरम आ रहा है और मेरे पास इतने पैसे नहीं कि मैं वाली सलवार बनवा सकूँ, यहा के सारे दुखड़े तो तुम मुझसे सुन ही चुके हो। कमीज और दुपट्टा मेरे पास मौजूद था जो मैंने आज रखने के लिए दिया है।'

शकर यह सुनकर बोला, तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ रुपये दे

दू जिसम तुम काली सलवार बनवा सको ।’

सुलताना न तुरन्त कहा, नहीं, मेरा मतलब यह है कि अगर हो सके तो मुझे एक काली सलवार ला दो ।’

शकर मुस्करा दिया, मेरी जेब में तो कभी कभार ही कुछ होता है । फिर भी मैं कोशिश करूंगा । मुहर्रम की पहली तारीख को तुम्हें यह सलवार मिल जाएगी । तो बस, अब खुश हो गई ?’ फिर एकाएक सुलताना के बुदों की ओर देखकर बोला, ‘क्या ये बुदे तुम मुझे दे सकती हो ?’

सुलताना ने हसकर कहा, ‘तुम इन्हें लेकर क्या करोगे । चादी के मामूली बुदे हैं । ज्यादा से ज्यादा पांच रुपये के होंगे ।’

‘मैं तुमसे बुदे मांगे हैं । इनकी कीमत नहीं पूछी । बोलो, देती हो ?’

‘ले लो ।’ कहकर उसने बुदे उतार दिए । इसके बाद उसे अप्सोस भी हुआ लेकिन शकर जा चुका था ।

सुलताना को बिल्कुल आशा नहीं थी कि शकर अपना वादा पूरा करेगा, लेकिन आठ दिन के बाद मुहर्रम की पहली तारीख को सुबह नौ बजे दरवाजे पर दस्तक हुई । सुलताना ने दरवाजा खोला तो शकर खड़ा था । अलवार में लिपटा हुआ एक पुर्लिया सुलताना को थमाते हुए बोला, ‘साटन की काली सलवार है । देख लेना, शायद कुछ लम्बी हो—अब मैं चलता हूँ ।’

शकर सलवार देखकर चला गया और दूसरी कोई वान उसने सुलताना से नहीं की । उसकी पनलून में सलवटें पड़ी हुई थी । बाल बिखरे हुए थे । ऐसा मालूम होता था कि अभी-अभी मोकर उठा है और सीधा इधर ही चला आया है ।

सुलताना ने बागज खोला । साटन की काली सलवार थी—वैसी ही जैसी वह मुग्तार के पास देख आयी थी । सुलताना बहुत खुश हुई । बुदा और सौदे का जो अप्सोस उसे हुआ था, इस सलवार ने और शकर के वादा का फाटने से दूर कर दिया ।

दोपहर को वह नीचे लाण्डी वाले से अपनी रंगी हुई कमीज और दुपट्टा ले आई । तीनों काले कपड़े जब उसने पहन लिए तो दरवाजे पर

दस्तक हुई। सुलताना न दरवाजा खोला तो मुस्तार भीतर दाखिल हुई।
उसने सुलताना के तीना कपड़ा की ओर देखा और बोली, 'कमीज और
दोपट्टा तो रंगा हुआ मालूम होता है, पर यह सलवार नई है — कब
बनवाई ?

सुलताना ने उत्तर दिया, 'आज ही दर्जी लाया है यह कहत हुए
उसकी नजरें मुस्तार के बाना पर पड़ी।

य बुद तुमन कहा स लिए ?'

आज ही मगवाए है।'

इसके बाद दोनों को थोड़ी देर चुप रहना पड़ा।

चरमात के यही लिन थे। खिडकी के बाहर पीपल के पत्ते डमी तरह नहा रहे थे। मागझान के डमी स्प्रिंगदार पलंग पर, जो अब खिडकी के पास से थोड़ा इधर सरका दिया गया था, एक घाटन लीण्डिया रणधीर के साथ चिपटी हुई थी।

खिडकी के बाहर पीपल के नहाए हुए पत्ते रात के दूधियाले अधरे से भूमरा की तरह थरथरा रहे थे—और शाम के समय ज़र दिन भर एक अग्रजी अखबार को सब खबरें और विज्ञापन पढ़ने के बाद कुछ सुनाने के लिए वह बालननी में आ खड़ा हुआ था तो उमन घाटन उटनी को, जो माथ वाले रस्मिया के कारखाने में काम करती थी और वर्षा से बचने के लिए इसली के पेड़ के नीचे खड़ी थी, खाम खलारकर अपनी और आकर्षित कर लिया था और उसके बाद हाथ के इशारे से ऊपर बुला लिया था।

यह कई दिन से अत्यधिक एगान से ऊब चला था। युद्ध के कारण अम्बई की लगभग सभी त्रिदिचयन छोकरिया, जामस्त दामा में मिल जाया करती थी, स्त्रिया की अग्रजी कोम में भरती हो गई थी। उनमें से कुछ एक न फाट के इलाके में डास स्कून गोन लिंग थे जहाँ केवल फौजी गौरों को जान की इजाजत थी। रणधीर बहुत उदाम हो गया था।

उसकी उदामी का एक कारण तो यह था कि त्रिदिचयन छोकरिया अप्राप्य हो गई थी और दूसरा यह कि रणधीर फौजी गौरा की तुलना में कहीं अधिक सभ्य और शिक्षित भुदर नौजवान था, लेकिन उसपर फोटो के लगभग सभी क्लबों में दम्बाई बढ़ कर दिए गए थे क्योंकि उसकी चमड़ी सफ़ेद नहीं थी।

युद्ध से पहले रणधीर नागपाडा और ताज होटल की कई प्रसिद्ध त्रिदिचयन छोकरियों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापन कर चुका था। उसे

अच्छी तरह मालूम था कि इस प्रकारके सबधों के औचित्य से वह त्रिशिख्यन लडकी के मुकाबले में कहीं अधिक जानकारी रखता है जिनसे य छोकरिया फैशन के तौर पर रोमांस लडाती है और बाद में किसी बेवकूफ से शादी कर लेती है।

रणधीर ने बस यो ही दिल ही दिल में हीजल से बदला लेने की खातिर उस घाटन लडकी को इशारे से ऊपर बुला लिया था। हीजल उसके पलट के नीचे रहती थी और प्रतिदिन सुबह वहीं पहनकर अपने बटे हुए बालों पर खाकी रंग की टोपी तिरछे कोण में जमाकर बाहर निकलती थी और ऐसी वाकफन से चलती थी जैसे फुटपाथ पर चलने वाले सभी लोग टाट की तरह उसके कदमों में बिछत चले जाएंगे।

रणधीर सोचता था कि आखिर क्यों वह इन त्रिशिख्यन छोकरिया की ओर इतना अधिक आकर्षित है। इसमें कोई संदेह नहीं कि वह अपने शरीर की प्रत्येक दिखलाई जा सकने वाली वस्तु का प्रदर्शन करती है। किसी भी प्रकार की अभिन्न अनुभव किए बिना अपने क्रिया-कलापों का वर्णन कर देती है। अपने बीते हुए पुराने रोमांसों का हाल सुना देती है

यह सब ठीक है लेकिन कोई भी स्त्री इन सब विवेकताओं की मालिक हो सकती है।

रणधीर ने जब घाटन लडकी को इशारे से ऊपर बुलाया था तो उसे किसी भी तरह यह विश्वास नहीं था कि वह उस अपने साथ मुला संगा, लेकिन थोड़ी ही देर के बाद जब उसने उसके भीमों कपड़े देखकर यह खयाल किया था कि कहीं ऐसा न हो कि बेचारी को निमोनिया हो जाए, तो रणधीर ने उससे कहा था 'यह कपड़े उतार दो सर्दी लग जाएगी।'।

वह रणधीर की इस बात का अभिप्राय समझ गई थी, क्योंकि उसकी आवाज में शर्म के लाल डोर तर गए थे लेकिन बाद में जब रणधीर ने उस अपनी धोती निकालकर दी तो उसने कुछ देर सोचकर अपना लहंगा उतार लिया जिम्पर का मूल भोगने के कारण और अधिक उभर आया था लहंगा उतारकर उसने एक ओर रंग दिया और जल्दी से धोती अपनी जांघों पर डाल ली। फिर उसने अपनी तंग, भिची भिची धोती उतारने की कोशिश की जिसके दोनों किनारे को मिलाकर उसने एक

गाठ दे रखी थी। वह गाठ उसके स्वस्थ वक्षस्थल के नह परतु मलिन गडढे में छुप सी गई थी।

दर तक वह अपने घिस हुए नाखूनों की सहायता से चोली की गाठ खोलन की कोशिश करती रही, जो भीगन के कारण बहुत अधिक मजबूत हो गई थी। जब थक हारकर बैठ गई तो उसने मराठी भाषा में रणधीर से कुछ कहा, जिसका मतलब यह था— मैं क्या करूँ, नहीं खुलती।

रणधीर उसके पास बैठ गया और गाठ खोलने लगा। जब नहीं खुली तो उसने चोली के दोनों सिरों को दोनों हाथों में पकड़कर इस जोर से भटका दिया कि गाठ सरसराकर फिसल गई और इसके साथ ही दो धड़कती हुई छातियाँ एकदम प्रकट हो गईं। क्षण भर के लिए रणधीर ने सोचा कि उसके अपने हाथों ने उम घाटन लड़की के सीन पर नम-नम गुथी हुई मिटटी की निपुण कुम्हार की तरह दो प्यालियाँ की शक्ल बना दी हैं।

उसकी स्वस्थ छातियों में वही गुदगुदाहट, वही धड़कन, वही गोलाई, वही गम गम ठण्डक थी जो कुम्हार के हाथों में निकले हुए ताजा बरतनों में होनी है।

मटमले रंग की जवान छातियों में, जो बिसकुल कवारी थी, एक अद्भुत ढंग की चमक पैदा हो रही थी। गेहुए रंग के नीचे धुधले प्रकाश की एक परत थी जिसने वह अद्भुत चमक पैदा कर दी थी, जो चमक होत हुए भी चमक नहीं रही थी। उसके वक्षस्थल पर यह उभार दो दीपक मालूम होते थे, जो तालाब के गढ़ने पानी पर जल रहे हैं।

बरसात के यही दिन थे। खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते इसी तरह कपकपा रहे थे। उम घाटन लड़की के दोनों कपड़े जो पानी में तरबतर हो चुके थे, एक गढ़ने ढेर की शक्ल में पथ पर पड़ थे और वह रणधीर के साथ चिपटी हुई थी। उसके नंगे बदन की गर्मी रणधीर के शरीर में ऐसी हलचल-सी पैदा कर रही थी जो सरन जाड़े के दिनों में नाइयों के गद लेकिन गम हमामा में नहाते समय अनुभव हुआ करती है।

रात भर वह रणधीर के साथ चिपटी रही—दोना जैसा एक दूसरे में गडडमडड हो गए थे। उन्होंने बड़ी मुश्किल से एक-दो बातें की होंगी, क्योंकि जो कुछ भी कहना-सुनना था, सासो, होठों और हाथों से तय हो

रहा था। रणधीर के हाथ सारी रात उमकी छातियों पर हवा के भाँका की तरह फिरते रह। छोटी छोटी चूचिया और बड़े-मोटे मोटे मोटे दाँते, जो चारों ओर एक काले वृत्त के रूप में फैले हुए थे, उन हवाई भाँकों से जाग उठते और उस घाटन लड़की के पूरे बदन में एक ऐसी सिहरन पैदा हो जाती कि स्वयं रणधीर भी कपकपा उठता।

ऐसी कपकपाहटों से रणधीर का सँवड़ा बार-बार वास्ता पड़ा चुका था। वह इनका स्वाद भी भली प्रकार जानता था। कई लड़कियों के नाम और सपना सीना के माथ अपना सीना मिलाकर वह ऐसी कई रातें बिता चुका था। वह ऐसी लड़कियों के साथ भी रह चुका था जो बिल्कुल अलहद थीं और उसके साथ लिपटकर घर की सारी बातें सुना दिया करती थी, जो किसी गैर के बानों के लिए नहीं होती। वह ऐसी लड़कियों से भी शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर चुका था जो सारी महत्त स्वयं करती थी और उसे कोई तबलीफ नहीं देती थी—लेकिन यह घाटन लड़की जो हमली के पेड़ के नीचे भीगी हुई लड़ी थी और जिसे उसने इधारे से ऊपर बुला लिया था, बिल्कुल भिन्न प्रकार की लड़की थी।

सारी रात रणधीर को उसके गरीर से एक अदभुत प्रकार की दूँ आती रही थी। उस दूँ को—जो एकमात्र खुशबू भी थी और बदबू भी—बहु रात भर पीता रहा। उसकी बगलों से उसकी छातियों से उसके चाला से, उसके पेट से, प्रत्येक स्थान से यह दूँ, जो बदबू भी थी और खुशबू भी, रणधीर के अंग अंग में बस गई थी। सारी रात वह सोचता रहा था कि यह घाटन लड़की बिल्कुल पास होत पर भी किसी प्रकार इतनी पास न होती अगर उसके नंगे शरीर से यह दूँ न उड़ती। यह दूँ उसके दिल दिमाग की हर सलबट में रेंग रही थी, उसके तमाम पुराने और नये ख्यालों में बस गई थी।

इस दूँ ने उस लड़की और रणधीर को मानो एक दूसरे में घोल दिया था। दोनों एक दूसरे में समा गए थे, अत्यधिक गहराई में उतर गए थे जहाँ पहुँचकर वह एक विद्युत् मानवीय तपस्ति में परिणत हो गए थे। ऐसी तपस्ति जो क्षणिक होन पर भी स्थायी थी। जो निरन्तर विकास-शील होत हुए भी स्थिर और सुदृढ़ थी। दोनों एक ऐसा स्वप्न बन गए थे

जा आकाश के नीचे गूँथ भ उड़त रहने पर भी दिखाई देता रह ।

उस वृक्षों, जो उम घाटन लड़की के प्रत्येक स्रोत से बाहर निकलती थी, रणधीर अच्छी तरह समझता था । परन्तु मममते हुए भी वह उसका विशेषण नहीं कर सकता था । जिम तरह कभी मिट्टी पर पानी छिड़कने से मोधी सोधी धूल निकलती है लेकिन नहीं, वह वृक्ष कुछ और ही तरह की थी । उसमें लवण्डर और इत्र का ऐव्य नहीं था, वह बिल्कुल असन्धी थी स्त्री पुरुष के शारीरिक सम्बन्धों की तरह भसली और पवित्र ।

रणधीर को पसीने की वृक्ष से मग्न घूणा थी । नहाने के बाद वह हमेशा बगला बगैरह में पाउडर छिड़कता था या ऐसी दवा इस्तमाल करता था जिससे पसीने की बदबू जाती रहे । परन्तु आश्चर्य है कि उसने कई बार—हा कई बार उम घाटन लड़की की वाला भरी बगला को चूमा और उसे बिल्कुल धिन नहीं आयी बल्कि अजीब तरह की तपति अनुभव हुई । रणधीर को ऐसा लगता था कि वह उस वृक्ष को जानता है, पहचानता है, उसका अर्थ भी समझता है—लेकिन किसी और को नहीं समझ सकता ।

बरसात के यही दिन थे यों ही खिड़की के बाहर जब उसने देखा ता पीपल के पत्ते उसी पवार नहा रहे थे । हवा में सरमराहटें और फड़फड़ाहटें घुली हुई थी । गर्म था, लेकिन उसमें दबी दबी धुंधली सी रोशनी समाई हुई थी जैसा वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारा का हल्का-हल्का प्रकाश नीचे उतर आया हो—बरसात के यही दिन थे, जब रणधीर के इस कमरे में मागवान का सिर्फ एक ही पलंग था । लेकिन अब उसका साम सदा हुआ एक और पलंग भी था और कोने में एक नई दृष्टिग टबल भी मौजूद थी । दिन यही वरमान के थे । मौसम भी बिबुल वैसा ही था । वर्षा की बूंदों के साथ लगकर सितारा का हल्का हल्का प्रकाश उसी तरह उतर रहा था, लेकिन वातावरण में हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी ।

दूसरा पलंग खाली था । उम पलंग पर, जिसपर रणधीर अगले मुह लेगा खिड़की के बाहर पीपल के झूमते हुए पत्तों पर वर्षा की बूंदों का नृत्य

देख रहा था, एक गारी चिट्ठी लडकी अपन नग शरीर को चादर में छुपाने का असफल प्रयास करते करते लगभग सा गयी थी। उसकी लाल रेशमी मलवार दूसर पलंग पर पड़ी थी। जिसके गहर लाल रंग के नाड का एक फुदना नीचे लटक रहा था। पलंग पर उमके दूसरे उतार हुए कपडे भी पड़े थे—सुनहरी फूला वाला जम्पर अगिया जाधिया और दुपट्टा सदा रंग लान था गहरा नान गौर उन सबम हिना के इत्र की तेज खुशबू बसी हुई थी।

लडकी के काने वाला में मुकेश के कण धूल की तरह जमे हुए थे। चेहरे पर पाउण्डर, मुर्खा और मुकेश के उन कणा न मिल जुनकर एक विचित्र रंग पैदा कर दिया था बजान सा उडा उडा रंग और उसके गौर वक्ष स्थल पर कच्चे रंग की अगिया ने जगह-जगह लाल लाल धब्बे बना दिए थे।

छानिया दूध की तरह सफेद थी। उनमें हल्का हल्का नीलापन भी था। बगलों के बाल मुड़े हुए थे, इस कारण वहां सुरमई गुबार मा पैदा हो गया था।

रणधीर इस लडकी की ओर देखकर कई बार सोच चुका था—क्या ऐसे नहीं लगना जैसे मैं अभी अभी कीलें उल्टेडकर इसे लकड़ी से बंद बक्स में से निकाला हूँ—बिताबा और चीनी के बतनो की तरह। क्योंकि जिस प्रकार किताबा पर दबाव के बिहू उभर आत हैं और चीनी के बतना पर हल्का हल्की खराशें पड जाती हैं ठीक उसी तरह इस लडकी के शरीर पर भी कई निगान थे।

जब रणधीर ने उसकी तंग और चुस्त अगिया की डोरिया खोली थी तो उसकी पीठ पर और सामन मीन पर नम नम गोश्त पर झुरिया-सी बनी हुई थी और कमर के चारा और बसकर बाधे हुए नाडे का निशान

भारी और नुकील जडाऊ नकलम से उसके सीन पर कई जगह खराशें-सी पड गई थी जस नायनो में बड़े जोर के साथ रगुजाया गया हो। बरसान के बही दिन थे। पीपल के नम नम कोमल पत्तो पर वर्षा की तूदें गिरने में बंसी हो आवाज पैदा हो रही थी जैसी रणधीर उस दिन सारी रात सुनता रहा था। मौसम बहुत ही सुहावना था। ठण्डी ठण्डी हवा चल

रही थी। लेकिन उसमें हिना के इत्र की तरह खुशबू घुली हुई थी।

रणधीर के हाथ बहुत देर तक उस गोरी चिट्ठी लडकी के फच्चे दूध की तरह सफेद वस्त्रस्थल पर हवा के झोंकों की तरह फिरत रहे थे। उसकी उम्रनिया न उस गोरे-भार बदल म कई चिनगारियां दौड़ती हुई भी अनुभव की थीं। उस कोमल बदन में कई जगहों पर मिमटी हुई कप-कपाहटा का भी उस पता चला था। जब उसने अपना मोना उसके वस्त्र-स्थल के साथ मिलाया तो रणधीर के शरीर के प्रत्येक रोए ने उस लडकी के बदन के छिडे हुए तारों की भी आवाज सुनी थी। लेकिन वह आवाज क्या थी? वह पुकार जो उसमें घाटन लक्ष्मी के शरीर की वू में सूधी थी—वह पुकार जो दूध के प्यासे बच्चों के रोने में कहीं अधिक मादक होती है। वह पुकार जो स्वप्न वृत्त में निकनकर निश्शब्द हो गई थी।

रणधीर लिडकी के बाहर दल रहा था। उसके बिलबुन पास ही पीपल के नहाए हुए पत्ते झूम रहे थे। वह उनकी मस्ती भरी कपकपाहटी के उस पार कहीं बहुत दूर दखन की कोशिश कर रहा था, जहां मटमल बादला में विचित्र प्रकार की राशनी घुली हुई दिखाई देती थी, ठीक वैसी ही जैसी उस घाटन लडकी के सीन में उसे नजर आई थी। ऐसी राशनी जो भेद की बान की तरह मौन कि तु प्रत्यक्ष थी।

रणधीर के पहलू में एक गोरी चिट्ठी लडकी जिसका शरीर दूध और घी में गुंथे घाटे की तरह मुलायम था, लेटी थी, उसके नीचे स मंदमात बदन से हिना के इत्र की खुशबू आ रही थी जो भव धकी धकी-सी मालूम होती थी। रणधीर को यह दम ताडती और उमाद का सीमा तक पहुंची हुई खुशबू बहुत बुरी मालूम हुई। उसमें कुछ खटास थी—एक अजीब किस्म की खटास, जसी अपचन का डकारों में होनी है—उदास—बेरग—बेधन।

रणधीर ने अपने पहलू में लेटी हुई लडकी की ओर देखा। जिस तरह फटे हुए दूध के बेरग पानी में सफेद मुर्दा फुटकिया तैरन-गती हैं उसी प्रकार उस लडकी के दुनियाले शरीर पर सरासों ओर धन्य तर रहे थे और वह हिना के इत्र की ऊटपटांग खुशबू वास्तव में रणधीर के दिल दिमाग में वह वू बसी हुई थी, जो उस घाटन लडकी के

शरीर से बिना किसी बाह्य प्रयत्न के अनायास ही निकल रही थी। वह व जो हिना के इन स कही हल्की फुल्की और रस में डूबी हुई थी, जिसमें सूँघे जाने का प्रयत्न शामिल नहीं था। वह अपने आप ही नाक के रास्ते भीतर घुसकर अपनी सही मजिल पर पहुँच जाती थी।

रणधीर ने अन्तिम प्रयास करते हुए उस लड़की के दूधमाले शरीर पर हाथ फेरा लेकिन उसे कोई कपकपाहट महसूस न हुई उसकी नई नवेली पत्नी जो एब पस्टक्लास मजिस्ट्रेट की लड़की थी जिसने बी०ए० तक शिक्षा प्राप्त की थी और जो अपने कॉलेज के सैकड़ों लड़कों के दिल की धड़कन थी रणधीर की किसी भी चेतना को न छू सकी। वह हिना की गुंगवू में उस वू की तलाश करता रहा जो इन्हीं तिनो में जब कि खिड़की के बाहर पीपल के पत्ते वर्षा में नहा रहे थे उस घाटन लड़की के मँले बदन से आई थी।

वह जवस्कून जा रहा था तो रास्त में उसने एक कमाई देया जिसके सिर पर एक बहुत बड़ा टोकरा था। उसमें दो ताजा जिवह किए हुए बकरे थे। सालें उतरी हुई थी और उनका नंगे गोश्त में से धुआ उठ रहा था। जगह जगह पर यह गोश्त, जिसको देखकर मसऊ के ठंड गालों पर गर्मी की लहरें-सी दौड़ जाती थी फड़क रहा था—जस कभी-कभी उसकी आवाज फड़का करती थी।

सब नौ बजे हागे मगर भुक् भूरे बादला के कारण ऐसा लगता था कि अभी बहुत सवेरा है। पाला जोरा पर नहीं था, लेकिन रास्ता चलत लोहा का मुह से गम गम समावारा की टूटिया की तरह गाढ़ा सफेद धुआ निकल रहा था। हर चीज बोझिन दिखाई देती थी, जैसे बादला के बोझ तले दबी हुई हो। मौसम कुछ ऐसी अनुभवशीलता लिए हुए था जो रबड़ के जूत पहनकर चलने से पदा होती है। इसपर भी बाजार में लोहा का आवागमन जारी था और दुकानें खुल रही थी। आवाजें मद्धम थी जस कानाफूसिया हो रही ह। लोग हल्के हल्के कदम उठा रहे थे कि अधिक ऊंची आवाज न निकले।

मसऊद बगल में बस्ता दबाए स्कूल जा रहा था। न जान आज वह क्या मुस्त मुस्त सा था लेकिन जब उसने बिना खाल के ताजा जिवह किए हुए बकरो के गोश्त से सफेद सफेद धुआ उठते देखा तो उस विचित्र प्रकार का आनंद का अनुभव हुआ। उस घुए न उसके ठण्डे ठण्डे गालों पर गम गम लकीरो का एक जाल भा बुन दिया। उस गर्मी ने उसे आनंद प्रदान किया और वह सोचने लगा कि सदिया में ठण्ड हाथा पर बैठ खाने के बाद यदि यह धुआ मिल जाया करे तो कितना अच्छा हो। वातावरण में उजलापन नहीं था। प्रकाश था मगर धुंधला धुंधला। कुहर की पतली-सी परत हर वस्तु पर चढ़ी हुई थी, जिससे वातावरण में गदलापन पैदा हो गया था। यह गदलापन आत्मा को अच्छा लगता था,

क्याकि नजर आन वाली वस्तुओं की नोक पलक कुछ मद्धम पड़ गई थी।

ममऊद जब स्कूल पहुँचा तो उस साथिया से यह मालूम करके बिलकुल प्रसन्नता नहीं हुई कि स्कूल सबत्तर साहब के देहान के कारण बंद कर दिया गया है। सब लड़के प्रसन्न थे, जिसका प्रमाण यह था कि वे अपने बस्ने एक स्थान पर रखकर स्कूल के अहाते में ऊटपटांग खेलते थे। कुछ छुट्टी का पता चलत ही घरा की लोट गयी। कुछ अभी आ रहे थे। कुछ नोटिस बोर्ड के पास एकत्र थे और बार बार एक ही सिगायट पक रहे थे।

ममऊद ने जब सुना कि सबत्तर साहब मर गए हैं तो उसे बिलकुल अप्रसन्न नहीं हुआ। उसका दिल भावनाओं में तिलकृत खाली था। हाँ, उसने यह जल्द सोचा कि पिछले वर्ष जब उसका दादा का देहान इन्हीं दिनों हुआ था तो उनका जनाजा से जान में बड़ा असुविधा हुई थी। इस-लिए कि बारिश शुरू हो गई थी। वह भी जनाजे के साथ गया था और पश्चिस्तान में चिपती की बड़का कारण ऐसा बिगना था कि मुनी हुई बर्र में गिरते गिरते बचा था। य सब बातें उसे अच्छी तरह याद थी। बड़ा जाड़ा, उसका कीचड़ में पड़-पड़ करके लातिमामय नील हाथ जिह दस्तान में गप-गप धातु पक जात थे। नाच जो कि अप की नवी मालूम होती थी और फिर बारिश काकर हाथ-पान धान और कपड़े बदलने का मुनीयन— यह सब कुछ उसे अच्छी तरह याद था, अतएव जब उसने सबत्तर साहब के देहान का खबर सुनी तो उसे यह सब यादें आईं और वह और उसने सोचा कि जब सबत्तर साहब का जनाजा उठेगा तो बारिश शुरू हो जाएगी और ब्रिम्मा में दानी कीचड़ हो जाएगी कि वह नाच बिग लेंगे और उन्हें सभी भाटें आएगी कि बिगड़ना उठेंगे।

ममऊद का खबर सुनकर अपनी कथा का आरंभ हुआ गया। बारिश में पहुँचकर उसने अपनी दादा का नामा गाया। गा-गिर चुकाने, जिह उसे दूसरे दिन पुन गाता था उसमें रंगा और बारी बन्ना उठाकर पर की धार बना गया।

रंग में उसने फिर वही दो मात्रा बिगड़ बिगड़ कर गाया। गा-गा-गा-गा का सब बसाद उसका दिया था। दूसरा तगा पर पड़ा था।

जब मसऊद दुकान के सामन स निकल रहा था तो उसके मन मे इच्छा उत्पन्न हुई कि गोश्त को, जिसमे से घुग्गा उठ रहा था, छूकर देसे। अतएव उसने आगे बढ़कर उगली से बकरे के उस भाग का छूकर देला जो अभी तक फाँक रहा था। गोश्त घम था। मसऊद की ठण्डी उगली को यह गर्मी बहुत भली लगी। बसाई दुकान के भीतर छुरिया तज करने मे व्यस्त था अतएव मसऊद ने एक बार फिर गोश्त को छूकर देला और वहाँ से चल पड़ा।

घर पहुँचकर उसने जब अपनी माँ को सबत्तर साहब की मृत्यु की खबर भुनाई तो उस मालूम हुआ कि उसके अम्बाजी उ हीके जनाजे के साथ गए हैं। अब घर मे केवल दो व्यक्ति थे। माँ और बड़ी बहन। माँ रसाईघर मे दैठी सब्जी पका रही थी और बड़ी बहन बलसूम पान ही एक कागडी लिए दरवारी की सरगम याद कर रही थी।

गली के दूसरे राहके खूबि गवर्नमण्ट स्कूल मे पढ़त थे, उनपर इस्लामिया स्कूल के मकान साहब की मृत्यु का कुछ असर नहीं हुआ था, इसलिए मसऊद ने स्वयं को बिलकुल बेकार महसूस किया। स्कूल का कोई काम भी नहीं था। ठठी क्लास मे जो कुछ पढ़ाया जाता था, उसको वह घर मे अम्बाजी से पढ़ चुका था। खेलन के लिए भी उसके पास कोई चीज नहीं थी। एक मैला कुर्चला ताँगा अलमारी मे पड़ा था लेकिन उसमे मसऊद को कोई दिलचस्पी न थी। लूडो और इसी तरह के घम खेल जो उसकी बड़ी बहन अपनी सहेलियों के साथ प्रतिदिन खेलती थी, उसकी समझ मे चाहत थे। समझ से बाहर वो थे कि मसऊद ने कभी उनको समझने की कोशिश ही नहीं की थी। स्वाभाविक रूप से उस ऐसे खेला से कोढ़ लगाव न था।

यस्ता अपने स्थान पर खाने और कोट उतारने के बाद वह रमाई-घर मे अपनी माँ के पास बठ गया और दरवारी की सरगम सुनता रहा, जिसमे कई बार सान गम आता था। उसकी माँ पालक काट रही थी। पालक काटने के बाद उसने हर-हरे पत्ता का गोता-गोता ढेर उठाकर झण्डिया मे डाल दिया। थोड़ी देर के बाद जब पालक की आवाज लगी तो उसमे से सफेद मफेद घुग्गा उड़न लगा।

उम धुए को दसकर मसऊद को बकरे का गोश्त याग घा' गया, अत-
एव उमन अपनी मा से कहा, 'अम्मी जान ! आज मैं कमाई की दुकान
पर दो बकरे दस खाल उतरी हुई थी और उनमें से घुघ्रा निकल रहा था,
बिलकुल वैसा ही जैसा कि मुंह मकर मेर मुंह से निकला करता है।'

'अच्छा ! यह कहकर उसकी मा चल्ट म से लकड़िया के कोयले
झाड़ने लगी।

'हा और मैं गा'त को अपनी उगनी स छूकर देखा तो वह गम
था।

'अच्छा ! यह कहकर उसकी मा न वह बरतन उठाया जिसमें उमने
पालक का साग घोया था और वह रसोईघर से बाहर चली गई।

'और वह गोश्त कई जगह में फड़कता भी था।'

'अच्छा ! मसऊद की बड़ी बहन न दरवारी सराम पाद करनी छोड़
दी और उसकी और देखत हुए बोली, कस फड़कता था ?'

यो यो, मसऊद न उगलियो से फड़कन पदा करके अपनी बहन को
दिखाई।

फिर क्या हुआ ?'

यह प्रश्न बलसूम ने अपने सरगम भरे दिमाग से कुछ इस प्रकार
निकाला कि मसऊद एक क्षण के लिए बिलकुल हतबुद्धि सा हो गया,
'फिर क्या होता था—मैं ऐसे ही आपसे बात की थी कि कसाई की
दुकान पर गोश्त फड़क रहा था। मैंने उगली से भी छूकर देखा था—
गम था।

गम था—अच्छा मसऊद, यह बताओ, तुम मेरा एक काम करोगे ?'

'बताइए।

'आओ मेरे साथ आओ।'

नहीं आप पहले बताइए, काम क्या है ?'

'तुम आओ तो सही मेरे साथ।'

'जी नहीं, आप पहले काम बताइए।'

देखो मेरी कमर में बड़ा दब हो रहा है—मैं पलंग पर बैठती हूँ,
तुम जरा पाव से दबा दना। अच्छे भाई जो हुए ! अल्ला की कसम, बड़ा

दद हो रहा है।' यह कहकर मसऊद की बहन ने अपनी कमर पर मुक्किया मारनी गुरु कर दी।

'मह आपकी कमर को क्या हो जाता है? जब दसो दद हो रहा है और फिर आप दबवाती भी मुझीस हैं—क्या नहीं अपनी सहलिया से कहती।' मसऊद उठ खड़ा हुआ और तयार हो गया।

'चलिए, लेकिन आपस वहे देता हूँ कि दस मिनट स ज्यादा बिलकुल नहीं दबाऊंगा।

'शाबा', शाबाश।' उसकी बहन उठ खड़ी हुई और सरगमो की काफी सामने ताक में रखकर उस कमरे की ओर बढ़ी जहाँ मसऊद और वह दोनों साते थे।

आगत में पहुँचकर उसने अपनी दुपती हुई कमर सीधी की और ऊपर आकाश की ओर देखा। मटियाने बादल झुके हुए थे। 'मसऊद, आज जरूर बारिश होगी।' यह कहकर उसने मसऊद की ओर देखा जो भीतर अपनी चारपाई पर जा लेटा था।

जब कलसूम अपने पलंग पर आँखें मुह लेट गई तो मसऊद ने उठकर घड़ी में समय देखा और कहा 'केलिए बाजी, ग्यारह में दस मिनट है, मैं पूरे ग्यारह बजे आपकी कमर दबाना छोड़ दूँगा।'

बहुत अच्छा, लेकिन तुम अब खून के लिए ज्यादा नखर न बघारो। इधर मेरे पलंग पर आकर जल्दी से कमर दबा दो। बना याद रखो, बड़े जोर से मान ऐँठूंगी। कलसूम ने मसऊद को डाट पिलाई। मसऊद ने अपनी बड़ी बहन की आवाज का पालन किया और दीवार का सहारा लेकर पाव से उसकी कमर दबानी शुरू कर दी। मसऊद के वजन के नीचे कलसूम की चौड़ी चबती कमर में हल्का-सा झुकाव पैदा हो गया। जब उसने दबाना 'गुरु' किया, ठीक उसी तरह जिस तरह मजदूर मिट्टी घूँघते हैं, तो कलसूम ने मजा लेने के लिए धीरे धीरे 'हाय हाय' करना शुरू कर दिया।

कलसूम के कूल्हा पर गोश्त अधिक था। जब मसऊद का पाव उस भाग पर पड़ा तो उसे ऐसा महसूस हुआ मानो वह उस बकरे के मांस को दबा रहा हो, जो उमन बसाई की दुकान में उगली में छुपा था। इस अनुभव ने कुछ क्षणों के लिए उसके मन में मस्तिष्क में कुछ ऐसे विचार

उत्पन्न कर दिए जिनका न कोई सिर था न पर। वह उनका मतलब न समझ सका और समझता भी कैसे जबकि कोई विचार पूरा ही नहीं था।

एक दो बार मसऊद ने यह भी महसूस किया कि उसके पाव के नीचे गोشت के लोथड़ा में हरकत पैदा हो गई है, ठीक वैसी ही हरकत जो उसने बकरे के गम गम गोشت में देखी थी। उसने बड़ी बदिनी से कमर दवाना शुरू की थी, लेकिन अब उसे इस काम में आनंद का अनुभव होने लगा। उसके बोक के नीचे कलमूस धीरे धीरे कराह रही थी। यह भिचा भिचा सा स्वर जो मसऊद के पैरा की हकत का साथ दे रहा था, उस अनाम से आनंद में वृद्धि कर रहा था।

घड़ी में ग्यारह बज गए, लेकिन मसऊद अपनी बहुत कलमूस की कमर दवाता रहा। जब कमर अच्छी तरह दवाई जा चुकी तो कलमूस सीधी लेट गई और कहने लगी, 'शाबाश मसऊद, गावा'। अब लगे हाश टागें भी दया दो। बिलकुल इसी तरह, शाबाश मेर भाई।'।

मसऊद ने दीवार का सहारा लेकर कलमूस की जाघा पर अपना पूरा बोक ढाला तो उसके पैरो के नीचे मछलिया भी तड़प गईं। कलमूस बड़े जोरा से हस पड़ी और दुहरी हो गई। मसऊद गिरते गिरते बचा लेकिन उसके तलबो में मछलियों की वह तड़प जस रथामी रूप में जम-नी गई। उसके मन में एक प्रबल इच्छा ने मिर उठाया कि वह उसी प्रकार नीवार का सहारा लेकर अपनी बहन की जाघें दवाए। अतएव उसने कहा, 'यह आपने हसना क्या शुरू कर दिया। सीधी लेट जाइए— मैं आपकी टागें दवा दू।

कलमूस सीधी लेट गई। जाघो की मछलिया इधर उधर हान के कारण जो गुदगुदी पैदा हुई थी, उसका असर अभी तक उसके शरीर में बाकी था ना भई, मेर गुदगुदी होती है। तुम जयनियों की तरह दवात हो।'।

मसऊद को खयाल आया कि गायद उसने गलत ढंग अपनाया था। 'नहीं अब की बार मैं आपपर पूरा बोक नहीं ढालूंगा—आप इतमीनान रखिए। अब ऐसी अच्छी तरह दवाऊंगा कि आपको कोई तकलीफ नहीं होगी।'।

दीवार का महारा लेकर मसऊ ने अपन शरीर को तोला और इस प्रकार धीरे-धीरे कलसूम की जाघा पर अपन पैर जमाए कि उसका घाघा बोझ वही गायब हो गया। धीरे धीरे बड़ी सावधानी से उसने पैर चलाना शुरू किए।

कलसूम की जाघो में अबड़ी हुई मछलियां उसके पैरों के नीचे दब दबकर इधर-उधर फिसलने लगीं। मसऊ ने एक बार स्कूल में तन हुए रस्ते पर एक बाजीगर को चलते देखा था। उसने सोचा कि बाजीगर के पैरों के नीचे तना हुआ रस्सा इसी प्रकार फिसलता होगा। इससे पटने भी कई बार उसने अपनी वहन कलसूम की टांगें दबाई थीं, लेकिन वह आनन्द, जो उसे अब आ रहा था, पहले बभी न आया था। बकरे के गम-गम गोश्त का उसे बार बार ख्याल आता था। एक दो बार उसने सोचा, कलसूम का अगर जबहु किया जाय तो खाल उनर जाने पर क्या उसके गोश्त में से भी धुआ निकलेगा? लेकिन ऐसी बेहूदा बातें सोचने पर उसने अपने आपको अपराधी भा अनुभव किया और अपन मस्तिष्क का इस प्रकार साफ कर दिया जैसे वह स्लेट का स्पज से साफ किया करता था।

‘बस बस, कलसूम थक गई, ‘बस-बस !’

मसऊ को एकदम सारासत लुकी। वह पलंग के नीचे उतरने लगी तो उसने कलसूम के दोनों बगलों में गुदगुदी करना शुरू कर दी। वह हसी के भार से लोट पाट हान लगी। इतनी शक्ति भी उसमें नहीं थी कि वह मसऊ के हाथों को पर भटक दे, लेकिन जब कोशिश करके उसने मसऊ को सात जमानी चाही तो मसऊ उछलकर जड़ से बाहर हो गया और स्नीपर पहनकर कमरे से बाहर हो गया।

जब वह आगन में पहुँचा तो उसने देखा कि हल्की हल्की बूदाबादी हो रही थी, बादल और भी भुंक आये थे। पानी की नन्ही नन्ही बूँदें किसी प्रकार की आवाज पैदा किए बिना आगन की इन्तों में धीरे धीरे जड़ हो रही थीं। मसऊ का बदन बड़ी प्रिय उष्णता का अनुभव कर रहा था। जब हवा का एक ठण्डा झोंका उसके गालों से टकराया और दो तीन नन्ही नन्ही बूँदें उसकी नाक पर पड़ीं तो उसका बदन में एक

भुरभुरी सी लहरा उठी। सामन कोठे की दीवार पर एक कबूतर और एक कबूतरी पास पास पक्ष फुलाए बैठे थे। ऐसा मालूम होता था कि दोनों दमपुरत की हुई हड्डियाँ की तरह गम है। गुले दाऊदी और नाजवी के हरे हर पत्ते ऊपर लाल-लाल गमला भ रहा रह थे। वातावरण में नींदें घुली हुई थी, ऐसी नींदें जिनमें जागरण अधिक होता है और मनुष्य के हृद गिद नम नम सपने इस प्रकार लिपट जाते हैं जस ऊनी कपड़ा।

मसऊद ऐसी बातें सोचन लगा, जिनका अर्थ उसकी समझ में नहीं आता था। वह उन बातों को छूकर देख सकता था लेकिन उनका अर्थ उसकी पकड़ से बाहर था। फिर भी एक अनाम सा आनंद उसे इस मोच विचार में आ रहा था।

बारिश में कुछ दर बड़े रहने के कारण जब मसऊद के हाथ बिलकुल ठण्डे हो गए और दबाने से उनपर सफेद सफेद धब्बे पड़ने लगे तो उसने मुट्ठियाँ बस ली और उनको मुह की भाप से गम करना शुरू किया। ऐसा करने से हाथों को कुछ गर्मी तो पहुची लेकिन वे सजल हो गए। अतएव आग तापने के लिए वह रसोईघर में चला गया। खाना तैयार था। अभी उमर पहला कौर ही उठाया था कि उसका बाप कब्रिस्तान से वापस आ गया। बाप बैठे में कोई बात नहीं हुई। मसऊद की माँ तुरन्त उठकर दूसरे कमरे में चली गई और वहा देर तक अपने पति से बातें करती रही।

खाने से निपटकर मसऊद बैठक में चला गया और खिट्की खोलकर फश पर लेट गया। बारिश के कारण सर्दी बढ गई थी और हवा भी चलने लगी थी, लेकिन मसऊद को यह सर्दी अप्रिय नहीं लग रही थी। तालाब के पानी की तरह यह ऊपर से ठण्डा और भीतर से गम थी। मसऊद जब फश पर लेटा तो उसके मन में इच्छा उत्पन्न हुई कि वह उस सर्दी के भीतर बस जाऊँ, जहा उसके शरीर को आनंददायक गर्मी पहुचने लग। काफी देर तक वह ऐसी नीम गम बातों के बारे में सोचता रहा और इस कारण उसके पुट्ठी में हल्की हल्की दुखन पैदा हो गई। एक दो बार उसने अगड़ाई ली तो उसे मजा आया। उसके शरीर के किसी भाग में, यह उसे मालूम नहीं था कि कहाँ, कोई चीज अटक सी गई थी। यह

चीज गया थी, इसका भी मसऊद की कुछ पान न था। असबता उस घटवाव ने उसके पूरे गरीर में बचनी, एक दरी हुई बचनी की स्थिति उत्पन्न कर दी थी। उसका सारा गरीर खिंचकर सच्चा हो जान का इरादा बन गया था।

दर तक गुदगुद बालीन पर करघें बदनन के बाद वह ठा घोर रसोईघर में होता हुआ आगन में आ निकला। न कोई रसोईघर में था और न आगन में। इधर-उधर जितने कमर थे सबके सब बंद थे। बारिश अब तक गई थी। मसऊद ने हाथी और गेंद निकाली और आगन में खेलना शुरू कर लिया। एक बार जब उभन जार न हिट लगाई तो गेंद आगन के दायें हाथ वाले कमर के दरवाजे पर लगी। भीतर से मसऊद के बाप की आवाज आई, बौन ?

‘जी मैं हूँ मसऊद।’

भीतर से आवाज आई ‘क्या कर रहे हो ?’

‘जी खेल रहा हूँ।’

‘खेना।’

फिर थोड़ी दूर से बाद उभने बाप ने कहा, ‘तुम्हारी मा मरा सिर दबा रही है, ज्यादा दौड़ न मचाना।’

यह सुनकर मसऊद ने गेंद वहीं पड़ी रहने दी और हाथी हाथ में लिए सामन वाले कमर की ओर चला। उनका एक दरवाजा पूरा भिड़ा हुआ था और दूसरा आधा—मसऊद को एक गलत सूझी। दबे पांव वह अधभिड़ दरवाजे की ओर बढ़ा और धमाके के साथ दोनों पट खोल दिए। दो चीतों उभरी और बनसूम और उसकी सहली विमला न, जा पास पास लेटी हुई थी भयभीत होकर भट से लिहाफ गी लिया।

विमला ने दनाउज के बदन खुल हुए थे और कलमूम उसका सग्न वशमथन का घूर रही थी।

मसऊद कुछ न समझ सका। उसके निमाण पर घुसा मा उठा गया। वह में उठते बदन लौटकर वह जब बैठक की ओर चला तो अकस्मात् उस अपने भीतर एक अथाह शक्ति का अनुभव हुआ, जिसने कुछ दूर के लिए उसकी सोचन-समझने की शक्ति हर ली।

ब्रठक में सिडकी के पास बैठकर जब मसऊद ने हाकी को दोना हाथा स पकडकर घुटने पर रखा तो उसे खयाल आया कि जरा-भा दबाव डालन पर भी हाकी में भुकाव पैदा हो जाएगा और कुछ अधिक जोर लगान पर तो हैण्डल चटाख से टूट जाएगा । उसन घुटने पर हाकी के हैण्डल में भुकाव तो पैदा कर लिया लेकिन अधिक म अधिक जोर लगान पर भी वह टूट न सका । देर तक वह हाकी के साथ दगल करता रहा । जब थककर हार गया तो झुझुकाकर उसन हाकी परे फेंक दी ।

मोजेल

त्रिलोचन न पहली वार, चार वर्षों में पहली वार, रात को आकाश दाना था और वह भी इसलिए कि उसकी तबीयत बहुत खराब हुई थी और वह केवल खुली हवा में कुछ दूर सोचने के लिए अड़धानी चेंब्रज के टरेस पर चला आया था।

मानास विल्कुल साफ था और बहुत बड़े साको तम्बू की तरह पूरी चम्बई पर नगा हुआ था। जहाँ तक दृष्टि जा सकती थी, वस्तियाँ ही वस्तियाँ नजर आती थीं। त्रिलोचन का ऐसा महसूस होता था कि आकाश से बहुत में तार भड़ककर विलिङ्गो में, जो रात के भूधरे में बड़े-बड़े पड़ लगती थी, अटक गए थे और जुगनुआ की तरह टिमटिमा रहे थे।

त्रिलोचन के लिए यह एक विल्कुल नया अनुभव, एक नई स्थिति थी—रात को खुले आकाश के नीचे सोना। उसने अनुभव किया कि वह चार वर्ष तक अपने पचट में कद रहा तथा प्रकृति की एक बहुत बड़ी दान से वंचित। लगभग तीन बजे थे। हवा बड़ी हल्की फुल्की थी। त्रिलोचन पंखे की कृत्रिम हवा का आदी था जो उसका पूरे शरीर को बोझिल कर देती थी। सुबह उठकर वह यदा ऐसा अनुभव करता था, मानो उसे रात भर मारा पीटा गया हो। लेकिन अब सुबह की प्राकृति हवा में उससे शरीर का रोम रोम तरोताजी चूसकर लपट हो रहा था। जब वह ऊपर आया था तो उसका दिव्य बहद बचन था। लेकिन धाँधे घण्टे में ही जो बचती और खराब उस घण्टे द रही थी, किसी हद तक दूर हो गयी थी। अब वह स्पष्ट रूप से सोच सकता था।

शुपाल और और उसका सारा परिवार मुहल्ले में था, जो कट्टर मुसलमानों का कट्टर था। यहाँ कई घरों में आग लग चुकी थी। कई जानें जा चुकी थी। त्रिलोचन उन सबको वहाँ से न आया होता, लेकिन मुसीबत यह थी कि कपयू लप गया था और वह भी न जाने कितने घण्टों के लिए। शायद अड़तालीस घण्टों के लिए। और त्रिलोचन विवश था।

आसपास सब मुसलमान थे, वे भी बड़े भयानक किस्म के मुसलमान । पंजाब स धड़ाधड़ खबरें आ रही थी कि वहाँ सिख मुसलमानों पर बहुत जुल्म ढा रहे हैं । कोई भी हाथ—मुसलमान हाथ—बड़ी आसानी से नरम व नाजुक कृपात वीर की कलाई पकड़कर उमे मौत के मुह की तरफ ले जा सकता था ।

कृपाल की मा अघो थी और बाप अपाहिज । भाई था लेकिन कुछ समय से वह देवलाली में था और उसे वहाँ नये नये लिए हुए ठेके की देखभाल करनी थी ।

त्रिलोचन को कृपाल के भाई निरजन पर बहुत गुस्सा आता था । उसने, जो रोज अखबार पढ़ता था उपद्रवों की तीव्रता के बारे में एक मप्ताह पहले चेतावनी दे दी थी और स्पष्ट घण्टा में कह दिया था, निरजन, ये ठेके वेके अभी रहने दो, हम एक बहुत ही नाजुक दौर से गुजर रहे हैं । अगरचे तुम्हारा वहाँ रहना बहुत जरूरी है लेकिन वहाँ मत रहो और मेरे यहाँ आ जाओ । इसमें कोई शक नहीं कि जगह कम है लेकिन मुसीबत के दिनों में आदमी जैसे तसे गुजारा कर लिया करता है, लेकिन वह न माना । उसका इतना बड़ा लेक्चर सुनकर केवल अपनी घनी मूछा में मुस्करा दिया, 'यार, तुम बक़ार फ़िक्र करते हो । मैंने यहाँ ऐसे कई फ़िमाद देखे हैं । यह अमतसर या लाहौर नहीं बीम्बे है बीम्बे । तुम्हें यहाँ आए सिर्फ चार साल हुए हैं और मैं बारह बरस से यहाँ रह रहा हूँ बारह बरस से ।

न जाने निरजन बम्बई को क्या समझता था । उसका खयाल था कि यह ऐसा शहर है कि अगर उपद्रव हो भी तो उनका अमर अपन आप ख़त्म हो जाता है, मानो उसके पास छमतर हो—या वह कहानियों का कोई ऐसा किला हो, जिसपर कोई आपत्ति नहीं आ सकती । लेकिन त्रिलोचन प्रात कालीन वायु में साफ़ दख़ रहा था कि मुह्रस्ता बिल्कुल सुरक्षित नहीं । वह तो सुबह के अख़बारा में यह भी पढ़न को तैयार था कि कृपाल वीर और उसके मा-बाप क़त्ल हो चुके हैं ।

उसकी कृपाल वीर के अपाहिज बाप और उसकी मा की काई पर-

बाह नहीं थी। बर मर जाते और कृपाल कौर बच जाती तो त्रिलोचन के लिए अच्छा था। वहा दबलासी म उमका भाई निरजन भी मारा जाता तो और भी अच्छा था, क्योंकि इस तरह त्रिलोचन के लिए भेदान माफ हो जाता। खासकर निरजन उसके रास्ते में रोड़ा ही नहीं, बहुत बड़ा पत्थर था। और इसीलिए जब कभी कृपाल कौर म उसके वार म यानें हाती तो वह उस निरजनसिंह के बजाय अलखनिरजनसिंह कहा करता था।

सुबह की हवा धीरे-धीरे वह रही थी और त्रिलोचन का पगडी रहित सिर बड़ी प्रिय ठण्डक महसूस कर रहा था, लेकिन उमम आका आदों एक दूसरे स टकरा रह थ। कृपाल कौर नयी-नयी उसकी जिंदगी म आई थी। या तो वह हट्टे नट्ट निरजनसिंह की बहन थी, लेकिन बहुत ही नरम, नाजुक और लचकीली थी। वह दहात म पली थी। वहा की कई गर्मिया-सदिया दस चुकी थी, फिर भी उसम वह सगनी और मरदानापन नहीं था, जो दहात की आम सिस लडकिया म होता है, जिह कडे म बड़ा परिश्रम करना पडता है।

उसके तीन नका कच्चे कच्चे थे, मानो अभी अधूर हा। आम दहाती मिय लडकिया की अपक्षा उसका रंग गोरा था, मगर कौर लटठ की तरह, और बदन चिकना था, मसराइज्ड कपडे की तरह। और वह बहुत तजीली थी। त्रिलोचन उसीक गाव का था लेकिन वह अधिक दिन वहा नहीं रहा था। प्राइमरी स निकलकर जब वह गहर के हाई स्कूल म गया तो बस, फिर उही का होकर रह गया। स्कूल स छट्टी पाई तो कालेज की पढाई शुरू हा गयी। इस बीच वह कई बार—अनको बार अपने गाव गया, लेकिन उसने कृपाल कौर नाम की किसी लडकी का नाम न सुना। शायद इसलिए कि हर बार वह इस अपरा तफरी म गहता था कि गीध स गीध गहर लीट जाए।

कालेज का जमाना बहुत पीछे रह गया था। अडवानी चेम्बर के टैरस और कालेज की इमारत में शायद दस वर्ष का फासला था, और यह फासला त्रिलोचन के जीवन की विचित्र घटनाओं से भरा हुआ था। धर्मा सिंगापुर हागवाग, फिर बम्बई, जहा वह चार वर्ष से रह रहा था, इन

चार वर्षों में उसने पहली बार रात को आकाश की शक्ल देखी थी, जो बुरी नहीं थी—खाकी रंग के तम्बू में हजारों दीय टिमटिमा रहे थे और हवा ठण्डी और हल्की-फुल्की थी।

कृपाल कौर के विषय में सोचते सोचते वह मोजेल के बारे में साबने लगा। उस यहूदी लड़की के बारे में, जो अड़वानी चेम्बज में रहती थी। उससे त्रिलोचन का गोड़े गोड़े¹ इश्क हो गया था। ऐसा इश्क, जो उसने अपनी पतीस वष की जिन्दगी में कभी नहीं किया था।

जिस दिन उसने अड़वानी चेम्बज में अपने एक ईसाई मित्र की सहायता से दूसरे माले पर फ्लैट लिया, उसी दिन उसकी मुठभेड़ माजेल से हुई, जो पहली तजर में उस खोफनाक हृद तक दीवानी मालूम हुई थी। कटे हुए भूरे बाल उसके सिर पर बिखर हुए थे—बेहद बिखर हुए। होठों पर लिपस्टिक ऐसे जमा थी, जैसे गाढ़ा खून और वह भी जगह जगह चटखी हुई। वह ढीला-ढाला सफेद चोगा पहन रही थी, जिसके खुले गिरेवान से उसकी नीली पड़ी बड़ी-बड़ी छातियों का लगभग चौथाई भाग तजर में रहा था। बाह जा कि नगी थी, उनपर महीन-महीन बाला की तह जमी हुई थी, जैसे यह अभी अभी किसी संछून से बाल कटवाकर आई हो और उनकी नहीं नहीं हवाइया उनपर जम गई हों।

होठ अधिक मोटे नहीं थे 'लेकिन गहरे उनाबी रंग की लिपस्टिक कुछ इस तरीके से लगाई गई थी कि वे मोटे और भस्मे के गोश्त के टुकड़े जैसे मालूम होते थे।

त्रिलोचन का फ्लैट उसके फ्लैट के विल्फुल सामन था। बीच में एक तग मंत्री थी, बहुत ही तग। जब त्रिलोचन अपने फ्लैट में घुसने के लिए आगे बढ़ा तो माजेल बाहर निकली। राडाऊ पहन थी। त्रिलोचन उसकी आवाज सुनकर रुक गया। माजेल ने अपने बिखरे बालों की चिक्का में से अपनी बड़ी बड़ी आंखों से त्रिलोचन की ओर देखा और हसी—त्रिलोचन बीखला गया। जब से चाबी निकालकर वह जल्नी में दरवाजे की ओर बढ़ा। माजेल की एक खड़ाऊ सीमेण्ट के चिक्का फर्श पर फिसली और वह

1 घुटने घटने

उसके ऊपर गा बिगी ।

जब त्रिलोचन सभता तो मोजेल उसके ऊपर थी, कुछ इस तरह कि उसका लम्बा चोंगा ऊपर चढ़ गया था और उसकी दां नगी, बड़ी तगड़ी टांगें उसके इधर उधर थी और जब त्रिलोचन ने उठने की कोशिश की तो वह बीरलाहट में कुछ इस तरह मोजेल—भारी माजल में उलभा, जैसे वह साबुन की तरह उसके सार वदन पर फिर गया हो ।

त्रिलोचन ने हाफत हुए बड़े गिण्ट गन्दा में उसमें क्षमा मागी । मोजेल में अपना चागा ठीक किया और मुस्करा दी, वह छडाऊ एकदम बण्डम चीज है ।' और वह उतरी हुई लडाऊ में अपना भगूठा और उसके साथ वाली उगली कमाती हुई बारीडोर से बाहर चली गई ।

त्रिलोचन का खयाल था कि मोजेल में दोस्ती पैदा करना गायब मुश्किल हो, लेकिन वह बहुत ही थोड़े समय में उससे घुलमिल गई । हा, एक बात थी कि वह बहुत उदृण्ड और मुहजोर थी और त्रिलोचन की कुछ परवाह नहीं करती थी । वह उसमें खानी थी, उससे पीनी, थी उसके साथ सितना जाती थी । भारी-भारा दिन उसके साथ जुड़ पर नहाती थी, लेकिन जब वह बाहो और होठों से कुछ भागे बचना चाहता तो वह उस डाट देती । कुछ इस तरह उस घुड़कती कि उसके सारे मसूबे दाढ़ी और भूछा में चक्कर फाटत रह जाते ।

त्रिलोचन की पहले किसीके साथ प्रेम नहीं हुआ था । लाहौर में, बर्मा में, सिंगापुर में वह लडकियाँ कुछ समय के लिए खरीद लिया करता था । उस वक़्त भी स्वप्न में भी खयाल न था कि बम्बई पहुँचते ही वह एक बहुत ही अलहड किस्म की यहूनी लडकी के प्रेम में मोढ़े-मोढ़ घस जाएगा । वह उससे कुछ विचित्र प्रकार की विमुखता बरतती थी । उसके कहन पर तुरन्त सग घजबर सितना जान के लिए तयार हो जाती थी, लेकिन जब वह अपनी मोट पर चढते तो इधर उधर वह निगाह दीखाना शुरू कर देती । यदि कोई उसका परिचित निकल आता तो जोर से हाथ हिलाती और त्रिलोचन में पूछे बिना उसकी बगल में जा बैठती ।

होटल में बठे हैं । त्रिलोचन ने मोजेल के लिए विशय रूप से उमदा खाने मगवाए हैं, लेकिन उस अपना कोई पुराना दोस्त दिखाई पड गया है

और वह अपना निवाला छोड़कर उसने पास जा बठी है और त्रिलोचन की छाती पर मूँग दल रही है ।

त्रिलोचन कभी-कभी भिना जाता था, क्योंकि वह उस श्रवणा छोड़ कर अपने उन पुरान दोस्ता और परिचितों के साथ चली जाती थी और कई कई दिन तक उसमें मुलाकात नहीं करती थी । कभी सिर दद का वहाना कभी पेट की खराबी जिसके तार में त्रिलोचन को अच्छी तरह मालूम था कि वह फोलाद की तरह कड़ा था और कभी खराब नहीं हो सकता था ।

जब उससे मुलाकात होती तो वह उससे कहती तुम सिख हो, य नाजुक बातें तुम्हारी समझ में नहीं आ सकती ।

यह सुनकर त्रिलोचन जल भुन जाता और पूछता 'कौन सी नाजुक बातें—तुम्हारे पुराने यारों की ?'

मोजेल दोनों हाथ अपने चौड़े चकले कूल्हा पर खटकाकर अपनी ताड़ी टांगें चौड़ी कर देती और कहती यह तुम मुझ उनके तान क्या देते हो । हाए व मेरे पार है और मुझे अच्छे लगते हैं । तुम जलत हो तो जलते रहो ।'

त्रिलोचन एक कुशल वकील की तरह पूछता 'इस तरह तुम्हारी मरी कमें निभेगी ?'

मोजेल जोर का कहकहा लगाती तुम सबकुछ सिख हो । इडियट तुमसे किमने कहा है कि भर साथ निभाओ । अगर निभान की बात है तो जाओ अपने दंग में, किसी सिखनी से 'याहू कर लो । भर साथ तो इमी तरह चलेगा ।

त्रिलोचन नरम पड़ जाता । वास्तव में मोजेल उसकी बड़ी कमजोरी बन गई थी । वह हर हालत में उसके सामीप्य का इच्छुक था । इसमें कोई सन्देह नहीं कि मोजेल की वजह से उसकी प्राय वयस्क होती थी । मामूली मामूली क्रिश्चियन छोकरा के सामने, जिनकी कोई हस्ती नहीं थी उस लज्जित होना पड़ता था । लेकिन दिल में भजबूर होकर उसने यह सब कुछ सहने का निश्चय कर लिया था ।

आम तौर पर तीहीन और धंज्जती की प्रतिक्रिया प्रतिसोध होता

है, लेकिन त्रिलोचन के मापले में ऐसा नहीं था। उसने अपने दिल और दिमाग की बहुत-सी आखें मोच ली थी और वानो में रुई ठस ली थी। उसकी मोजेल पसंद थी। पसंद ही नहीं, जैसा कि वह अकर्म अपने दोस्तों से कहा करता था, मोटे-मोटे उसके प्रेम में घस गया था। अब इसके सिवा और कोई चारा नहीं था कि उसके शरीर का जितना भाग शेष रह गया था, वह भी इस प्रेम की दमन में चना जाए और बिस्मा खत्म हो।

लेकिन वह नक वह इसी तरह बेइज्जती का जीवन बिताता रहा लेकिन सुदृढ़ रहा। धागिर एक दिन, जबकि मोजेल मौज में थी, उसने अपनी मुजाभा में उस समेटकर पूछा 'मोजेल, क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करती हो ?'

मोजेल उसकी मुजाभा में निकल गई और कुर्सी पर बैठकर अपने प्राक का घंटा देखने लगी फिर उसने अपनी माटी-माटी यहूदी आखें उठाई और अपनी पलकों भपकाकर कहा, 'मैं सिल से प्रेम नहीं कर सकती।'

त्रिलोचन ने ऐसा महमूस किया कि उसकी पगड़ी के नीचे किसीन दहकती चिनगारिया खल दी है। उसके मन बदन में धाग लग गई, 'मोजेल, तुम हमेशा मेरा मजाक उड़ाती हो यह मेरा मजाक नहीं, मेरे प्रेम का मजाक है।'।

मोजेल उठी और उसने अपने भूत बट हुए दाता का एक दिनफरेब भटका दिया, तुम देख कर लो और अपने सिर के बाल खुल छाड़ दो ता मैं गत लगाती हू कि कट छाकड़े तुम्हें आल मारेंगे—तुम सुदर हो।

त्रिलोचन के केशों में और भी चिनगारिया पड़ गई। उसने भाग बनकर जोर से मोजेल को अपनी ओर खींचा और उसके उन्नाबी हाथों में अपने मुँह भर हाथ गाड़ दिए।

मोजेल ने एकदम 'फूँ' की और उससे अपने को छुड़ा लिया। 'मैं सुबह ही अपने दाता पर धस कर चुकी हूँ—तुम कष्ट न करो।'।

त्रिलोचन चिल्लाया, 'मोजेल !'

मोजेल बेनिटी बैग से छोटा-सा आईना निकालकर अपने हाथ देखने लगी जिनपर लगी गाड़ी लिफाफ्टक पत्र खराब पड़ गई थी। 'खुदा की

वसम तुम अपनी मूछा और दाढ़ी का गही इस्तेमाल नहीं करते । इनके बाल ऐसे अच्छे हैं कि मेरा नबी ब्ल्यू स्फट अच्छी तरह माफ कर सकता है—वस, थोड़ा-सा पट्टाल लगाने की जरूरत होगी ।’

त्रिलोचन क्रोध की उग सीमा तक पहुँच चुका था, जहाँ वह विलकुल टण्डा हो गया था । वह आराम से सोफे पर बैठ गया । मोजेन भी आ गई और उसने त्रिलोचन की दाढ़ी मोचनी शुरू कर दी । उसम जो पिने लगी थी वे उसने एक एक करके अपने दाता में दवा ली ।

त्रिलोचन सुन्दर था । जब उसके दाढ़ी मूछा वही उगी थी तो लगभग उम्र तुल्य केगा म दखकर धात्ता ला जात थे कि वह कोई कम उम्र की सुन्दर लड़की है । मगर अब वाला के इस ढर न उसके नैन नयन साडिया की तरह झर झिपा लिए थे और इस बात को वह स्वयं भी जानता था । लेकिन वह धार्मिक प्रवृत्ति का एक सुगील युवक था । उसके दिल में धर्म के प्रति सम्मान था । वह नहीं चाहता था कि वह उन चीज़ों का अपने अस्तित्व से झलक कर दे जिनमें उसके धर्म की पहचान होती थी ।

जब दाढ़ी पूरी खुल गई और उसके मीन पर लटकन लगी तो उसने मोजेन से पूछा ‘मह तुम क्या कर रही हो ?’

दाता म पिने दबाए वह मुस्कराई, तुम्हारे बाल बहुत मुलायम हैं । मेरा अनुमान लगता था कि इनसे मेरा नबी ब्ल्यू स्फट साफ हो सकेगा । त्रिलोचन ! तुम ये मुझ द दो मैं इन्हें गूँथकर अपने लिए एक फ्रंट क्लाम बटुआ बनवाऊँगी ।

अब त्रिलोचन की दाढ़ी में फिर चिनगारिया भड़कने लगी । वह बड़ गम्भीर स्वर में मोजेन से बोला, मैं आज तक कभी तुम्हारे मजहब का मजाक नहीं उड़ाया, तुम क्या उठाती हो ? दसो, किसीकी धार्मिक भावना से खेलना अच्छा नहीं होता । म यह कभी बर्दाश्त न करना सिर्फ इसलिए करता रहा कि मुझे तुमसे अथाह प्रेम है । क्या तुम्हें इसका पता नहीं ?’

मोजेन ने त्रिलोचन की दाढ़ी में खेलना बन्द कर दिया और बोली, मुझे मालूम है ।

फिर ? त्रिलोचन ने अपनी दाढ़ी के बाल बड़ी सफाई से तह किए

और भोजल के दाता स पिने निकाल ली। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मेरा प्रेम बकवास नहीं—मैं तुमस शादी करना चाहता हूँ।

‘मुझे मालूम है।’ बाला को एक हल्का सा भट्पा देकर वह उठी और दीवार में लटकी हुई तस्वीर की तरफ दखन लगी। मैं भी लगभग यही फैसला कर चुकी हूँ कि तुमस शादी करोगी।’

त्रिलोचन उछल पड़ा, सच ?’

भोजल के उनाबी होठ बड़ी मोटी मुस्कराहट के साथ खुले और उसके सफेद मजबूत दात एक क्षण के लिए चमके। हाँ।’

त्रिलोचन ने अपनी छापी तिपटी दाढ़ी ही से उसको अपने गीने के साथ भीच लिया। ‘तो तो, क्या ?’

भोजल अलग हट गई। जब तुम अपने ये बाल कटवा दोगे।

त्रिलोचन उस समय जो हो मो हो बन गया। उसने कुछ न साचा और कह दिया, ‘मैं कल ही कटवा दूंगा।’

भोजल फश पर टप डाल करन लगी। ‘तुम बकवास करत हा त्रिलोचन। तुमस इतनी हिम्मत नहीं है।’

उसने त्रिलोचन के दिमाग से मजहब के रह-सह खयाल को बाहर निकाल फेंका। ‘तुम देख लोगी।’

‘देख लूगी।’ और वह तेजी से आगे बढ़ी। त्रिलोचन की मूछा को धूमा और ‘फू फू’ करती बाहर निकल गई।

त्रिलोचन ने रात भर क्या सोचा और वह किन किन यातनाओं से गुजरा इसकी चर्चा व्यर्थ है इसलिए दूसरे दिन उसने फाट में अपने कमरे कटवा दिए और दाढ़ी भी मुड़वा दी। यह सब कुछ होता रहा और वह भाँखें भीचे रहा। जब सारा मामला साफ हो गया तो उसकी आँखें खुली और वह देर तक अपनी शक्ल दीर्घ में दखता रहा, जिसपर बम्बई की सुन्दर सफेद लटकी भी कुछ देर के लिए ध्यान देने पर मजबूर हो जाती।

इस समय भी त्रिलोचन वही एक विचित्र ठण्डक मससूस करने लगा, जो सैलून से बाहर निकलकर उसकी लगी थी। उसने टैरेस पर तेज-तेज चलना शुरू कर दिया, जहाँ टकिया और नला की भरमार थी।

वह चाहता था कि उस कहानी का शेष भाग उसके दिमाग में न आए, लेकिन वह आए बिना न रहा ।

बाल कटवाकर वह पहले दिन घर से बाहर नहीं निकला । उसने अपने नौकर के हाथ दूसरे दिन एक चिट लिखकर मोजेल को भेजी कि उसकी तबीयत खराब है, थोटी दर के लिए आ आए । मोजेल आई । त्रिलोचन को बाला के बगैर देखकर पहले वह क्षण भर ठिठकी, फिर 'माई डार्लिंग त्रिलोचन !' कहकर उसके साथ लिपट गई और उसका सारा चेहरा उन्नाबी कर दिया । उसने त्रिलोचन के साक और मुलायम गालों पर हाथ फेरा उसके छोटे अंग्रेजी किस्म के कटे हुए बालों में अपनी उंगलियों से कधी की और अरबी भाषा में नार लगानी रही । उसने इतना शोर मचाया कि उसकी नाक से पानी बहने लगा । मोजेल ने जब इन्ने महसूस किया तो उसने अपनी स्कट का घेरा उठाया और उस पाछना शुरू कर दिया । त्रिलोचन शरमा गया । उसने जब स्कट नीची की तो उसने डपटते हुए कहा, नीचे कुछ पहन तो लिया करो ।' मोजेल पर इसका कुछ असर न हुआ । वासी और जगह जगह से उखड़ी हुई लिपस्टिक लगे होठों से मुस्कराकर उसने केवल इतना ही कहा, मुझे बड़ी घबराहट होती है—ऐम ही चलता है ।'

त्रिलोचन को वह पहला दिन याद आ गया, जब वह और मोजेल दोनों टकरा गए थे और आपस में कुछ अजीब तरह गडबडगड हो गए थे । मुस्कराकर उसने मोजेल को अपने सीने से लगाया । 'शादी कल होगी ?'

जहर । मोजेल ने त्रिलोचन की मुनायम ठोड़ी पर अपने हाथ की पुश्त फेरी ।

तब यह हुआ कि शादी पून में हो । क्योंकि सिविल मैरिज थी, इसलिए उनको दस-पंद्रह दिन का नोटिस देना था । अदालती कारवाई थी, इसलिए उचित समझा गया कि पूना बेहतर है, पाम है और त्रिलोचन के वहां कई मित्र भी हैं । दूसरे दिन उह प्रोग्राम के अनुसार पूना खाना हो जाना था । मोजेल फोटो के एक स्टोर में सेल्समन थी, उससे कुछ दूरी पर टक्की स्टैण्ड था । वस, वही उसको मोजेल न इंतजार करने के लिए

कहा था। निश्चित समय पर त्रिलोचन वहाँ पहुँच गया। डेढ़ घण्टा इंतजार करता रहा, लेकिन वह न आई। दूसरे रोज उसे मालूम हुआ कि वह अपने एक पुराने मित्र के साथ जिसने नई-नई माटर खरीदी थी, देवलाली चली गई थी और अनिश्चित समय तक वहीं रहेगी।

त्रिलाचन पर क्या गुजरी, यह एक बड़ी सम्झी कहानी है। मार इसका यह है कि उसने जी कड़ा कर लिया और उसको भूल गया। इतन में उसकी मुलाकात वृपाल कौर से हो गई और वह उससे प्रेम करने लगा, और कुछ ही समय में उसने अनुभव किया कि भोजेल बहुत बाहियाल लडकी थी, जिसके दिल के साथ पत्थर लग हुए थे, जो चिड़े के समान एक जगह से दूसरी जगह फुदकता रहता था। उसे इस बात से बड़ा संतोष हुआ कि वह भोजेल ॥ शादी करने की मसनी न कर बैठा।

लेकिन इसपर भी कभी कभी भोजेल की याद एक चुटकी की तरह उसके दिल को पकड़ लेती थी और फिर छोड़कर फुदकड़े लगाती गायब हो जाती थी, वह बेगरम थी बेलिहाज थी। उस किसीकी भावनाओं का खयाल नहीं था, फिर भी वह त्रिलोचन का पसंद थी। इसलिए वह कभी कभी उसके बारे में सोचने पर मजबूर हो जाता था कि वह देवलाली में इतने दिना से क्या कर रही है? उसी आदमी के साथ है जिसने नई-नई कार खरीदी थी या उस छोड़कर किसी दूसरे के पास चली गई है? उसको इस विचार में दुख होता था कि वह उसके बजाय किसी दूसरे के पाम थी, यद्यपि उसको भोजेल की प्रकृति का पूरा पूरा ज्ञान था।

वह उसपर सँकड़ो नहीं, हजारों रुपये खर्च कर चुका था। लेकिन अपनी इच्छा से, करना भोजेल मंजूर नहीं थी। उसका बहुत सम्झी किस्म की चीजें पसंद आती थी। एक बार त्रिलाचन ने उस मोन के टाप्प देन का इरादा किया जो उसे बहुत पसंद थे, लेकिन उसी दुकान में भोजेल भूठे भडकीने और बहुत सस्त आवेजों पर भर मिट्टी और सोन के टाप्प छोड़कर त्रिलोचन से मिनतें करने लगी कि वह उन्हें खरीद दे।

त्रिलाचन अब तक त समझ सका कि भोजेल किस प्रकार की लडकी है। किस मिट्टी की बनी है। वह घण्टा उसके साथ लेटी रहती थी

उसको चूमन की इजाजत देनी थी। वह सारा का सारा साबुन की तरह उसके शरीर पर फिर जाना था, लेकिन इससे आगे वह उसको एक इंच बढ़न नहीं देती थी। उसको चिढ़ाने के लिए इतना कह देती थी, 'तुम सिल हा, मुझे तुमसे घृणा है।'

त्रिलोचन अच्छी तरह जानता था कि मोजेल को उससे घृणा नहीं थी। यदि ऐसा होता तो वह उससे कभी न मिलती। महनशक्ति उसमें तनिक भी नहीं थी। वह कभी दो घण्टे उसके साथ न गुजारती। दो टूक फेंकला कर देती। अण्डरवीयर उसको नापसंद थे, इसलिए कि उनसे उसको उलझन हाती थी। त्रिलोचन ने कई बार उसको इनकी अनियमितता के बारे में बताया था शर्म हुआ था वास्ता दिया था, लेकिन उसने यह चीज कभी न पहनी।

त्रिलोचन जब उससे शर्म-हुआ की बात करता तो वह चिढ़ जाती थी। 'मह हुआ क्या क्या बकवास है?—अगर तुम्हें उसका कुछ रायाल है तो आज बंद कर लिया करो। तुम मुझे यह बताओ कौन सा ऐसा लिब्राम है जिसमें आदमी नगा नहीं हो सकता, या जिसमें से तुम्हारी नजरें पार नहीं हो सकती, मुझसे ऐसी बकवास मत किया करो, तुम सिल हा—मुझे मालूम है कि तुम पतलून के नीचे एक सिली-सा अण्डरवीयर पहनते हो, जो निकर से मिलता जुलता होता है। यह भी तुम्हारी दाढ़ी और मिर के बालों की तरह तुम्हारे मजहब में शामिल है—गरम आनी चाहिए तुम्हें, इतने ठंडे हो गए हो और अब तक यही समझते हो कि तुम्हारा मजहब अण्डरवीयर में छिपा बठा है।

त्रिलोचन को गुरु-गुरु में ऐसी बातें सुनकर क्रोध आया था लेकिन बाद में सोचन-विचारने पर वह कभी कभी लुढ़क जाता और सोचता कि मोजेल की बातें शायद गलत नहीं हैं। अगर जब उसने अपने पेशा और दाढ़ी का सफाया करा दिया तो उसे सचमुच ऐसा लगा कि वह बेकार इतने दिन बालों का बोझ उठाए उठाए फिरा जिसका कुछ मतलब ही नहीं था।

पानी की टकी के पास पहुँचकर त्रिलोचन रुक गया। मोजेल को एक मोटी गाली देकर उसने उसके बारे में सोचना बंद कर दिया। कृपाल

कोर एक पवित्र लडकी थी, जिसमें उसकी प्रेम हो गया था, और जो खतरे में थी। वह ऐसे मुन्हे में थी, जिसमें कट्टर विस्म के मुसलमान रहते थे और वहां दो-तीन वारदातें भी हो चुकी थी—लेकिन मुसीबत यह थी कि उस मुन्हे में छठनालीस घण्ट का कर्पूर था। मगर कर्पूर की कौन परवाह करता है ? उस चाल के मुसलमान ही अगर चाहें तो अन्दर ही अन्दर कृपाल कोर और उसकी मां तथा उसके बाप का बड़ी आमानो से सफाया कर सकते थे।

त्रिलोचन सोचता-साचता पानी के भोट नल पर बठ गया। उसके सिर के बाल अब बाफी लम्बे हो गए थे। उसका विश्वास था कि वे एक चप के अन्दर अन्दर पूरे केगा म बदल जायेंगे। उसकी दांगी तेजी म बढ़ रही थी, किंतु वह उस बढ़ाना नहीं चाहता था। फोट म एक बारकर था, वह इस सफाई से उसे तराशता था कि तरागी हुई दिखाई नहीं देती थी।

उमने अपन नरम और मुनायम बाना म जगनिया फेरी धार एक ठण्डी सास ली। उठने का इरादा कर ही रहा था कि उसे खडाऊ की बज्ज आवाज सुनाई दी। उसने सोचा, कौन हो सकता है ? बिल्डिंग में कई गहूवी घीरतें थी जो सबकी सब घर में खडाऊ पहनती थी। आवाज और करीब आती गई। एवाणक उसने दूसरी टकी के पास माजिन का दस्त, जो गहूदिया के विशेष ढग का डीला डाला घुर्ता पहन बडे जोर की भगडाई ल रही थी—इस जोर की कि त्रिलोचन को महसूस हुआ कि उसके आसपास की हवा चटम जाएगी।

त्रिलोचन पानी के नल पर से उठा। उसने सोचा यह एवाणक कहा से टपक पड़ी—और इस समय दरम पर क्या करने आई है ? मोजेल ने एक और भगडाई ली—अब त्रिलोचन की हडिडया चटखने लगी।

डील डील बुत्तें म उसकी मजबूत छातिया घडकी—त्रिलोचन की आवा के सामने कई गोल गोत और चपटे चपट मीन उभर आए। वह जोर से खाता। मोजेल ने पलटकर उसकी ओर देखा। कुछ विशेष प्रतिश्रिया नहीं हुई। वह खडाऊ घसीटती उसके पास आई और उसकी नहीं मुन्नी दाढी देखन लगी 'तुम फिर सिख बन गए त्रिलोचन ?'

टाढी के बाल त्रिलोचन को चुभन लगे ।

मोजेल ने आगे बढ़कर उसकी ठोड़ी के साथ अपने हाथ की पुश्त रगड़ी और मुस्कराकर कहा, 'अब यह ब्रुश इम योग्य है कि मरी नेवी ब्ल्यू स्कट माफ कर सके । मगर वह तो वही देवलाली म रू गई है ।

त्रिलोचन चुप रहा ।

मोजेल ने उसकी बांह की चुटकी ली । 'बोलत क्या नहीं सरदार साहब ?

त्रिलोचन अपनी पुरानी मूखताओं को दोहराना नहीं चाहता था, फिर भी उमन सुबह के घुघल अघरे में दखा कि मोजेल म कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ था, सिफ वह कुछ कमजोर नजर आती थी ।

त्रिलाचन न उससे पूछा 'बीमार रही हो ?

'नहीं । मोजेल न अपन कट हुए बालों को एक हल्का सा झटका दिया ।

पहने स कमजोर दिग्बाइ दती हो ।

'मैं डाईटिंग कर रही हू ।' मोजेल पानी के मोट नल पर बठ गई और खडाऊ फा के साथ बजान लगा । 'तुम, मतलब यह कि अब फिर नये मिर में मिल बन रह हो ?'

त्रिलोचन न एक प्रकार की ठिठाई स कहा, 'हां ।'

मुबारक हो ।' मोजेल न एक खडाऊ पैर स उतार ली और पानी के नल पर बजान लगी । 'किसी और लडकी स प्रेम करना शुरू कर दिया है ?

त्रिलोचन ने धीमे से कहा, हा ।'

'मुबारक हो—इसी बिल्डिंग की है वोइ ?'

'नहीं ।'

यह बहुत बुरी बात है ।' मोजेल खडाऊ अपनी उगलिया म उडसकर उठी । 'आदमी को हमणा अपने पडोमिया का सयाल रखना चाहिए ।

त्रिलोचन चुप रहा । मोजेल न उसकी दाढ़ी को अपनी पांचा उगलिया में छेना । क्या उमी लडकी न तुम्हें य बाल बनान की राय दी है ?'

'नहीं ।'

त्रिलोचन बड़ी उलझन में था, जैसे कमा करने करते उमकी दाढ़ी के झाल आपस में उलझ गये हो। जब उमन नहीं कहा तो उसके कहने में तात्पापन था।

मोजेल के हाठा पर लिपस्टिक वाली गोश्त की तरह मानूम होती थी। वह मुस्कराई तो त्रिलोचन को ऐसा लगा कि उसके गाव में भटके की दुकान पर कसाई ने छुरी से गोश्त के दो टुकड़े कर दिए हो।

मुस्कराने के बाद वह हसी। 'तुम अब यह दाढ़ी मुड़ा डालो तो किसी-की भी बसम ले लो, मैं तुमसे गादी बन लूंगी।'।

त्रिलोचन के जी में आई कि उससे कह दे कि वह एक बड़ी शरीफ, सुनील और लजीली बबारी लडकी में प्रेम कर रहा है और उससे ही गादी करगा। मोजेल उसके मुकाबले में निलज्ज है बन्मूरत, बेवफा और कपटी है। लेकिन वह इस तरह का ओछा आदमी नहीं था। उसने मोजेल से केवल इतना ही कहा, मोजेल, मैं अपनी शादी का फलना कर चुका हूँ। मेरे गाव की एक सीधी मादो लडकी है, जो मजहब की पाबंद है। उसीके लिए मैंने बाल बटाने का फसला कर लिया है।

मोजेल सोच विचार की आदी नहीं थी लेकिन उसने कुछ देर सोचा और खड़ाऊ पर आगे दायर में घूमकर त्रिलोचन से कहा अगर वह मजहब की पाबंद है तो वह तुम्हें कब स्वीकार करेगी? क्या उस मालूम नहीं कि तुम एक बार अपने बाल कटवा चुके हो?

'उमकी अभी मालूम नहीं—दांगे में तुम्हारे देवलाती जान के बाद ही बढानी शुरू कर दी थी, केवल प्रायश्चित्त के रूप में। उसके बाद मरी कृपाल कौर से मुलाकात हुई। लेकिन मैं पगली इस तरह से बाधता हूँ कि सौ में से एक ही आत्मी मुश्किल से जान सकता है कि मेरे कंग कटे हुए हैं। लेकिन अब ये बहुत जल्दी ठीक हो जाएंगे। त्रिलोचन ने अपने मुलायम बालों में उगलिया में कधी करना शुरू की। यह बहुत अच्छा है—लेकिन ये कमबख्त मच्छर यहां भी मौजूद हैं। देखो, किस जोर से काटा है।'।

त्रिलोचन ने दूसरी ओर देखना शुरू कर दिया। मोजेल ने उस जगह, जहां मच्छर ने काटा था, उगली से थूक लगाया और बुता छोड़कर सीधी

गद्दी हो गई । क्या हा रही है तुम्हारी गान्धी ?

‘अभी कुछ बात रही । यह बहरर नितावन रिता हो गया ।

कुछ देर तक चुप्पी रही फिर माजन न उमकी रिता का अनुमान लगाकर बोली सम्भीरता म गुला निताता तुम क्या गाता है ?

निताता का उत समय किसी हिंसा की जगह थी गाता क्या माजन ही क्या है । इमतिन उता उतकी गारा बिम्बा मुता दिया । माजन होगी ‘तुम अमरन दर्जे क दृष्टिबट है । जाया, उमरा न आया, एगी क्या मुक्ति है ।’

‘मुद्रितन । माजन तुम इस मामन की नजावन का कभी नहीं समझ सकते—रिता भी मामन की नजावन का समझा के लिए तुम बहुत ही छिछना लम्बी हो । यही सजट है कि मर श्रीर तुम्हारे सम्बन्ध टूट गए, जिताया मुक्त गारी उम अममीम रहगा ।

मोजल न ओर न अमनी रत्नाऊ पानी के नन के साथ मारी ‘अफ-सोम बी डम्ड मिनी, दृष्टिबट’ तुम यह सोचा कि तुम्हारी उमकी क्या नाम है उमरा उम मुम्नन म बचा जाना का है और तुम बठ गए हो सम्भ्रधा का राना रोने तुम्हारे मर सम्बन्ध कभी बन नहीं रहे सकते व तुम एक सिन्नी बिम्ब के आदमी हो और बहुत डरपोर । मुझे निडर आदमी चाहिए लेकिन छोडो इन बातों का चलो आया तुम्हारी उमकी से आए ।

उसने त्रिलोचन की बाह पकड़ ली । त्रिलोचन न धवराहट म उससे पूछा, क्या न ?’

‘वहीं से, जहां वह है । मैं उस मुहल्ले की एक एक इट की जानती हूँ —कनो आओ मेरे साथ ।

मगर सुनो ता—क्या है ।’

‘मोजल के लिए नहा—चलो आओ ।

वह त्रिलोचन की सोचती उस दरवाजे तक ले गई, जो नीचे सीढ़िया की ओर खुलता था । दरवाजा सोनकर वह उतरने वाली थी कि रक गई और त्रिलोचन की दाढ़ी की ओर देखने लगी ।

त्रिलोचन ने पूछा ‘क्या बात है ?’

मोजेल न कहा 'यह तुम्हारी दाढ़ी लेकिन खैर, ठीक है। इतनी बड़ी नहीं है—नये सिर चलोगे तो कोई नहीं समझेगा कि तुम सिख हो।'

'नग सिर ?' त्रिलोचन ने कुछ चौखलाकर कहा 'मैं नग सिर नहीं जाऊंगा।'

मोजेल न बड़ी भोली सूरत बनाकर पूछा, 'क्या ?'

त्रिलोचन न अपने बालों की एक लट ठीक की और बोला, 'तुम समझती नहीं हो। मेरा वहा पगड़ी के बिना जाना ठीक नहीं।'

'क्या ठीक नहीं ?'

तुम समझनी क्या नहीं हो कि उसने अभी तक मुझे नये सिर नहीं देखा—वह यही समझती है कि मेर कस है। मैं उसे यह भेद नहीं जानने दना चाहता।'

मोजेल न जोर स अपनी खड़ाऊ दरवाजे की दहलीज पर भारी, 'तुम सचमुच अव्वल दर्जे के ईडियट हो गधे वही के। उसकी जिदगी का सवाल है—क्या नाम है तुम्हारी उस कौर का, जिमसे तुम प्रेम करते हो ?'

त्रिलोचन न उसे समझान की कोशिश की, 'मोजेल, वह बड़ी धार्मिक प्रवृत्ति की लटकी है—अगर उसने मुझे नये सिर दख लिया तो मुझमे नफरत करन लगगी।'

मोजेल चिन्तित रह। ओह तुम्हारा प्रेम बी डेम्ड—मैं पूछती हूँ, क्या सार सिख तुम्हारी तरह के बकूफ होत हैं ?—उसकी जान खतरे मे है और तुम कहत हो कि पगड़ी जरूर पहनोगे और शायद अपना अण्डर-वीयर भी जा निकर स मिलता जुलता है।'

त्रिलोचन न कहा, 'वह तो मैं हर वकन पहन रहता हूँ।'

बहुत अचछा करत हो लेकिन अब तुम यह सोचो कि मामला उम मुहल्ले का है जहा मिया भाई ही मिया भाई रहत हैं और वह भी बड़े-बड़े दादा। तुम पगड़ी पहनकर गए ता वही करन कर दिए जाओगे।'

त्रिलोचन न सक्षिप्त सा उत्तर दिया, 'मुझे उसकी परवाह नहीं। अगर मैं तुम्हारे साथ वहा जाऊंगा तो पगड़ी पहनकर जाऊंगा। मैं अपन प्रेम को खतरे मे डालना नहीं चाहता।'

मोजेल झुझता गई। उसमें इस जोर से उफान आया कि उसकी छातिया आपस में भिड़भिड़ा गईं। 'गधे कही के'। तुम्हारा प्रेम ही कहा रहेगा जब तुम न रहोगे। तुम्हारी वह क्या नाम है उस मडकी का जब वह न रहेगी, उसका परिवार तब न रहेगा। तुम सिख हो लुदा की कमर तुम सिख हो और बड़े इडियट हो।'

त्रिलोचन भिना गया। 'बकवास न करा।'

मोजेल जोर से हसी और उसने अपनी नरम रीढ़दार बांह उसक गने में डाल दी और थोड़ा सा झूलकर वाली, 'डालिंग, चलो जसी तुम्हारी मर्जी। आओ पगड़ी पहन आओ मैं नीचे बाजार में खड़ी हूँ।'

यह कहकर वह नीचे जाने लगी। त्रिलोचन ने उसे रोका 'तुम कपड़े नहीं पहनोगी?'

मोजेल ने अपने सिर की झटका दिया। 'नहीं चलेगा इसी तरह। यह कहकर वह खट-खट करती नीचे उतर गई। त्रिलोचन निचली मजिल की सीढ़ियों पर भी उसकी खटाओ की आवाज सुनता रहा। फिर उसने अपने लम्बे बाल उगलियां से पीछ की तरह समेटे और नीचे उतरकर अपने फ्लैट में चला गया। जल्दी जल्दी उसने कपड़े बदले। पगड़ी बांधी-बधाई रखी थी, उसे अच्छी तरह सिर पर जमाया और फ्लैट के दरवाजे में कुंजी घुमाकर नीचे उतर गया।

बाहर फुटपाथ पर मोजेल अपनी लगड़ी टांगे चौड़ी किए मिगरंट पी रही थी बिलकुल पुरुषों की तरह। जब त्रिलोचन उसके पास पहुंचा तो उसने शरारत से मुंह भरकर घुमा उसके मुंह पर द मारा। त्रिलोचन ने गुस्से में कहा, 'तुम बहुत जमीन हो।'

मोजेल झुझराई। यह तुमने कोई नई बात नहीं कही इससे पहले झुझ और भी कई लोग जलील नह चुके हैं।' फिर उसने त्रिलोचन की पगड़ी की ओर दया। 'यह पगड़ी तुमने सचमुच अच्छी तरह बांधी है। ऐसा मालूम होता है तुम्हारे कंधे हैं।'

बाजार बिलकुल सुनगा था केवल हवा चल रही थी और वह भी बहुत धीरे धीरे जैसे वह भी कपड़ों से डरती हो। बसिया जल रही थी, लेकिन उनका प्रकाश बीमार-सा मालूम होता था। शाम तीर पर इस समय

ट्रेन चलनी शुरू हो जाती थी और लोग का आवागमन भी शुरू हो जाता था। अच्छी खासी चहल पहल हो जाती थी, लेकिन अब ऐसा मालूम होता था कि सड़क पर स ने कोई आदमी गुजरा है और न गुजरेगा।

मोजेल आगे आगे थी। फुटपाथ के पत्थरों पर उसकी खड़ाऊ पट-खट कर रही थी। यह आवाज उस निस्तब्ध वातावरण में एक बहुत बड़ा शोर थी। त्रिलोचन दिल हो दिल में मोजेल को बुरा बना कह रहा था कि दो मिनट में और कुछ नहीं तो अपनी गूदा खड़ाऊ उतारकर कोई और चीज पहन सकती थी। उसने चाहा कि मोजेल से कहें, खड़ाऊ उतार दो और नंगे पाव चलो मगर उस विद्वान्मयी कि वह कभी नहीं मानेगी, इसलिए चुप रहा।

त्रिलोचन बहुत डरा हुआ था, कोई पता भी खड़कता तो उसका दिन घक स रह जाता, लेकिन मोजेल सिगरेट का धुआ उड़ाती बिलकुल निडरता से चली जा रही थी, मानो बड़ी बफिफ्री से चहलकदमी कर रही हो।

चीक में पहुँचे तो पुलिस मैन को आवाज गरजी, 'ऐ, बिधर जा रहा है ?'

त्रिलोचन डर गया। मोजेल आगे बड़ी और पुलिस मैन के पास पहुँच गई और अपने बाला को एक हल्का सा झटका देकर कहा 'भाह तुम, हमको पहचाना नहीं ? तुमने मोजेल ' फिर उसने एक गली की तरफ इशारा किया, 'उधर उस बाजू हमारा बहन रहना है, उसकी तबीयत खराब है डाक्टर लेकर जा रहा है।'

सिपाही उस पहचानने की कोशिश कर रहा था कि उसने न जाने कहा में सिगरेट की डिबिया निकाली और एक सिगरेट निकालकर उसकी दिया। 'लो, पियो।' सिपाही ने सिगरेट ले लिया। मोजेल ने अपने मुँह में सुलगा हुआ सिगरेट निकाला और उससे कहा 'हीयर द्रज ताइट।'

सिपाही ने सिगरेट का कश लिया, मोजेल ने गैड आस उसका और वाइ आस त्रिलोचन को मारी और खट खट करती उस गली की धार चल दी, जिसमें से गुजरकर उह मुहल्ले में जाना था।

त्रिलोचन चुप था, लेकिन वह महसूस कर रहा था कि मोजेल कपड़ों की अवनता करके एक विचित्र प्रकार की प्रसन्नता का अनुभव कर रही है।

खनरो म खेनना उस पसद था। जब वह जुहू पर उमके साथ जानी थी तो उमक लिए एक मुसीबत बन जानी थी। समुद्र की बड़ी प्रहरी लहरों से टकराती भिड़ती वह दूर तक निकल जानी थी और उसको हमेशा इस बात का धक्का रहता था कि कहीं वह डूब न जाए। जब वापस आती तो उसका गरीब नौना और घावा में भरा होता था, लेकिन उसे इसकी कोई परवाह नहीं होती थी।

मोजल भागे भागे थी और त्रिलोचन उमक पीछ-पीछे डर डरके इधर-उधर दौड़ता चल रहा था कि वही उमकी बगल में से कोई छुरीमार न निकल आए।

सहसा मोजल रुक गई। जब त्रिलोचन पास आया तो उमन उसे समझाने के स्वर में बोली 'हिमर त्रिलोचन, इस तरह डरना अच्छा नहीं। तुम डरोग तो जल में कुछ न कुछ होक रहोगा। सब कहती हूँ, यह मरी आजमाई हुई बात है।

त्रिलोचन चुप रहा।

जब वह उम गरी की पार करके दूसरी गली में पहुँच, जो उस मुहल्ले की आर निकलती थी, जिसमें कृपान कीर रहती थी तो मोजल धनन-चलत लफट में रुक गई कुछ दूरी पर बैठे इनमीनान में तब मारवाडी की दुकान लुटो जा रही थी। एक क्षण के लिए उमन मामल की समझने की कागिरी की और त्रिलोचन से बोली 'कोई बात नहीं—चलो आमा।'

दोना चलते सगे। एक आत्मी जो गिर पर बहुत बड़ी परात उठाए चला आ रहा था त्रिलोचन में टकरा गया। परात गिर गई। उस आदमी ने ध्याना में त्रिलोचन की आर देता। ताफ मानव जाना था कि क्या गिरा है। उस आत्मी ने जल्दी में अपना नफे में हाथ डाला कि मानव आ गई लटगडानी हूँ माना नग में खूब है। उमन जोर से उस आत्मी का घससा लिया और न तीन मिनट में बोली, 'ए क्या करना है—अपने भाई का मारना है।' हम हमेशा जानते बनान का भावना है।' फिर त्रिलोचन की आर मुँही। 'कराम ज़ादा मा परात और गग दा इमन गिर पर।

उस आत्मी ने नफे में ग घससा हाथ फटा लिया और लफट में लफट में मानव का आर देता। फिर आगे बढ़कर अपनी कागिरी में उमकी

छातिया में एक टहोका जिया। 'ऐस कर साली, ऐस कर।' फिर उसने परात उटाई और यह जा, वह जा।

त्रिलोचन बड़बड़ाया 'हरामजाद न मैं भी जलील हरबन की।' मोजेल ने अपनी छातिया पर हाथ फेरा। 'कोई जलील हरबन नहीं, सब चलता है। आओ।'।

और वह तेज-तेज चलने लगी। त्रिलोचन न भी कदम तेज कर दिए।

वह गली पार करके व दोना उस मुहल्ले में पहुँच गए, जहाँ कृपाल कौर रहती थी। मोजेल न पूछा किम गली में जाता है ?'

त्रिलोचन न धीरे से कहा, तीसरी गली में, नुक्कड़ वाली बिल्डिंग।'।

मोजेल न उसी ओर चलना शुरू कर दिया। उस ओर बिलकुल निस्त-व्यवस्था थी। आसपास इतनी घनी आवादी थी लेकिन किसी बच्चे तक के रोने की आवाज सुनाई नहीं दी थी।

जब वे उस गली के पाम पहुँच तो कुछ गड़बड़ दिखाई दी। एक आदमी बड़ी तेजी से इस बिनार वाली बिल्डिंग में घुस गया। इस बिल्डिंग से थोड़ी देर के बाद तीन आदमी निकले। फुटपाथ पर उछलने इधर उधर देना और बड़ी फुर्ती से दूसरी बिल्डिंग में चल गए। मोजेल ठिठक गई। उसने त्रिलोचन को इशारा किया कि अघेरे में हो जाए फिर उसने धीमे से कहा त्रिलोचन डियर, यह पगड़ी उतार दो।'।

त्रिलोचन न जवाब दिया 'मैं यह किसी सुरत में भी नहीं उतार सकता।

मोजेल झुझला गई। 'तुम्हारी मर्जी लेकिन तुम देखते नहीं सामने क्या हो रहा है ?'

मामन जो कुछ हो रहा था, दोनों की आँखों के सामने था—साफ गड़गड़ हो रही थी और बड़ी रहस्यमय लग की। वामें हाथ की बिल्डिंग से जब दो आदमी अपनी पीठ पर बोरिया उठाए निचले तो मोजेल सारी की सारी वाप गई। उनमें से कुछ गाढ़ी गाढ़ी तरल चीज टपक रही थी। मोजेल अपने हाठ काटने लगी। गायब वह कुछ सोच रही थी। जब वे दोनों आदमी गली के दूसरे सिरे पर पहुँचकर गायब हो गए तो उसने त्रिलोचन से कहा, देखो ऐसा करो—मैं भागकर नुक्कड़ वाली बिल्डिंग में

जाती हूँ, तुम मेरे पीछे आना बड़ी तजी स, जसे तुम मेरा पीछा कर रह हो समझे ? मगर यह सब एकदम जल्दी जल्दी म हो ।’

भाजल ने त्रिलोचन के जवाब की प्रतीक्षा न की और नुक्कड़ वाली बिल्डिंग की ओर खड़ाक खटखटाती हुई तजी भागी। त्रिलोचन भी उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही क्षणों में वह बिल्डिंग के अन्दर था। सीढ़ियों के पास त्रिलोचन हॉफ रहता था, मगर मोजेल बिल्कुल ठीक ठाक थी। उसने त्रिलोचन स पूछा कौन सा माला ?

त्रिलोचन ने अपना सूखे होठ पर जीभ फरी। ‘तूमरा।’

‘चलो।’

यह कहकर यह खट-खट सीढ़िया चढ़ने लगी। त्रिलोचन उसके पीछे हो लिया। सीढ़िया पर खून के बड़े बड़े धरे पड़े हुए थे। उनकी दाय दायकर उसका खून सूख रहा था।

दूसरे माले पर पहुँचे तो कारीडोर में कुछ दूर जाकर त्रिलोचन न भीमे से एक दरवाजे को खटखटाया। मोजेल दूर सीढ़िया के पास खड़ी रही।

त्रिलोचन ने एक बार फिर दरवाजा खटखटाया और उसके साथ मुह लगाकर आवाज दी, महारासिंह जी, महारासिंह जी ।’

अन्दर से बारीक सी आवाज आई, कौन ।’

त्रिलोचन ।’

दरवाजा धीरे स खुला। त्रिलोचन ने मोजेल को इगारा किया। वह लपककर आई। दाता अन्दर चल गए। मोजेल ने अपनी झगल में एक दुबली पतली नहकी ना देया जो बहुत ही भयभीत थी। भाजल ने उस एक जण के लिए ध्यान से देखा। पतन पतले नक्सा थे। नाक बहुत ही प्यारी थी लकिन जुकाम से अस्त। मोजेल ने उसे अपना चौड़े चकल सीन स लगामा और अपने ढीले ढाले कुर्ते का पतला सठाकर उसकी नाक पाछी।

त्रिलोचन लाल पड़ गया।

भाजेल ने कृपाल कीर स बड़ स्नह से कहा डरो नहीं, त्रिलोचन तुम्ह लेन आया है।

कृपाल कौर न त्रिलोचन की ओर अपनी सहमी हुई आत्मा से देखा और मोजेन में अलग हो गई।

त्रिलोचन न उससे कहा, 'सरदार साहब से कहो कि जल्दी तैयार हो जाए और माताजी से भी—लेकिन जल्दी करो।'।

इतन में ऊपर की मजिल से जोर जोर की आवाजें आन लगी, जैसे कोई चीख चिल्ला रहा हो और धीमा मुस्ती हो रही हो।

कृपाल कौर के मुह में हल्की सी चीख निकल गई। 'उसे पकड़ लिया उहाँ।'।

त्रिलोचन ने पूछा, 'किस ?'

कृपाल कौर उत्तर देने की बाली थी कि मोजेन ने उसकी बाह से पकड़ा और घसीटकर एक कोने में ले गई। 'पकड़ लिया तो अच्छा हुआ। तुम यें बपटे उतार दो।'।

कृपाल कौर अभी कुछ सोचन भी न पाई थी कि मोजेन ने पलक भपकन में उनकी कमीज उतारकर एक तरफ रख दी। कृपाल कौर ने अपनी बाहों में अपने नग शरीर को छिपा लिया तथा आरंभ कीत हो गई। त्रिलोचन न मुह दूसरी ओर फेर लिया। मोजेन न अपना ढीला-ढाला कुर्ता उतारकर उसे पहना दिया, और स्वयं नग धडग हो गई। फिर जल्दी जल्दी उसने कृपाल कौर का नाडा ढीला किया और उसकी मलवार उतारकर त्रिलोचन से बोला, 'जाओ, इसे ले जाओ—लेकिन ठहरो।'।

यह कहकर उसने कृपाल कौर के बाल खोल दिए और उससे कहा, 'जाओ—जल्दी निकल जाओ।'।

त्रिलोचन न उससे कहा, 'जाओ।'। लेकिन फिर तुरंत ही रुक गया। पलटकर उसने मोजेन की ओर देखा, जो धुले हुए दीर्घ की तरह नगी खड़ी थी। उसकी बाहों पर महीन महीन बाल सरदी के कारण जागे हुए थे।

तुम जात क्या नहीं ?' मोजेन के स्वर में चिड़चिड़ापन था।

त्रिलोचन ने घीमे से कहा, 'इसके माँ बाप भी तो हैं।'।

'जहनुम में जाए वे—तुम इसे ले जाओ।'।

और तुम ?'

मैं आ जाऊगी ।'

एकदम ऊपर की मजिल से कई आदमी घडाघडा नीचे उतरा गये और फिर दरवाजे पर आकर उहाने उसे कूटना शुरू कर दिया, जैसे वे उसे तोड़ ही डालेंगे ।

कृपाल कौर की अभी मा और उसका अपाहिज बाप दूसरे कमरे में पड़े कराह रहे थे ।

मोजिल ने कुछ सोचा और बाला को एक हल्का सा झटका देकर तिलोचन से कहा, 'सुनो अब सिर्फ एक ही तरकीब मेरी समझ में आती है । मैं दरवाजा खोलती हूँ '

कृपाल कौर व मूखे कण्ठ से चीख निकलत निकलते रह गई, 'दरवाजा ।

मोजिल तिलोचन की ओर मुह किए कहती रही, 'मैं दरवाजा खोल कर बाहर निकलती हूँ—तुम मेरे पीछे भागना । मैं ऊपर चढ़ जाऊंगा और तुम भी ऊपर चले आना । ये लोग जो दरवाजा तोड़ रहे हैं भव कुछ भूल जाएंगे और हमारे पीछे चले आएंगे ।'

तिलोचन न पूछा, 'फिर ?

मोजिल ने कहा, 'यह तुम्हारी—क्या नाम है इसका—मौका पाकर निकल जाए । इस बेग में इसे कोई कुछ नहीं करेगा ।'

तिलोचन ने जल्दा जल्दा कृपाल की सारी बात समझा ली । मोजिल जोर से चिल्लाई । दरवाजा खोला और धडाम से बाहर लोग पर जा गिरी । सब दौड़ता गए । उठकर वह ऊपर सीटियों की ओर लपकी । तिलोचन उसके पीछे भागा । सब एक ओर हट गए ।

मोजिल अबाधुष सीढ़िया चढ़ रही थी—सडाऊ उसके पैरों में थी । वे लोग, जो दरवाजा तोड़ने की कोशिश कर रहे थे, सभलकर उनके पीछे दौड़े । एकाएक मोजिल का पाव फिसल गया और ऊपर के जिन से वह कुछ इम तरह लुढ़की कि हर पथरील जिन से टकराती, लोह के जगले से उलझती नीचे आ गिरी—पथरीले पक्ष पर ।

तिलोचन एकदम नीचे उतरा । झुककर उसने देखा तो उसके नाक से खून बह रहा था, मुह से खून बह रहा था कानों से मृत निकल रहा

या। वे जो दरवाजा तोड़ने आए थे, इद गिद जमा हो गए। किसीने भी नहीं पूछा कि क्या हुआ है। सब चुप थे और मोजेल के नगे शरीर को देख रहे थे, जिसपर जगह जगह मर्रासे पड़ी थी।

त्रिलोचन ने उसकी बाह हिलाई और आवाज दी, मोजेल मोजेल।'

मोजेल ने अपनी बड़ी बड़ी यहूदी आँखें खोली, जो बीर बहूटी की तरह लाल हो रही थी और मुस्कराई। त्रिलोचन ने अपनी पगड़ी उतारी और ज़ोलकर उसका नगा शरीर ढक दिया। मोजेल फिर मुस्कराई और आँख मारकर मुँह से खून के बुलबुले छोटती हुई त्रिलोचन से बोली 'जाओ देखो मेरा अण्डरवीयर कहा है कि नहीं। मेरा मतलब है कि वह'

त्रिलोचन उसका मतलब समझ गया, लेकिन उसने उठना नहीं चाहा। इसपर मोजेल ने क्रोध से कहा, 'तुम सबकुछ सिख हो जाओ, देखकर आओ।'

त्रिलोचन उठकर कृपान कीर के फ्लैट की ओर चला गया। मोजेल ने अपनी धुंधली आँखा से अपने आसपास खड़े लोग की ओर देखा और कहा, 'यह मिया भाई है लेकिन बहुत दादा किस्म का मैं इसे सिख कहा करती हूँ।'

त्रिलोचन वापस आ गया। उसने आँखा ही आँखों में मोजेल को बना दिया कि कृपाल कीर जा चुकी है। मोजेल ने सतोष की सास ली—लेकिन ऐसा करत से बहुत-सा खून उसके मुँह से वह निकला और 'डम्हट' यह कहकर उसने अपनी रीढ़दार कलाई से अपना मुँह पछा और त्रिलोचन की ओर दबकर बोली, 'आल राइट डार्लिंग—बाई बाई।'

त्रिलोचन ने कुछ कहना चाहा, लेकिन शब्द उसके कण्ठ में ही अटक गए।

मोजेल ने अपने शरीर से त्रिलोचन की पगड़ी हटाई। 'ले जाओ इसको, अपने इस मजहब की।' और उसकी बाह उसकी मजबूत छातियों पर निर्जीव होकर गिर पड़ी।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ में मेरी मुलाकात सन चालीस में हुई। उन दिनों मैं बम्बई के एक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन किया करता था। दफ्तर में अब्दुरहीम सैण्डो एक नाट्य कद के आदमी के साथ दाखिल हुआ। मैं उस वक़्त लीडर लिख रहा था। सैण्डो ने अपने ख़ाम अदाज में ऊँची आवाज़ में मुझे आदाब किया और अपने साथी से परिचय कराया, 'मण्टो साहब, बाबू गोपीनाथ से मिलिए।'।

मैंने उठकर उनमें हाथ मिलाया। सैण्डो ने अपनी आदत के अनुसार मेरी तारीफ़ों के पुल बांधने शुरू कर दिए। बाबू गोपीनाथ 'तुम हिंदुस्तान के नम्बर वन राइटर्स से हाथ मिला रहे हो। लिखता है तो घड़न-तरना हो जाता है लोग का। ऐसी ऐसी कण्ठी घूटनी मिलाना है कि तबीयत साफ़ हो जाती है। पिछले दिनों वह क्या चुटकला लिखा था आपन, मण्टो साहब? मिन खुर्शीद न कार खरीदी अल्लाह बड़ा कारसाज है। क्या बाबू गोपीनाथ? है न एण्टी की पण्टी पी?'।

अब्दुरहीम सैण्डो के बातें कराने का अदाज बिल्कुल निराला था। कण्ठी-घूटनी घड़न तरना और एण्टी की पण्टी पी ऐसे शब्द उसकी अपनी उपज थे जिनका वह अपनी बातचीत में बड़ी बेतकलुफी के साथ इस्तेमाल करता था। मेरा परिचय कराने के बाद वह बाबू गोपीनाथ की ओर मुड़ा, जो बहुत प्रभावित नज़र आ रहा था। 'आप हैं बाबू गोपीनाथ, बड़े खानाख़राब। लाहौर से भूल मारन भारत बम्बई तशरीफ़ लाए हैं। साथ कश्मीर की एक कबूतरों है।

बाबू गोपीनाथ मुस्कराया।

अब्दुरहीम सैण्डो ने इतने परिचय को नाकामी समझकर कहा, नम्बर वन का बेवकूफ़ अगर कोई हो सकता है तो वह आप हैं। लांग इन्हें मस्का लगाकर खपया बटोरते हैं। मैं सिर्फ़ बातें करके उनसे हर रोज़ पोलसन बटर के दो पकेट वसूल करता हूँ। वस, मण्टो साहब, यह समझ लीजिए

कि बड़े ऐंटी फिलोजिस्टीन किस्म के आदमी है। आप आज शामको इनके प्लैट पर जरूर तशरीफ लाइए।'

बाबू गोपीनाथ, जो खुदा भालूम क्या सोच रहा था, चौककर बोला, 'हा हा, जरूर तशरीफ लाइए मण्टो साहब।' फिर सैण्डो से बोला, 'क्या सैण्डा क्या आप कुछ उसका शगल करते हैं?'

अदुरहीम सैण्डा ने जार से कहकहा लगाया। 'अजी हर किस्म का शगल करते हैं। तो मण्टा साहब आज शाम का जरूर आइएगा। मैंने भी पीनी शुरू कर दी है इसलिए कि मुपन मिलती है।'

सैण्डा ने मुझे प्लैट का पता लिखा दिया, जहां मैं अपने वादों के मुताबिक शाम को छ बजे के करीब पहुंच गया। तीन कमरों का साफ-सुथरा प्लैट था, जिसमें बिल्कुल नया फर्नीचर सजा हुआ था। सैण्डो और बाबू गोपीनाथ के अलावा बैठक में दो मद और दो औरतें मौजूद थीं जिनसे सैण्डो ने मुझे मिलाया।

एक था गणकार साह, तहमद पहन पंजाब का ठेठ साईं। गले में मोटे-मोटे दानों की माला। सैण्डो ने उसके बारे में कहा, 'आप बाबू गोपीनाथ के लीगल एडवाइजर हैं, मेरा मतलब समझ जाइए आप। हर आदमी जिसकी नाक बहती हो, जिसके मुंह से राल टपकती हो, पंजाब में खदा को पहुंचा हुआ फकीर बन जाता है। ये भी बस पहुंचे हुए हैं या पहुंचने वाले हैं। लाहौर से बाबू गोपीनाथ के साथ आए हैं क्योंकि इन्हें वहां कोई और वक्ता मिलन की उम्मीद नहीं थी। यहां आप बाबू साहब से क्रॉवन ए के सिगरेट और स्काच व्हिस्की के पैग पीकर दुआ करते रहते हैं कि अजाम नक हो।

गणकार साह यह सुनकर मुस्कराता रहा।

दूसरे मद का नाम था गुलाम अली। लम्बा-तडगा जवान, कसरती बदन, मुंह पर चेचक के दाग। उसके बारे में सैण्डो ने कहा, यह मेरा शागिद है। अपने उस्ताद के नक्शे बंदम (पदचिह्न) पर चल रहा है। लाहौर की एक नामी रण्डी की कुमारी लडकी इसपर आशिक हो गई थी। बड़ी-बड़ी कण्टी-गूटनिया मिलाई गई इसका फासने के लिए, मगर इसने कहा, 'डू आर डाई। मैं लमोट का पक्का रहूंगा।' एक तकिये में

पीत हुए बाबू गोपीनाथ से मुलाकात हो गई। बम, उस दिन से इनके साथ चिपटा हुआ है। हर रोज केबन ए का डिब्बा और खाना पीना मुकरर हैं।

यह सुनकर गुलाम अली भी मुस्कराता रहा।

गोल चेहर वाली एक सुख सफेद स्वस्थ औरत थी। कमर में दाखिल होते ही मैं समझ गया था कि यह बड़ी कश्मीर की ब्वतरी है जिसने बारे में सैण्डो ने दफ्तर में जिक्र किया था। बहुत साफ सुथरा औरत थी। बाल छोटे थे। ऐसा लगता था कटे हुए हैं मगर असल में ऐसा नहीं था। आँखें शफाफ और चमकीली थी। चेहरा-मोहरे से प्रकट होता था कि बड़ी अल्ट और नानजुबेदार है। सैण्डो ने उससे मिलते हुए कहा, 'जीनत बेगम। बाबू साहब इसे प्यार से जेनो कहते हैं। एक बड़ी खुराद नायिका, कश्मीर से यह सेवा तोड़कर लाहौर ले आई। बाबू गोपीनाथ को अपनी सी० आई० जी० से पता चला और एक रात ले उड़े। मुकदमाजी हुई करीब दो महीने तक पुलिस एज करती रही आखिर बाबू साहब ने मुकदमा जीत लिया और इसे यहां ले आए—घड़न करना।'

अब गहरे सावले रंग की औरत बाकी रह गई थी जो खामोश बैठी सिगरेट पी रही थी। आँखें सुन्न थी, जिनसे काफी बहवाई टपक रही थी। बाबू गोपीनाथ ने उसकी तरफ इशारा किया और सैण्डो से कहा 'इसके बारे में भी कुछ हो जाए।'

सैण्डो ने उस औरत की रान पर हाथ मारा और कहा, जनाव। यह है तीन पट्टी फिल फिल फूटी, मिसज अदुग्हीम सैण्डो उफ सरदार बेगम। आप भी लाहौर की पैदावार है। सन छत्तीस में मुझमें ईश्वर हुआ दो बरस में ही मेरा घटन-तस्ता करने रख दिया। मैं लाहौर छोड़कर भागा। बाबू गोपीनाथ ने इसे यहां बुनवा लिया ताकि मेरा दिल लगा रह। इसको भी एक डिब्बा केबन ए का राशन मिलता है। हर रोज नाम की डाई स्पा का मारफिया का इंजेक्शन लेती है। रंग बाला है मगर बम बड़ी टिट फार टिट किस्म की औरत है।'

सरदार ने एक अंदा से सिफ इतना कहा, 'बकवास न कर। इस अंदा में पेसेवर औरतो की बनावट थी।'

सबम भिनाने के बाद सैण्डो न आदत के अनुसार मेरी तारीफा के पुल बाधन शुरू कर दिए। मैंने कहा, 'छोटो यार, आप्रा कुछ और बातें करें।'

मैण्डो चिल्लाया 'व्वाण, ह्विस्को एण्ड मोहा। बाबू गोपीनाथ, सगाघ्रा ह्वा एक् सब्जे को।'।

बाबू गोपीनाथ ने जेब में हाथ डालकर भी सौ के नोटों का एक पुलिंदा निकाला और एक नोट सैण्डो के हवाले कर दिया। सैण्डो न नोट लेकर उसकी तरफ गौर से देखा और खड़खड़ाकर कहा, 'ओ गाड आ मेर ग्वुल आलमीन।' वह दिन बड़ा आया जब मैं भी या नोट निकालता था। जाम्मो भई गुलाम अली, दो दोतर्से जानीवाकर त्रिस्टिल गोडग स्ट्राग ले आओ।

दोतर्से आई तो सबन पीनी शुरू की। यह सबल दा-नीन घण्टे तक जारी रहा। इस दौरान मजसे ज्यादा बातें हस्वे मामूल प्रबुद्धहीम सैण्डो ने की। पहला विलाम एक् ही साम में परम करवे वह चिल्लाया, घडन सगना, मण्डो साहव ह्विस्की ही तो एभी। गले से उतरकर पेट में झन्झाव जिंदावाद' लिखती चली गई। जियो बाबू गोपीनाथ जियो।'

बाबू गोपीनाथ प्रबारा खामोश रहा। कभी कभी वह सैण्डो की हा में हा मिला देता था। मैंने सोचा इस व्यक्ति की अपनी कोई राय नहीं। दूसरा जा भी कह मान लेता है। उसके अंधविश्वास का सबूत गपफार साह मौजूद था। उसे वह वकील मण्डो, अपना सीगल एडवाइजर बनाकर लाया था। सैण्डो का हमसे अरझमल यह मनलव था कि बाबू गोपीनाथ को उससे श्रद्धा थी। यो भी मुझे बातचीत के दौरान मानूँ हुआ कि लाहौर में उसका वक्ता फरीद और दरवंगा की मोहवत में बटता था। एक चीज मैंने तब तौर पर नोट की कि वह कुछ खोया-खाया मा था, जैसे कुछ सोच रहा हो। अतएव मैंने उससे एक बार कहा 'बाबू गोपीनाथ, क्या सोच रहे हैं आप?'

वह चौंक पड़ा। 'जी, मैं? मैं कुछ नहीं।' यह कहकर वह मुस्क-राया और जीनत की तरफ एक आशिकाना निगाह डाली। इन हसीनों के बार में सोच रहा हूँ। और हम क्या सोच होगी।'

सैण्डो न कहा यह बड़े खानाखराब है मण्टा साहब बड़े खाना-
खराब। लाहौर की कोई ऐसी तबायफ नहीं जिसके साथ बाबू साहब की
कण्टी-यूटनी न रह चुकी हो ।

बाबू गोपीनाथ न यह गुनकर बड़ी भाड़ी विनम्रता के साथ कहा
'अब कमर म बंद नही रहा मण्टा साहब ।

इसके बाद बाहियात सी बातचीत शुरू हो गई। लाहौर की सब
रण्टिया के घरान गिने गए—कौन डेरेदार थी, कौन नटनी थी कौन
किसकी नोची थी। नयनी उतारे पर बाबू गोपीनाथ न क्या दिया था
बगर बगरा। यह बातचीत सरदार, सण्डो गणफार साइ और गुलाम अली
के बीच हाती रही—ठेठ लाहौर के कोठा की भाषा में। मनलब ता मैं
समझता रहा मगर कुछ मुहावरे मेरी समझ में न आए।

जीनत बिलकुल खामोश बठी रही। कभी कभी किसी बात पर
मुस्करा देती। मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उस इस बातचीत से कोई दिल-
चस्पी नहीं थी। हल्की हल्की का एक गिलास भी उसने पिया बगैर
किसी दिलचस्पी के। सिगरेट भी पीती थी तो मालूम होता था, उस
तम्बाकू और उसके धुएँ में कोई रुचि नहीं है। लेकिन मजे की बात यह
है कि सबसे ज्यादा सिगरेट उसीने पिए। बाबू गोपीनाथ से उस मुह-उत
थी, इसका पता मुझे किसी बात से न मिला। इतना जाहिर था बाबू
गोपीनाथ का उसका काफी खयाल था, क्योंकि जीनत के आराम के लिए
हर सामान मौजूद था। लेकिन एक बात मुझे महसूस हुई कि इन दोनों
में कुछ अजीब सा खिचाव था। मेरा मतलब है कि वे दोनों एक दूसरे से
कुछ करीब होने के बजाय कुछ हटे हुए से मालूम होते थे।

माठ बज के करीब सरदार डाक्टर मजीद के यहाँ चली गई क्योंकि
उस मारफिया का इंजेक्शन लेना था। गणफार साइ तीन पग पीन के बाद
अपनी तस्वीह (माला) उठाकर कालीन पर सा गया। गुलाम अली का
हाटल से खाना लेने का भेज दिया गया। सण्डा न अपनी दिलचस्पी अब-
वास जय कुछ समय के लिए बंद की ता बाबू गोपीनाथ ने, जो अब नंगा म
था जीनत की तरफ वही आशिकाना निगाह डालकर कहा, मण्टो साहब,
मेरी जीनत के बार में आपका क्या खयाल है ?

मैंने सोचा, क्या बहू ! जीनत की तरफ देखा ता वह झेंप गई । मैंने ऐसे ही कह दिया 'बडा नक खयाल है ।' बाबू गोपीनाथ खुश हो गया । 'मण्टो साहब, है भी बडी नेक । खुदा की कसम न जेवर का शौक है, न किसी और चीज का । मैंने कई बार कहा जान मन, मकान बनवा दू ?' जवाब क्या दिया, मालूम है आपको ?—क्या करुगी भवान लेकर, मेरा और कौन है ? मण्टो साहब मोटर कितन म आ जाएगी ?'

मैंने कहा मुझे मालूम नहीं ।

बाबू गोपीनाथ ने आश्चर्य से कहा क्या बात करते हैं मण्टो साहब । आपका और कारो की कीमत मालूम न हो । कत चलिए मरे साथ, जेनो के लिए एक मोटर लेंग । मैंने अब देखा है कि बम्बई में मोटर हानी ही चाहिए ।'

जीनत ने चेहर पर कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई ।

बाबू गोपीनाथ का नशा घाडी ढेर के बाद बहुत तज हो गया । बहुत ज्यादा जज्बाती होकर उसने मुझसे कहा, 'मण्टो साहब, आप बडे लायक आदमी हैं । मैं तो बिल्कुल गधा हू । आप मुझे बताइए, मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हू ? कल बातो-बातो में मण्टो ने आपका जिक्र किया । मैं उसी वकन टैपसी भगवाई और उससे कहा मुझे ल चलो मण्टो साहब के पान । मुझसे कोई गुस्ताखी हो गई हो तो माफ कर दीजिएगा । बहुत गुनहगार आत्मी हू । ह्विस्की भगवाऊ आपके लिए और ?'

मैंने कहा नहीं-नहां, बहुत पी चुके हैं ।' वह और ज्यादा जज्बाती हो गया और पीजिए मण्टो साहब । यह कहकर जेब से सौ सौ के नाटा का पुलि दा निकाला और एक और नोट अलग करन लगा लेकिन मैंने सब नोट उसके हाथ से ले लिए और वापस उसकी जेब में ठूस दिए । 'सौ रुपये का एक नोट आपने गुलाम अली को दिया था, उसका क्या हुआ ?'

मुझे दरअसल कुछ हमदर्दी भी हो गई थी बाबू गोपीनाथ से । बितने आदमी उस गरीब के साथ जोक की तरह चिमटे हुए थे । मेरा मयाल था कि बाबू गोपीनाथ बिल्कुल गधा है लेकिन वह मेरा इशारा समझ गया और मुक्कराकर बहन लगा, 'मण्टो साहब उस नोट में जो कुछ बाकी बचा, वह या तो गुलाम अली की जब में से गिर पड़ेगा, या '

बाबू गोपीनाथ न अभी वाक्य पूरा भी नहीं किया था कि गुलाम अली ने कमर में दाखिल होकर बड़े दुःख से यह सबर दी कि हाटल में किसी हरामजाद ने उसकी जेब में सार रुपये निकाल लिए। बाबू गोपीनाथ मेरी तरफ दखकर मुन्कराया और फिर सौ रुपये का एक नोट जेब से निकाला और गुलाम अली को दकर कहा 'जन्दी खाना स आया।'।

पाच छ मुलाकाता के बाद मुझे बाबू गोपीनाथ के मही व्यक्तित्व का ज्ञान हुआ। पूरी तरह तो खर इसान किसीको भी नहीं जान सकता, लेकिन मुझे उसके बहुत से हालात मालूम हो गए, जो बहद दिनचर्य थे। पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि भरा यह खयाल कि वह परले दर्जे का चुगद है गलत साबित हुआ। उसको इस बात का पूरा एहसास था कि मण्टी गपकार साइ गुलाम अली और भरदार बगरा जा उसके मुमा-हिर और पार बन हुए थे मतलबी इमान हैं। वह उनसे झिड़किया, गालिया सब सुनता था, लेकिन मुन्सा प्रकट नहीं करता था। उसने मुझसे कहा मण्टा माहव मैं आज तक किसीनी सत्ताह रद्द नहीं की। जब भी कोई मुझे सलाह देता है मैं कहता हूँ सुबहान अन्लाह। वे मुझे बखरूफ समझते हैं तबिन मैं उन्हें अवनमद समझता हूँ, इसलिए कि उनमें कम से कम इतनी अक्ल तो है जो मुझसे ऐसी बेवकूफी का गिनारन कर लिया, जिससे उनका उल्लू मीया हो सकता है। बात दरममल यह है कि मैं शुरू से फकीरा और बजरा की सोहबत में रहा हूँ। मुझे उनसे कुछ मुहम्मद-मी हा गई है। मैं उनके घर नहीं रह सकता। मैं माच रग्या है, जो मेरी दीनत परम हा जाणगी तो किसी तकिय में जा बैठूंगा। रण्नी का काठा और पीर का मजार घम, यदा जगहें लगी है जहा मर जिन का मुबूर मिलना है। रण्नी का काठा तो छूट जाणगा, इसलिए कि जैर मानी जान घानी है, लेकिन हिम्मान में हजारों पीर है किसी एक के मजार पर चना जाऊंगा।

मैं उनसे पूछा रण्नी के काठे और तकिय आपका वश परम है ?

कुछ दर माचकर उसने जवाब दिया, इसलिए कि यह जगह पर परम है मगर छन तक धारा हो धामा होता है। जो घाण्मी गुद

को धोखा देना चाहता है, उमके लिए इनस अच्छी जगह और क्या हो सकती है ?'

मैन एक और सवाल किया 'आपको तवायफ का भाना सुनने का शौक है। क्या आप संगीत की समझ रखते हैं ?'

उमन जवाब दिया, 'वित्तुल नहीं और यह अच्छा ही है क्योंकि मैं बनसुरी में बनसुरी तवायफ के यहां जाकर भी अपना सर हिला सकता हूँ। मण्टो साहब, मुझे गान में कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन जब मैं स. दस या सौ रुपये का नाट निकालकर गान वाली को दिग्मान में बहुत मजा आता है। नाट निकाला और उमको दिखाया वह उस लेने के लिए एक अदा में उठी, पाय आई तो नाट जुराब में उड़स लिया। उसने भुक्कर उस बाहर निगाना ता हम मुस हो गए। ऐसी बहुत सी किन्नूत किन्नूत-सी बातें हैं जो हम ऐसे समाजवीना को पसंद हैं, करना कौन नहीं जानता कि रण्डी के कांटे पर मां वाप अपनी आंखों से पना कराते हैं और मक-वरा तथा सक्किया में आदमी अपने खुदा से।

बाबू गोपीनाथ का शजरा या बग़ावती तो मैं नहीं जानता, लेकिन इतना मालूम हुआ कि यह एक बहुत बड़े क़ानून बनिय का बेटा है। बाप के मरने पर उस दस लाख रुपये की जायदाद मिली जो उसने अपने इच्छानुसार उड़ाना शुरू कर दी। बम्बई आते वक़्त वह अपने साथ पचास हजार रुपये लाया था। उस जमान में सब चीज़ें मरती थी, लेकिन फिर भी हर राज में सब भी रुपये खर्च हो जाते थे।

जैनों के लिए उसने फिएट कार खरीदी। याद नहीं रहा, लेकिन शायद तीन हजार में आई थी। एक टाइवर रखा, लेकिन वह भी लफंगे टाइप का। बाबू गोपीनाथ को कुछ ऐन ही आदमी पसंद थे। हमारी मुनाकाता का सिलसिला बढ़ गया। बाबू गोपीनाथ से मुझ तो सिर्फ दिनचस्पी थी लेकिन उसे मुझमें श्रद्धा सी हो गई थी। यही कारण था कि दूसरा के मुकाबले में वह मेरा बहुत ज्यादा आदर करता था।

एक रात शाम के करीब जब मैं पलट पर गया तो मुझ वहां शफीक का देखकर बड़ी हैरानी हुई। अगर मैं मुहम्मद शफीक तूसी कहूँ तो लोग समझ लेंगे कि मेरा मतलब किस आदमी से है। या तो शफीक काफी

मगहूर आदमी है—कुछ अपनी सबसे अलग गायकी के कारण और कुछ अपनी चुटकुलेबाज तबीयत की वदोस्त। लेकिन उसकी जिंदगी का एक हिस्सा अधिकतर नोगा का मालूम नहीं है। बहुत कम लोग जानते हैं कि तीन सगी बहनों को एक व बाद एक तीन-तीन, चार चार साल के बचपे के बाद रखल बनाने से पहले उसका सम्बन्ध उनकी माँ से भी था। यह भी बहुत कम लोगो को मालूम है कि उसकी अपनी पहली बीबी जो घादी के थोड़े अरसे बाद ही मर गई थी, इसलिए पसंद थी कि उसमें तवायफ़ के म नाज-नस्वर नहीं थे। लेकिन यह तो खर हर आदमी का शफीक तूसी से थोड़ी बहुत वाकफ़ियत रखता है, जानता है कि चालीस बरस की उम्र में यह उस जमाने की उम्र है सैंकड़ों तवायफ़ों न उस रखा। अच्छे से अच्छा कपड़ा पहना, उमदा से उमदा खाना खाया नफीस से नफीस मोटर रखी लेकिन अपने गिरह से कभी किसी तवायफ़ पर एक दमड़ी लक्ष नहीं की।

औरता के लिए खास तौर पर जो पेशेवर हा, उसकी चुटकुलेबाज तबीयत में जिसमें मीरासिया जस मजाक की भलक थी, बड़ा आकर्षण था। वह कोशिश किए बगैर उह अपनी तरफ़ खींच लेता था। मैं जब उसे हस हसकर जीनत से बातें करते देखा तो मुझे इस-लिए हैरानी न हुई क्योंकि मैं जानता था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है मैंने सिर्फ़ यह सोचा कि वह अचानक यहाँ पहुँच कैसे गया। एक सैण्डो उस जानता था, मगर उनकी बोलचाल तो इससे एक जमाने से बढ़ थी। लेकिन बाद में मुझे मालूम हुआ कि सण्डो ही उस वहाँ लाया था। उन दोनों में सुलह सफाई हो गई थी।

बाबू गोपीनाथ एक तरफ़ बठा हुक्का पी रहा था। मैं शायद इससे पहले जिन्न नहीं किया कि वह सिगरेट बिलकुल नहीं पीता था। मुहम्मद शफीक तूसी मीरासिया के लतीफे सुना रहा था जिसमें जीनत कुछ कम और सरदार बहुत ज्यादा निलचस्पी ले रही थी। शफीक ने मुझे देखा और कहा 'मोह बिस्मिल्लाह बिस्मिल्लाह' क्या आपका गुजर भी इस वादी में होता है ?'

सण्डो ने कहा 'तसरीफ़ साइए इजराइल (यमरूत) साहब यहाँ

घड़न-तख्ता ।'

मैं उसका मतलब समझ गया ।

थोड़ी देर गप्पवाजी हाती रही । मैं नोट किया कि जीनत और मुहम्मद शफीक तूसी की निगाह आपस में टकराकर कुछ और भी कह रही हैं । जीनत इस कला में बिल्कुल कोरी थी, लेकिन शफीक की निपुणता जीनत की कमियों को छिपाती रही । सरदार दोना की निगाहवाजी को कुछ इस आदाज में देख रही थी, जैसे खलीफे अल्लाह के बाहर बैठकर अपने पट्टा के दाव पच देखते हैं ।

इस दौरान में मैं भी जीनत से काफी घेतरलुक हो गया था । वह मुझे भाई कहती थी, जिनपर मुझे एतराज नहीं था । अच्छी मिलन-सार तबीयत की औरत थी—बम बोलन वाली सीधी सादी, साफ सुथरी ।

शफीक से उसकी निगाहवाजी मुझे पसंद नहीं आई । एक ता उसमें भाटापन था, इसके अलावा कुछ या कहिए कि इस बात का भी उसमें खलल था कि वह मुझे भाई कहती थी । शफीक और सैण्डो उठकर बाहर गए तो मैं शायद बड़ी निदयता से उससे डाट डपट की जिससे उसकी आवा में मोटे मोटे आसू आ गए और वह रोती हुई दूसरे कमरे में चली गई । बाबू गोपीनाथ भी, जो एक कोने में बैठा हुआ टुकड़ा पी रहा था, उठकर तभी से उसके पीछे चला गया । सरदार ने आवा ही आवा में उससे कुछ कहा, लेकिन मैं उसका मतलब न समझा । थोड़ी देर बाद बाबू गोपीनाथ कमरे में बाहर निकला और 'आइए मण्टो साहब कहकर मुझे अपने साथ आकर ले गया ।

जीनत पलंग पर बठी थी । मैं आदर दाखिल हुआ तो वह दाना हाथों से मुझे ढापकर लेट गई । मैं और बाबू गोपीनाथ दोना पलंग के पास कुर्सियां पर बैठ गए । बाबू गोपीनाथ ने बड़ी गंभीरता से कहना शुरू किया, 'मण्टो साहब, मुझे इस औरत से बहुत मुत्बरत है । दा घर में से यह मेरे पास है, मैं हजारत गौस आजम जीलानी की कसम खाकर कहता हूँ कि इसने मुझे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया । इसकी दूसरी बहनें, मेरा मतलब है, इस पेशे की दूसरी औरतें दोनों हाथों से मुझे लूटकर खाती रही, मगर इनमें कभी एक पैसा ज्यादा मुझसे नहीं लिया । मैं

अगर किसी दूसरी औरत के यहाँ हफ्ता पड़ा रहा तो इस गरीब ने अपना
 नाई जेवर गिरवी रखकर गुजारा किया। मैं जैसाकि आपस एक बार
 कह चुका हूँ बहुत जल्द इस दुनिया से विनाराक होन वाला हूँ, मरी
 दोलत अब कुछ निना की महमान है। मैं नहीं चाहता कि इसकी जिंदगी
 खराब हो। मैं लाहौर में इसको बहुत समझाया कि तुम दूसरी तवायफा
 की नरफ दमो। जा कुछ बबरती है सीखा। मैं आज दोलतमन्द हूँ बल
 मुझ भिखारी होना है। तुम लागा की जिन्दगी में सिर्फ एक दोलतमन्द
 काफी नहीं। मेरे बाद तुम किसी और को नहीं फासोगी ता काम नहीं
 चला। लेकिन मण्टो साहब इसने मरी एक न सुनी। सारा दिन
 शरीफजादिया की तरह घर में बठी रहती। मैंने गरफार साइस मशवरा
 किया। उमने कहा 'बम्बई ल जाओ। इसे मालूम था कि उसने ऐसा
 क्या कहा। बम्बई में उसकी दो जानन वाली तवायफे एकट्ठमें बनी हुई हैं।
 मैंने भी सोचा बम्बई ठीक है। दो महीने हो गए हैं इसे यहाँ लाए हुए।
 सरदार को लाहौर से बुलाया है कि इसको सब गुर सिखाए। गरफार साइ
 स भी यह बहुत कुछ सीख सकती है। यहाँ मुझ कोई नहीं जानता। इस-
 को यह ख्याल था कि इससे मरी बड़जनी होगी। मैंने कहा तुम छोड़ो
 इसको। बम्बई बहुत बड़ा शहर है। लाखा रईस हूँ। मैंने तुम्हें मोटर ले
 दी है। कोई अच्छा आदमी तलाश कर लो। मण्टो साहब में मुदा की
 कमम खाकर कहता हूँ मरी यह दिन्नी गवाहि है कि यह अपने पैरो
 पर खड़ी न। अच्छी तरह हाथियार हा जाए। मैं इसका नाम आज ही
 वक में दम हजार रुपया जमा करन को तयार हूँ अगर मुझ मानूम है
 दस नि के अगर अगर यह बाहर यगी हागी और सरदार एक एक पाई
 अपनी जब में डाल लगी। आप भी इस समझाइए कि चानान बनन की
 वागिग कर। जब में माटर खरीनी है सरदार इन हर राज नाम की
 अनाना बर ल जानी है, लेकिन अभी तक काम यात्री नहीं हुई। सण्डा
 आज यडी मुदिरता से मुदम्मा गरीब का यहा लाया। आपना क्या
 खयाल है उनके यार में? मैंने आपना खयाल जाहिर करना उचिन न
 समझा लेकिन यारु गापीनाथ न खय ही कहा अच्छा माना पीता
 आदमी मालूम होना है। क्या जेना जानी पस है तुम्हें?

जेनो सामोश रही ।

बाबू गोपीनाथ से जब मुझे जीनत का सम्बन्ध जान का कारण और उद्देश्य मालूम हुआ तो मग दिमाग चकरा गया । मुझे यकीन न आया कि ऐसा भी हो सकता है, लेकिन बाद में अपनी आखी दमे हाल न मेरी हैरत दूर कर दी । बाबू गोपीनाथ की दिनी तमन्ना थी कि जीनत सम्बन्ध में किसी अन्धे मान्यार आदमी की रणेल उन जाए या उन तारीक सीधे जाण, जिनसे वह विभिन्न व्यक्तियों से रपया प्राप्त करत रहन में तपन हो सके ।

जीनत से अगर सिर्फ छुटकाग ही शामिल करना जाना तो यह कोई मुश्किल चीज नहीं थी । बाबू गोपीनाथ एक ही दिन में ऐसा कर सक्ता था । चूँकि उसकी नीयत नेक थी इसलिए उसने जीनत की जिदगी बनान में लिए हुए सम्भव प्रयत्न किया । उसका एकदम बनान के लिए उसने कई जानी डायग्नोसिस की दावतें की, घर में टेलीफोन लगवा दिया, लेकिन ऊट किसी करवट में बैठा ।

मुहम्मद शफीक तूसी लगभग डठ महीने तक आता रहा । कई रातें भी उसने जीनत के साथ गुजारी, लेकिन वह ऐसा आदमी नहीं था, जो किसी औरत का सहारा बन सके । बाबू गोपीनाथ ने एक रोज़ अपने साथ और रज के साथ कहा, 'शफीक साहब तो खालीगुली जटलमन ही निकल । ठम्मा दलिये, लेकिन बेचारी जीनत से चार चादरें छ तकिय के गिलाफ और दा सी रपय नकद हथियाकर न गए । मुना है, आजकल एक लकी अरामाम में इन्हें सड़ा रह है ।

यह सही था । अनमान नजीर जान पटियाल वाली की सत्रस छाटी और आगिरी लडका थी । इसमें पहले तीन वहुतें शफीक की रखैल रह चुकी थी । दो सी रपय जो उनमें जीनत में लिए थे, मुझे मालूम है अनमान पर सब हुए थे । वहना के साथ लड भांडार अनमान न जहर सा लिया था ।

मुहम्मद शफीक तूसी ने जब आना जाना बंद कर दिया तो जीनत ने कई बार मुझे टेलीफोन किया और कहा कि उन डूढ़कर मेरे पास लाए । मैं उसे तलाश किया, लेकिन किसीको भी उसका पता नहीं था

कि वह बहा रहता है। एक दिन अचानक रडियो स्टेशन पर मुताकात हो गई। सरन परगानी की हालत म था। जब मैंने उससे कहा कि तुम्हें जीनत बुलाती है तो उसने तवाब दिया—मुझे यह पैगाम और जरिय स भी मिल चुका है। अफसोस है आजकल मुझ विलकुल फुमत नहीं। जीनत बहुत अच्छी औरत है लेकिन अफमास है कि वह बट्ट शरीफ है। ऐसी औरत स जो बीविया जमी लगें मुझे कोई दिलचस्पी नहीं। दाफीक म जब निरासा हुई ता जीनत न सरनर क साथ फिर अपानो बदर जाना शुरू किया। पन्द्रह टिना म बड़ी मुश्किल स कई गैलन पट्रोल पूकने क बाद सरदार न दा आत्मी फास उनसे जीनत को चार सौ रुपये मिले। बाबू गोपीनाथ न समझा कि हालात अच्छे है क्याकि उस स एक न जा रेशमी कपडा की मिल का मालिक था जीनत स कहा कि मैं तुमसे गान्गी करूंगा। एक महीना गुजर गया लेकिन वह आदमी फिर जीनत के पाम न आया।

एक रोज मैं जाने किस काम स हानबी रोड पर जा रहा था कि मुझे फुटपाथ के पास जीनत की मोटर खड़ी नजर आई। पिछली सीट पर मुहम्मद यासीन बैठा था नगीना होटल का मालिक। मैं उससे पूछा यह मोटर तुमने कहा स ली ?

यासीन मुस्कराया, तुम जानत हा माटर वाली को ?

मैंने कहा 'जानता हूँ।

तो वस समझ लो कि मेरे पास कसे आई। अच्छी लडकी है यार। यासीन न मुझ आख मारी। मैं मुस्करा दिया। उसक चौथ राज बाबू गोपीनाथ टैक्सी पर मेर दफतर म आया। उससे मुझ मालूम हुआ कि जीनत न यासीन की मुताकात कस हुई। एक शाम का अपानो बदर म एक आत्मी लेकर सरदार और जीनत नगीना होटल गई। वह आत्मी तो किसी बात पर झगडकर चला गया लेकिन होटल क मालिक स जीनत की दोस्ती हो गई।

बाबू गोपीनाथ सतुष्ट था क्याकि दस-पन्द्रह रोज की दास्ती क दौरान यासीन ने जीनत का छ बहुत ही उम्मा और बीमती साडिया ले दी थी। बाबू गोपीनाथ अब यह सोच रहा था कि कुछ दिन और गुजर

जाए, जीवनत और यामीन की दोस्ती और मजबून हो जाए तो ताहौर वापस चला जाए मगर ऐसा न हुआ। नयीना होटल में एक थिदिचयन औरत ने एक कमरा किराये पर लिया, उसकी जवान लड़की से यामीन की आख लगे गई। खुनाचे जीवनत देवारी होटल में बंठी रही और यामीन उसकी माटर में मुंह नाम उस लड़की को घुमाना रहना। बाबू गोपीनाथ का कामका पता चला तो बड़ा दुःख हुआ। उसने मुँहमे कहा 'मण्टा माहुर ! यकम लोग है !' अई, दिल उचाट हो गया है तो साफ कह दो। 'देबिन जीवनत भी अजीब है। अच्छी तरह मानूम है कि क्या हो रहा है, मगर मुँह से इनका भी नहीं कहती—मिया, अगर तुम्हें उस गिम्टान छात्ररी में इश्क लहाना है तो अपनी माटर का चणोवस्त करो, मेरी मोटर क्या इस्तमान करत हा ? मैं क्या करूँ मण्टो माहुर ! बड़ी शरीफ और नेक औरत है। कुछ समझ में नहीं आता। थोड़ी-सी चालाकता बनना भी चाहिए।'।

यामीन से मख्त य समाप्त होने के बाद जीवनत ने कोई मदमा महमूम न किया।

बहुत दिना तक कोई और नई बात न हुई।

एक दिन टेन्लीकोन किया मो मानम हुआ कि गोपीनाथ गुनाम अनी और गणकार माह के माय ताहौर चला गया है, रुपय का बंदाबस्त करन क्याहि पचाम हजार अरम हो चुके थे। जाते वकन यह जीवनत से कह गया था कि उस ताहौर में ज्यादा दिन लगेग, क्योंकि उस कुछ मकान बचने पड़ेग।

सरदार को मागफिया के टीका की जरूरत थी, सैण्डो को पैसो की। दोना न मिलकर कोशिश की। हर रोज दो-तीन आदमी फासकर ले आत। जीवनत से कहा गया कि बाबू गोपीनाथ वापस नहीं आयागा, इस-लिए उस अपनी फिक्र करनी चाहिए। मो सवा मो रुपये रोज के हा जात, जिनसे से आधे जीवनत का मिलते, बाकी सैण्डो और सरदार दबा लेते।

मैंने एक दिन जीवनत से कहा, 'यह तुम क्या कर रही हो ?' उसने बड़े अलहंपन से कहा, 'मुझे कुछ नहीं मालूम आईजान ! य लाग जा कुछ

वहते हैं, मान लेती हूँ।' जी चाहा, पास बैठकर दर तक ममभाऊ बिजा कुछ तुम पर रही हा ठीक नहीं है। मण्डा और सरदार अपना उतलू सीधा करन के लिए तुम्हें बच भी डालेंगे, मगर मैं कुछ न बता। जीनत उतलता दन की हद तक बममभ उठमग और बजान औरग थी। उा बमपरत का अपनी जितनी का कुछ बद्र-नीमत मालूम ही नहीं थी। जिसमें बेचनी मगर उममे बचन वाला का कोई अंगज तो हाता। मुझे बहुत कोपन हाती थी उस दमपर। मिगट स गराय म, गान म, घर स, टेलीफोन म, यहां तक कि उम माफ म भी जिमपर यह अममर लटी रहती थी उम काद निलचस्पी नहीं थी।

बाबू गोपीनाथ पूरे एक महीने बाद लौटा। माहिम गया तो बहा फोटो म कोई और ही था। सैण्डो और मरदार के मशविर स जीनत न बादरा म एक बगले का ऊपरी हिस्सा किराय पर ले लिया था। बाबू गोपीनाथ मेर पास आया तो मैं उस पूरा पता बता दिया। उसन मुझम जीनत के बारे म पूछा। जा कुछ मुझ मालूम था, मैं कह दिया लेकिन यह न कहा कि सैण्डो और सरदार उससे पेशा करा रह है।

बाबू गोपीनाथ इस बार दम हजार रुपय अपन साथ लाया था जो उसन बड़ी मुश्किल स हासिल किए थे। गुनाम अली और गफार साई को बहु लाहौर ही छोड़ आया था। टक्की नीच खड़ी थी। बाबू गोपीनाथ न अनुरोध किया कि मैं भी उसके साथ चलू।

लगभग एक घण्टे म हम बादरा पहुंच गए। पाती हिल पर टक्की खड रही थी कि सामन तग सडक पर सण्डो दिखाई दिया। बाबू गोपीनाथ न जार से पुनारा सण्डो।

सैण्डो न जब बाबू गोपीनाथ को दग्ग ता उसके मुह म सिफ इतना निकना धडन लगता।

बाबू गोपीनाथ ने उसस कहा आग्रा टक्की म उठ जाग्रा और साथ चलो।

लेकिन सण्डो न बहा, 'टक्की एक तरफ खड़ी कीकिए। मुझे आपसे कुछ प्राइवेट बातें करनी हैं।

टक्की एक तरफ खड़ी की गई। बाबू गोपीनाथ बाहर निबला ता

सण्डो उने कुछ दूर ले गया। देर तक उनमे बातें होती रही। जब सतम हुई तो बाबू गोपीनाथ अचानक टैंकसी की तरफ आया। ड्राइवर से उगने कहा, 'वापस ले चलो।'

बाबू गोपीनाथ खुश था। हम दादर के पास पहुंचे तो उसने कहा, 'मण्डो साहब, जेना की मादी होन वाली है।'

मैं हैरत स पूछा, 'किसम ?'

बाबू गोपीनाथ ने जवाब दिया, हैदराबाद सिंध का एक दौलतमद जमींदार है। खुदा करे, दोनों खुश रह। यह भी अच्छा है जो मैं ठीक वकन पर आ पहुंचा। जो रुपये मेरे पाम हैं, उनमे जेनो का दहेज वन जाएगा। क्या क्या खपान ह आपका ?

मेरे दिमाग मे उस वकन कोई खयाल नहीं था। मैं सोच रहा था कि यह हैदराबाद सिंध का दौलतमद जमींदार कौन है ? सण्डो और सरदार की कोई जालसाजी तो नहीं ? लेकिन बाद मे इसकी तसदीक हो गई कि वह वास्तव मे हैदराबाद का मुग़ल जमींदार था जो हैदराबाद सिंध के एक म्यूजिक टीचर की मारफत जीनत स मिला था, यह म्यूजिक टीचर जीनत को गाना मिसान की बेनार कोशिश किया करता था। एक रोज वह अपने मरपरस्त गुनाम हुसैन (यह हैदराबाद सिंध के रईस का नाम था) का साथ लेकर आया। जीनत ने खूब खातिर की और गुनाम हुसैन की परमादा पर उसने गालिब की गजत

नुवताची है गमे दिल उसको सुनाए न बने गाकर सुनाई। गुलाम हुसैन उसपर मर मिटा। इसका जिक्र म्यूजिक टीचर न जीनत से किया। सरदार और सण्डा ने मिलकर मामला पक्का कर दिया, और गादी तय हो गई।

बाबू गोपीनाथ खुश था। एक बार सण्डो के दोस्त की हैमियत से वह जीनत के यहा गया। गुलाम हुसैन स उसकी मुलाकात हुई तो उससे मिलकर बाबू गोपीनाथ की खुशी दूनी हो गई। मुफ्त उसने कहा 'मण्डो साहब, खूबमूरत, जवान और बडा लायक आदमी है वह। मैं यहा आते हुए दातगज बरग के हुजूर जाकर दुआ मांगी थी, जो कुतूल हुई। भगवान करे, दोनों सुख रह।'

बाबू गोपीनाथ ने बड़े खुलूस और तबज्जह से जीनत की दांगी का इतजाम किया। दो हजार के जेवर और दो हजार के कपड़े बनवाए और पांच हजार नकद लिए।

मुहम्मद सफीक सूगी, मुहम्मद यासीन प्राप्राइटर नगीना होतल, सैण्डा म्यजिक टीचर में और गोपीनाथ गादी में शामिल थे। दुलहन का तरफ स सज्जो चकील था। निकाह हुआ तो सैण्डो ने धीरे से कहा 'घडन-तस्ता'। गुलाम दुसन सज का नीला झूट पहने हुए था। सबने उसको सुबारक़ाद दी, जो उसने खुशी खुशी कुबल की। बाकी सबसरत आत्मा था। बाबू गोपीनाथ उसके मुकाबले में छोटी सी बटेर मानने होता था।

गादी की दावता में खान पीन का जो भी सामान हाता है, उसका प्रबंध बाबू गोपीनाथ ने किया था। दावत में जब साय फारिग हुए तो बाबू गोपीनाथ ने सबके हाथ धुलवाए। मैं जब हाथ धाने के लिए आया तो उसने मुझमें उच्चा के मे अदाज में कहा, 'मण्टो साहब, जरा अदर जाइए, और दलिये जना दुलहन के लिबास में कसी लगती है।'

म पदा हटाकर अदर दाखिल हुआ। जीनत मुख जरबन का सल-वार कुरता पहन हुई थी दुपट्टा भी उसी रंग का था, निमपर गोट लगी थी। चेहरे पर हल्का हल्का मशग्रप था हालांकि मुझे होठा पर लिपस्टिक की सुर्खी बहुत पुरी मालूम होती है, लेकिन जीनत के हाठ सजे हुए थे। उमन शरमाकर मुझे आदाज किया तो वह बहुत प्यारी लगी। जब मैंने दूसरे कोन में एक मसहरी देनी जिमपर फूल ही फूल थे तो मुझे प्रता-याम हसी आ गई। मैंने जीनत से कहा, यह क्या मसखरापन है।'

जीनत ने मरी नरप बिनकुल मामूम कबूतरी का तरह दत्ता, 'आप मजाक करते हैं भाईजान।' उसने कहा और उसकी आपा में आसू डब-डबा आया।

मुझे अभी अपनी गलती का एहसास भी न हुआ था कि बाबू गोपीनाथ अदर दाखिल हुआ। बड़ प्यार के साथ उसने अपने रुमाल से जीनत के आसू पाल, और बड़े दुःख के साथ मुझसे कहा 'मण्टो साहब, मैं समझा था कि आप बड़े ममकदार और सायक आदमी हैं, जेनो का मजाक उठाने से पहले आपने कुछ सोच लिया होता।

बाबू गोपीनाथ के स्वर में वह श्रद्धा, जो उसमें मेरे प्रति थी, धायल नजर आई , लेकिन इससे पहले कि मैं उससे माफी मागू, उसने जीनत के सिर पर हाथ फेरा और बड़े खुलूस के साथ कहा, 'खुदा तुम्हें खुश रखे।'

यह कहकर बाबू गोपीनाथ ने भीगी हुई आँखों से मेरी तरफ देखा, उनमें निंदा थी, बहुत ही दुःख भरी निंदा, और वह चला गया।

टोबा टेकसिंह

चटवारे के दो तीन साल बाद पाकिस्तान और हिंदुस्तान की सरकारों को खयाल आया कि साधारण बैदियो की तरह पागला की बदला बदली भी होनी चाहिए, अर्थात् जो मुसलमान पागल हिंदुस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें पाकिस्तान पहुंचा दिया जाए और जो हिंदू और सिख पाकिस्तान के पागलखानों में हैं, उन्हें हिंदुस्तान के हवाले कर दिया जाए।

मालूम नहीं, यह बात उचित थी या अनुचित। जो हो समझने के फल के अनुसार ऊंचे स्तर पर कॉफ़ेंस हुई और अंत में एक दिन पागला की बदला बदली के लिए मुक़रर हो गया। अच्छी तरह छाबीन की गई। वे मुसलमान पागल, जिनके सरक्षक हिंदुस्तान में थे वही रहने दिए गए और जो दोष थे, उनका सीमा की ओर खाना कर दिया गया। यहाँ पाकिस्तान से, क्योंकि करीब करीब सब हिंदू मिल जा चुके थे इस लिए किसीको रखने रखाने का मवाल पैदा न हुआ। जितने हिंदू सिख पागल थे सबके सब पुलिस के सरक्षण में सीमा पर पहुंचा दिए गए।

उधर की खबर नहीं, लेकिन इधर लाहौर के पागलखान में इस तबादले की खबर पहुंचा तो बड़ी भजेदार बातें होने लगी। एक मुसलमान पागल से, जो बारह साल तक प्रतिदिन नियमपूर्वक जमींदार पन्ना रहा था, जब उसके एक दोस्त ने पूछा, 'भोलबी साब, यह पाकिस्तान क्या होता है?' तो उसने बड़े चिंतन के बाद जवाब दिया, 'हिंदुस्तान में एक ऐसी जगह है, जहाँ उस्तर बनत है।'

यह जवाब सुनकर उसका दोस्त चुप हो गया।

इसी तरह एक सिख पागल ने दूसरे सिख पागल से पूछा, 'सरदार जी, हमें हिंदुस्तान क्या भेजा जा रहा है? हमें तो वहाँ की बोली नहीं आती।'।

दूसरा मुस्कराया, 'मुझे तो हिंदुस्तान की बोली आती है, हिंदुस्तानी बड़े दीनानी भाव ड भाव ड फिरते हैं'।

एक दिन नहाते नहाते एक मुसलमान पागल ने 'पाकिस्तान जिन्दा-वाद' का नारा इतने जोर से लगाया कि पक्ष पर फिमलकर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। कुछ पागल ऐसे भी थे जो पागल नहीं थे। इनमें ऐम खूनिया की सग्या अधिक थी, जिनके मउधिया न अफमरो को रिश्वत दे दिलाकर उन्हें पागलखान भिजवा दिया था ताकि वे फामी वे फदेम बच जाए।

वे कुछ कुछ समझते थे कि हिन्दुस्तान का बटयारा क्या हुआ है और यह पाकिस्तान क्या है, लेकिन सभी पटनाओ का उन्हें भी कुछ पता न था। अफसरों ने कुछ पता नहीं चलता था और पहरेदार सिपाही अन-पढ़, उजड़ड़ थे। उनकी बातचीत से भी वे कोई अर्थ नहीं निकाल सकते थे। उनकी बेबल इतना पता था कि एक आदमी मुहम्मद अली जिन्ना है जिसको कायदे आजम कहते हैं—उसने मुसलमानों के लिए एक अलग देश बनाया है, जिसका नाम पाकिस्तान है। यह कहा है और इसकी उपयोगिता क्या है, इसके सम्य-ध म वे कुछ नहीं जानते थे। यही कारण था कि पागलखाने में वे सब पागल, जिनका दिमाग पूरी तरह से खराब नहीं था, इस असमजस में थे कि वे पाकिस्तान में थे या हिन्दुस्तान में। अगर हिन्दुस्तान में हैं तो पाकिस्तान कहा है और अगर वे पाकिस्तान में हैं तो तो यह कैसे हो सकता है कि वे कुछ समय पहले यहीं रहते हुए भी हिन्दुस्तान में थे? एक पागल तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान तथा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के चक्कर में ऐसा पड़ा कि और ज्यादा पागल हो गया। भाड़ू दंत दंत एक दिन एक पेड़ पर चढ़ गया और एक टहनी पर बैठकर आधे घण्टे तक लगातार भाषण देता रहा, जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के नाजुक मामले पर था। सिपाहियों ने उसे नीचे उतरने के लिए कहा तो वह और ऊपर चढ़ गया। डराया धमकाया गया तो उसने कहा, मैं न हिन्दुस्तान में रहना चाहता हूँ न पाकिस्तान में। मैं इसपेड़ पर ही रहूंगा।

बड़ी मुश्किलों के बाद जब उसका दौरा ठण्डा पड़ा तो वह नीचे उतरा और अपने हिन्दू सिख मित्रों से मिल मिलकर रोने लगा। इस विचार में उसका दिल भर आता था कि वे उसे छोड़कर हिन्दुस्तान चले जाएंगे।

एक एम० एस सी० पास रेडियो इंजीनियर म, जो मुसलमान था और दूसरे पागलो से बिल्कुल अलग थलग बाग की एक खास रविश पर दिन भर चुपचाप दहलता रहता था, यह तन्नीली आई कि उसने अपने तमाम कपड़े उतारकर दफादार के हवाले कर दिए और नग धडग सार बाग में धूमना शुरू कर दिया ।

चिनयोट के एक मुसलमान पागल ने, जो मुस्लिम लीग का सक्रिय कार्यकर्ता रह चुका था और जो दिन में पंद्रह सोलह बार नहाया करता था, एकाएक यह आदत छोड़ दी । उसका नाम मुहम्मद अली था, इसलिए एक दिन उसने अपने जंगले में घोषणा कर दी कि वह कामदे-आजम मुहम्मद अली जिन्ना है । उसका देशादेशी एक सिख पागल मास्टर तारारसिंह बन गया था । संभव था कि उस जंगले में तूफ़ खराबा हो जाना लेकिन उन्हें खतरनाक पागल करार देकर अलग अलग स्थानों में बंद कर दिया गया ।

लाहौर का एक नौजवान हिंदू वकील था जो प्रेम में असफल होकर पागल हो गया था—जब उसने सुना कि अमृतसर हिंदुस्तान में चला गया है तो उसे बहुत दुख हुआ । उसी शहर की एक हिंदू लड़की से उसको प्रेम हो गया था । यद्यपि उसने उस वकील का ठुकरा दिया था, लेकिन पागलपन की हालत में भी वह उसे नहीं भुला सका था । इसलिए वह उन सब हिंदू और मुस्लिम लीडरों को गालिया देता था, जिन्होंने मिल मिलकर हिंदुस्तान के दो टुकड़े कर दिए थे । प्रेमिका हिंदुस्तानी बन गई थी और वह पाकिस्तानी ।

जब अदला-बदली की बात शुरू हुई तो वकील को पागला में मम-झाया कि वह दुखी न हो, उसको हिंदुस्तान भेज दिया जाएगा—उस हिंदुस्तान में जहां उसकी प्रेमिका रहती है । लेकिन वह लाहौर छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए कि उसका खयाल था कि अमृतसर में उनकी प्रकटिस नहीं चलेगी । यूरोपियन वाड में दो ऐंग्लो इण्डियन पागल थे । उनकी जड़ मालूम हुआ कि हिंदुस्तान को आजाद करके अग्रज चले गए हैं तो उनकी बड़ा दुख हुआ । वे छिप छिपकर घण्टा आपस में इस गंभीर समस्या पर बातचीत करते रहते कि पागलखाने में अब उनकी

हैसियत किस तरह की होगी, यूरोपियन बाढ़ रहगा या उठा दिया जाएगा ?
ब्रेक्फास्ट मिला करेगा या नहीं ? क्या उह डबलरोटी के बजाय वनडी
इण्डियन चपाती तो जहर मार नहीं करनी पड़ेगी ?

एक सिख था जिसको पागलखान में दाखिल हुए पन्द्रह माल हो चुके
थे । हर समय उसने मुह में य विचित्र शब्द सुनने में आत थे, 'ओ पड दी
गिडगिड दी ऐक्स दी बेघ्याना दी, भूग दी दाल भाव दी सालटेन ।' वह
दिन को सोना था न रात को । पहरेदारों का कहना था कि पन्द्रह बप के
इस लम्बे समय में वह एक क्षण के लिए भी न सोया था । लेटना भी नहीं
था । हा, कभी कभी दीवार के साथ टक लगा लेता था । हर समय खड़े
रहने में उसके पांव सूज गए थे । पिण्डलिया भी फूल गई थी । लेकिन
उस शारीरिक कष्ट के बावजूद वह लेटवर आराम नहीं करता था । हिंदु-
स्तान, पाकिस्तान और पागलों की बदला बदली के बारे में जब कभी
पागलखाने में बातचीत होती थी तो वह बड़े ध्यान से सुनता था । कोई
उससे पूछता कि उसका क्या खयाल है तो वह बड़ी गम्भीरता से जवाब
दता 'ओ पड दी गिडगिड दी, ऐक्स दी बेघ्याना दी, भूग दी दाल भाव
दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट ।

लेकिन बाद में 'भाव दी पाकिस्तान गवर्नमेण्ट' की जगह भाव दी टोबा
टर्कसिह, न ले ली और उसने दूसरे पागलों से पूछना शुरू किया कि टोबा
टर्कसिह, कहा है, जहां का वह रहने वाला है ? लेकिन किसीको भी मालूम
नहीं था कि वह पाकिस्तान में है या हिंदुस्तान में । जो बतान की कोशिश
करते थे खुद इस चक्कर में फंसे जाते थे कि स्पेलकोट पहले हिंदुस्तान
में होता था, पर अब सुना है कि पाकिस्तान में है । क्या पता है कि लाहौर
जो अब पाकिस्तान में है कल हिंदुस्तान में चला जाएगा सारा हिंदु-
स्तान ही पाकिस्तान बन जाए । और यह भी कौन छाती पर हाथ रखकर
कह सकता था कि हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों किसी दिन मिर से
ही गायब न हो जाएंगे ।

इस सिख पागल के केंद्र में रहने पर अब बहुत थोड़े से रह गए
थे । चूंकि वह बहुत कम नहाता था इसलिए दाढ़ी और सिर के बाल धांस
में जम गए थे, जिसके कारण उसकी शरल बड़ी भयानक हो गई थी ।

लेकिन आदमी बड़ा अहानिकारक था। पन्द्रह वर्षों में उसने किसीसे भगडा-फिसाद नहीं किया था। पागलखान के जो पुराने नौकर थे वे उसके बारे में इतना जानते थे कि टोबा टेक्सिंह में उसकी काफी जमीनें थी। अच्छा खाता पीता जमींदार था कि अचानक ही दिमाग उलट गया। उसका सबधी लाह की मोटी मोटी जजीरा में उसे बांधकर लाए और पागलखान में दाखिल करा गए।

महीने में एक बार मुलाकात का वे लोग आते थे और उसकी राजी-खुशी मालूम करके चले जाते थे। एक समय तक यह सिलसिला चलता रहा, लेकिन जब पाकिस्तान हिंदुस्तान की गड़बड़ शुरू हो गई तो उनका आना बंद हो गया।

उसका नाम बिशनसिंह था, मगर सब उसे टोबा टेक्सिंह कहते थे। उसे यह बिलकुल मालूम न था कि दिन कौन सा है, महीना कौन सा है या कितने साल बीत चुके हैं। लेकिन हर महीने जब उसके सम्बन्धी उससे मिलने आते थे तो उसे अपने आप पता चल जाता था। अतएव वह दफा-दार से कहता कि उसके मुलाकाती आ रहे हैं। उस दिन वह अच्छी तरह नहाता, बदन पर खूब साबुन घिसता और सिर में तेल लगाकर कंधा करता। अपने कपड़े, जो वह अभी इस्तेमाल नहीं करता था निकलवा कर पहनता और या सज मबरकर मिलने वालों के पास जाता। वे उसमें कुछ पूछते तो वह चुप रहता या कभी कभी ओ पड नी गिडगिड दी, ऐंक्स दी बे-आना दी, मूंग दी दाल आव दी सालटेन।' कह देता।

उसकी एक लड़की थी, जो हर महीने एक अमुल बढ़ती बढ़ती पन्द्रह वर्ष में जवान हो गई थी। बिशनसिंह उस पहचानता ही न था। जब वह बच्ची थी तब भी अपने बाप का देखकर रोती थी, जब जवान हुई, तब भी आँखों से आसू बहते थे।

पाकिस्तान और हिंदुस्तान का विस्सा शुरू हुआ तो उसने दूसरे पागला में पूछना शुरू किया कि टोबा टेक्सिंह कहा है। जब सतोप-जनक उत्तर न मिला तो उसकी चिंता दिना दिन बढ़ती गई। अब मुलाकाती भी नहीं आते थे। पहले तो उसे अपने आप पता चल जाता था कि मिलने वाले आ रहे हैं पर अब जैसे उसके दिल की आवाज भी बंद हो

गई थी, जो उसे उनके आने की खबर दे दिया करती थी ।

उसकी बड़ी इच्छा थी कि वे लोग आए, जा उसके प्रति प्रेम प्रदर्शित करते थे और उसके लिए फन मिठाइया और कपड़े लाते थे । वह अगर उनमें पूछता कि टोबा टेकसिंह कहाँ तो है वे सचमुच बता देते कि पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, क्याकि उसका खयाल था कि वे टोबा टेकसिंह में ही आते थे, जहाँ उसकी जमीनें हैं ।

पागनखाने में एक पागल ऐसा भी था, जा अपनेका खुदा कहता था । उससे एक दिन जब बिशनसिंह ने पूछा कि टोबा टेकसिंह पाकिस्तान में है या हिन्दुस्तान में, तो उसने अपनी आदत के मुताबिक एक कहवहा लगाया और कहा, 'वह न पाकिस्तान में है और न हिन्दुस्तान में, इसलिए कि हमने अभी तब हुक्म ही नहीं दिया ।'

बिशनसिंह ने उस खुदा से कई बार बड़ी मिन्नत-खुशामद से कहा कि वह हुक्म दे दे, ताकि भ्रष्ट खरम हो, अगर वह बहुत व्यस्त था, क्योंकि उस और भी बहुत-से हुक्म देने थे । एक दिन तब आकर वह उसपर बरस पड़ा, आ पड़ दी गिटगिट दी, ऐँस दी बेघ्याना दी, मूँग दी दाल आव बाह गुरुजी दा खालसा एण्ड बाह गुरुजी दी फतह—जो बोले सो निहाल सत सिरी अयाल ।'

उसका शाब्द यह मतलब था कि तुम मुसलमानों के खुदा हो, सिखा के खुदा होत ता जरूर मेरी सुनते ।

भदला बदली से कुछ दिन पहले टोबा टेकसिंह का एक मुसलमान, जो उसका दोस्त था, मुलाकात के लिए आया । पहले वह कभी नहीं आया था । जब बिशनसिंह ने उस देखा तो एक तरफ हट गया और वापस जा लगा, लेकिन सिपाहियों ने उस रोका, 'तुमसे मिलने आया है—तुम्हारा दोस्त फजलदीन है ।

बिशनसिंह ने फजलदीन को एक नजर से देखा और कुछ बड़बड़ाने लगा । फजलदीन ने आगे बढ़कर उसके कंधे पर हाथ रख दिया । मैं बहुत दिना से सोच रहा था कि तुममें मिलू लेकिन फुरसत ही न मिली । तुम्हारे सब आदमी राजी-खुशी हिन्दुस्तान पहुँच गए हैं । मुझसे जितनी मदद हो सकती थी की, लेकिन तुम्हारी चोटों-रूपकीर '

वह यहते-वहते रुक गया। बिशनसिंह कुछ याद करन लगा। 'बटो रूपकोर।''

फजलदीन ने रुक रुककर कहा, 'हा हा वह भी ठीकठाक है उनके साथ ही चली गई थी।''

बिशनसिंह चुप रहा। फजलदीन ने कहना शुरू किया, 'उन्होंने मुझसे कहा था कि तुम्हारी राजी खुशी पूछता रहू। अब मैंने सुना है कि तुम हिन्दुस्तान जा रहे हो—भाई बलबीरसिंह और भाई रघावासिंह से मेरा सलाम कहना, और बहन अमृतकोर से भी। भाई बलबीरसिंह से कहना—फजलदीन राजी-खुशी है। दो भूरी मर्से जा वे छोड़ गए थे, उनमें से एक ने कट्टा दिया है दूसरी के कट्टी हुई थी, पर वह चीन्हा दिन की होकर मर गई और भरे लायक जा खिदमन हो, कहना। मैं हर वक्त तैयार हू। और ये तुम्हारे लिए थोड़े से मरुण्डे लाया हू।''

बिशनसिंह ने मरुण्डों की पोटली लेकर पास खड़े सिपाही के हवान कर दी और फजलदीन से पूछा, 'टोबा टेकसिंह कहा है?'

फजलदीन ने आश्चर्य से कहा, 'कहा है? वही है, जहा था।''

बिशनसिंह ने फिर पूछा, 'पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में?'

'हिन्दुस्तान में नहीं-नहीं, पाकिस्तान में।' फजलदीन बोलला-सा गया। बिशनसिंह बड़बड़ाता हुआ चला गया और पड़ दी गिडगिड दी ऐंक्स दी बेध्याना दी मूंग दी दाल आव दी पाकिस्तान एण्ड हिन्दुस्तान आव दी दुर फिट मुह।''

अदला बदली की तैयारियां पूरी तरह हो चुकी थी। इधर से उधर और उधर से इधर आने वाले पागला की सूचियां पहुंच गई थी और अदला-बदली की तारीख निश्चित हो चुकी थी। कडाके का जाड़ा पड़ रहा था जब लाहौर के पागलखाने से हिंदू सिख पागला से भरी लारिया पुलिस के संरक्षक दस्त के साथ खाना हुआ। उनसे सम्बन्धित अफमर भी उनके साथ थे। वाघा की सीमा पर दोनों आर के सुपरिण्टेंडेंट एक-दूसरे से मिले और प्रारम्भिक कारवाई खत्म हान के बाद अदला-बदली शुरू हो गई जो रात भर चलती रही।

पागला को लारिया से निकालना और उनको दूसरे अफमरों के हवाले

करना बड़ा कठिन काम था। कुछ तो बाहर निकलते ही नहीं थे, जो निक्लन को तैयार हात, उनको सभालना मुश्किल होता, क्योंकि वे इधर-उधर भाग उठते थे। जो नये थे, उनको बपड़े पहनाए जाते तो वे पाड़कर अपने तन से अलग कर देत। कोई गालियाँ बक रहा है, काई गा रहा है। आपस में लड़ भगड़ रहे हैं और रो रहे हैं, विलख रहे हैं। बान पड़ी आराज मुनाई नहीं देती थी। पागल स्त्रियो का शारगुन अलग था, और सर्दों इतने कडाके की थी कि दात बज रह थे।

अधिकतर पागल इम अदला-बदली के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि उनकी समझ में नहीं आता था कि उन्हें अपनी जगह से उखाड़कर कहाँ फेंका जा रहा है। थोड़े से थे, जो कुछ सोच समझ सकते थे, पाकिस्तान जिंदावाद और 'पाकिस्तान मुर्दावाद' के नारे लगा रहे थे। दो तीन बार भगड़ा हाते होते बच्चा, क्योंकि कुछ एक मुसलमानों और सिखा का ये नारे सुनकर तँश आ गया था।

जब विधानमिह की बारी आइ और जब उसे दूसरी ओर भेजन के सम्बन्ध में अधिकारी लिखत पढत करने लगे तो उसने पूछा, टोबा टेक्सिह कहा है—पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में ?

सम्बन्धित अधिकारी सुनकर हँसा और बोला, 'पाकिस्तान में।'

यह सुनकर विधानमिह उछलकर एक तरफ हटा और दौड़कर अपने दोष भाधियो के पाम पहुच गया। पाकिस्तानी सिपाहियो ने उसे पकड़ लिया। और दूसरी तरफ से जान लगे लेकिन उमने चलने से इनकार कर दिया 'टोबा टेक्सिह कहा है और वह जोर-जोर से चिल्लान लगा, 'ओ पड दी गिडगिड दी, ऐँबम दी बेध्याना दी, मूग दी दाल आव टोबा टेक्सिह एण्ड पाकिस्तान !'

उसे बहुत समझाया गया, 'दखो, टोबा टेक्सिह अब हिन्दुस्तान में चला गया है अगर नहीं गया है तो उसे तुरन्त ही वहाँ भेज दिया जाएगा, लेकिन वह न माना। जब उसे जबरदस्ती दूसरी ओर ल जान की कोशिशें की गईं तो वह बीच में एक स्थान पर इस प्रकार अपनी सूजी हुई टांगों पर खड़ा हो गया, जैसे अब कोई तावत उसे वहाँ से नहीं हिला सकेगी।

आदमी चूँकि अहानिवारक था, इसलिए उसके साथ जबरदस्ती नहीं

मम्मी

उमका नाम मिसेज स्टेला जैकमन था, मगर सब उस मम्मी कहते थे। दमियान कद की अघेड़ उम्र की स्त्री थी। उसका पति जैक्सन प्रथम महायुद्ध में मारा गया था। उसकी पेंशन स्टला का लगभग दस वष स मिल रही थी।

वह पूना में बस आई, बस स वहा थी, इसके बारे में मुझे कुछ मालूम नहीं। दरअसल मैं उसके बारे में कुछ जानने की कभी काशिश ही नहीं की। वह इतनी दिलचस्प स्त्री थी कि उससे मिलकर सिवाय उसके व्यक्तित्व के और किसी चीज स दिलचस्पी नहीं रहती थी। उसमें कौन सम्बन्धित है, यह जानने की आवश्यकता ही महसूस न होती थी, क्योंकि वह पूना के जर्न-जर्न से परिचित थी। हो सकता है कि यह एक हृदय तप प्रतिशयोक्ति हो, लेकिन मेरे लिए पूना वही पूना है। उसके वही जर्न, उसका तमाम जर्न हैं, जिसे साथ मेरी कुछ यादें जुड़ी हुई हैं—और मम्मी का विचित्र व्यक्तित्व उनमें स हर एक में विद्यमान है।

उससे मेरी पहली मुलाकात पूना में ही हुई मैं बहुत ही सुस्त किम्म का आदमी हूँ। यो धुमधुमकी की बड़ी बड़ी उमरों मेरे दिन में मौजूद हैं और अगर आप मेरी बातें सुनें तो आपको लगगा कि मैं कबनकहा या हिमानय की इसी तरह की किसी अन्य छोटी को सर करने के लिए निकल जान वाला हूँ। ऐसा हा सकता है, लेकिन इससे भी अधिक सभा-यना इस बात की है कि वह चाटी सर करके मैं वही का हो रहा।

छुदा जाने किन्न वरसा से बम्बई में था। आप इसमें अदाजा लगा सकते हैं कि जब मैं पूना गया तो बीबी मेरे साथ थी। एक लटका होकर उमरा मरे करीब करीब चार वरस हो गए थे। इस बीच मैं ठहरिए, मैं हिमाव लगा लूँ आप यह समझ लीजिए कि आठ वरस स बम्बई में था, लेकिन उस बीच में मुझे बहा का विक्टोरिया गार्डन और म्यूजियम देखने की भी फुरसत नहीं मिली थी। यह तो केवल सयोग की बात थी कि मैं एक-

मैंने चड्डे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोड़े।' के जवाब में मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी बेतकल्लुफी झिरिया झिरिया हो गई।

मैं अपना तागा रकवा लिया। चड्डे ने भी अपने कोचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उम स्त्री से अंग्रेजी में कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट।'।

तागे से बढ़कर वह मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए चिल्लाया, 'तुम। तुम यहाँ कैसे आए?' फिर अपना बटा हुआ हाथ बड़ी बेतकल्लुफी से मेरी पुरतकल्लुफ बीबी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपने कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद की आखिर आप खीचकर यहाँ ले ही आईं।'।

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रह हो?'

चड्डे ने ऊँचे स्वर में कहा, 'एक काम से जा रहा हूँ—तुम ऐसा करो सीधे 'वह एकदम पलटकर मेरे तागे वाले से मुखामत हुआ, 'देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ, किराया किराया मत लेना इनसे।' उधर से तुरंत ही निपटकर उसने निश्चित सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नौकर बहा होगा, बाकी तुम देख लेना।'।

और वह फुदककर अपने तागे में उस बूढ़ी मैम के साथ जा बैठा जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सतोष हुआ था, बल्कि यो कहिए कि जो बीभूषण एकदम उन दोनों को साथ-साथ देखकर मेरे सीन पर आ पड़ा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पड़ा। मैं अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फलींग चलकर वह एक डाक बगने की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, 'चलिए साहब'।

मैंने पूछा, 'कहाँ?'

उसने जवाब दिया, 'चड्डा साहब का मकान यही है।'।

'ओह।' मैंने प्रशंसाचक दृष्टि से अपनी बीबी की ओर देखा। उसके तबरे ने मुझे बताया कि वह चड्डे के मकान में रहने के हक में

दम पूना जाने के लिए तयार हो गया। जिस फिल्म कम्पनी में नौकर था, उसके मालिका से एक मामूली सी बात पर मनमुटाव हो गया और मैं सोचा कि यह कटुता दूर करने के लिए पूना ही आऊँ। वह भी इसलिए कि वह पास था और मेरे कुछ मित्र वहाँ रहते थे।

मुझे प्रभातनगर जाना था, जहाँ मेरा फिल्मों का एक पुराना साथी रहता था। स्टेशन से बाहर निकलन पर मालूम हुआ कि वह जगह काफी दूर है, लेकिन तब तब हम तागा ले चुके थे।

सुस्त रफ्तार से चलन वाली चीजों से मेरी तबीयत बहुत खराब है, लेकिन मैं अपने दिल की रजिग को दूर करने के लिए यहाँ आया था, इसलिए मुझे प्रभातनगर जान की बहुत जल्दी थी। तागा बहुत ही बाहियात किस्म का था, अलीगढ़ के इक्का से भी ज्यादा बाहियात जिनमें हर समय गिरने का खतरा बना रहता है। घोड़ा आग चलता है, और सवारियाँ पीछे। एक दो गद से अटे बाजारों और सड़कों को पार करत करत मेरी तबीयत खराब गई। मैं अपनी बीबी से मशविरा किया और पूछा कि ऐसी हालत में क्या करना चाहिए। उसने कहा कि धूप तज है। मैंने जो और लागे देखे हैं, वे भी इसी तरह के हैं। अगर हम छोड़ दिया तो पैदल चलना होगा जो जाहिर है कि इस सवारी से ज्यादा तकलीफदेह है। बात ठीक थी। धूप सचमुच बहुत तज थी। घोड़ा एक फ्लिंग आग बढ़ा होगा कि पास से बीसा ही बाहियात किस्म का तागा गुजरा। मैंने सरसरी तौर पर उधर देखा तभी एकदम कोई चित्लाया, ओए मण्टो के घाटे।

मैं चौंक पड़ा। चडड़ा था, एक घिसी हुई मेम के साथ। दोनों साथ जुड़कर बैठे थे। मेरी पहली प्रतिक्रिया बड़ी दुःखद थी कि चडड़े की सौन्दर्यप्रियता कहाँ गई जो ऐसी लगामों के साथ बँठा है। उम्र का ठीक आधा तो मैं उस समय नहीं किया था मगर उस स्त्री की भुरिया पाउडर और रुज की तहा में भी माफ दिखाई देती थी। इतना गान्ग मेकअप था कि देवन से आँखा को कष्ट होता था।

1 बूढ़ा पांडा सात लगाम — महावरा।

मैंन चड्डे को काफी समय के बाद देखा था। वह मेरा ब्रेतकल्लुफ दोस्त था। 'ओए मण्टो के घोडे।' के जवाब में मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा लगाया होता, लेकिन उस स्त्री को उसके साथ देखकर मेरी ब्रेतकल्लुफी भिरिया भिरिया हो गई।

मैंन अपना तागा रुकवा लिया। चड्डे ने भी अपने बीचवान को ठहरने के लिए कहा। फिर उसने उस स्त्री से अंग्रेजी में कहा, 'मम्मी, जस्ट ए मिनट।'।

तागे से बूढ़कर वह मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए चिल्लाया, 'तुम। तुम यहाँ कैसे आए?' फिर अपना बड़ा हुआ हाथ बड़ी ब्रेतकल्लुफी से मेरी पुरतकल्लुफ बीबी से मिलाते हुए कहा, 'भाभीजान, आपन कमाल कर दिया। इस गुलमुहम्मद को आखिर आप खीचकर यहाँ ले ही आई।'।

मैंने उससे पूछा, 'तुम जा कहा रहे हो?'

चड्डे ने ऊँचे स्वर में कहा, 'एक काम से जा रहा हूँ—तुम ऐसा करो सीधे 'वह एकदम पलटकर मेरे साथे वाले से मुखातिब हुआ, 'देखो, साहब की हमारे घर ले जाओ, किराया विरामा मत लेना इनसे।' उधर से तुरत ही निपटकर उसने निर्दिष्ट सा होकर मुझसे कहा, 'तुम जाओ, नौकर बहा होगा, बाकी तुम देख लेना।'।

और वह फुदककर अपने तागे में उस बूढ़ी भेम के साथ जा बैठा, जिसको उसने मम्मी कहा था। इससे मुझे एक प्रकार का सतोप हुआ था, बल्कि या कहिए कि जो बीक एकदम उन दोनों को साथ साथ देखकर मेरे सीने पर आ पड़ा था, काफी हद तक हल्का हो गया था।

उसका तागा चल पड़ा। मैंने अपने तागे वाले से कुछ न कहा। तीन या चार फर्लांग चलकर वह एक डाक बगले की तरह की इमारत के पास रुका और नीचे उतरकर बोला, 'चलिए साहब'।

मैंने पूछा, 'वहाँ?'

उसने जवाब दिया, 'चड्डा साहब का मकान यही है।'।

'ओह।' मैंने प्रश्नवाचक दृष्टि से अपनी बीबी की ओर देखा। उसके तवरो ने मुझे बताया कि वह चड्डे के मकान में रहने के हक में

नहीं थी। गच पूछिए तो वह पूना भान के ही हूँ म नहीं थी। उसको यकीन था कि मुझका बहा पीने पिलाने वाले दास्त मिल जाएगे। मन सताप दूर करने का बहाना पहले से ही मौजूद है, इसलिए दिन रात उडेगी। मैं तोगे स उतर गया। छोटा सा अटची केस था, वह मैं उठाया और अपनी बीबी म बहा 'चलो'।

वह गायद मेरे तेवरों स भाप गई थी कि हर हातत मे उस मेरा फंमला मानना होगा, इसलिए उसन कोई हील टुज्जत न की और चुपचाप मेरे साथ चल पड़ी।

बहुत मामूनी मिस्म का मकान था। ऐसा मालूम होता था कि मिलिट्री वालों ने टेम्परेरी तौर पर एक छोटा सा बंगला बनाया था। कुछ दिन उसे इस्तेमाल किया और फिर छोड़कर चलत बने। बून और बीच का काम बड़ा अच्छा था। जगह जगह से पलस्तर रखड़ा हुआ था और घर के भीतर का भाग बेसा ही था, जसाकि एक सापरवाह कुभार का हो सकता है जो फिल्मी का हीरो हो और ऐसी कम्पनी म नौकर हो, जहा महीन की तनरवाह हर तीसरे महीन मिलती हो और वह भी कई किस्ता म।

मुझे इस बात का पूरा एहसास था कि वह स्त्री, जो बीबी हो, ऐस गदे वातावरण म निश्चय ही परेशानी और घुटन महसूस करेगी। लेकिन मैं सोचा था कि चढढा आ जाए तो उसके साथ ही प्रभात नगर चलेंगे। वहा जो मेरा फिल्मा का पुराना साथी रहता था, उसकी बीबी और बाल-बच्च भी थे। वहा के वातावरण म मेरी बीबी जैस तस दो तीन दिन काट सकती थी।

नौकर भी अजीब बेफिआ आदमी था। जब हम उस घर मे पहुँचे तो सब दरवाजे खुले थे और वह मौजूद नहीं था। जब वह आया तो उसने हमारी मौजूदगी की और कोई ध्यान न दिया, जैस हम बरसा से बही बैठे थे और इसी तरह बैठे रहने का इरादा किए हुए थे।

जब वह कमरे म प्रवेश कर हमे देखे बिना पास से गुजर गया तो मैंने समझा कि कोई मामूली एक्टर है, जो चढढा के साथ रहता है, लेकिन जब मैंने उससे नौकर के बारे म पूछनाछ की तो मालूम हुआ कि

वही हजरत चड्ढा साहब के चहते नौकर थे ।

मुझे और मेरी बीबी दोनों को प्यास लग रही थी । उससे पानी लाने को कहा तो वह गिलास ढूढने लगा । बड़ी देर के बाद उसने एक टूटा हुआ जग अलमारी के नीचे से निकाला और बढबढाया, 'रात एक दर्जन गिलास साहब ने मगवाए थे, मालूम नहीं किधर गए ।'

मैंने उसके हाथ में पकडे हुए जग को और इशारा किया, 'क्या आप इसमें तेल लेने जा रहे हैं ?'

'तेल लेने जाना' बम्बई का एक खास मुहावरा है । मेरी बीबी इसका मतलब न समझी, मगर हस पड़ी । नौकर बीखला गया, 'नहीं साहब मैं तलाश कर रहा था कि गिलास कहा है ।'

मेरी बीबी ने उसको पानी लाने से मना कर दिया । उसने वह टूटा हुआ जग वापस अलमारी के नीचे इस तरह से रखा कि जैसे वही उसकी जगह थी, मगर उसे वही और रख दिया तो सारी व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाएगी । इसके बाद वह या कमरे से बाहर निकला, जैसे उसे मालूम था कि हमारे मुह में कितने दात हैं ।

मैं पलंग पर बैठा था जो शायद चड्ढा का था । इससे कुछ दूर हटकर दो आगमकुर्सीया थी । उनमें से एक पर मेरी बीबी बैठी पहलू बदल रही थी । काफी देर तक हम दोनों खामोश रह । इतने में चड्ढा आ गया । वह अकेला था । उसको इस बात का बिलकुल एहसास नहीं था कि हम उसके मेहमान हैं और इस लिहाज से उसे हमारी खातिरदारी करनी चाहिए । कमरे में दागिल होते ही उसने मुझसे कहा 'बेट इज बेट । तो तुम आ गए ओल्ड ड्वाय । चलो, जरा स्टूडियो तक हो आए । तुम साथ होगे तो एडवाम मिलने में आसानी हो जाएगी आज शाम को । मेरी बीबी पर उसकी नजर पड़ी तो वह रुक गया और बिल-सिलाकर हसने लगा । 'भाभीजान, वही आपने इस मौलवी तो नहीं बना दिया ?' फिर और जोर से हसा, 'मौलवियों की ऐसी तैसी । उठो मण्टो, भाभीजान यहा बैठती हैं, हम अभी आ जाएंगे ।'

मेरी बीबी जल-भुनकर पहुँचे कोयला थी तो अब बिलकुल राख हो गई थी । मैं उठा और चड्ढा के साथ हो लिया । मुझे मालूम था कि थोड़ी

देर तक क्रोधित होकर वह सो जाएगी। अतएव वही हुआ। स्टूडियो पास ही था। अफरा नफरी में मेहताजी के सिर चढ़कर चढ़ा न दो सौ रुपये वसूल कर लिए और पौन घण्टे में जब हम वापस आए तो देखा कि वह बड़े मजे से आरामकुर्सी पर सो रही थी। हमने उस परेशान करना उचित न समझा और दूसरे कमरे में चले गए, जो कबाडखाने से मिलता जुलता था। इसमें जो चीजें थी, वे अजीब तरीके से टूटी हुई थी, जो सब मिलकर एक पूणता का दृश्य प्रस्तुत कर रही थी।

हर चीज पर गद जमी थी और उस जमी हुई गद में भी एक प्रकार का अपनापन था, जैसे उसकी मौजूदगी उस कमरे में जरूरी हो। चड्ढा न तुरत ही अपने नौकर को दूध निकाला और उसे सौ रुपये का नोट देकर कहा 'चीन के शहजादे' दो बोतलें थंड क्लास रम की ले आओ मेरा मतलब है, 'श्री एक्स रम की और भाधा वजन गिलास।'।

मुझे बाद में मालूम हुआ कि उसका नौकर सिर्फ चीन का ही नहीं, दुनिया के हर बड़े देश का शहजादा था। चड्ढे की जबान पर जिस देश का नाम आ जाता, वह उसीका शहजाद बन जाता था। उस समय का चीन का शहजादा सी का नोट उगलियो से खड़खड़ाता चला गया।

चड्ढा न टूटे हुए स्प्रिंग वाले पलंग पर बैठकर अपने होठ श्री एक्स रम के स्वागत में चटखारते हुए कहा, 'बेट इज बेट—आफ्टर डाल, तुम इधर आ ही निकले।' फिर एकदम चिंतित होकर बोला 'यार भाभी का क्या होगा? वह तो घबरा जाएगी।'।

चड्ढा बिना बीबी के था, मगर उसको दूमरा की बीबिया का बहुत ख्याल रहता था। वह उनका इतना सम्मान करता था, मानो सारी उम्र कुंवारा रहना चाहता था। वह कहा करता था, 'यह हीनता भाव है, जिससे मुझे अब तक इस नेमत से महरूम रखा है। जब शादी का सवाल आता है तो फौरन तैयार हो जाता हूँ लेकिन बाद में यह साचकर कि मैं बीबी के काबिल नहीं हूँ सारी तैयारी 'काल्ड स्टोरेज' में डाल देता हूँ।

रम बहुत जल्दी आ गई, गिलास भी। चड्ढा ने छ मगवाए थे और चीन का शहजादा तीन लाया था, बाकी तीन रास्त में टूट गए थे। चड्ढे

न उनकी कोई परवाह न की और भगवान को धन्यवाद दिया कि बोतल सलामत रही। अब बोतल जल्दी जल्दी खोलकर उमने बोरे गिलासों में रम डाली और कहा, 'तुम्हारे पूना आने की खुशी में।'

हम दोनों न लम्बे लम्बे घूट भरे और गिलास खाली कर दिए।

दूसरा दौर शुरू करके चड्डा उठा और कमरे में देखकर आया कि मेरी बीबी अभी तक सो रही है। उसको बहुत तरम आया। कहने लगा, 'मैं शोर करता हूँ, उनकी नींद खुल जाएगी—फिर ऐसा करेंगे ठहरो पहले मैं चाय मगवाता हूँ।' यह कहकर उसने रम का एक छोटा सा घूट लिया और नौकर को आवाज दी, जमीका के सहजादे।'

जमीका का सहजादा तुरंत आ गया। चड्डे ने उससे कहा, 'देखो, मम्मी से कहो, एकदम फ्रैश क्लास चाय तैयार करके भेज दे।'

नौकर चला गया। चड्डे ने अपना गिलास खाली किया और शरीफाना पेग डालकर कहा, 'मैं इस ज़कत ज्यादा नहीं पीऊँगा। पहले चार पग मुझे बहुत जगवाती बना दते हैं। मुझे अभी की छोड़ने तुम्हारे साथ प्रभातनगर जाना है।'

घाघे घण्टे के बाद चाय आ गई। बहुत साफ़ बरतन थे और बड़े सलीके से ट्रे में रखे हुए थे। चड्डे ने टीकोजी उठाकर चाय की प्लशबू सूधी और प्रसन्नता प्रकट करता हुआ बोला, 'मम्मी इज ए ज्यूल'। फिर उसने इथोपिया के सहजादे पर बरमना शुरू कर दिया। उसने इतना शोर मचाया कि मेरी पान बिलबिला उठे। इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा, 'आओ।'

मेरी बीबी जाग रही थी। चड्डा ने ट्रे बड़ी सफाई से टूटी हुई तिपाई पर रखी और बड़े अदब से कहा, 'हाजिर है वेगम साहबा।' मेरी बीबी को यह मजाब पसंद न आया, लेकिन चाय का सामान बूझि साफ़-सुथरा था, इसलिए उसने इनकार न किया और दो प्यालियाँ पी ली। इनसे उसको कुछ ताजगी मिली। इसके बाद हम दोनों की ओर मुड़कर उसने रहस्यपूर्ण स्वर में कहा, 'आप अपनी चाय तो पहले ही पी चुके हैं।'

मैंने जवाब न दिया, मगर चड्डे ने झुककर बड़ी ईमानदारी दशाते हुए कहा, 'जी हाँ, यह गलती हममें हो चुकी है, लेकिन हमें यकीन था

कि आप जल्द माफ कर देंगी ।’

मेरी बीबी मुस्कराई तो वह तिलमिलाकर हसा, ‘हम दोनो बहुत ऊंची नस्ल के सूअर हैं, जिनपर हर हराम की चीज हलाल है। चलिए अब हम आपका मस्जिद तक छोड़ आए।’

मेरी बीबी को फिर चडढा का यह मजाक पसंद न आया। वास्तव में उसकी चडढा ही स घणा थी या या कहिए कि उसे मेरे हर दोस्त स घुणा थी, और चडढा उनम सबसे ज्यादा खलता था, क्योंकि कभी कभी वह बतकल्लुफी की हदें भी फाद जाता था। लेकिन चडढे को इसकी कोई परवाह नहीं थी। मेरा खयाल है कि उसन कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था। वह ऐसी बेकार की बातों में दिमाग खच करना एक ऐसा ‘इन डोर गेम’ समझता था, जो लड़ो स कहीं अधिक बेमानी होती है। उसने मेरी बीबी के बिगड़े तेवरों को बड़ी खुश खुश मजरो से देखा और नीकर को आवाज दी, ओ कबाबिस्तान के गहजाद ! एक अदद तागा लाओ— रोज़ रायस किस्म का।

कबाबिस्तान का गहजाद चला गया और साथ ही चडढा भी। वह घायद दूसरे कमरे में गया था। एकांत मिला तो मैंने अपनी बीबी को समझाया कि कबाब होने की कोई जरूरत नहीं। आदमी की जिंदगी में ऐसे क्षण आ ही जाया करते हैं जिनका कभी खयाल तक नहीं आता। उनसे गुजरने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जान दिया जाए। लेकिन नियमानुसार उसन मेरी इस सीख पर कोई ध्यान नहीं दिया और बगबटाती रही। इतन में कबाबिस्तान का गहजाद रोज़ रायस किस्म का तागा लेकर आ गया और हम प्रभातनगर के लिए चल पड़े।

बहुत ही अच्छा हुआ कि मेरा फ़िल्मा का पुराना साथी घर में मौजूद नहीं था उसकी बीबी थी। चडढे ने मेरी बीबी उसके सुपुद की ओर कहा, ‘खरबूजा खरबूजे को देखकर रंग पकड़ता है। बीबी बीबी को देखकर रंग पकड़ती है, यह हम अभी आकर देखेंगे। फिर वह मुझसे बोला, चलो मण्टो स्टूडियो में तुम्हारे दोस्त को पकड़ें।’

चडढा कुछ ऐसी अफरा नफरी मचा दिया करता था कि दूसरा को सोचने समझने का बहुत कम मौका मिलता था। उसन मेरी बाह पकड़ा

और बाहर ल गया और मेरी बीबी साबती ही रह गई। तब मैं सवार होकर अब चढ़ते न कुछ सोचने के ढंग में कहा, 'यह तो हो गया, अब क्या प्रोग्राम है?' फिर खिलखिलाकर हसा, 'मम्मी ग्रैंड मम्मी!'

मैं उससे पूछने ही वाला था कि यह मम्मी जिस बिडीमार की ओलादा है कि चड्ड न बाता का ऐसा सिलमिला शुक्र बर दिया कि मेरा प्रश्न बेमौत मर गया।

सागा वापस उस डाकबगलेनुमा कोठी पर पहुंचा, जिसका नाम सईदा बाटेज था, लेकिन चढ़ा उसको 'रजीदा काटेज' कहा करता था क्योंकि उसमें रहने वाले सबके सब रजीदा रहते हैं। हालांकि यह गलत था, जैसा कि मुझे बाद में मालूम हुआ।

उस काटेज में काफी आदमी रहते थे हालांकि ऊपरी ढंग से देखने में यह जगह बिलबुल शरमाबाद मालूम होती थी। सबके सब उसी फिल्म कम्पनी के नौकर थे, जो महीन की तनखाह हर तीन महीन बाद देती थी और वह भी कई किस्तों में। एक एक करके जब वहां के निवासियों में मेरा परिचय हुआ तो पता चला कि सबके सब असिस्टेंट डायरेक्टर थे कोई चीफ असिस्टेंट डायरेक्टर, कोई उसका सहायक और कोई उस सहायक का सहायक। हर दूसरा किसी पहने का सहायक था और अपनी निजी फिल्म कम्पनी की नींव डालने के लिए पैसा इकट्ठा कर रहा था। अपने पहनावे और हाव-भाव से हर कोई हीरो मालूम होता था। कण्ट्रोल का जमाना था, लेकिन किसीके पास राशन कार्ड नहीं था। वे चीजें भी, जो थोड़ी सी तकलीफ के बाद आमानी से कम कीमत पर मिल सकती थी, वे लोग ब्लैक मार्केट में खरीदते थे। पिक्चर जरूर देखते थे, रेस का जमाना होना तो रेस खेलते थे, नहीं तो सट्टा। जीतते कभी कभी ही थे, लेकिन हारते ही रोज थे।

सईदा काटेज की आवादी बहुत घनी थी। चूंकि जगह कम थी, इस लिए मोटर गांरेज भी रहने के काम में लाया जाता था। उसमें एक फैमिलो रहती थी। गीरी नाम की एक स्त्री थी, जिसका पति शायद एकलपता तोड़ने के लिए असिस्टेंट डायरेक्टर नहीं था। वह उसी फिल्म कम्पनी में नौकर था, लेकिन मोटर ड्राइवर था। मालूम नहीं वह कब आता था और

कब जाता था क्याकि मैं उस गरीब आत्मी को वहाँ कभी नहीं दगा। गीरी का एक छोटा-सा लडका भी था जिमको मर्दाना काटज के सना निवागी पुरमन में समय प्यार करत। गीरी, जो काफी सुन्दर थी, अपनी अधिवनर समय गरत में मुझारती थी।

काटज का सम्मानित भाग चड्डा और उसके दो साधिया के पास था। ये दोनों भी एक्टर थे लेकिन हीरो नहीं थे। एक सई था, जिमका फिल्मी नाम रजीनकुमार था। चड्डा कहा करता था कि सई काटेज उसी गधे के नाम में प्रसिद्ध है, क्योंकि उसका नाम 'रजीदा काटेज' ही था। वह काफी सुन्दर और कम गा था। चड्डा कभी-कभी उस बहुतसा कहा करता था क्याकि वह हर काम बहुत धीरे धीरे करता था।

दूसरे एक्टर का नाम मानूम नहीं था, लेकिन सब उस गरीबनवाज कहत थे। वह हैदराबाद के एक साते-भीत घराने में सम्बन्ध रखता था और एक्टिंग के शौक में यहाँ चला आया था। तनखाहू ढाई सौ रुपये माहवार मुकरर थी, लेकिन उसे नीकर हुए एक बरस हो गया था, और इस बीच उसने बवल एक बार ढाई सौ रुपये एडवांस के रूप में लिए थे—वह भी चड्डा के लिए जिस एक खूबवार पटान की अदायगी करनी थी। उट-पटाग किस्म की आपा में फिल्मी कहानियाँ लिखना उसका मगल था, और कभी-कभी वह शामरी भी कर लिया करता था। काटज का हर आदमी उसका शूणी था।

गकील और अकील दो भाई थे। दोनों किसी प्रसिस्टेंट टायरेक्टर के प्रसिस्टेंट थे और सबकी तरह अपनी फिर्म कम्पनी बनाने के लिए पैस जुटान के चक्कर में थे।

तीन बड़े यानी चड्डा, सई और गरीबनवाज गीरी का बहुत समाल रखत थे, लेकिन तीनों कभी इकट्ठे घरेज में नहीं जाते थे। हालचाल पूछने का उनका कोई समय भी निश्चित न था। तीनों जब काटज के बने कमरे में इकट्ठे होते तो उनमें से एक उठकर गरज में चला जाता और कुछ दूर वहाँ बैठकर गीरी से घरेलू मामला पर बातचीत करता रहता। बाकी दो अपने अपने काम में

जो प्रसिस्टेंट किस्म

गीरी

थे।

व भी उसको बाज़ार से सौदा सट्टा ला दिया, व भी लाण्ट्री में उसके कपड़े धुलने दे आए और व भी उसके रोते वच्चे को बहला दिया। उनमें से 'रजीदा कोई भी न था, सबके सब प्रसन्न थे। अपनी कठिन परिस्थितियों की चर्चा भी करते तो बड़े उल्लास से। इममें कोई सन्देह नहीं कि उनकी जिन्दगी बड़ी दिलचस्प थी।

हम काटज के गेट में दाखिल होने जा रहे थे कि गरीबनबाज साहब बाहर आ रहे थे। चढ़ते न उनकी ओर ध्यान से देता और अपनी जेब में हाथ डालकर नोट निकाले। बिना गिन उसने कुछ गरीबनबाज का दं दिए और कहा 'चार बीतलें स्काच की चाहिए, व भी आप पूरी कर दीजिएगा, बेसी हो तो मुझे वापस मिल जाए।'

गरीबनबाज के हैदराबादी हाँठों पर गहरी सावली मुस्कराहट आ गई। चढ़ता खिलखिलाकर हमारा और मेरी ओर देखकर उसने गरीबनबाज से कहा, यह मिस्टर मण्डो है लेकिन इस तफ्तीली मुलाकात की इजाजत इस वक़्त नहीं मिल सकती। यह रम पिए है। शाम को स्काच आ जाए तो लेकिन आप जाइए।

गरीबनबाज चला गया। हम अन्दर दाखिल हुए। चढ़ते ने एक जोर की जम्हाई ली और रम की बीतल उठाई, जो आधी से ज्यादा खाली थी। उसने रोशनी में उसकी माना का सरसरी तौर पर अनुमान लगाया और सीकर को आवाज दी, 'कजाकिस्तान के सहजादे।' जब वह न आया तो उसने अपने गिलास में एक बड़ा पंग डालते हुए कहा 'उपादा पी गया हूँ चम्बरत।'।

गितास खत्म करते हुए वह कुछ चिंतित हो गया, 'यार, भाभी का तुम खनाहमरबाह यहाँ लाए। खुदा कसम, मुझे अपने सीन पर एक बाक़ सा महसूस हो रहा है। फिर स्वयं ही उसने अपने की धँस बधाया, 'लेकिन मेरा खयाल है कि ये बीर नहीं होगी वहाँ।'।

मैंने कहा, 'हाँ, वहाँ रहकर वह मेरे कल का जल्दी इरादा नहीं कर सकती।' यह कहकर मैंने अपने गिलास में रम डाली, जिम्का स्वाद घुमे हुए गुड़ जैसा था।

जिस कबाख़ाने में हम बैठे थे, उसमें सलाखा वाली दो खिडकिया

वनकतरे ने जवाब में कुछ कहना चाहा, लेकिन चड्डे ने मेरी बाह पकड़कर कहना शुरू कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कसम, क्या चीज है। सुना करते थे कि एक चीज प्लेटीनम ब्लौण्ड भी होती है, मगर देखन का मौका कब मिला—बाल है, जैसा चांदी के महीन-महीन तार ग्रेट खुदा की कसम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिंदाबाद।' फिर उसने कोधित नजरा से वनकतरे की ओर देखा और कड़ककर कहा, 'वनकतरे के बच्चे नारा क्या नहीं लगाता मम्मी जिंदाबाद।'

चड्डे और वनकतर दोनों ने मिलकर 'मम्मी जिंदाबाद।' के काई नारे लगाए। इसके बाद वनकतरे ने चड्डे के सवाल का फिर जवाब देना चाहा, लेकिन उमन उस चुप करा दिया, 'छोडो यार मैं जज्बाती हो गया हूँ—इस वक़्त यह सोच रहा हूँ कि आम तौर पर मासूकी के बाल काले होते हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहाँ कुछ और ही मामला हो गया है। फिर वह मुझसे सम्बाधित हुआ, मण्टो, बड़ी गड़बड़ हो गई है, उसके बाल चांदी के तारों जैसे हैं—चांदी का रंग भी नहीं कहा जा सकता—मालूम नहीं, प्लेटीनम का रंग कैसा होता है, क्या कि मैं अभी तक यह धातु देखी नहीं कुछ अजीब-सा ही रंग है—फौलाद और चांदी दोनों मिला दिए जाएँ।'

वनकतर ने दूसरा पेंग खरम करते हुए कहा, 'और उसमें थोड़ी-सी श्री एक्स रम मिक्स कर दी जाए।'

चड्डे ने भिनाकर उस एक बहुत ही मोटी गाली दी। 'बकवास न कर।' फिर उमन बड़ी दयनीय नजरो से मेरी ओर देखा। 'यार मैं मधमूच जज्बाती हो गया हूँ हा वह रंग खुदा की कसम, लाजवान रंग है वह तुमने देखा है वह, जो मछलियाँ के पेट पर होता है नहीं-नहीं, हर जगह होता है—पीमफेंट मछली उसका क्या होते हैं? नहीं नहीं, मापा के बने-हने खपरे हा, खपरे बस, उनका रंग खपरे यह सब मुझे एक हिंदुस्तोई ने बताया था इतनी सूबसूरत चीज और ऐसा भाड़ा नाम पजाबी में हम इन्हें चान कहते हैं। इस रंग में विनचिनाहट है वहीं, बिलकुल वही, जो उसके बालों में है। लटें नहाने-हा सपोलिया मालूम होनी हैं, जो लोट लगा रही हो।' वह

थी, जिनसे बाहर का खाली खाली सा भाग नजर आता था। इधर स किसी ने चड्डे का नाम लेकर जोर से पुकारा। मैं चक् पड़ा और देखा कि म्यूजिक डायरेक्टर वनकतरे हैं। कुछ समझ में नहीं आता था कि वह किस नस्ल का है। मगोल है हब्शी है आथ है या क्या बला है। कभी कभी उसके किसी नखशिख को देखकर आदमी किसी परिणाम पर पहुंचन ही वाला होता था कि उसके बदले में कोई ऐसा चिह्न नजर आ जाता कि तुरंत ही नधे सिरे से विचार करना पड़ जाता। बस वह मराठा था, लेकिन शिवाजी की तीखी नाक के बजाय उसके चेहरे पर बड़ आश्चर्यजनक ढंग से मुड़ी हुई चपटी नाक थी जो उसके विचारानुसार उन सुरों के लिए बहुत जरूरी थी, जिनका सीधा सम्बन्ध नाक से होता है। उसने मुझे देखा तो चिल्लाया 'मण्टो—मण्टो सेठ।'

चड्डे ने उससे ज्यादा ऊंची आवाज में कहा, 'सेठ की ऐसी तैसी—चरा, अदर आ।'

वह तुरंत अदर आ गया। अपनी जेब से उसने हमले हुए रम की एक दोतल निकाली और तिपाई पर रख दी। मैं साला उधर मम्मी के पास गया। वह बोला—'तुम्हारा फरेण्ड आए ला मैं बोला—साला यह फरेण्ड कौन होन की सकता। साला मालूम न था साला मण्टो है।'

चड्डे ने वनकतरे के कद्दू-ऐस सिर पर एक घोंस जमाई 'अब चुप कर साले तू रम ले आया बस ठीक है।' वनकतरे ने अपना सिर सहलाया और मरा खाली गिलास उठाकर अपने लिए पेग बनाया, 'मण्टो यह साला आज मिलत ही कहन लगा—आज पीन की जी चाहता है मैं एक दम कहका सोचा, क्या करूँ।'

चड्डे ने एक और घण्टा उमके सिर पर जमाया, बैठ ब जस तूने सब मुच ही कुछ सोचा होगा।

'सोचा नहीं तो साला यह इतनी बड़ी बाटली कहा से आया—तर वाप न दिया?' वनकतर ने एक ही घूट में रम खत्म कर दी। चड्डे ने उसकी बात सुनी अनसुनी कर दी और उसने पूछा, तू यह ता बता कि मम्मी क्या बोली?—बोली थी कि मोजिल कब आएगी? भर हा वह प्लेटीनम स्त्रीण्ड।

वनकतरे ने जवाब में कुछ कहना चाहा लेकिन चड्डे ने मेरी बाह पकटकर कहना शुरू कर दिया, 'मण्टो—खुदा की कमम, क्या चीज है ! सुना करते थे कि एक चीज प्लेटीनम ब्रौण्ड भी होती है, मगर देखने का मौका कल मिला—बाल हैं, जैसे चांदी के महीन महीन तार ग्रेट खुदा की कमम मण्टो, बहुत ग्रेट मम्मी जिंदाबाद !' फिर उसने क्रीधित नजरों से वनकतर की ओर देखा और कड़ककर कहा, 'वनकुतरे के बच्चे नारा क्यों नहीं लगाता मम्मी जिंदाबाद !'

चड्डे और वनकतरे दोनों ने मिलकर 'मम्मी जिंदाबाद !' के कई नार लगाए। इसके बाद वनकतरे ने चड्डे के सवाल का फिर जवाब देना चाहा, लेकिन उसने उसे चुप करा दिया, 'छोडो यार मैं जज्बाती हो गया हूँ—इस वक़्त यह सोच रहा हूँ कि भ्राम तोर पर भाशूका के बाल काले होत हैं, जिन्हें काली घटा कहा जाता रहा है मगर यहां कुछ और ही मामला हो गया है।' फिर वह मुझसे सम्बोधित हुआ, 'मण्टो, बड़ी गडबड हो गई है, उसके बाल चांदी के तारों जैसे हैं—चांदी का रंग भी नहीं कहा जा सकता—मालूम नहीं, प्लेटीनम का रंग कैसा होता है, क्यों कि मैं अभी तक यह धातु देखी नहीं कुछ अजीब-सा ही रंग है—फौलाद और चांदी दोनों मिला दिए जाए '

वनकतर ने दूसरा पेग खत्म करते हुए कहा, 'और उसमें घाड़ी सी धी एक्स रम मिक्स कर दी जाए ।'

चड्डे ने भिनाकर उस एक बहुत ही मोटी गाली दी। 'बकवास न कर।' फिर उसने बड़ी दयनीय नजरों से मेरी ओर देखा। यार मैं सबकुछ जज्बाती हो गया हूँ हा वह रंग खुदा की कमम, लाजबाब रंग है वह तुमने देखा है वह, जो मछलियों के पेट पर होता है नहीं-नहा, हर जगह होता है—पोमफ्रेट मछली उसके वे क्या होत हैं ? नहीं-नहीं सापा के बदनह नहे खपर हा, खपरे बस, उनका रंग खपरे यह शब्द मुझे एक हिंदुस्तोडे ने बताया था इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा भाड़ा नाम पंजाबी में हम इसे चाने कहते हैं। इस घाद में चिनचिनाहट है वही, बिल्कुल वही, जो उसके बालों में है। लटें नहीं-नहा सपोलिया मालूम होनी हैं, जो लोट लगा रही हो।' वह

एकदम उठा। 'सपातिमो की ऐसी तसी। मैं जग्गानी हो गया हूँ।'

वनवतर न बड़ भोनेपा स पूछा, वह क्या होता है ?'

'मण्टीमटल चड्ड न जवाब दिया, 'लेकिन तू क्या समझा वाला मी बाजीराव और नाना फटनवीम की मोलाद ।'

वनवतर न अपना लिए एक और पग बनाया और मुझमें सरोपित होकर कहा 'यह माला चड्डा समझा है कि मैं इगलिंग नहा समझता हूँ। मेट्रीक्मूलेट हूँ साला मरा बाप मुझमें बहुत मोहब्बत करता था उसने ।'

चड्डे न चिढ़कर कहा, 'उसने तुझे तासन बना दिया और तरी नाक मरोड़ दी ताकि निगाहे मुर आसानी से सेरी नाक से निकल सकें। यक्षपन में ही उसने तुझे घुरपद गाना सिखा दिया था और दूध पीने के लिए तू मिया की टोही में रोया करता था और पेगाब करने बयल अझाना में, और तूने पहली बात पटदीप में की थी और तरा बाप जगन उस्ताद था बज्जू बापर के भी पान बाटता था और तू आज उमने पान बाटता है इसलिए तरा नाम बनवुतर है।' इतना बहकर वह मरी और मुंडा, मण्टो यह माला जब भी पीता है, अपने बाप की तारीफ शुरू कर देता है। वह इससे मोहब्बत करता था तो मुझपर उसने क्या एहसान किया और उसने इस मटीक्मूलेट बना दिया तो इसका यह मतलब नहीं कि मैं अपनी बी० ए० की डिग्री फाड़कर फेंक दूँ।'

वनवतर न इस बाछार पर आपत्ति प्रकट करनी चाही, मगर चड्डे न उस वही दवा दिया, 'चूप रह मैं वह चुका हूँ कि मैं सेण्टीमण्टल हो गया हूँ हा, बे रंग पोमफ्रेट मछली के नहीं नहीं साप में तू नहे खपने उस इहीका रंग मम्मी न मुदा जान अपनी धीन पर कौन मा राग बजाकर उस नागिन की बाहर निकाला है।'

वनवतरे सोचने लगा। पेटो मगाओ, मैं बजाता हूँ।

चड्डा खिलखिलाकर हमने लगा, बठ वे मट्रीक्मूलेट के चाकुलेट ।' उसने रम की बोतल में से बची हुई रम को अपने गिलास में उड़ेल लिया और मुझसे कह, 'मण्टो, अगर वह प्लेटीनम क्लॉन्ड न पटी तो चड्डा हिमालय पहाड़ की किसी चोटी पर धूनी रमाकर बैठ जाएगा । और

उमने गिनास खाली कर दिया ।

बनबतर न अपनी लाई हुई बोतल खोलनी गुरु की । ' मण्टा, मुलगी'
एकदम चागली है ।

मैन कहा 'देख लेंगे ।'

'आज ही आज रात मैं एक पार्टी द रहा हूँ । यह बहुत ही अच्छा हुआ
कि तुम आ गए और थी एक सौ आठ मेट्रिज की न तुम्हारी बगल स एड
वास द दिया नहीं तो बड़ी मुश्किल हो जाती आज रात आज की
रात ' चढे उ बडे भाडे मुरा म गाना गुरु कर दिया, 'आज की रात
साजे दद न छेड ।'

बचारा बनबतर उसकी हम ज्यादाती पर एक बार फिर आपत्ति
करन ही वाला था कि तभी गरीबनबाज और रजितकुमार आ गए ।
दोना के पाम स्वाच की दो दो बोनल थी । वे उहने मेज पर रख दी ।

रजितकुमार स मेर अच्छे-भासे सम्बन्ध थे, लेकिन बनबतरुफी नहीं
थी, इसलिए हम दोनों न थोड़ी सी 'आप बच आए ?' 'आज ही आया
ऐसी रम्मी बातें की और गिलास टकराकर पीन लग गए ।

चढका बाकई बहुत जज्वाली हो गया था । हर बात म उस प्लेटीनम
क्लीण्ड का जिर ले आता था । रजितकुमार दूसरी बोतल का चौथाई
हिस्सा चढा गया था । गरीबनबाज ने स्वाच के तीन पग पिए थे । नशे
के मामले में उन सबकी हालत अब तक एक जैसी थी । मैं चूकि ज्यादा
पीन था आदी हूँ, इसलिए म ज्यादा था खो बैठा था । उनकी बातचीत स
मैंने आदाजा लगाया कि वे चारा उस नई लडकी पर बहुत घुरी तरह मर
मिट थे, जो मम्मी ने बही स पदा की थी । इस अमूल्य मोती का नाम
फिलिस था । पून म कोई ह्मर डेमिंग सलून था, जहा वह नीकरी करती
थी । उसके साथ आम तौर पर एक हिजडा का लडका रग करता था ।
लडकी की उम्र चौन्ह-पाद्रह वष के करीब थी । गरीबनबाज तो महा नक
उमपर गम था कि वह हैदराबाद म अपन हिम्म की जायदाद बेचकर भी
उसके दाव पर नगान के लिए तैयार था । चढे के पास तुम्प का बेवल

एक पत्ता था, अपनी सुंदरता। बनबनर का विचार था कि उसकी पेटी सुन वह परी जरूर गीशे में उतर आएगी, और रजनीकुमार जोर जबर दस्ती की ही कारगर समझता था। लेकिन सब अंत में यही सोचते थे कि लेविए, मम्मी किसपर कृपा करती है। इसमें मालूम होता था कि उन प्लेटोनम ग्रीक फिलिस को वह स्त्री, जिसे मैं चढ़ाऊँ के साथ ताम्र में देखा था, किमीके भी हवाले कर सकती थी।

फिलिम की बातें करना करते चढ़ाई न अचानक अपनी घड़ी देखी और मुझसे कहा, 'जहनुम में जाए यह छोकरी, चलो यार भाभी वहाँ बबाब हो रही होगी—लेकिन मुसीबत यह है कि मैं वहाँ भी बही सेण्टी-मेण्टल न हो जाऊँ। खैर, तुम मुझे सभाल लेना।' अपने गिलाम की कुछ आखिरी वूँछें अपने कण्ठ में टपकाकर उसने मौक़र को आवाज़ दी, 'ममिया के मुल्क मिल के शहजाद।'।

ममियो के मुल्क मिल का शहजाद इस तरह आख़ों में मलता वहाँ आया, जैसे उसे सदियों के बाद खादकर बाहर निकाला गया हो। चढ़ाई ने उसके मुह पर रम के छोटे मांसे और कहा 'दो अदल तामे लाओ जा मिल के रथ मालूम हा।

ताम्रे आ गए। हम सब उनपर लड़कर प्रभातनगर के लिए चल पड़े। मेरा पुराना फिल्मा का साथी हरीश घर पर मौजूद था। इतनी दूर स्थित स्थान पर रहने के बावजूद उसने मेरी बीबी की खातिरदारी में कोई कसर नहीं उठा रखी थी। चढ़ाई ने आख के इशारे से उसे सारा मामला समझा दिया था। अतएव वह बहुत हितकर साबित हुआ। मेरी बीबी ने अपना व्यक्त नहीं किया। उसका समय वहाँ कुछ अच्छा ही बीता था। हरीश ने जो स्त्रियों की प्रकृति का अच्छा ज्ञानकार था बड़ी मजेदार बातें की और अंत में मेरी बीबी से प्रार्थना की कि वह उसकी शूटिंग देखने चले जो उस दिन होने वाली थी। मेरी बीबी ने पूछा, 'कोई गाना फिल्मा रह है आप ?

हरीश ने जवाब दिया 'जी नहीं, वह बल का प्रोग्राम है—मेरा खयाल है, आप कत चलिएगा।

हरीश की बीबी शूटिंग देख देखकर और दिखा दिसाकर तब आई

हुई थी। उसने तुरन्त मेरी बीबी भ कहा, 'हा बल ठीक रहगा।' फिर सबकी आर देखकर बोली, 'आज इह मफर की थवान भी है।'

हम सत्रने स-तोप की साम ली। हरीश न फिर कुछ दर तक मजेदार बातें की, अतः म मुझम कहा, 'चलो यार, तुम चलो मेर साथ,' फिर मरे तीन भायिया की ओर दखा, 'इनकी छोठो सेठ साहब तुम्हारी कहानी सुनना चाहते हैं।'

मैन बीबी की ओर दखा और हरीश से कहा, 'इामे इजाजत ले ली।'

मेरी भोली नासी बीबी जाल मे फम चुकी थी। उसने हरीश स कहा, 'मैन बम्बई स चलत बवन इनम कहा भी था कि अपना डाकूमेण्ट केम साथ ले चलित लेकिन इ होन कहा, कोई जम्हरत नही। अब ये कहानी क्या सुनाएग ?'

हरीश न कहा, 'जवानी सुना दगा।' फिर उसन मरी आर या दखा, जैम कह रहा हा कि जल्नी हा कहा।

मैन धीमे से कहा 'हा, ऐसा हो सकता है।'

चडढे न उम ढामे मे अतिम टक दिया, 'तो भई हम चलते हैं। और थ तीना सलाम-नमस्त करके चले गए। थोडी दर के बाद मैं और हरीश निकले। प्रभातनगर के बाहर ताण खडे थे। चडढे न हम दखा और जोर का नारा लगाया, 'राजा हरीशच द्र की जय।'

शाम की हमारी महफिज जमी मम्मी के घर।

यह भी एक काटेज थी—शबल मूरन और बनावर मे मईद काटज जमी, मगर बहुत साफ सुधरी जिमसे मम्मी के सलीक का पता चलता था। फर्नीचर मामूली था लेकिन जा चीज जहा थी सजी हुई थी। मैन सोचा था कि मम्मी का घर कोई वेद्यालय होगा, लेकिन उस घर की किसी चीज म भी नजरा की ऐसा म देह नही होता था। वह वैसा ही शरीफाना था, जसा कि एक मध्यम बग के ईमाइ का होता है। लेकिन मम्मी का उम्र के मुकाबले म वह कुछ जवान-जवान-सा दिखाई दना था। उमपर वह मकअप नही था जो मैन मम्मी की भुरिया वाले चेहर पर दखा था। जब मम्मी डाइग रम मे आई तो मैन सोचा कि इद गिद की

जितनी चीजें हैं, वे आज की नहीं बहुत वर्षों की है कवल मम्मी आग निकलकर पूछी हो गई है और वे बसी की बसी पड़ी रही हैं—उनकी जो उम्र थी, वह वही की वही रही है लेकिन जब मैं उसके गहर और शोख मेकअप की ओर दखा तो मेरे दिल में जाने क्या, यह इच्छा पदा हुई कि वह भी अपने डेढ़ गिद के चातावरण की तरह पूरी तरह जवान बन जाए ।

चड्डे ने उससे मेरा परिचय कराया जो बहुत सक्षिप्त था और फिर सल्लेप में ही उसने मुझमें मम्मी के बारे में यह कहा, 'यह मम्मी है नी ग्रेट मम्मी ।'

मम्मी अपनी प्रशंसा सुनकर मुस्करा दी और मरी तरफ दलकर उसने चड्डे से अंग्रेजी में कहा, तुमने जो चाय मगवाई थी वह बहुत जल्दी में बनी थी वह नायद इहे पमद न चाह हो । फिर उसने मेरी ओर मुड़कर कहा मिस्टर मण्टो मैं बहुत शर्मिदा हू । अमत में सारा कुसूर तुम्हारे दोस्त चड्डे का है, जो मेरा बेहद बिगडा हुआ लडका है ।'

मैंने उचित शब्दों में चाय की प्रशंसा का और उसको धन्यवाद दिया । मम्मी ने मुझे बेकार की तारीफ करने के लिए कहा और फिर चड्डे से बोली, रात का खाना तैयार है यह मैंने इसलिए किया कि तुम एन वक्त के वक्त मेरे सिर पर सवार हो जायाग ।'

चड्डे ने मम्मी को गल से लगा लिया, यू आर ए ज्यूल मम्मी । यह खाना अब हम खाएंगे ।'

मम्मी ने चौंकर पूछा, 'क्या ? नहीं हरमिज नहीं ।' चड्डे ने उसे बताया मिसज मण्टो को हम प्रभातनगर छोड़ आए हैं ।

मम्मी चिल्लाई 'खुदा तुम्हें गारत कर यह तुमने क्या किया ।' चड्डा तिलखिलाकर हमा, 'आज पार्टी जो होने वाली थी ।

वह तो मैंने मिस्टर मण्टो को दमत ही अपने दिल में कमिल कर दी थी । मम्मी ने अपना मिगरेट सुनगाया ।

चड्डे का दिल डूब गया । खुदा अब तुम्हें गारत कर और यह सब प्लान हमने इस पार्टी के लिए बनाया था । वह कुर्मी पर रज्जींग ना होकर बैठ गया और कमर के वण वण में सम्प्रोधन कर कहन लगा 'लो,

सार भपन मनियामेट हो गए प्नेटीनम ब्लौण्ड ग्रीधे साप के न ह-
नह यपरा जैसे रग वाली । एकदम उठकर उसने मम्मी को बाहो से
पकड़ लिया, कमिन की थी—आन दिल मे बैसिल की थी ना लो,
उम पर माद (मही का चिह्न) बना देता हू ।' और उसन मम्मी के दिल
की जगह पर उगली से बहुत बड़ा माद बना दिया और ऊंची आवाज म
पुकारा 'हुरे !'

मम्मी सम्झा घत लोगा को सूचना भेज चुकी थी कि पार्टी कसिल
हो चुकी है । लेकिन मिन महसूस किया कि वह चड्डे का दिल तोड़ना
नहीं चाहती थी । इसलिए उमन बड़े साड म उसक गाल थपथपाए और
कहा 'तुम किफ न करो, मैं अभी इतजाम करती हू ।'

यह इतजाम करन बाहर चली गई । चड्डे न खुशी का एक और
नारा लगाया और बनकतर स कहा, 'जनरल बनकतर, जामो, हुडकवा-
टर स सारी तोपें ले आओ ।'

बनकतर ने सैल्यूट किया और आना पालन के लिए चला गया ।
सईद काटज बिन्तुल पाम थी । दस मिनट के अंदर अंदर वह दोतलें
नेकर वापस आ गया । उमके साथ चड्डे का नीकर था । चड्डे न उसको
देखा तो उमका स्वागत किया, 'आओ, आओ, मेरे कोहकाफ के शहजाद
वह वह साप के खपरा जस रग के वालो वाली छोकरी आ रही है
तुम भी किस्मत आजमाई कर लेना ।'

रजीतकुमार और गरीबनवाज को चड्डे का इस प्रकार का निमंत्रण
अच्छा न लगा । दोनों न मुभमे कहा कि यह चड्डे की बहुत बेहूदगी है ।
इस बेहूदगी को उहान बहुत महसूस किया था । चड्डा नियमानुसार
अपनी हाकता रहा और वे चुपचाप एक कोने म बठे धीरे धीरे रम पीकर
एक दूसर से अपन सुख दुख की बातें करत रह ।

मैं मम्मी के सम्प्रध म सोचता रहा । झाइगरूम म गरीबनवाज,
रजीतकुमार और चड्डा बठे थे । ऐसा लगता था कि ये छोटे छोट बच्चे
बैठे हैं और इनकी मा बाहर खिलौन लेन गई है । य सब इतजार मे हैं ।
चड्डा सतुष्ट है कि सबसे अच्छा खिलौना उम मिलेगा, इसलिए कि वह
अपनी मा का चहेता है । बाकी दो का दुख चूकि एक जैसा था, इसलिए

वे एक दूसरे के हितपी वन गए थे। शायद इस वातावरण में दूध मानूम होती थी और वह प्लेटिनम ब्लौण्ड उसकी कल्पना दिमाग में एक छोटी सी गुड़िया के रूप में आती थी। हर वातावरण का अपना एक विशेष संगीत होता है। उस समय जो संगीत मेरे दिल के कानों तक पहुंच रहा था, उसमें कोई सुर उत्तेजक नहीं था। हर चीज में और उसके बच्चा के परस्पर सम्बन्धों की तरह स्पष्ट थी।

मैंने जब उसकी तंग में चढ़ने के साथ देखा था तो मुझे धक्का माला लगा था। मुझे अफसोस हुआ कि मेरे दिल में उन दोनों के मध्य में बुरा विचार पैदा हुए, लेकिन यह चीज मुझे बार-बार सता रही थी कि वह इतना गहरा मेकअप क्यों करती है जो उसकी भुरिया की तारीफ है। उस ममता का अपमान है, जो उसके निम्न में चढ़ा गरीबनवाज और वनकतर के लिए भाजूद है और खुदा जान और किस किमक लिए

बातों बातों में मैंने चढ़ने से पूछा, मार, यह तो बताओ कि तुम्हारी मम्मी इतना शाल भेकअप क्यों करती है ?

‘इसलिए कि दुनिया हर शोख चीज को पसंद करती है—तुम्हारे और मेरे जैसे उल्लू इस दुनिया में बहुत कम बसत है, जो मद्धिम सुर और मद्धिम रंग पसंद करते हैं। जो जवानी को बचपन के रूप में नहीं देखना चाहते और और जो बुढ़ापे पर जवानी की टीपटाप पसंद नहीं करते

हम जो मृदु को कलाकार कहते हैं उससे पटते हैं मैं तुम्हें एक दिल-चस्प घटना सुनाता हूँ बैसाखी का मेला था तुम्हारे अमतसर में राम बाग के उस बाजार में, जहाँ टकदया (बश्याए) रहती थी—जाट गुजर रहे थे एक तदुस्त जवान न तालिम दूध और मक्खन पर पले जवान ने, जिसकी नई जूती उसकी लाठी पर बाजीयरी कर रही थी ऊपर एक कोठे की ओर देखा, जहाँ एक टकई की तल में भीगी हुई जुफ उसके माथे पर बड़े बंदसूरत ढंग में जमी हुई थी। उसने अपने साथी की पमलिया में टहोका दवर कहा ‘ओए लहनामिया देख, ओए ऊपर बल, असी ते पिण्ड बिच मभाई’ । अंतिम शब्द चढ़ाने में जान क्या गोल कर दिया। हालांकि वह किसी प्रकार की क्षिप्तता का कायल नहीं था।

फिर वह गिलसिलावर हमने लगा और मेरे गिलाम म रम डालकर बोला, 'उस जाट के लिए वह तुझसे ही उम बका कोहवाफ की परी थी और उसके गाव की सुंदर और स्वस्थ मुटियारें बेडोल भर्से हम सब चुगद हैं दर्मियाने दर्जे के इसलिए कि इस दुनिया में कोई चीज अव्वल दर्जे की नहीं तीमर दर्जे की है या नर्मियान दर्जे की लेकिन लेकिन फिलिस खासुलखास दर्जे की चीज है वह माप के सपरो ।'

वनकतर न अपना गिलास उठाकर चड्डे के सिर पर उडेल दिया । 'तुम्हारे तुम्हारा भेजा फिर गया है ।'

चड्डे न माथे पर म रम की टपकती बूंदें चाटनी शुरू कर दी और वनकतरे से कहा, 'ले अब सुना तारा बाप साला तुमसे कितनी मोहब्बत करता था मेरा दिमाग अब काफी ठण्डा हो गया है ।'

वनकतरे बहुत गम्भीर होकर मुझसे बोला, 'बाई माइ वह मुझसे बहुत मोहब्बत करता था मैं पिपटीन ईश्वर का था कि उमन भरी शादी बना दी ।'

चड्डा जोर से हसा, 'तुम्हें काटून बना दिया उस साले ने भगवान उस म्बग में भी बेसरियल की पटी द कि जहाँ भी उस बजा बजाकर वह तुम्हारी शादी के लिए कोई खूबसूरत हूर ढूँढ़ता रहे । और तुम्हारी खूबसूरत बीबी की ऐसी तंसी इस बकत फिलिस की बात करो उससे ज्यादा और कोई खूबसूरत नहीं हो सकता ।' चड्डे न गरीबनबाज और रजीतबुमार की ओर देखा, जो कोने में बैठे फिलिस के सौंदर्य पर अपनी राय एक दूसरे पर प्रकट करने वाले थे । 'यन पाउडर प्लाट के बानियो सुन लो, तुम्हारी कोई साजिश कामयाब नहीं हो सकती—मैमान चड्डे के हाथ में रहेगा क्या वेल्ज के सहजाद ?'

वेल्ज का सहजादा रम की खाली होती हुई बोतल की तरफ हमरत भरी नजरों से देख रहा था । चड्डे ने कहकहा लगाया और उसको आधा गिलास भरकर दे दिया । 'गरीबनबाज और रजीतबुमार एक दूसरे से फिलिस के बारे में घुल मिलकर बातें तो कर रहे थे, लेकिन अपने दिमाग में उसको प्राप्त करने के लिए प्रोग्राम अलग अलग बना रहे थे । यह उनकी बातचीत के ढंग में प्रकट होता था ।'

ड्राइगरूम में अब विजयी के चलते जत रह थ, क्याकि शाम गहरी हो
 चली थी। चडढा मुझे मम्मी को फ़िल्म डण्डस्ट्री के ताजे समाचार सुना
 रहा था कि बाहर वरामद म मम्मी की तेज आवाज सुनाई दी। चडढे
 ने नारा लगाया और बाहर चला गया। गरीबनवाज ने रजीतकुमार की
 ओर अथपूण नजरों से देखा। फिर रोना दरवाजे की ओर देखने लगे।
 मम्मी चहकती हुई अंदर दाखिल हुई। उसके साथ चार पांच ऐंग्लो-
 इण्डियन लडकियां थीं। विभिन्न प्रकार के 'नस' शिख और कद काठ की—
 पोलो, डोली, किटी एलिमा और थैलिमा और वह हिजडा सा लडका
 उसे सिंसी कहकर पुकारता था। फिलिम सबसे पीछे आई और वह
 भी चडढे के साथ। उसकी एक बाह प्लेटीनम ब्लौण्ड की पतली कमर
 के पीछे लगी थी। मैंने गरीबनवाज और रजीतकुमार की प्रतिक्रिया नोट
 की। उनको चडढे की यह दिखावटी विजयी हुरकत पसंद न आई थी।
 लडकियों के भीतर आते ही शोर मच गया। एकदम इतनी अग्रेजी
 बयूलेशन परीक्षा में कई बार फेल हुआ। लेकिन
 वरसी कि वाकतरे मंटी और वरावर बोलता रहा। जब किसीने उसका
 उसने कोई परवाह न की एलिमा की बड़ी बहन थैलिमा के साथ एक साफे
 नोटिस न लिया तो वह पूछन लगा कि 'उमने हिंदुस्तानी डास के और
 पर अलग बैठ गया और—वह इधर 'धा नी ता कत ता थई थई' की बन,
 कितने नये तोड़ सीखे है—सको तोड़े बना रहा था उधर चडढा बाकी लड-
 टू, थैलिमा बना बनाकर उनी के नगे नगे मजाक सुना रहा था, जो उस
 किया के झुरमुट में अग्रणी मान थे। मम्मी सोढे की बोललें और खाने-
 हजारों की मरपा में जब रही थी। रजीत कुमार सिगरेट के कद लगाकर
 पीने का सामान मगवा और दख रहा था और गरीबनवाज मम्मी से
 टकटकी बाधे फिलिम के रुपये कम हा तो वह उससे ले ले।
 बार-बार कहता था कि पहला दौर शुरू हुआ। फिलिम को जब शामिल
 स्वाच खुली और तो उसने अपने प्लेटीनमी बालों का एक हल्का-
 होने के लिए कहा गया और दिया कि वह ह्विस्की नहीं पिया करती।
 सा झटका देकर मना कर मना की, लेकिन वह न मानी। चडढे ने इसपर
 सबन मिनत-खुशाभी ने एक हलका-सा पैंग तैयार करके गिलास
 दुब प्रकट किया तो म

को फिलिम के होटा से खगते हुए बड़े दुलार से कहा, 'बहादुर लडकी बनो और पी जाओ।'

फिलिम इनकार न कर सकी। चढढा खुश हो गया और उसने इसी खुशी में बीम पच्चीस और नगे मजाक सुना दिए। सब मजे लेते रह। मैं सोचा, आदमी न नग्नता से तग आकर वस्त्र पहनने शुरू किए होंगे। यही कारण है कि अब वह वस्तु स उकताकर कभी कभी नग्नता की आर दोड़ने लगता है। शिष्टता की प्रतिक्रिया निम्न-देह अशिष्टता है। इस पलायन का एक दिसचस्प पहलू भी है। आदमी को इससे एक निरंतर एकरसता के कष्ट से कुछ क्षणों के लिए मुक्ति मिल जाती है।

मैं न मम्मी की ओर देखा, जो उन जवान लडकियों में घुलमिलकर चढढे के नगे नग मजाक सुनकर हस रही थी और कहकह लगा रही थी। उसके चेहरे पर बड़ी बाहियात मेकअप था। उसके नीचे उसकी भुरिया साफ नजर आ रही थी। मगर वह भी उल्लसित थी। मैंने सोचा, आखिर लोग क्या पलायन को बुरा समझते हैं। वह पलायन, जो मेरी आखा के सामने था। उसका बाह्य रूप यद्यपि सुन्दर न था, लेकिन भीतर बहुत सुंदर था। उसपर कोई बनाव शृंगार न था। कोई गाजा, कोई उबटना नहीं था। पाली थी, वह एक कोन में रजितकुमार के साथ खड़ी अपने नये फ्राक के बारे में बातचीत कर रही थी और उसे बता रही थी कि सिर्फ अपनी होशियारी से उसने बड़े सस्ते दामों पर उम्दा चीज तैयार करा ली है। दो टुकड़े थे, जो बिलकुल बेकार मालूम पड़ते थे, मगर अब वे एक सुंदर पोशाक में बदल गए थे। और रजितकुमार बड़ी गम्भीरता के साथ उसको दो नये ड्रेस बनवा देने का वायदा कर रहा था, हालांकि उसे फिन्म कम्पनी से इतने रुपये इकट्ठे मिलने की कोई आशा न थी। डाली थी, वह गरीबनवाज से कुछ कज मागने की कोशिश कर रही थी और उसको विदवास दिना रही थी कि दपतर से तनप्राप्त मिलने पर वह यह कज जरूर अदा कर देगी। गरीबनवाज को पूरी तरह मालूम था कि वह यह रुपया नियमानुसार कभी वापस नहीं देगी, लेकिन वह उसके वायदे पर एतबार किए जा रहा था। थलिमा वनकतरे से ताण्डव नाच के बड़े मुश्किल तोड़े सीखने की कोशिश कर रही थी। वाकतरे को मालूम था

कि सारी उम्र उसने पैर कभी उसके भाव अदा नहीं कर सँगे, लेकिन वह उसको बताए जा रहा था। यल्लिमा भी अच्छी तरह जानती थी कि वह बेकार अपना और वनवतरे का समय बरबाद कर रही है। मगर वह बड़ी लगन और तमयता से पाठ याद कर रही थी। एलिमा और बिंदी दोनों पिए जा रही थी और आपस में किसी ऐसे आदमी की बातचीत कर रही थी, जिसने पिछली रस में खुदा जाने कब का बदला लेने के लिए गलत टिप दी थी। और चड़्हा फिलिस के खपरे ऐमे रग के बालों को पिघले हुए सोने के रग की स्काच में मिला मिलाकर पी रहा था। फिलिस का हिजड़ा-सा दोस्त बार-बार जब से कधी निकालता था और अपने बाल सँभारता था। मम्मी कभी इससे बात करती थी, कभी उससे, कभी सोडा खुलवाती, कभी टूटे हुए गिलास के टुकड़े उठवाती। उसकी नजर सबपर थी, उस बिल्ली की तरह जा देखने में तो अपनी आँखें बंद किए सुन्ना रही होती है, लेकिन उसको मालूम होता है कि उसके पाँचों बच्चे कहा कहा है और क्या-क्या शरारत कर रहे हैं।

इम दिलचस्प चित्र में कौन सा रग, कौन सी रेखा गलत थी? मम्मी का वह नडकीला और शाख मेकअप भी ऐसा मालूम होता था कि उस चित्र का एक आवश्यक अंग है।

गालिव कहता है

कंदे ह्यात ओ बंदे-गम¹ अस्त में दोनों एक हैं,

मौत से पहले आदमी गम से निजात² पाए क्यों?

कंदे ह्यात और बंदे-गम जब वास्तव में एक ही हैं तो यह क्या जरूरी है कि आदमी मौत से पहले थोड़ी देर के लिए निजात हासिल करने की कोशिश न करे? इस निजात के लिए कौन ममराज का इस्तजार करे? क्यों आदमी थाड़े-से क्षणों के लिए आत्मप्रवचना के दिलचस्प खेल में भाग न ले?

मम्मी हर किसीकी प्रशंसा करना जानती थी। उसके सीने में ऐसा दिल था, जिसमें उन सबके लिए भयंता था। मैंने सोचा, शायद इसलिए

उसने अपने चेहरे पर रग मल लिया है कि लोगो को उसकी वास्तविकता का ज्ञान न हो। उसमें शायद इतनी शारीरिक शक्ति नहीं थी कि वह हर किसीकी माँ बन सकती और इसीलिए उसने अपनी ममता और स्नेह के लिए कुछ व्यक्ति चुन लिए थे और शेष सारी दुनिया को छोड़ दिया था।

मम्मी को मालूम नहीं था कि चड्ढा एक तगड़ा पेंग फिलिस को पिला चुका था। चोरी छिप नहीं, सबके सामने, मगर मम्मी उस समय बावर्चीखान में पोटैटो चिप्स तल रही थी। अब फिलिस नशे में थी, और जिस तरह उसके पालिंग किए हुए फौलाद के रंग के बाल धीरे धीरे लहराते थे, उसी तरह वह स्वयं भी लहरा रही थी।

रात के बारह बज चुके थे। वनकतरे यलिमा को तोड़े सिखा सिखाकर थक जान के बाद अब बसा रहा था कि उसका बाप माला उससे बहुत मोहब्बत करता था। बचपन ही में उसने उसकी शादी बना दी थी। उसकी बाइफ बहुत व्यूटीफुल है और गरीबनवाज डोली को कज देकर भूल भी चुका था। रजीतनुमार पोली को अपने साथ वहीं बाहर ले गया था। एलिमा और किटी दोनों दुनिया-भर की बातें करके अब थक गई थी और आराम करना चाहती थी—तिपाई के इर्द गिद फिलिस, उसका हिजड़ा-सा दोस्त और मम्मी बैठे थे। चड्ढा अब जज्वाली नहीं था। फिलिस उसकी बगल में बैठी थी, जिसने पहली बार शराब का सुरूर चखा था—उसको प्राप्त करने का सक्न्प उसकी आखा में साफ मौजूद था। मम्मी इससे गाफिल नहीं थी।

थोड़ी देर बाद फिलिस का हिजड़ा-सा दोस्त उठकर सोफे पर जा लेटा और अपने बाला में कपी करते-करते सो गया। गरीबनवाज और डोली उठकर वहीं चले गए। एलिमा और किटी ने आपस में किसी मारपेट के बारे में बातें करत हुए मम्मी से विदा ली और चली गई। वनकतरे ने आन्विरा बार अपनी बीबी की खूबसूरती की प्रशंसा की और फिलिस की ओर ललचाई नजरो से देखा, फिर यलिमा की ओर जो उसके पास बैठी थी, और फिर वह उसकी बाह पकड़कर चाद दिखाने के लिए बाहर मंदान में ले गया।

एकदम जाने क्या हुआ कि चड्ढे और मम्मी में गरमागरम बातें शुरू

हो गई। चड्डे की जगान लटखड़ा रही थी। वह एक कुपुत्र की तरह मम्मी से बदजगानी बरन लगा। फिलिम न एक हृद तक बीच बचाव करने की कोशिश की, लेकिन चट्टा हवा के घोड़े पर सवार था। वह फिलिम को अपने साथ सईदा काटेज में ले जाना चाहता था और मम्मी इसके खिलाफ थी। वह उसको बहुत देर तक समझानी रही कि वह इस इरादे में बाज आए लेकिन वह इसके लिए तयार न होता था और बार-बार मम्मी से कहा रहा था, 'तुम पागल हो गई हो बूढ़ी दलाला फिलिम मेरी है पूछ लो इससे।'

मम्मी ने बहुत देर तक उसकी गालियां सुनी, अंत में बड़े समझाने वाल ढंग में उससे कहा, 'चड्डा, माई सन तुम क्यों नहीं ममझते शी इज यंग शी इज बेरी यंग।'।

उसकी आवाज में कपकपाहट थी, एक प्रायना थी एक ताठना थी, एक बड़ी भयानक तसवीर थी, लेकिन चड्डा बिल्कुल न समझा। उस समय उसमें सम्मुख केवल फिलिस और उसकी प्राप्ति थी। मैं फिलिम की ओर दखा और पहली बार इस बात का महसूस किया कि वह सचमुच बहुत छोटी उम्र की थी, मुश्किल से पंद्रह वर्ष की। उसका सफेद चेहरा, चादा रंग के बादलों में घिरा हुआ था की पहला बूढ़ की तरह कपकपा रहा था।

चड्डा ने उस बात से पकड़कर अपनी ओर खींचा और फिलिम के हीरो के ढंग से अपनी छानी से लगाकर भीच लिया। मम्मी एकदम लान हाकर चिल्लाई, 'चड्डा छोड़ दो फौर गाड सेक छोड़ दो इस।'।

जब चड्डे ने अपने चौड़े सीने से फिलिस को अलग न किया तो मम्मी ने उसके मुह पर एक जोरदार चाटा मारा और चिल्लाई, गेट आउट गेट आउट।'।

चड्डा भीचकरा रह गया। फिलिस को अलग करके उसने धक्का दिया और मम्मी की ओर भाग बरसाने वाली नजरों से देखना हुआ बाहर चला गया। मैं भी उठकर बिदा तो और चड्डे के पीछे पीछे चल दिया।

सईदा काटेज पहुंचकर मैं देखा कि वह पतलून कमीज और बूटा समेत पलंग पर भीड़े मुह पड़ा था। मैं उससे कोई बात न की और दूसरे

कमरे में जाकर बड़ी मज पर सो गया।

सुबह देर से उठा। घड़ी में दस बज रहे थे। चढ़ा मुवह ही मुवह उठकर बाहर चला गया था। वहाँ, यह किसीको मालूम नहीं था, लेकिन जब मैं गुमनामने से बाहर निकल रहा था तो मैंने उसकी आवाज सुनी जो गैरेज से बाहर आ रही थी। मैं रुक गया। वह किसीसे कह रहा था, 'वह लाजवाब आरन है सुदा की कमर, बड़ी लाजवाब आरन है दुआा बगे कि उसकी उम्र को पहुँचकर तुम भी वैसी ही ग्रेट हो जाओ।'।

उसके म्यर में एक विशिष्ट प्रकार की कटुता थी। पता नहीं उसका रण उसकी अपनी ओर था या उस व्यक्ति की ओर जिससे वह सम्बोधित था। मैंने अधिक देर तक वहाँ रुके रहना ठीक न समझा और घट से दूर चला गया। आधे घण्टे तक मैंने उसका इंतजार किया। जब वह न आया तो मैं प्रभातनगर चला गया।

मेरी बीबी का मिजाज ठीक था—हरीश घर में नहीं था। हरीश की बीबी ने उसके वार में पूछा तो मैंने कह दिया, 'वह अभी स्टूडियो में मो रहा है।'

पूना में काफी तफरीह हो गई थी, इसलिए मैंने हरीश की बीबी से जान की इजाजत माँगी। शिष्टाचार के नाते उसने हमें रुकन का कहा, लेकिन मैं सदैव काटेज में ही फँसला करके चला था कि रात की घटना मेरी मानसिक जुगाली के लिए बहुत काफी है।

हम चल दिए। रास्ते में मम्मी से बातें हुईं। जो कुछ हुआ था मैंने बीबी को सब कुछ बताया। उसका कहना था कि फिनिश उसकी कोई रिश्तेदार होगी या वह उस किसी अच्छी असाफी को पेश करना चाहती होगी तभी उमा चड्डे से सलवाई की मैं चुप रहा। न समझन किया, न विरोध।

कई दिन गुजरने पर चड्डे का पत्र आया, जिसमें उस रात की घटना का सरसरी मा जिक्र था और उसने अपने बारे में यह कहा था, मैं उस दिन जानवर बन गया था—नान हो मुझपर।'।

तीन महीने बाद मुझे एक जरूरी काम में पूना जाना पड़ा। सीधा सईरा काटेज पहुँचा। चढ़ा मौजूद नहीं था। गरीबनवाज से उस समय

मुलाकात हुई, जब वह गरेज से निकलकर शीरी के नन्हू बच्चे को प्यार कर रहा था। वह बड़े तपाक से मिला। थोड़ी दूर बाद रजीतकुमार आ गया, कछुए की चाल चलता और झुपचाप बैठ गया। मैं अगर उससे कुछ पूछना था तो वह बड़े मक्षोप में उत्तर दे देता था। उससे बातों-बातों में मालूम हुआ कि चढढा उस रात के बाद मम्मी के पास नहीं गया और न कभी वह यहाँ आई है। फिलिस को उसने दूसरे दिन ही अपने मा बाप के पास भिजवा दिया था। वह उस हिजड़ा जैम नन्हू के साथ घर से भागकर आई हुई थी। रजीतकुमार का विश्वास था कि अगर वह कुछ दिन और पूना में रहती तो वह जरूर उस ले उठता। गरीबनवाज का ऐसा कोई दावा नहीं था। केवल इतना भयसोस था कि वह चली गई।

चढढे के बारे में यह पता चला कि दो-तीन दिन में उसकी तबीयत ठीक नहीं है, बुझार रहता है लेकिन वह किसी डाक्टर में राय नहीं लेता—सारा दिन इधर उधर घूमता रहता है। गरीबनवाज न जब मुझे ये बातें बताना शुरू की तो रजीतकुमार उठकर चला गया। मैंने मलापा वाली कोठरी में से देखा उसका रज गैरेज की ओर था।

मैं गरीबनवाज से गैरेज वाली शीरी के सम्बन्ध में कुछ पूछनाछ करने के बाद में सोच ही रहा था कि वनकतरे बड़ा घबराया हुआ कमरे में दाखिल हुआ। उससे मालूम हुआ कि चढढे को तब बुझार था। वह उस ताग में बसा ला रहा था कि वह रास्त में बेगोन हो गया। मैं और गरीबनवाज बाहर दौड़े। ताग वाला बहोत चढढ को गमाल हुए था। हम सबने मिलकर उस उठाया और कमरे में पट्टाकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैं उसने माथ पर हाथ रखकर देखा, सचमुच बहुत तब बुझार था। एक मो छ दिवसी से कम न होगा।

मैंने गरीबनवाज से कहा, 'दौरा डाक्टर को बुलाना चाहिए।' उमन वाकनर में सगाविरा किया और अभी माना है बहुर बाहर पता गया। जब बापम आया तो उमन साथ मम्मी थी, जो हाफ रही थी। धनर पुमत ही उमन चढढे की ओर देता और सगमग भीगकर पूछा, 'क्या हुआ मर बटे को?'

वनकतरे ने जब उस बताया कि चढढा कई दिन में बीमार था तो

मम्मी ने बड़े दुख और क्रोध से कहा, 'तुम कैसे लोग हो—मुझे खबर क्यों न थी ?' फिर उसने गरीबनवाज, मुझे और बनबतरे को विभिन्न हिदायतें दी—एक को चड्डे के पाव सहलाने की, दूसरे को बरफ लाने की और तीसरे को पखा करने की । चड्डे की हालत देखकर उसकी अपनी हालत विगड गई थी, लेकिन उसने धैर्य से काम लिया और डाक्टर बुलाने चली गई ।

मालूम नहीं, रजितकुमार को गैरेज में कैसे पता चला । वह मम्मी के जान के तुरत बाद घबराया हुआ आया । उसके पूछने पर बनबतरे ने चड्डे के बेहोश होने की घटना का वर्णन कर दिया और यह भी बता दिया कि मम्मी डाक्टर के पास गई है । यह सुनकर रजितकुमार की बेचैनी किसी हद तक दूर हो गई ।

मैंने दखा कि व तीनों बहुत सतुष्ट थे, मानो चड्डे के स्वास्थ्य की सारी जिम्मेदारी मम्मी ने अपने ऊपर ले ली हो ।

उसकी हिदायत के अनुसार चड्डे के पाव सहलाए जा रहे थे सिर पर बरफ की पट्टिया रखी जा रही थी । मम्मी जब डाक्टर लेकर आई तो वह कुछ-कुछ होश में आ चुका था । डाक्टर ने मुआयने में काफी देर लगाई । उसके चेहरे से मालूम होता था कि चड्डे की जिन्दगी खतर में है । मुआयने के बाद डाक्टर ने मम्मी को इशारा किया और वे कमरे से बाहर चले गए—मैंने सलाखा वाली लिडकी में से देखा, गरज के टाट का परदा हिल रहा था ।

थोड़ी देर बाद मम्मी आई । गरीबनवाज, बनबतरे और रजितकुमार से उसने एक एक करके कहा कि घबराने की कोई बात नहीं । चड्डा अब आखें खोलकर सुन रहा था । मम्मी को उसने आश्चर्य की दृष्टि से नहीं देखा था, लेकिन वह उत्कण्ठ सी जरूर महसूस कर रहा था । कुछ क्षणों के बाद जब वह समझ गया कि मम्मी क्यों और कैसे आई है, तो उसने मम्मी का हाथ अपने हाथ में ले लिया और दबाकर कहा, 'मम्मी, यू आर ग्रेट ।'

मम्मी उसके पास पलंग पर बैठ गई । वह ममता की साक्षात् मूर्ति थी । उसने चड्डे के तपते हुए माथे पर हाथ फेरकर मुस्कराते हुए केवल

इतना कहा, 'मेरे बेटे मेरे गरीब बेट !

चड़्डे की आखा में आसू आ गए, लेकिन नुरन ही उसने उन्हें सोखने की कोशिश की और कहा, 'नहीं, तुम्हारा बेटा अठरन दर्जे का स्काउट्स है जाओ, अपने मन पति का पिस्तील लाओ और उसकी छाती पर दाग दो !'

मम्मी न चड़्डे के गाल पर वीर से तमाचा मारा, 'बकार की बातें न करो। फिर वह खुस्त चालाक नस की तरह उठी और हम सबकी ओर मुड़कर कहा 'लडकौ, चड़्डा बीमार है और इसको हास्पीटल ले जाना है—समझे ?'

सब समझ गए। गरीबनबाज ने सुग्ग टैंकसी का बन्दोबस्त कर लिया। चड़्डे को उठाकर उममे डाला गया। वह बहुत कहता रहा कि ऐसी कौन सी आफन आ गई है जो मुझे अस्पताल में सुपुद किया जा रहा है, लेकिन मम्मी यही कहती रही कि बात कुछ भी नहीं, अस्पताल में जरा आराम रहता है। चड़्डा बहुत जिद्दी था, लेकिन इस समय वह मम्मी की किसी बात से इन्कार नहीं कर सकता था।

चड़्डा अस्पताल में दाखिल हो गया। मम्मी ने अक्वेने में मुझे बताया कि मज बहुत खतरनाक है—यानी प्लेग। यह सुनकर मेरे होठ लड गए। स्वयं मम्मी बहुत परेशान थी लेकिन उसकी आशा थी कि यह बला टल जाएगी और चड़्डा बहुत जल्द स्वस्थ हो जाएगा।

इलाज होना रहा। प्राइवेट अस्पताल था। डाक्टरों ने चड़्डे का इलाज बहुत ध्यान से किया लेकिन कई घंटे बीतगिया पड़ा हो गई। उसकी तबचा जगह-जगह से फटन लगी और गुबार बगना गया। अंत में डाक्टरों ने यह राय दी कि उन बम्बई ले जाया जाए, लेकिन मम्मी न मानी। उसने चड़्डे को उम्मी हालत में उठाया और अपने घर ले गई।

मैं ज्यादा दिन पूना में नहीं रुक सकता था। वापस बम्बई आया तो मैंने टेलीफोन के जरिये कई बार उसका हात मालूम किया। मरा तबाल था कि वह किसी प्रकार भी जीवित न बच सकेगा, लेकिन मुझे मालूम हुआ कि घारे धीरे उसकी हानन मभन रही है। एक मुकदम के सिलसिले में मुझे लाहौर जाना पड़ा। वहां से पन्द्रह दिन के बाद लौटा तो मरी

चोथी न चढ़े का एक पत्र दिया, जिसमें केवल यह लिखा था—‘महामाया मम्मी ने अपना पपूत को मौन के गूँह से बचा लिया है।’

उन घोंडे में गल्ला में बहुत कुछ था। नायनाया का एक पूरा समुद्र था। मैं अपनी बीबी में इसका जित्त बड़ी भावुकता में बिधा ता उगा प्रभावित होकर केवल इतना कहा, ‘एमी मोरते प्रकार तिमनगुजार होती है।’

मैं चढ़े की दो-तीन पत्र लिखे, जिसका जवाब न आया। बाद में मानूँ हूँ कि मम्मी ने उगा। उनकायु बदलन में लिए अपनी एक सहनी के पास लानावाला भिजवा दिया था। उठता मुँह में था एक मप्ताह रहा और उबनाकर चला आया। जिस दिन वह पूरा पट्टा, मयोग में बही था। जग के जबरदस्त हमले के कारण वह बहुत कमजोर हो गया था, लेकिन उसका गुनगप्ताह करने वाला इन्धाय आज भी बसा ही था। अपनी बीमारी का जित्त उमन इस प्रकार बिधा, जैसा आदमी माइजिल की मामूली घटना का करता है। अब जबकि वह घण गया था, अपनी गनरनाक बीमारी के बारे में विस्तार से बान करना वह ज़ेवार समझता था।

सईदा काटज में चढ़े की अनुपस्थिति के दिना में छोट छोटे परिवर्तन हुए थे। प्रसील और गलील कहा और उठ गए थे क्योंकि उन्हें अपनी निजी फिल्म कंपनी कायम करने के लिए सईदा काटज का बाना बरण अनुकूल नहीं लगता था। उनकी जगह एक बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर आ गया था। उसका नाम मेन था। उसके साथ लाहौर से भागा हुआ एक लड़का सममिह रहता था। सईदा काटज में रहने वाले सबके साथ लोग उसमें काम लेते थे। तबीयत का बहुत गरीब और सबका सबका था। उठे के पास वह उस समय आया था जब वह मम्मी के घटन पर सोनावाना जा रहा था। उमन गरीबनवाज और रजीतगुमार ने यह दिया था कि उस सईदा काटज में रम लिया जाए। रुन के कमरे में चूँकि जगह चाली थी, इसलिए उमन वही अपना डेरा जमा लिया था।

रजीतगुमार की कंपनी की नई फिल्म में बतौर हीरो चुन लिया गया था और उसने साथ बाना बिधा गया था कि अगर फिल्म सफल हुई तो

उममा दूसरी किन्म डायरेक्ट करने का मौका दिया जाएगा। चढ़ा अपनी नौ बरम की पेण्डिंग सनराह में से डेढ़ हजार रुया एक साथ प्राप्त करने में सफल हो गया था, इसलिए उमन रजनीकुमार से कहा था, 'मेरी जान, अगर कुछ वसूल करना चाहते हो तो मेरी तरह प्लग में मुबतला हो जाओ। हीरो और डायरेक्टर बनने से तो मेरा ख्याल है, यह वही प्रच्छा है।'।

गरीबनबाज कुछ ही दिन पहले हैदराबाद होकर आया था, इसलिए सईदा काटज किंचित सम्पन्न थी। मैं दवा, गरेज के बाहर भतगनी पर ऐसी कमीजें और सलवारें सटव रही थी, जिनका कपड़ा अच्छा और कीमती था। कीरी के बच्चे के पास नया खिलौना था।

मुझ पूना में पंद्रह दिन रहना पड़ा। मेरा पुराना फिल्मा का साथी अब नई फिल्म की हीरोइन की मुहब्बत में मुबतला होने की कोशिश कर रहा था, लेकिन डरता था क्योंकि यह हीरोइन पंजाबी थी और उसका पति बड़ी बड़ी मूछा वाला हट्टा कट्टा मुश्किल था। चढे ने सलाह दी थी, कुछ परवाह न करो, उस साले की जिस पंजाबी एक्ट्रेस का पति बड़ी बड़ी मूछा वाला पहलवान हो, यह इश्क के मदान में जरूर चारों प्दान चित गिरा करता है। वस, इतना करो कि सो स्पय की गाली के हिसाब से मुझ दम बीम हेवी बेट किस्म की गालियां सीख लो। मैं तुम्हारी खास मुश्किलों में बहुत काम आया करूंगी।'।

हरीश एक बोनल की गाली के हिसाब से गालियां पंजाब के खास लहजे में पाद कर चुका था लेकिन अभी तक उस अपने इश्क के रास्ते में कोई ऐसी खास मुश्किल पैदा नहीं आई थी जो वह उनके प्रभाव की परख सकता।

मम्मी के घर नियमानुसार महफिलें जमती थी। पोली डाली, चिट्टी, एलिमा, यलिमा आदि सब आती थी। वनकतरे पूववत पैलिमा की कथकली और ताण्डव नाच की ता थई और धा नौ ना कत वन दू थी बना बनाकर बताता था और वह उसे मीखन की पूरी कोशिश करती थी। गरीबनबाज उसी तरह कज दे रहा था, और रजनीकुमार, जिसका अब कम्पनी की नई फिल्म में हीरो का खास मिल रहा था, उनमें से किसी

भी एक को बाहर खुली हवा में ले जाता था—चड़ढे के नगे नगे मजाक सुनकर उसी तरह बहकहक लगते थे—एक सिर्फ वह नहीं थी वह, जिसके बालों के रंग के लिए मही उपमा ढूँढ़ने में चड़ढे ने काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलों में चड़ढे ने काफी समय लगाया था। लेकिन इन महफिलों में चड़ढे की निगाह उसे दूँढ़ती नहीं थी। फिर भी कभी कभी जब चड़ढे की नजरें मम्मी की नजरा से टकराकर झुक जाती थीं तो मैं अनुभव करता था कि उसको अपनी उस रात की दीवानगी का अफ़सोस है। ऐसा अफ़सोस, जिसकी याद से उसरो तकलीफ़ होती है। अतएव पीछे पेंग के बाद किसी समय इस तरह का एक वाक्य उसकी जवान में निकल जाता, 'चड़ढा, यू आर ए डेम्ड यूट !'

यह सुनकर मम्मी होठों ही हाँठों में मुस्करा देती, जैसे वह उस मुस्कराहट की मिठास में लपेट-लपटकर बह रही हो—'डाण्ट टाक' राट !'

वनवतरे से पहले ही की तरह उसकी चख चख चलती थी। नशे में आकर जब भी वह अपने बाप की प्रशंसा में या अपनी बीबी की खूबसूरती के सम्यग् में कुछ कहन लगता तो वह उसकी बात बहुत बड़े गण्डास से काट डालता। वह बेचारा चुप हो जाता और अपना मट्रीक्प्लेशन का सर्टिफिकेट तह करके जेब में डाल लेता।

मम्मी वही मम्मी थी पोली की मम्मी, डोली की मम्मी, चड़ढे की मम्मी, रजौतबुमार की मम्मी। साँडे की बीनलो, खान पीन की चीजा और महफिल जमान के दूसरे साजो-सामान के प्रबन्ध में वह बसी ही स्नेहपूर्ण दिलचस्पी से हिस्सा लेती थी। उसके चेहरे का मेकअप वैसा ही बाहियात होता था। उसके कपड़े उसी तरह भड़कीले थे। सुर्खी की तहा से उसकी झुरिया उसी तरह भाँकती थी, लेकिन अब मुझ में पवित्र दिखाई देती थी। इतनी पवित्र कि पेंग के कीड़े उन तक नहीं पहुँच सकते थे। डरकर, सिमटकर वे भाग गए थे चड़ढे के शरीर से भी निकल भागे थे, क्योंकि उसपर उन झुरियों की छत्रच्छाया थी—उन पवित्र झुरियों की, जो हर समय बहुत ही बाहियात रंगों में लिपड़ी रहती थी।

वनवतरे की खूबसूरत बीबी का जब गमपात हुआ था तो मम्मी की ही तत्कालीन सहायता से उसकी जान बची थी। यैलिमा जब हिंदुस्तानी

नाच मीमने के शौक में एक मारजाडी कत्थक के हत्ये चढ़ गई और उसके मौद में एक दिन जब उस मालूम हुआ कि उसने एक सतरनार राग खरीद लिया है तो मम्मी ने उसकी बहुत डाटा था और उससे कोई सम्झन न रखन का दृढ़ संकल्प कर लिया था। लेकिन फिर उसकी आवाज में आसू देयरकर उसका दिल पमीज गया था। उसने उसी दिन गाम को अपने बेटो को सारे बात सुना दी थी और उनमें प्रायना की थी कि वह थनिमा का इनाज कराए। किटी का एक पजल (पहली) हल करने के मिलसिल में पांच सौ रुपये का इनाम मिला था तो मम्मी ने उस मजदूर किया था कि कम से कम आधे रुपये गरीजनवाज को दे दे, क्योंकि उस गरीब का हाथ कम है। उसने किटी ने कहा था, 'तुम इस समय इस दे दे—बाद में लेती रहता। और मुझे उसने मेरे पंद्रह दिन के काम में कई बार मेरी मिसज के बारे में पूछा था और बिना जवाब की थी कि पहले बच्चे की मृत्यु का इनका क्या हुआ है, हमारा बच्चा क्या नहीं हुआ। रजीन-कुमार के साथ वह अधिक घुल मिलकर बात नहीं करती थी। ऐसा माना जाता था कि उसकी दिवावटी तबीयत उसकी अच्छी नहीं लगती थी। मेरे सामने भी एक-दो बार इसकी चर्चा कर चुकी थी। म्यूजिक टाय रेक्टर सन ने वह पणा करती थी। चढ़ा उसको अपने साथ लाता था तो वह उससे कहती थी, ऐसे जलीन आदमी के यहाँ मत साया करा।' चढ़ा उससे पूछना तो वह बड़ी गम्भीरता में उत्तर देती, 'मुझे यह आदमी ऊपरा ऊपरा सा मालूम होता है—जबता नहीं मरी तजरा में। यह मुझे कर चढ़ा हुआ देता था।

मम्मी की महफिना की स्तहपूण गर्मी लिए मैं वापस बम्बई चला गया। इन महफिना में गाराव की मस्ती थी सबसे था लेकिन कोई उल आवाज नहीं था। हर चीज गभवती स्त्री के पेट की तरह स्पष्ट थी। उसी तरह उभरी हुई, दखन में उसी तरह की कुट्टर और असमजस में टालने वाली नेबिन वास्तव में बड़ी सही गिफ्ट और अपनी जगह पर कायम।

हमारे निम्न सुत्र के अखबारों में पता कि सईदा जाटों में बगाली म्यूजिक टायरेक्टर सन भारा गया है। उसकी हत्या करनेवाला कोई राममिह है, जिसकी आयु चौदह पंद्रह वर्ष के लगभग बताई जाती है।

मैन तुरन्त पूना टेलीफोन किया, लेकिन फोन पर कोई न मिल सका।

एक हफ्ते के बाद चड्ढा का खन आया, जिसमें उम हत्याकाण्ड का पूरा विवरण था। गत की सब साफ हुए - कि अचानक चड्ढे के पलंग पर कोई गिरा। वह हड़बड़ाकर उठा। बिजली जलाई तो देखा, सेन है, पून म लक्ष्मण। चड्ढा अभी अच्छी तरह अपने हाथ-पैरों सम्मालन भी न पाया था कि दरवाजे में रामसिंह दिगाई दिया। उसके हाथ में छुरी थी। तुरन्त ही गरीबनवाज और रजितकुमार भी आ गए। सारी सईदा काटज जम गई। रजितकुमार और गरीबनवाज ने रामसिंह की पकड़ ली और छुरी उसके हाथ में छीन ली। चड्ढा न मन की अपने पलंग पर लिटाया और उसमें घावा के बारे में कुछ पूछन ही वाला था कि उसने आतिरी हिचकी ली और ठण्डा हो गया।

रामसिंह गरीबनवाज और रजितकुमार की जकड़ में था मगर वे गोलो काप रह थे। सेन मर गया तो रामसिंह ने चड्ढा से पूछा, 'भापा-जी मर गया ?'

चड्ढा ने हाँ में उत्तर दिया, तो रामसिंह ने रजितकुमार और गरीबनवाज में गह्रा, मुझे छोड़ दीजिए, मैं भागूंगा नहीं।'

चड्ढा की समझ में नहीं आता था कि वह क्या करे। उसने तुरन्त नौकर भेजकर मम्मी को बुलवाया। मम्मी आई तो सब निश्चिन्त हो गए कि मामला सुलझ जाएगा। उसने रामसिंह को छुड़वा दिया और थोड़ी देर के बाद अपने माथे धान ले गई और उसका बयान दज करा दिया। हमके बाद चड्ढा और उसके साथी कई दिन तक बड़े परेगान रहे। पुलिस की पूछताछ बयान, फिर अदालत में मुकदमे की परवा। मम्मी इस बीच बहुत दोड़घूष करती रही थी। चड्ढा का विश्वास था कि रामसिंह बरी हो जाएगा और ऐसा ही हुआ। अदालत ने उसे माफ कर दिया। अदालत में उसका वही बयान था जो उसने थाने में दिया था। मम्मी ने उससे कहा था, 'बेटा, धवराणा नहीं, जो कुछ हुआ है, मच-सच बना दो।' और उसने मारी बातें ज्यादा बयान कर दी थी कि सेन ने उस प्लेवक मिगर बना देने का लालच दिया था। स्वयं उसे भी समीत से बहुत लगाव था और सब बड़ा अच्छा मान वाला था। वह इस चक्कर

मे थापर उसकी हैबानी इच्छाए पूरी करता रहा लेकिन उसका इसमे बहुत धूणा थी। उसका दित बार-बार उमे लानत मनामत करता था। अत मे वह इनता तग आ गया था कि उमने सेन मे कह भी दिया था कि उमने फिर उस मजदूर किया ता वह उस जान से भार डालगा। अत एक घटना की रात को यही हुआ।

अदायत म उसने यही क्या दिया। मम्मी मौजूद थी। आजा ही आजा मे वह रामसिंह को गिलाया दे रही थी कि घबराओ नही, जो सच है, कह दो, सच की हमेशा जीत होती है। इसमे कोई शक नही कि तुम्हार हाथो न खून किया है लेकिन एक बड़ी मनहूस चीज का, एक हैवान का, एक अमानुष का।

रामसिंह न बड़ी मादगी और बडे मोतेपन से सारी घटनाओ का वणन किया। मजिस्ट्रेट इतना प्रभावित हुआ कि उसने रामसिंह का बरी कर दिया।

चड्डे ने कहा, 'इस झूठे जमाने मे यह सच की एक अनोखी विजय है, और इसका श्रेय मेरी बूढ़ी मम्मी को है।'।

चड्डा ने मुझे उम जलसे म बुलाया था जो रामसिंह की रिहाई की खुशी में मईदा काटेज वाला न किया था लेकिन मैं व्यस्तता के कारण उमम शामिल न हो सका।

दाकील और अकील दोनो सईदा काटेज म वापस आ गए थ। बाहर का वातावरण भी उनकी निजी फिल्म कम्पनी की नीव डालने के लिए रास नहीं आया था।

अब वे फिर अपनी पुरानी फिल्म कम्पनी म किसी अतिस्टेंट के अमिस्टेंट हो गए थ। उन दोनो के पास उम पूजो म से कुछ सैकडे बाकी बचे हुए थे, जो उहान निजी फिल्म कम्पनी की नीव डालने के लिए जुटाई थी। चड्डे के मनाविरे पर उन्होंने यह सब रूपा जलसे को सफल बनाने के लिए दे दिया। चड्डा ने हमसे कहा था, 'अब मैं चार पेंग पीकर हुआ करूंगा कि वह तुम्हारी निजी फिल्म कम्पनी फौरन सही कर दे।'।

चड्डा का कहना था कि इस जलसे से बनकर न शराब पीकर अपनी आदत के खिलाफ अपने बाप की प्रशंसा न की और न ही अपनी

खूबसूरत बीबी का जिक्र किया। गरीबनवाज ने किटी की तत्कालीन आवश्यकता को पूरा करने के लिए दो सौ रुपये कज दिए और रजीतकुमार से उसने कहा, 'तुम इन बेचारी नडकियो को यो ही भासे न दिया करो हो सकता है कि तुम्हारी नीयत साफ हो, लेकिन लेन के मामले में इनकी नीयत इतनी साफ नहीं होती—कुछ न कुछ द दिया करो।'।

मम्मी ने उस जलमे में रामसिंह को बहुत प्यार किया और सबको मशविरा दिया कि उसे घर वापस जाने के लिए कहा जाए। अतएव वही फैसला हुआ और दूसरे दिन गरीबनवाज ने उसके टिकट का प्रबंध कर दिया। शीरी ने सफर के लिए उसको खाना पकाकर दिया। स्टेशन पर सब उसे छोड़ने गए। ट्रेन चली तो वे दर तक हाथ हिलाते रहे।

ये छोटी छोटी बातें मुझे जलसे के दस दिन बाद मालूम हुई, जब मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पड़ा। सईदा काटेज में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि वह ऐसा पड़ाव है, जिसका रंग-रूप हजारों काफिलों के ठहरने से भी नहीं बदलता। वह कुछ ऐसी जगह थी, जो अपनी रिक्तता की स्वयं ही भर लेती थी। मैं जिस दिन वहां पहुंचा शीरनी बट रही थी। शीरी के एक और लड़का हुआ था। वनकतरे के हाथ में ग्लैक्सो का डिब्बा था। उन दिनों यह बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता था। अपने बच्चे के लिए उसने कहीं से दो प्राप्त किए थे। उनमें से एक वह शीरी के नवजात शिशु के लिए ले आया था। चड्ढा ने आखिरी दो लड्डू उसके मुंह में ठूसे और कहा, 'तू ग्लैक्सो का डिब्बा ले आया बड़ा कमाल किया है तूने अपने साले बाप और अपनी साली बीबी की, देखना हरगिज कोई बात न करना।'।

वनकतरे ने बड़े भोलेपन के साथ कहा, 'साले, मैं अब कोई पियेला हूँ? वह तो दारू बोला करती है वैसे बाई गाड, मेरी बीबी बड़ी हैण्डसम है।'।

चड्ढे ने इतनी जोर का कहकहा लगाया कि वनकतरे की और कुछ कहने का अवसर न मिला। उसके बाद चड्ढा, गरीबनवाज और रजीत कुमार मेरी ओर मुड़े और उस कहानी की बातें शुरू हो गई जो मैं अपने पुराने फिल्मों के साथी के जरिये से वहां के एक प्रोड्यूसर के लिए लिख

रहा था। फिर कुछ देर शीरी के नक्कात लडके का नाम रखा जाता रहा। सैकड़ा नाम रखे गए, लेकिन चड्डे की कोई पसंद न आया। अंत में मैंने कहा कि ज मस्थान अथात सईन काटेज के नाम पर लडके का नाम मसऊद होना चाहिए। चड्डे की पसंद नहीं थी, लेकिन मस्थानी रूप से उसने स्वीकार कर लिया।

इस बीच में मैंने अनुभव किया कि चड्डा, गरीबनवाज और रजित कुमार तीनों का तबीयत कुछ बुझी बुझी सी थी। मैंने सोचा शायद इसका कारण पतझड़ का मौसम हो, जब आदमी अकारण हो थकावट सी महसूस करने लगता है। शीरी का गया अच्छा भी इस शिथिलता का कारण हो सकता था, लेकिन यह कोई ठोस कारण मालूम नहीं होता था। सन के काल की ट्रेजडी? मालूम नहीं, क्या कारण था लेकिन मैंने पूरी तरह महसूस किया कि वे सब उदास थे ऊपर से हसत बोलते थे, लेकिन भीतर ही भीतर घुट रहे थे।

मैं प्रभातनगर में अपने पुराने फ़िल्म का साथी के घर में कहानी लिखता रहा। यह व्यस्तता पूरे सात दिन तक जारी रही। मुझे बार बार रंगाल आता था कि इस बीच में चड्डे ने कोई बाधा क्यों नहीं डाली। वनकतर भी कही गायन था। रजितकुमार से मेरे कोई खास सम्बन्ध नहीं थे जो वह मरे पास इतनी दूर आता। गरीबनवाज के बारे में मैंने सोचा था कि शायद हैरावाद चला गया हो। और मेरा पुराना फ़िल्म का साथी अपनी नई फ़िल्म की हीराइन से, उगाँव घर में उसके बड़ी बड़ी मूछा वाले पति की मौजूदगी में, इश्क लडान का दब निश्चय कर रहा था।

मैं अपनी कहानी के एक बड़े दितचस्प हिस्से की पटकथा तैयार कर रहा था कि चड्डा आ टपका और कमरे में घुसत ही उसने मुझसे पूछा, 'इस वक्कास का तुमने कुछ बसूल किया है?'

उसका इशारा मेरी कहानी की ओर था, जिसके पारिथमिक की दूसरी किस्त मैंने दो दिन पहले बसूल की थी। 'हां दो हजार परसा लिया है।'।

'कहा है?' यह कहत हुए चड्डा मेरे कोट की ओर बढ़ा।

‘मेरी जेब में।’

चड्डे न मेरी जेब में हाथ डाला। सी मौ के चार नोट निकले और मुझमें कहा, ‘आज शाम को मम्मी के यहाँ पहुँच जाना—एक पार्टी है।’

मैं उस पार्टी के बारे में उससे कुछ पूछने ही वाला था कि वह चला गया। वह शिथिलता और उदासीनता, जो मैंने कुछ दिन पहले उसमें महसूस की थी, वही थी। वह कुछ बचन भी था। मैंने उसके बारे में सोचना चाहा, लेकिन दिमाग तैयार न हुआ। वह कहानी के दिलचस्प हिस्से की पटकथा में धुरी तरह फसा हुआ था।

अपने पुराने फिल्मों के साथी की बीबी से अपनी बीबी की बातें करके शाम को साढ़े पाँच बजे के करीब मैं वहाँ से चलकर सात बजे सईदा काटेज पहुँचा। गैरेज के बाहर अलगनी पर गीले गीले पोतड़े लटक रहे थे और नल के पास अकील और शकील शीरी के बड़े लडके के साथ खेल रहे थे। गैरेज के टाट का परदा हटा हुआ था और शीरी उनसे शायद बातें कर रही थी। मुझे देखकर वे चुप हो गए। मैंने चड्डे के बारे में पूछा तो अकील ने कहा कि वह मम्मी के घर मिल जाएगा।

मैं वहाँ पहुँचा तो देखा, एक शोर मचा हुआ था। सब नाच रहे थे। गरीबनबाज पोली के साथ, रजीतकुमार किटी और एलिमा के साथ और बनकतरे थैलिमा के साथ। वह उसको कथाकली की मुद्राएँ बता रहा था। चड्डा मम्मी को गोद में उठाए इधर उधर कूद रहा था। सब नशे में थे। एक तूफान मचा हुआ था। मैं अंदर पहुँचा तो सबसे पहले चड्डे ने नारा लगाया। इसके बाद देशी-विदेशी आवाजों का एक गौला-सा फटा, जिसकी गूँज देर तक धानों में सरसराती रही। मम्मी बड़े तपाक से मिली—ऐसे तपाक से जो बेतबल्लुफी की हद तक बढ़ा हुआ था। मेरा हाथ उसने अपने हाथ में लेकर कहा, ‘किस भी डीयर!’ लेकिन उसने स्वयं ही मेरा एक गाल चूम लिया और धसीटकर नाचने वालों के झुंमुट में ले गई। चड्डा ने एकदम पुकारा, ‘बंद करो—अब शराब का दौर चलेगा!’ फिर उसने नौकर को आवाज दी, ‘स्काटलैण्ड के शहजादे! ह्विस्की की नई बोतल लाओ!’ स्काटलैण्ड का शहजादा नई बोतल ले आया। नशे में धुत् था, खोलने लगा तो हाथ से गिरी और चकनाचूर हो गई। मम्मी

ने उमका हाटना चाहा तो चढढे ने रोव दिया, 'एक तो बीतल टूटी है मम्मी, जाने दो, यहा दिल टूटे हुए हैं।'

महफिन एकदम सूनी हो गई, लेकिन तुरन्त ही चढढे ने उस उदासीनता को अपने बहबहो में छिन्न भिन्न कर दिया। 'ई बीतल आई। हर गिलास में बड़ा तगड़ा पेग डाला गया। इसके बाद चढढे ने उसडा उखडा-सा भाषण करना शुरू किया, 'लेडीज एण्ड जेण्टलमैन आप सब जहनुम में जाए मण्टो हमारे बीच मौजूद है, जो अपने आपको बहुत बड़ा बहानीवार समझता है। मानव स्वभाव की, वह क्या कहते हैं, गहरी से गहरी गहराई में उतर जाता है मगर मैं कहता हूँ कि बकवास है कुएँ में उतरने वाले कुएँ में उतरने वाले' उसने धधर उधर देखा 'अफसोस है कि यहा कोई हिन्दुस्तुड नहीं, एक हैदराबादी है जो काफ़ी गाँव कहता है और जिससे दस बरस पीछे मुलाकात हुई तो कहेगा कि परसो आपमें मिला था—सालत हो उसने निजाम हैदराबाद पर, जिसके पास कई लाख टन सोना है, क़ौडा जवाहरात हैं लेकिन एक मम्मी नहीं हा वह कुएँ में उतरने वाले मैंने क्या कहा था कि सब बकवास है? पंजाबी में जिन्हे टोवें कहते हैं वे गीता नगाने वाले, वे इसके मुकाबले में मानव-स्वभाव को कई दर्जे अच्छा समझते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ '

सबने जिन्दाबाद का नारा लगाया। चढढा चिरलाया, यह सब साजिश है—इस मण्टो की साजिश है नहीं तो मैंने हर हिटलर की तरह मुर्दाबाद के नारे का इशारा किया था तुम सब मुर्दाबाद लेकिन पहले मैं मैं।' वह जज्बाती हो गया। 'मैं जिसने उस रात उन साप के खपों ऐमे रंग वाले बाला की एक लडकी के लिए अपनी मम्मी को माराज कर दिया था। मैं खुद को—न जाने कहा का डान जुमान समझता था लेकिन नहीं, उसको पाना कोई मुश्किल काम नहीं था। मुझे अपनी जवानी की कसम, एक ही चुम्बन में उस प्लैटीनम ब्लौण्ड के बवारेपन का सारा रस मैं अपने इन मोटे मोटे होठों से चूस सकता था लेकिन यह एक अनुचित काम था वह कम उम्र थी। इतनी कम उम्र, इतनी कमजोर, इतनी करेक्टरलेस इतनी 'उसने मेरी ओर एक

प्रश्नवाचक दृष्टि से वेक्षा। 'बताओ यार उसे उर्दू फारसी या अरबी में क्या कहेंगे करेक्टरलेस लेडीज एण्ड जेंटलमन वह इतनी छोटी, इतनी कमजोर और इतनी मासूम थी कि उस रात पाप में शामिल होकर या तो वह सारी उम्र पछताती रहती या उसे विलकुल भूल जाती उन बड़े क्षणा के आनंद की याद के सहारे जीवन का सलीका उसको विलकुल न आता मुझे इसका दुख होता—अच्छा हुआ कि मम्मी न उसी समय मेरा हुक्का पानी बंद कर दिया मैं अब अपनी बक्वास बंद करता हूँ। मैंने असल में एक बहुत लम्बा चौड़ा लेक्चर करने का इरादा किया था लेकिन मुझमें कुछ बोला नहीं जाता मैं एक पेग और पीना हूँ।' उसने एक पेग और पिया। लेक्चर के बीच में सब चुप थे। उसके बाद भी चुप रहे। मम्मी न मालूम क्या सोच रही थी। गाजे और सुर्खी की तहा के नीचे झुरिया भी ऐसी दिखाई देती थी कि वे भी किसी गहरी चिंता में डूबी हुई हैं। बोलने के बाद चढ़ा जस खाली सा हो गया। इधर उधर घूम रहा था, जैसे कोई चीज खान के लिए ऐसा कौना ढूँढ रहा हो जा उसके मस्तिष्क में अच्छी तरह सुरक्षित रह। मैंने उम एक बार पूछा, क्या बात है चढ़ा ?

उसने कहकहा लगाकर जवाब दिया 'कुछ नहीं बात यह है कि आज हिस्की मरे दिमाग के चूतड़ा पर जमाकर लात नहीं मार रही। उसका कहकहा खोलता था।

बनकतरे ने थलिमा को उठाकर मुझे अपने पास बिठा लिया और इधर-उधर की बातें करने के बाद अपने बाप की प्रशंसा शुरू कर दी कि वह बड़ा गुनी आदमी था। ऐसा हारमोनियम बजाना था कि लोग अवाक रह जाते थे। फिर उसने अपनी बीबी की खूबसूरती का जिक्र किया और बताया कि बचपन में ही उसके बाप ने यह लड़की चुनकर उससे व्याह्र दी थी। बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर सेन की बात चली तो उसने कहा, मिस्टर मण्टो, वह एकदम हलकट आदमी था कहता था, मैं खान साहब अन्दुल करीम का चेला हूँ भूठ, विलकुल भूठ वह तो बंगाल के किसी भद्व का चेला था।' पंडी ने दो बजाए। चढ़ा ने बिटी को धक्का देकर एक द्वार गिराया

और बटकर वनकतरे के बहू जैम सिर पर घप्पा मारकर कहा, 'बकवान बंद कर दो उठ और कुछ गा लेकिन खबरदार, अगर तून कोई पक्का राग गाया।'।

वनकतरे न तुरंत गाना गुरु कर दिया। आवाज अच्छी नहीं थी। मुकिया की बारीकिया उसके गने से निकलती थी, लेकिन जो कुछ गाता था, पूरी तमयता से गाता था। मालकोश में उसने दो तीन फिल्मी गाने सुनाए, जिनसे वातावरण बहुत उदास हो गया। मम्मी और चड्डा एक-दूसरे की ओर देखते थे और नजरें किसी ओर तरफ हटा लेते थे। गरीबनवाज इतना प्रभावित हुआ कि उसकी आंखों में आंसू आ गए। चड्डे ने जोर का कहकहा लगाया और कहा, 'हैदराबाद वाला की आंख का मसाना बहुत कमजोर होता है—मौके वैमौके टपकने लगता है।'।

गरीबनवाज ने अपने आंसू पाछे और एलिमा के साथ नाचना शुरू कर दिया। वनकतरे ने ग्रामोफोन के तबे पर रिकार्ड रखकर सुई लगा दी। घिसी हुई ट्यून बजने लगी। चड्डे ने मम्मी को फिर गोद में उठा लिया और बूद बूदकर शोर मचाने लगा। उसका गला बैठ गया था, उन मीरा-सिया की तरह, जो शादी ब्याह के मौके पर ऊंचे सुरों में गा गाकर अपनी आवाज का नाश मार लेते हैं।

उस उछल-कूद और चीख दहाड़ में चार बज गए। मम्मी एकदम चुप हो गई। फिर उसने चड्डे की ओर मुड़कर कहा 'बस अब खतम।'।

चड्डे ने धीतल से मुह लगाया और उस खाली करके एक ओर फेंक दिया और मुझसे कहा, 'चलो मण्टो, चलें।'।

मैंने उठकर मम्मी से इजाजत लेनी चाही कि चड्डे ने मुझे अपनी ओर खींच लिया, 'आज कोई बिदाई नहीं लेगा।'।

हम दोनों बाहर निकल रहे थे कि मैंने वनकतरे के रोने की आवाज सुनी। मैंने चड्डे से कहा, 'ठहरो, देखो क्या बात है।'। मगर वह मुझे धकेलकर आगे ले गया। उस साले की आंखों का मसाना भी कमजोर है।'।

मम्मी के घर में सईदा काटेज बिल्कुल निकट थी। रास्ते में चड्डे ने कोई बात नहीं की। सोने से पहले मैंने उससे इस विचित्र पार्टी के बारे में

जानना चाहा तो उमने कहा, 'मुझे नींद आ रही है।' और वह बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठकर मैं गुसलखाने में गया। बाहर निकला तो देखा कि गरीबनवाज गरेज के टाट के साथ लगा खड़ा है और रो रहा है। मुझे देख कर वह आसू पोछता रहा से हट गया। मैंने पास जाकर उसमें रौने का कारण पूछा तो उसने कहा, 'मम्मी चली गई।'।

'कहा ?'

मालूम नहीं।' यह कहकर गरीबनवाज सड़क की ओर चला गया।

चंडा बिस्तर पर लेटा था। ऐसा मालूम होता था कि वह एक क्षण के लिए भी नहीं सोया था। मैंने उसमें मम्मी के बारे में पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा, 'चली गई, सुबह की गाड़ी से उसे पूना छोड़ना था।'।

मैंने पूछा, लेकिन क्यों ?

चंडे के स्वर में कटुता आ गई 'हुकूमत को उसकी अदाएं पसंद नहीं थी—उसका रंग ठग पसंद नहीं था। उसके घर की महफिलें उसकी नजरों में आपत्तिजनक थी। इसलिए कि पुलिस उसके स्नह और ममता को भ्रष्टाचार के रूप में लेना चाहती थी। वे उसे मा कहकर उससे एक दलाल का काम लेना चाहते थे। एक समय से उसके एक बैस की छानबीन हो रही थी। आखिर सरकार पुलिस की छानबीन से सहमत हो गई और उसको 'तडी पार' कर दिया। इस सहर से निकाल दिया वह अगर वेश्या थी, या दलाला थी—उसकी मौजूदगी अगर समाज के लिए हानिकारक थी तो उसका खात्मा कर देना चाहिए था। पून की गदगी में यह क्यों कहा गया कि तुम यहा से चली जाओ और जहा चाहो ढेर हो सकती हो ? चंडे ने बड़े जोर से कहकहा लगाया और थोड़ी देर चुप रहा। फिर उसने बड़े भावुक स्वर में कहा 'मुझे दुख है मण्टो कि उम गदगी के साथ ऐसी पवित्रता चली गई है जिसने उस रात मेरी एक बड़ी गलत और गदी तरंग को मेरे दिलोदिमाग में निकाल दिया था—लेकिन मुझे अप्मोस नहीं होना चाहिए—वह पूना में चली गई—मुझ जैसे जवाना में ऐसी गलत और गदी तरंगें कहा भी पदा होनी, जहा वह अपना घर बनाएगी मैं अपनी मम्मी उनके सुपुद करता हूँ जिंदाबाद मम्मी

जिन्दावाद चलो, गरीबनवाज को ढूँढ़ें। रो रोकर उसने अपना दुःख
हाल कर लिया होगा हैदरावादिया की आखा का मसाना बहुत कमजोर
होता है—मीके-बेमीके टपकन लगता है।’

मैंन देखा, चहड़ा की आखा में आसू इस तरह तैर रहे थे, जिस तरह
वधितो की लारें।

नगी आवाजें

भोलू और गामा दो भाई थे। बेहद मेहनती। भोलू बलईगर था। सुबह धौकनी सिर पर रखकर निकलता और दिन भर शहर की गलियों में, 'बतन कलई करा लो' की आवाजें लगाता रहता था। शाम को घर लौटता तो उसकी तहमद की टेंट में तीन चार रुपये की रेजगारी जहर होनी।

गामा खाचा लगाता था। उसको भी दिन-भर छावडी सिर पर उठाए घूमना पड़ता था। तीन चार रुपये वह भी कमा लेता था, पर उसे शराब की लत थी। शाम को खाना खान से पहले दीने के भटियारखाने में रौनक हो जाती। सबको मालूम था कि वह पीता है और इसीके सहारे जीता है।

भोलू ने गामा को, जो उससे दो साल बड़ा था, बहुत समझाया कि देखो, यह शराब की लत बहुत बुरी है, शादीशुदा हो, बेकार पैसा बर्बाद करते हो यही जो तुम रोज एक पाब शराब पर खच करते हो, बचाकर रखो तो भाभी ठाठ से रहा करे, नगी बुचची अच्छी लगती है तुम्हें अपनी घरवाली? गामा इस कान सुनता उस कान उठा देता। भोलू जब थक हार गया, तो उसने कहना-सुनना ही छोड़ दिया।

दोना शरणार्थी थे। एक बड़ी बिल्डिंग के साथ नौकरा के कवाटर थे। इनपर, जहां भीरो ने कब्जा जमा रखा था, वहां इन दोनों भाइयों ने भी एक कवाटर बो, जो दूसरी मजिल पर था, अपने रहने के लिए कच्चे में कर रखा था।

सर्दिया शराम से कट गई। गर्मिया आईं तो गामा को बहुत तकलीफ हुई। भोलू तो ऊपर कोठे पर खाट बिछाकर सो जाता, पर गामा क्या करता? बीबी थी और ऊपर पर्दे का कोई बदोबस्त ही न था। एक गामा ही बो यह तकलीफ न थी, उन कवाटरों में जो भी शादीशुदा था, इसी मुमीबत में फंसा था।

कल्लन को एक बात सूझी । उसने कोठे पर कोन म, अपनी और अपनी बीवी की चारपाई के इंद मंद, टाट तान दिया । इस तरह पर्दे का इन्तजाम हो गया । कल्लन को देखा देखी दूसरा ने भी इस तरीके से काम लिया । भोलू ने भाई की मदद की और कुछ ही दिनों में बास बगरा लगाकर, टाट और कम्बल जोड़कर, पर्दे का इंतजाम कर दिया । या हवा तो रुक जाती थी, पर नीचे क्वाटर के नरक से हर हालत में यह जगह अच्छी थी ।

ऊपर कोठे पर सोन से भोलू की तबीयत में एक अजीब बदलाव आ गया । वह शादी-ब्याह का बिलकुल कायल नहीं था । उसने मन में ठान रखी थी कि यह जजाल कभी नहीं पालेगा । जब कभी मामा उसके ब्याह की बात छेड़ता तो वह कहा करता, ना भाई, मैं यह जजाल नहीं पालना चाहता । अपने शरीर पर जकें नहीं लगवाना चाहता । लेकिन जब गर्मिया आई और उसने ऊपर छोट बिछाकर सोना शुरू किया तो दस पंद्रह दिन ही में उसके विचार बदल गए । एक शाम की दीने के भटियारखान में उसने अपने भाई से कहा, 'मेरी शादी कर दो, नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगा ।

मामा ने जब यह सुना तो उसने कहा, यह क्या मजाक सूझा है तुम्हें ?'

भोलू बहुत गम्भीर हो गया । बोला, 'तुम्हें नहीं मालूम पंद्रह रातें हो गई हैं मुझे जागते हुए ।'

क्यों, क्या हुआ ?' मामा ने पूछा ।

'कुछ नहीं यार दायें-बायें जिधर नजर डालो, कुछ न कुछ हो रहा होता है अजीब-अजीब आवाजें आती हैं । नींद क्या आएगी खान ।

मामा जोर से अपनी घनी मूछा में हसा ।

भोलू शरमा गया । फिर बोला, 'वह जो कल्लन है, उसने तो हद ही कर दी है माला रात भर बकवास करता रहता है साली उमकी बीवी की जबान तालू से नहीं गतती बच्चे पड़े रो रहे हैं पर यह '

मामा हमेशा की तरह नगे में था । भोलू चला गया तो उसने दीन के भटियारखाने में अपने सब यार-दास्ता को चटप चटपकर बताया कि उसके भाई को आज्ञा नाद नहीं आती । इसकी वजह जब उमन अपने

खास अंदाज में बयान की तो मुनने वालों के पेट में हमते हसते बल पड़ गए। जब वे लाग भोलू में मिले तो उन्होंने उमका खूब मजाक उड़ाया। कोई उससे पूछता 'हा भाई, कत्तन अपनी जोरू से क्या बातें करता है?' कोई कहता, 'यार, मुफ्त में मजे लेते हो सारी रात फिन्म दमते रहते हा सो फीसदी बोलती जाती।' कुछ ने उससे गन्दे गंदे मजाक किए। भोलू बेतरह चिढ़ गया।

दूसरे दिन उसने मामा की उस वक्ता पकड़ा, जब वह नशे में नहीं था श्री बोला, 'मुनने तो यार मेरा मजाक बना दिया है। देखो, जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, झूठ नहीं है। मैं भी इंसान हूँ। खुदा की कसम, मुझे नींद नहीं आती। आज भी बीस दिन हाँ गए हूँ मुझ जागते हुए तुम मेरा शादी का बंदोबस्त कर दो, नहीं तो, कसम खुदा की, कसम पज-तन पाक की, मेरा खाना खराब हा जाएगा। अभी के पास मेरा पाच सो रुपया जमा है जल्दी कर दो बंदोबस्त।'।

मामा ने मूछ मरोड़कर पहले कुछ सोचा, फिर कहा, 'अच्छा, हो जाएगा बंदोबस्त। तुम्हारी अभी से आज ही बात करता हूँ कि यह अपनी मिलने-जुलने वालियों में पूछताछ करे।'।

डेढ़ महीने के अंदर अंदर बात पक्की हो गई। समद बलईगर की लटकी आयशा मामा की बीबी को बहुत पसंद आई। खूबसूरत थी घर का कामकाज जानती थी। वैसे समद भी भला आदमी था। मुहल्ले वाले उसकी इज्जत करते थे। भोलू मेहनती था, सद्गुस्त था। जून के महीने में ही शादी की तारीख पक्की हो गई। समद ने बहुत बड़ा कि वह टननी गमिशा में लटकी नहीं व्याहगा, पर मामा ने जब बहुत जोर दिया, तब वह मान गया।

शादी से चार दिन पहले भोत्र ने अपनी दुलहन के लिए ऊपर कीठे पर टाट के पर्दे का बंदोबस्त किया। काम बड़ी मजबूती से चारपाइयों के पाया में बांधे। टाट खूब कमकर लगाए। चारपाइयों पर नये खेस बिछाए। तड़ सुगही मुण्डेर पर रमी। सीने का गिलास बाजार से खरीद लाया। सब काम उसने वह शौक में किए।

रात को जब वह टाट के पर्दे में घिरकर सोया तो उमकी अजीब-सा

लगा। वह खुली हवा में सोने का आदी था, पर अब उसको बिलकुल उलटी आदत डालनी थी। यही वजह थी कि शादी से चार दिन पहले ही उसने यो सोना गुरु कर दिया था। पहली रात जब वह लेटा और उसने अपनी बीबी के बारे में साचा तो वह पत्नी से सतरवतर हो गया। उसके कानों में वे आवाजें गूँजन लगीं, जो उसे सोन नहीं देती थी और उसके दिमाग में तरह तरह के परेशान खयाल दौड़ाती थीं।

क्या हम भी ऐसी ही आवाजें पैदा करेंगे? क्या आसपास के लोग हमारी आवाजें भी सुनेंगे? क्या वे मेरी तरह, रातें जाग जागकर काटेंगे? किसीने अगर झाँककर देख लिया तो क्या होगा?’

भोलू पहले से भी ज्यादा परेशान हो गया। हर वक़्त उसको यही बात सताती रहती कि टाट का पर्दा भी कोई पर्दा है। फिर चारों तरफ लोग खिखर पड़े हैं। रात के स नाटे में हल्की-सी बानाफूसी भी दूसरे कानों तक पहुँच जाती है। लोग कस यह नहीं जिन्दगी जीते हैं? एक कोठा है, इस चारपाई पर बीबी लेटी है, उस चारपाई पर शौहर पड़ा है। सैकड़ों आँखें कानों के आसपास खुले हैं। नज़र से घाने पर भी आदमी सबकुछ देख लेता। हलकी सी आहट पूरी तसवीर बनकर सामने आ जाती है यह टाट का पर्दा क्या है? सूरज निकलता है तो उसकी रोशनी सारी बीजा पर से पर्दा हटा देती है। वह सामने बल्लन अपनी बीबी की छातियाँ दबा रहा है। वह कोने में उसका भाई गामा लेटा है। तहमद सुलकर एक झार जा पड़ा है। उधर ईदू हलवाई की कुमारी बेटी भादा का पेट छिदरे टाट से भाँक भाँककर देख रहा है।

शादी का दिन आया तो भोलू का जी चाहा, वह वहीं भाग जाए। पर कहा जाता? अब तो वह जकड़ा जा चुका था। मायब हो जाता तो समझ जहर खुदकुशी कर लेता। उसकी लडकी पर जान क्या बीतती। जो तूफान मचता, वह अलग।

‘अच्छा! जो होता है होने दो—मेरे और साथी भी तो हैं। धीरे-धीरे आदत हो जाएगी मुझे भी—भोलू ने अपने आपको डाढ़म गिया और नई-नवकी दुल्हन की डोली पर से आया।

क्वाटरों में बहान-पहान पैदा हो गई। लोगों ने भोलू और गामा को

खूब बधाइया दी । भोलू के जो खास दोस्त थे, उन्होंने उसको छेड़ा और पहली रात के लिए कई सफल गुर बताए । भोलू चुपचाप सुनता रहा । उसकी भाभी न ऊपर कोठे पर टाट के पर्दे के नीचे विस्तर का बंदोबस्त कर दिया । गामा ने मोटिए के चारबड़े बड़े हार तकिये के पास रख दिए । एक दोस्त उसके लिए जलेबिया वाला दूध ले आया ।

दर तक वह नीचे क्वाटर में अपनी दुलहन के पास बैठा रहा । वह बेचारी शम के मारे, सिर झुकाए, घूँघट काढ़े, सिमटी हुई थी । सरत गर्मी थी । भोलू का नया कुर्ता उसके जिस्म के साथ पसीने से चिपका हुआ था । वह पछा भल रहा था, पर हवा जैसे बिलकुल गायब हो गई थी । भोलू ने पहले सोचा था कि वह ऊपर कोठे पर नहीं जाएगा, नीचे क्वाटर में ही रात काटगा, पर जब गर्मी असह्य हो गई, तब वह उठा और उसने दुलहन से चलन के लिए कहा ।

रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी । सारे क्वाटर खामोशी में लिपटे हुए थे । भोलू को इस बात का सतोष था कि सब लोग सो रहें हैं । कोई उसको नहीं देखेगा । चुपचाप, दबे पाव, वह अपने टाट के पर्दे के पीछे, अपनी दुलहन समेत घुस जाएगा और सुबह मुह अंधरे ही नीचे उतर आएगा ।

जब वह कोठे पर पहुँचा तो बिलकुल सनाटा था । दुलहन ने शरमाये हुए कदम उठाए तो पायल के रुपहले घुघरू बजने लगे । एकदम भोलू ने महसूस किया कि चारों तरफ जो भीड़ बिखरी हुई थी, वह जैसे चौककर जाग पड़ी है । चारपाइयाँ पर लोग करवटें बदलने लगे । सासने-खलारने की आवाजें इधर उधर उभरने लगी । भोलू ने घबराकर अपनी बीबी का हाथ पकड़ा और तजी से टाट की ओट में चला गया । दबी दबी एक हसी की आवाज उसके कानों के साथ टकराई । उसकी घबराहट बढ़ गई । बीबी से बात की, तो पास ही खुसुं फुमुर गुरू हो गई । दूर कोने में, जहाँ कलन की जगह थी, चारपाई की चर चू चर चू हान लगी । वह धीमी पड़ी तो गामा की लोहे की चारपाई बोलन लगी ।

इंद्र हलवाई की कुमारी लडकी शादा ने दो-तीन बार उठकर पानी पिया । घड़े के साथ उसका गिनास टकराता तो एक छनाका सा पैदा

होता। परे कसाई के सडक की चारपाई स बार बार माचिस जलान का आवाज आती थी।

भोलू अपनी दुबहन से कोई बान न कर सका। उसे डर था कि आस पास के सुले हुए बान पौरन उसकी बान निगल जाएंगे और सारी चार पाइया 'चर चू चर-च करन' नगेंगी। दम साधे वह चुपचाप बैठा रहा। कभी कभी सहमी हुई निगाह से अपनी जोरू की तरफ देख लेता, जो गठरी सी बनी दूसरी चारपाई पर पड़ी थी। कुछ देर वह जागती रही, फिर सो गई।

भोलू न चाहा कि वह भी सो जाए, पर उस नींद न आई। थोड़ी थोड़ी दर के बाद उसके बाना में आवाजें आती थीं आवाजें, जो पौरन तसवीरें बनकर उसकी आला के सामन स गुजर जाती थीं।

उसके मन में बड़ी उमंगें थी, बड़ा जोग था। जब उसने गान्दी का इरादा किया था तो वे सारे मजें जिनसे वह अपरिचित था, उसके दिल दिमाग में चक्कर लगात रहत थे। उस एक गर्मी महसूस हानी थी—बड़ी सुख गर्मी। मगर अब जैसे 'पत्ती रात' स उसे कोई दिलचस्पी ही न थी। उसने गान में कई बार यह दिलचस्पी पदा करन की कोशिश की, लेकिन आवाजें—व तसवीरें खीचन बानी आवाजें—मन कुछ अस्त-यस्त कर देती। वह अपने आपका नगा महसूस करता, बिलकुल नगा जिसका चारा और से लोग आलें फाड़-फाड़कर देख रहे हो और हस रहे हैं।

सुबह चार बजे के करीब वह उठा। बाहर निकलकर उसने ठण्डे पानी का एक गिलास पिया। कुछ सांचा, वह भिन्नक जा उसके मन में बैठ गई थी, उसको किसी हद तक दूर किया। अब ठण्डी हवा चल रही थी जो काफी तेज थी। भोलू की निगाहें बोन की तरफ घूमी। बल्लन का घिमा हुआ टाट हिल रहा था। वह अपनी बीबी के पाम बिलकुल नग धडग लटा था। भोलू को बड़ी घिन लगी। माथ ही गुम्मा भी आया कि हवा ऐसे कोठों पर क्या चलती है? चलती है तो टाटा को क्यों छेड़ती है? जो मैं आया कि कोठे पर जितना टाट है, सब नीचे डालने और नगा होकर नाचन नग।

भोलू नीचे उतर आया। जब काम पर निकला तो कई दाम्त मिल।

सबन उससे मुहागरात का हाल पूछा। फूजे दर्जी न उसको दर ही से
आवाज दी 'क्या उस्ताद भोलू, कैसे रह ? कहीं हमारे नाम पर बटटा तो
नहा लगा दिया ?'

छागे टीनसाज न उसस बड़ भेद भर स्वर म कहा 'देखो अगर कुछ
गड़बड़ है तो बता दो एक बड़ा अच्छा नुस्खा मेरे पास है।
बाल न उसक कंध पर जोर का हाथ मारा और पूछा, 'कहीं पहल-
वान, क्या रहा दगल ?'

भोलू चुप रहा।

सुरह उसकी बीबी मायके चली गई। पाच छ दिन के बाद लौटी तो
भोलू को फिर उसी मुसीबत का सामना करना पड़ा। कोठे पर सोन वाले

जम उसकी बीबी के आने का इंतजार कर रहे थे। कुछ रातें खामोश
रही थी, लेकिन जब वे ऊपर सोए तो फिर वही सुसुर फुसुर, वही 'चर-
चू चर चू, वही खासना-खखारना, वही घड़े के साथ गिलास के टकराने
क छनाके, करवटा पर करवटें, दबी दबी हसी। भोलू सारी रात अपनी
चारपाई पर लेटा आसमान की ओर देखता रहा। कभी कभी एक ठण्डी
ब्राह भरकर अपनी दुलहन को दख लेता और मन म कृबता 'मुझ क्या
हो गया है ?'। मुझे क्या हो गया है ?' यह मुझे क्या हो गया है ?'

सात राता तक यही होता रहा। आखिर तब आकर भोलू न अपनी
दुलहन को मायके भेज दिया। बीस पच्चीस दिन बीत गए तो गामा न
भोलू स कहा, 'तुम अजीब आत्मी हो। नई नई शादी, और बीबी को
मायक भेज दिया। इतन दिन हो गए उसे गए हुए, तुम अकेल सोत
कैसे हो ?'

भोलू न सिफ इतना कहा 'ठीक है।'।
गामा न पूछा, 'ठीक क्या है ? जो बात है, बताओ। क्या तुम्हें
पसंद नहीं आई मायका ?'

'यह बात नहीं है।'।

'यह बात नहीं है तो और क्या बात है ?'

भोलू बात गोल कर गया। पर थोड़े ही दिनों बाद उसके भाई ने
फिर बात छेड़ी। भोलू उठकर क्वाटर के बाहर चला गया। बाहर एक

चारपाई पड़ी थी, उसपर बैठ गया। भीतर से उसकी भाभी की आवाज सुनाई दी। वह गामा से कह रही थी, 'तुम जो कहते हो ना कि भोलू को आयशा पसंद नहीं आई यह गनत है।'

गामा की आवाज आई, 'तो और क्या बात है? भोलू को उससे कोई दिलचस्पी ही नहीं।'।

'दिलचस्पी क्या हो?'

'क्यों?'

गामा की बीबी ने इसका जवाब दिया, भोलू न सुन सका, लेकिन इसके बावजूद उसका ऐसा लगा, मानो उसकी सारी हस्ता किसीन श्रीवल्ली में डालकर कूट दी हो।

गामा एकदम जार से बोला, 'नहीं, नहीं! यह तुमसे किसने कहा?'

गामा की बीबी बोली 'आयशा ने अपनी किसी सहली से कहा बात उड़त-उड़ते मुझ तक पहुंच गई।'

बड़ दुख भरे स्वर में गामा ने कहा, 'यह तो बहुत बुरा हुआ!'

भोलू के दिल में छुरी-सी उतर गई। उसका दिमागी सतुलन बिगड़ गया। वह उठा और कोठे पर चढ़कर जिनने टाट लगे थे, उन्हें उसने उखाड़ना शुरू कर दिया। 'खट-खट फट फट' सुनकर लोग ऊपर जमा हो गए। उन्होंने उसका रोक्ने की कोशिश की तो वह लड़न लगा। बात बढ़ गई। कहलन ने बाग उठाकर उसके सिर पर द मारा। भानू चक्कराकर गिरा और बहाल हो गया। जब उसे हाथ आया, तो उसका दिमाग चल चुका था।

अब वह जिलबुन नग घडग बाजारी में घूमता फिरता है। वही टाट देखता है तो उसको उतारकर टुकड़े टुकड़े कर देता है।

दिन भर की थकी मादी वह अभी अपने बिस्तर पर लेटी थी और लेटते ही सो गई थी। म्युनिसिपल कमेटी का सफाई-दारोगा, जिसे वह 'सेठ' के नाम से पुकारा करती थी, अभी अभी उसकी हड्डियाँ पसलियाँ भूँडकर, गराब के नंगे में धूर, वापस घर को चला गया था। वह रात को यहाँ ठहर जाता, पर उसे अपनी धमपत्नी का बहुत खयाल था, जो उससे बेहद 'प्रेम' करती थी।

वे रुपये, जो उसने अपने शारीरिक परिश्रम के बदले में, उस दारोगा से वसूल किए थे, उसकी धुस्त और धूक भरी चौली के नीचे से ऊपर की उभरे हुए थे। कभी कभी सास के उतार चढ़ाव से चादी के थ सिक्के खन-खनाने लगते और उनकी खनखनाहट उसके दिल की बेसुरी घड़ना में घुल मिल जाती। ऐसा मालूम होता था कि उन सिक्कों की चादी पिघल-कर उसके दिल के खून में टपक रही है।

उसका सीना अंदर से नप रहा था। यह गर्मी, कुछ तो उस बाण्डी की वजह से थी, जिसका अदा दारोगा अपने साथ लाया था और कुछ उस 'ब्योडे का नतीजा' थी, जिसको, सोडा खत्म होने पर, दोनों न पानी मिलाकर पिया था।

वह सागौन के लम्बे चौड़े पलंग पर भीँवे मुह लेटी हुई थी। उसकी बाँहें, जो कभी तब नगी थी, पतल की उस बाप की तरह फैली हुई थी, जो मोसल में भीग जाने के कारण पतले कागज से अलग हो जाए। दाँयें बाजू की बगल में भुर्रिया भरा मास उभरा हुआ था, जो बार-बार मुड़ने की वजह से नीली काली रंगत का हो गया था। लगता था, जैसे मुँही हुई मुर्गी की राल का एक टुकड़ा वहाँ पर रख दिया गया है।

कमरा बहुत छोटा था, जिनमें अनगिनत चीजें बतरतीबी के साथ बिखरी हुई थी। तीन चार सूखी सड़ी चप्पलें पलंग के नीचे पड़ी थी, जिनके ऊपर मुह रखकर, एक साज मारा कुत्ता सो रहा था और नींद में

किसी अनजान चीज को मुह चिड़ा रहा था। उस कुत्ते के बाल खुजली के कारण जगह जगह से उड़े हुए थे। दूर से अगर कोई कुत्ते को देखता तो ममभ्रना कि पर पोछन वाला पुराना टाट दोहरा कर जमीन पर रखा हुआ है।

उस तरफ छोटी सी दीवारगीर पर, सिमारका समान रखा था— गाला पर लगान की सुर्खी, लाल रंग की लिपस्टिक, पाउडर, कधी और लोहे की पिन, जिन्हें बायद वह अपन जूड़े में लगाया करती थी। पास ही एक लम्बी सूटी के साथ तोते का पिंजरा लटक रहा था, जिसमें तोता गदन की अपनी पीठ के बालों में छिपाए सो रहा था। पिंजरा कच्चे अमरुद के टुकड़ों और गले हुए मत्तरे के छिलकों से भरा हुआ था। उन बद-बूदार टुकड़ों पर छोटे-छोटे काले रंग के मच्छर या पतंग उड़ रहे थे।

पलंग के पास ही एक बेंत की कुर्सी पड़ी थी, जिसकी पीठ लगातार सिर टेकन की वजह से घेहरा मैली हो रही थी। कुर्सी के दायें हाथ को एक सुन्दर तिपाई थी जिसपर 'हिज मास्टस वायस' का पोर्ट्रेल ग्रामोफोन पड़ा था। उस ग्रामोफोन पर मड़े हुए काले कपड़े की बहुत बुरी हालत थी। सुइया तिपाई के अलावा कमरे के हर कोने में बिखरी पड़ी थी। उस ग्रामोफोन के ठीक ऊपर दीवार पर चार फ्रेम लटक रहे थे, जिनमें अलग अलग व्यक्तियों की तस्वीरें जड़ी थीं।

इन तस्वीरों से जरा इधर हटकर, यानी दरवाजे में दाखिल होते ही, बाई तरफ की दीवार के कोने में, चौखटे में जडा, गणेशजी का, बड़े ही भडकीले रंग का चित्र था, जो ताजा और सूखे पत्ता से लदा हुआ था। लगना था, यह चित्र कपड़े के किसी थान से उतारकर फ्रेम कराया गया था। उस चित्र के माथे, छोटे-से ताक पर, जोकि बहुत चिकना हो रहा था, तेल की एक प्याली धरी थी, जो दीप को जलाने के लिए बहा रखी गई थी। पास ही दीया पड़ा था, जिसकी लौ हवा बंद होने की वजह से, माथे के तिलक की तरह सीधी खड़ी थी। उस दीवारगीर पर घूँप वस्ती की छोटी बड़ी मरोड़िया भी पड़ी थी।

जब वह बोहनी करती थी तो दूर से गणेशजी की उस मूर्ति से रुपये छुट्टाकर और फिर अपने माथे के साथ लगाकर, उन्हें अपनी चोली में रख

लिया करती थी। उमकी छातिया चूबि काफी उभरी हुई थी, इसलिए वह जितने रुपये भी अपनी चोली में रखती, सुरक्षित पड़े रहते। अलबत्ता कभी कभी जब माधो पूने से छुट्टी लेकर आता तो उसे अपन कुछ रुपये पलग के पाए के नीचे उस छोट-से गड्ढे में छिपान पड़त थे, जो उसने खास तौर पर इसी काम के लिए खोद रखा था। माधो से रुपये बचाए रखने का यह तरीका सुगंधी को रामलाल दलाल ने बताया था।

उसने जब यह सुना था कि माधो पूने से आकर सुगंधी पर धावे बोलता है तो कहा था, उस साले को तू न कब से पार बनाया है? यह बड़ी अनोखी आशिकी माझूकी है। साला एक पसा आनी जेब से निकालता नहीं और तरे साथ मजे उड़ाता है। मजे अलग रह, तुमसे कुछ ल भी मरता है। सुगंधी, मुझे कुछ दाल में काला नजर आता है। उस साले में कोई बात जरूर है, जो वह तुम्हें पा गया है। सात साल से यह धधा कर रहा हूँ। मैं तुम छोकरिया की सारी कमजोरिया जानता हूँ।'

यह कहकर रामलाल दलाल ने, जो बम्बई शहर के विभिन्न भागों में घूम रुपये स लेकर सौ रुपये लेने वाली एक सौ बीस छोकरियों का धंधा करता था, सुगंधी को बताया, 'साली, अपना धन यो बरवाद न कर। तरे तन पर स य कपड़े भी उतारकर ले जाएगा वह तेरी मा का पार। इस पलग के पाये के नीचे छोटा सा गड्ढा खोदकर, उमम सार पसे दवा दिया कर और जब वह यहा आया कर तो उसमें कहा कर—तेरी जान की मसम माधो, आज सुबह स एक घेत का मुह नहीं दवा। धाहर पाले से कहकर एक 'कोप चाय और अफनातून बिस्कुट तो मगा। भूख में मेरे पेट में चूहे दौड़ रहे हैं।—समझी? समय बहुत खराब आ गया है मेरी जान। इस साली काप्रेस न घराब बंद करके बाजार बिलकुल मंदा कर दिया है पर तुम्हें तो कहीं न कहीं से पीन को मिल जाती है। भगवान मसम, जब तेरे यहा कभी रात की खाली की हुई बोतल देखता हूँ और दारु की बास सूघता हूँ तो जी चाहता है, तेरी जून में चला जाऊँ।'

सुगंधी को अपन जिस्म में सबसे ज्यादा अपना सीना पसंद था। एक बार जमुना ने उससे कहा था, 'नीचे से इन वस्त्रों के गोला को बांधकर रखा

कर । अगिया पटना करेगी तो इनकी सरताई ठीक रहेगी ।'

सुगंधी यह सुनकर हस दी थी, 'जमुना, तू सबको अपने सरीखा समझती है । दम रुपये मे लाग तरी बोटिया तोटकर चले जात है तो तू समझती है कि सबके साथ ऐसा ही होता होगा कोई मुआ लगाए तो ऐसी वैसी जगह हाथ अरे हा, कल की बात तुझे सुनाऊ । रामलाल रात के दो बजे एक पजाबी को लाया । रात का तीस रुपया तय हुआ । ज़रा सोने लगे तो मने बत्ती बुझा दी । अरे वह तो डरन लगा । सुनती हो जमुना । तेरी कसम, अधेरा होत ही उसका सारा ठाठ हवा हो गया । वह डर गया । मैंने कहा, चलो, चलो । देर क्यों करते हो ? तीन वजन वाले हैं अभी दिन चढ़ जाएगा । बोला, रोशनी करो । रोशनी करो । मैंने कहा, यह रोशनी क्या हुआ ? बोला लाइट लाइट । उसकी भिची हुई आवाज़ सुनकर मुझमें हसी न रुकी । मैंने कहा, भई मैं तो लाइट न करूंगी । और यह कहकर मैंने उसकी मांस भरी रान में चुटकी ली । वह तड़पकर उठ बैठा और लाइट आन कर दी । मैंने भट से चादर आठ ली और कहा, तुझे गम नहीं आती मरुए । यह पलंग पर आया तो मैं उठी और लपककर लाइट बुझा दी । वह फिर घबराने लगा तेरी कसम, बड़े मजे में रात कटी । कभी अधेरा कभी उजाला , कभी उजाला, कभी अधेरा । टाम की खटखटाहट हुई तो पतलून बतलून पहनकर वह उठ भागा । सारे न तीस रुपये सट्टे में जीते होंगे, जो यूँ मुफ्त दे गया । जमुना, तू बिल्कुल अलहड है । बड़े बड़े गुर याद हैं मुझे इन लोगों को ठीक करने के लिए ।'

सुगंधी को सचमुच बहुत-से गुर याद थे, जो उसने अपनी एक दो सहलियों को बताए भी थे । आम तौर पर वह यह गुर सबको बताया करती थी 'अगर आदमी भला हो ज्यादा बातें न करने वाला हो, तो उससे खूब शरारतें करो, अनगिनत बातें करो, उसे छेड़ो, सताओ, उसके गुदगुदी करो, उससे खेलो अगर दाढ़ी रखता हो तो उसमें उगलियों से कधी करत-करते दो चार बाल भी नोच लो , पट बड़ा हो तो थप थपाओ उसको इतनी मोहलत ही न दो कि अपनी मर्जी के मुनामिक

कुछ करने पाए वह खुश खुश चला जाएगा और तुम भी बची रहोगी
ऐसे मद जो गुप्तचर रहन हैं, बड़े खतरनाक होते हैं वहन, हड्डी पसली
तोड़ देते हैं, अगर उनका दाव चल जाए ।'

सुग भी उनकी चालाक नहीं थी, जिनकी वह छूद को जाहिर करती
थी । उसके ग्राहक बहुत कम थे । वह एक उहुत ही भावुक लड़की थी ।
यही वजह है कि वे सार गुरु, जो उस याद थे, उनके दिमाग से फिमनकर
उसके पट में आ जाते थे जिनपर एक बच्चा हो जान के कारण कई
लकीरें पड़ गई थी । इन लकीरों का पहली बार देखकर उस ऐसा लगा
था कि उसके खाने मारे कुत्ते ने अपने पजे से य निदान बना लिए हैं ।
जब कोई कुतिया बड़ी उपेक्षा से उसके पालतू कुत्ते के पास में गुजर जाती
थी तो वह शर्मिंदगी दूर करने के लिए जमीन पर गपन पजों से इसी
तरह के निशान बनाया करता था ।

सुग की दिमाग में ज्यादा रहती थी, लेकिन जैसे ही कोई नम-नाजुक
बात, कोई कोमल बोल उससे कहना, वह भट पिघलकर अपने गरीर के
दूसरे हिस्सा में फन जाती । हालांकि उसका दिमाग मद घारत के गारी-
रिक सम्बंध का एकदम बगार की चीज समझता था, पर उसके गरीर के
बाकी अंग सबके मन इसके बुरी तरह कायल थे । वे थकन चाहत थे—
ऐसी थकन, जो उन्हें मक्भोरकर, उन्हें मारकर, सोन पर मजबूर कर
दे । ऐसी नींद जो थककर चूर-चूर होत के बाद आत कितनी मजेदार
होती है यह वेहोगी, जो मार खाकर, जोड़ जोड़ ढीले हो जान पर
छा जाती है । कितना आनंद देती है । कभी ऐसा लगता है कि तुम हो,
कभी ऐसा लगता है कि तुम नहीं हो और इस होत और न होत के बीच
कभी कभी ऐसा महसूस होता है कि तुम हवा में बहुत ऊंची जगह लटके
हुए हो । ऊपर हवा, नीचे हवा, दायें हवा, बायें हवा—बस, हवा ही हवा ।
और फिर उस हवा में दम घुटना भी एक सास मजा देता है ।

बचपन में, जब वह आठ मिचीली खेला करती थी और अपनी मा
या बड़ा सा दूब खोलकर उसमें छिप जाया करती थी तो नाकाकी हवा में
दम घुटने के साथ साथ पकड़े जाने के डर में वह तेज घटकन, जो उसके
दिन में पैदा हो जाया करती थी, कितना मजा दिया करती थी ।

सुग धी चाहती थी कि अपनी सारी जिंदगी ऐस ही किसी मनुक में छिपकर गुजार दे जिसके बाहर दूढ़ने वाले फिगत रहें। कभी कभी उसको दूढ़ निवाले, ताकि वह भी उनको दबन की कोशिश करे। यह जिंदगी, जो वह पांच वरम से बिता रही थी आख मिचौली ही तो थी। कभी वह किसीका दब लेती थी और कभी कोई उसे दब लेता था। वस, या ही उसका जीवन बीत रहा था। वह खुश थी, इसलिए कि उसको खुश रहना पड़ता था। हर रोज रात को कोई न कोई मद उसके चौंटे सागौनी पलंग पर होता था और सुग धी, जिसकी मदों को ठीक करने के अनगिनत गुरु याद थे इस रात का बार बार निश्चय करने पर भी कि वह उन मदों की कोई ऐसी वैसी बात नहीं मानगी और उनके साथ बड़े खेपन से पेश आएगी हमेशा अपनी भावनाओं की धारा में वह जाया करती थी और सिर्फ एक प्यासी औरत रह जाया करती थी।

हर रोज रात को उसका पुराना या नया मुलाकाती गमसे कहा करता था, 'सुग धी। मैं तुझमें प्यार करता हूँ।' और सुग धी, यह जानत हुए भी कि वह झूठ बोलता है मोम हो जाती थी और ऐसा महसूस करती थी, जैसे सबकुछ उससे प्यार किया जा रहा है। प्यार, कितना मुंदर गन्ध है। वह चाहती थी, उसकी पिघलाकर अपने सारे अंगों पर मल ले उसकी मालिश कर ताकि यह सार का सारा उसके त्विस्म में रच जाए या फिर वह खुद उसके अंदर चली जाए। सिमट सिमटकर उसके अंदर दाखिल हो जाए और ऊपर से ढकना बंद कर दे। कभी-कभी जब प्यार करने और प्यार किए जाने की इच्छा उसके अंदर शिद्ध से उठती तो कई बार उसके मन में आता कि अपने पास पड़े हुए आदमी को गोद में लेकर घपघपाना शुरू कर दे और नोरिया देकर उस अपनी गोद में ही सुला दे।

प्यार कर सबन की गक्ति उसके अंदर इतनी ज्यादा थी कि हर उस मद से, जो उसके पास आता था वह प्यार कर सकती थी और फिर उसको निभा सकती थी। अब तक चार मदों में (जिनकी तस्वीरें उसके सामने दीवार पर लटक रही थी) वह प्यार निभा ही तो रही थी। हर समय यह एहसास उसके दिल में बना रहता था कि वह बहुत अच्छी है।

जहरत हो और मुझे तरी ! पूरा म हवलदार हू । महीने में एक बार आया करूंगा तीन चार दिन के लिए यह घ-घा छोड़ मैं तुझे खब द दिया करूंगा क्या भाडा है इस म्मोनी का ?'

माधो न और भी बहुत कुछ कहा था, जिसका असर सुग-वी पर इतना ज्यादा हुआ था कि वह कुछ क्षणा के लिए अपने आपको हवलदारनी समझन लगी थी । बातें करने के बाद माधो न उसके कमर की बिखरी हुई चीजें करीने स रखी थी और नगी तस्वीरें, जो सुग-वी न अपने सिरहाने लगा रखी थी, बिना पूछे फाड़ दी थी और कहा था, 'सुग-वी, भई मैं ऐसी तस्वीरें यहां नहीं रखन दूंगा और पानो का यह घड़ा दल तो, कितना मला है और ये ये चिथड़े ये बिदिया उफ, कितनी बुरी दास आती है ! उठा के बाहर फेंक इनको और तूने अपने बाला का क्या सत्यानाश कर रखा है और और ।'

तीन घंटे की बातचीत के बाद सुग-वी और माधो दोनों आपस में घुलमिल गए थे और सुग-वी को तो ऐसा महसूस हुआ था, जैसा वह प्रेमा से हवलदार को जानती है । उस वक्त तक किसीने भी कमरे में बदबूदार चिथड़ा, मैने घड़े और नगी तस्वीरों की मौजूदगी का खयाल नहीं किया था और न कभी किसीने उसको यह महसूस करने का मौका दिया था कि उसका एक घर है, जिसमें घरलूपन आ साता है । लोग आते थे और बिस्तर तक की गंदगी को महसूस किए बिना चले जाते थे । काह सुग-वी से यह न जाता था, देख तो आज तरी नाक कितनी लाल हो रही है । कहीं जुकाम न हो जाए मुझे ठहर मैं तरे लिए दवा लाना हू । माधो कितना अचूक था ! उसकी हर बात बावन तोला और पाव रत्ती की थी । क्या खरी गरी सुनाई थी उसने सुग-वी को ! उसे महसूस होन लगा कि उस माधो की जहरत है और इसलिए उन दोनों का सम्बन्ध हो गया ।

महीने में एक बार माधो पूने से आता था और वापस जान हुए हमेशा सुग-वी से कहा करता था देख सुग-वी ! अगर तूने फिर स अपना घ-घा शुरू किया तो बस तेरी मेरी टूट जाएगी । अगर तूने एक बार भी किसी मद को अपने यहां ठहराया तो चुटिया से पकड़कर बाहर

निकाल दगा देग, इस महीने का गव मैं तुम्हें पूना पहुँचाते ही मनीषाईर कर दूंगा हा, क्या जाना है इस खोती का ?'

१ माघी १ बभी पून म गव भेजा था और १ मुगधी ने अपना धाधा बंद किया था। दोनों अच्छी तरह जानत थे, क्या हो रहा है। न मुगधी न माघी म यह कहा था, 'तू यह टर टर क्या करता है। अब फूटी कीड़ी भी दी है बभी तून ?' और न माघी न बभी मुगधी स पूछा था 'यह मान तर पान कहा म आता है, जबकि मैं तुम्हें कुछ देना ही नहीं।' दोनों झूठे थे, दोनों एक मित्र की हृद जिंदगी जिता रहे थे। लेकिन मुगधी खूब थी। जिसका समय सोना पहान को न मिले, वह मिलट किए हुए गहना पर ही सताप पर लिया करता है।

उम समय मुगधी धकी भादी मो रही थी। बिजली का हण्डा, जिसे वह आफ करना शुरू गई थी, उसके सिर के ऊपर खटख रहा था। उमकी तज रोगनी उसकी मुदी हुई आवाज के साथ टकरा रही थी, पर वह गहरी नींद सो रही थी।

दरवाजे पर दस्तक हुई। रात के दो बजे यह कौन आया था ? सपनों में डूबे हुए मुगधी के कानों में दस्तक की आवाज भनभनाहट बन-घर पहुँची। दरवाजा जब जोर से खटखटाया गया तो वह चौंकर उठ बैठी। दो मिनी जुना गराबो और दातो की रीखों में फस हुए मछली के नेंगो न उमके मुह के धंदर ऐसा लुभाव पैदा कर दिया था, जो बेहद कमला और नमदार था। धोती के पल्लू में उसने यह बदबूदार लुभाव साफ किया और आखें मंनने लगी। पलंग पर वह झकेली थी। झुककर उमन पलंग के नीचे देखा तो उसका बुत्ता, सूखी हुई चप्पनो पर मुह रख, सो रहा था और नींद में किसी अनजान चीज को मुह चिढ़ा रहा था। तोता पीठ के बालों में सिर दिए मो रहा था।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई। मुगधी विस्तर में उठी। उमका सिर दब के मारे फटा जा रहा था। घड़े स पानी का एक डोंगा निवालनर उसने कुल्ली की और दूसरा डोंगा गटागट पीकर उसने दरवाजे का पट थोड़ा-सा खोला और कहा, 'रामलाल !'

रामलाल, बाहर दस्तक देते देते थक गया था, भन्नाकर बोला 'तुम्हें साथ सूझ गया था या क्या हुआ गया था ? एक घण्टे से बाहर खड़ा दरवाजा खटखटा रहा हूँ। कहाँ मर गई थी ?' फिर आवाज दबाकर उसने हील से पूछा, 'अगर कोई है तो नहीं ?'

जब सुगंधी ने कहा 'नहीं' तो रामलाल की आवाज फिर ऊँची हो गई, 'तू दरवाजा क्यों नहीं खोलती ? भई हट हो गई। क्या नींद पाइ है ! ऐसे एक एक छोकरी को उठाने में दो दो घण्टे सिर खपाना पड़े तो मैं अपना धँधा कर चुका। अब तू मेरा मुँह क्या देखती है। भटपट यह धौती उतारकर वह फूलों वाली साड़ी पहन पाउटर बाउंडर लगा और चल मेरे साथ बाहर मोटर में एक सेठ बैठे तेरा इंतजार कर रहे हैं। चल चल, एकदम जल्दी कर !'

सुगंधी आरामकुर्सी पर बैठ गई और रामलाल आईन के सामने अपने बालों में कंधी करने लगा।

सुगंधी ने तिपाई की तरफ हाथ बढ़ाया और वाम की दीवार उठाकर उसका ढकना खोलते हुए कहा, 'रामलाल, आज मेरा जी अच्छा नहीं।

रामलाल ने कंधी दीवारगीर पर रख दी और मुड़कर कहा, 'तो पहले ही कह दिया होता।

सुगंधी ने माथे और कनपटियों पर वाम मलते हुए रामलाल का भ्रम दूर कर दिया, 'वह बात नहीं रामलाल ऐसे ही मेरा जी अच्छा नहीं बहुत पी गई।'।

रामलाल के मुँह में पानी भर आया, 'थोड़ी बची हो तो ला, जरा हम भी मुँह का मजा ठीक कर लें।'।

सुगंधी ने वाम की शीर्ष तिपाई पर रख दी और कहा, 'बचाइ होनी तो यह मुँहासों में दब ही क्यों होता।' तब रामलाल, वह जो बाहर मोटर में बैठा है उस अदर ही लगा।

रामलाल ने जवाब दिया 'नहीं भई वे अदर नहीं आ सकते। जेष्ठलमन आदमी हैं। वे तो मोटर को गली के बाहर खड़ी करत हुए भी घबरात थे तू बपड़े-बपड़े पहन ले और जरा गली के नुक्कड़ तक चल सब ठीक हो जाएगा।'।

माढे सान रूपय का सौदा था। सुगंधी उस हालत में, जबकि उसके सिर में बेहिमाव दब हो रहा था, अभी स्वीकार करती तबिन उस रूपय की सहज जहरत थी। उसके माथ वाली खोली में एक मद्रामी धीरत रहती थी, जिसका पति मोटर के नीचे धावर मर गया था। उस धीरत को अपनी जयान लडकी के माथ अपने घर जाना था, लेकिन उसके पास चूकि किराया ही नहीं था, इसलिए वह असहाय भयस्था में पड़ी थी। सुगंधी ने बल ही उसके कांस दिया था और उससे कहा था, 'बहन, तू चिंता न कर। मेरा आदमी पून से आनेवाला है। मैं उसने कुछ रूपय लेकर तूरे जान का वन्दोवस्त कर दूंगी।'।

माघी पूना से आनेवाला था पर रूपयों का प्रबंध तो सुगंधी को ही करना था। इसलिए वह उठी और जल्दी-जल्दी कपड़े बदलन लगी। पांच मिनट में उसने धोती उतारकर, पूना वाली साड़ी पहनी और गला पर साल पाउडर लगाकर तयार हो गई। घड़े से ठण्डे पानी का एक और डाला उसने पिया और रामलाल के साथ ही ली।

गली जो कि छोटे गहरा के बाजारा में भी कुछ बड़ी थी बिल्कुल खामोश थी। गैम के बलैम्प जो खम्भा पर जड़े थे पहल की बनिम्बत बहुत धुंधली रोगनी दे रहे थे। लडाई के कारण उनके शीगा की गदला कर दिया गया था। उस आंधी रोगनी में गली के आखिरी सिरे पर एक मोटर नजर आ रही थी।

कमजोर रोगनी में उस वाते रंग की मोटर का माया नजर आया और रात के पिछले पहर का भेद भरा सनाटा सुगंधी को ऐसा लगा कि उसके सिर का दब सारे माहौल पर छा गया है। एक बसैलापन उसे हवा के आदर भी महसूस होता था, जैसे आण्डी और ब्योडे की घाम से वह भी बोभिन हो रही हो।

आगे बढ़कर रामलाल ने मोटर के आदर बैठे हुए आदमियों से कुछ कहा। इतने में जब सुगंधी मोटर के पास पहुच गई तो रामलाल एक तरफ हटकर गीना सीजिए, वह आ गई बड़ी अच्छी छोकरी है। थोडे

ही दिन हुए हैं इस धंधा गुट किए।' फिर सुगंधी की ओर मुड़कर कहा, 'सुगंधी, इधर आ, मेठजी बुलाते हैं।'

सुगंधी मांजी का एक किनारा अपनी उंगली पर लपटती हुई आग बंदी और मोटर के पास खड़ी हो गई। मठ माटव ने टाच स उसके चेहरे के पास रोगनी की। एक क्षण के लिए उस रोशनी ने सुगंधी की गुमार-भरी आँखों में चकाचौंध पैदा की। बदन दबाने की आवाज पैदा हुई और रोशनी बुझ गई। साथ ही मठ के मुह में एक 'ऊह' निकली। फिर एक-दम मोटर का इंजन फटपड़ाया और कार यह जा, वह जा

सुगंधी कुछ मोच भी नहीं पाई कि मोटर चल दी। उसकी आँखों में अभी तक टाच की तेज रोशनी धुसी हुई थी। वह मेठ का चेहरा भी तो ठीक तरह नहीं देख सकी थी। यह आखिर हुआ क्या था? इस 'ऊह' का क्या मतलब था, जो अभी तक उसके कानों में भाभना रही थी? क्या?

रामलाल दलाल की आवाज सुनाई दी, 'पसंद नहीं किया तुम्हें। अच्छा भई मैं चलता हूँ।' जो घण्टे मुफ्त में ही बग़वाद किए।'

यह सुनकर सुगंधी की टांगों में, उसकी बांहों में, उसके हाथों में एक जबरदस्त हरकत का इरादा पैदा हुआ। कहा भी वह मोटर कहा था वह सठ तो 'ऊह' का मतलब यह था कि उसने मुझे पसंद नहीं किया उसकी

गाली उसके पेट के अंदर से उठी और जवान की नोक पर आकर रुक गई। वह आखिर गाली किसे देती? मोटर तो जा चुकी थी। उसकी दुम की लाल बत्ती उसके सामने, बाजार के अधिपते में डूब रही थी। और सुगंधी की ऐसा महसूस हो रहा था कि यह लाल लाल अगारा ऊह है, जो उसके सीन में बर्मे की तरह उतरा चला जा रहा है। उसकी जी में आया कि जार से पुकारे, 'ओ सेठ ओ सेठ जरा मोटर रोकना अपनी बस, एक मिनट के लिए।' पर वह सेठ, यूँ ही उसकी जात पर, बहुत दूर निकल चुका था।

वह सुनसान बाजार में खड़ी थी। फूला वाली साड़ी, जिसे वह खास-खास मौकों पर पहना करती थी, रात के पिछले पहर की हल्की फुल्की

हवा में लहरा रही थी। यह साड़ी और उसकी रेशमी सरमराहट सुन धी की कितनी बुरी मालूम हो रही थी। वह चाहती थी कि उस साड़ी के चिथड़े उड़ा दे, क्योंकि साड़ी हवा में लहरा लहराकर 'ऊह ऊह' कर रही थी।

गाना पर उसने पाउटर लगाया था कि हाठा पर सुर्खी। जब उसे दरयाल आया कि यह सिगार उसने अपने आपको पमाद कराने के लिए किया था तो उस के बारे में उसे पसीना आ गया। यह क्षमि-दगी बुर करन के लिए उसने क्या कुछ न सोचा, 'मैंन उस मुण हो दिवान के लिए थोड़े ही अपना आपको सजाया था। यह तो मेरी आदत है—मेरी क्या, सबकी यही आदत है पर पर यह रात के दो बजे और रामनाल दलाल और यह बाजार और यह मोटर और टाच की चमक।' यह सोचते ही रोशनी के घबरे उसकी नजर की हद तक फिजा में इधर उधर तैरन लग और मोटर के इंजन की फड़फड़ाहट उसे हवा के हर भोरे में मुनाई देने लगी।

उसके माथे पर बाब का जेप, जो सिगार करते समय विलकुल हलका हो गया था, पसीना आने की वजह से उसके लोम र धा में दाविल होन लगा और सुन-धी की अपना माथा किसी और का माथा मालूम हुआ। जब हवा का एक झोका उसने पसीन से भीग माथे के पाम से गुजरा तो उस ऐसा लगा कि ठण्डा-ठण्डा टीन का टुकड़ा काटकर उसके माथे के माथ चिपका दिया गया है। फिर म दद वेंम का वसा मौजूद था पर बिचारा की भीड़भाड़ और उनके शोर ने उस दद को अपने नीचे दबा रखा था। सुन-धी ने कई बार उस दद को अपने मयागो के नीचे स निहालकर ऊपर लाना चाहा, पर नाकाम रही। वह चाहती थी कि किसी ने किसी तरह उसका भ्रम भग दुखन सग। उन्हें सिर में दद हो—एसा दद कि वह सिफ दद ही का धयाल कर, बाकी सब कुछ भूल जाए। यह सोचते सोचते उसके दिल में कुछ हुआ—क्या यह दद था?—पल भर के लिए उसका दिल मिट्टड़ा और फिर फैल गया—यह क्या था? सानत है। यह तो वही ऊह थी, जो उसके दिल के अंदर अभी मिट्टडती थी और अभी फैलती थी।

घर की तरफ सुगंधी के बरामदे में ही थे कि रुक गए और वह ठहर कर सोचने लगी, रामलाल दलाल का खयाल है कि उस मरी शक्ल पर द नही आई—शक्ल का तो उमन जिन् नही किया। उसने तो यह कहा था—सुगंधी, पसंद नही किया तुम्हें। उसे उस सिर्फ मेरी गन्त ही पर द नही आती। वह, जो अमावस की रात को आया था, कितनी बुरी सूरत थी उसकी। क्या मैं नाक-भौ नही चढ़ाई थी? जब वह मेरे साथ सोने लगा था तो मुझे घिन नही आई थी? क्या मुझे उबकाइ आते आते नही रुक गई थी? ठीक है पर सुगंधी, तूने उसे दुत्कारा नही था, तूने उसे ठुकराया नही था, उस मोटर वाले सेठ ने तो तू पर धुका है ऊह इस 'ऊह' का और मतलब ही क्या है? यही कि इस छछू दर के सिर में चमेली का तल ऊह यह मुह और मसूर की दाल और रामलाल, तू यह छिपकली बहा में पकड़कर ले आया है इसी लीपटिया की इतनी तारीफ कर रहा था तू दस रुपये और यह औरत! खूबसूरत बुरी है

सुगंधी सोच रही थी और उसके पैर के अंगूठे स लेकर सिर की चोटी तक गम लहरें दौड़ रही थी। उसकी कभी अपने आपपर गुस्सा आता था और कभी रामलाल दलाल पर, जिसने रात के दो बजे उसे बमाराम किया। लेकिन फिर ही दोनों का देवसूरपाकर वह सठ का खयाल करती थी। उस खयाल के आते ही उसकी आँखें उसके बान उसकी बाह उसकी टाँगें उनका सत्र कुछ मुझता था कि उस सठ की कभी देख पाए। उसने अंदर यह इच्छा बड़ी गिहन स पदा हो रही कि जो कुछ हो चुका है, एक बार फिर ही सिर्फ एक बार वह होन होने मोटर की तरफ बढ़े, मोटर के अंदर स एक हाथ टाच निकाले और उसमें गेहरे पर रोगनी फेंकें 'ऊह' की आवाज आए और सुगंधी अघाघुघ अपने दोन पंजा से उनका मुह नोचना शुरू कर दे। जगली बिल्ली की तरह भगटे और अपनी जगलिया क सार नाखून जो उसने नय पंज के मुताबिक बना रखे थे, उन सठ क माला म गटा द बाना म पकड़कर उन बाहर घमोट ल और घडाघडा पीटना शुरू कर दे, और जग यर जाए जब यर जाए तो रोना शुरू कर दे।

रोने का खयाल सुगंधी को सिर्फ इसीलिए आया कि उसकी आत्मा में गुस्सा और बेवसी की शिद्दत के कारण तीन चार बड़े बड़ आसू बन रहे थे। एकाएक सुगंधी ने अपनी आत्मा से मवाल किया, 'तुम रोती क्यों हो? तुम्हें क्या हुआ है कि टपकने लगी हो?' आत्मा से किया गया सवाल कुछ क्षणों तक उन आसुओं में तैरता रहा, जो अब पलका पर काप रहे थे। सुगंधी उन आसुओं में देर तक उस शून्य को घूरती रही, जिधर सेठ की मोटर गई थी।

फट फड फड यह आवाज कहाँ से आई? सुगंधी ने चौंकर इधर उधर देखा, लेकिन किसीको न पाया अरे! यह तो उसका दिल फडफड़ाया था—वह समझी थी, मोटर का इंजन बोला है! उसका दिल यह क्या हो गया था उसके दिल को! आज ही यह राग लग गया था उसे अच्छा भला चलता चलता, एक जगह रुककर धड़ धड़ क्या करता था बिलकुल उस धिसे हुए रिक्काड की तरह, जो मुड़ के नीचे एक जगह आकर रुक जाता था और 'रात कटी गिन गिन तारे कहता कहता 'तारे-तारे की रट लगा देता था।

आसमान तारों से भटा हुआ था। सुगंधी ने उनकी ओर देखा और कहा, 'कितने सुंदर है।' वह चाहती थी कि अपना ध्यान किसी और तरफ पलट दे, पर जब उसने 'सुंदर' कहा तो भट से यह खयाल उसके दिमाग में बूझा, 'ये तारे सुंदर हैं, पर तू कितनी भोण्डी है क्या भूल गई कि अभी अभी तेरी सूरत को फटकारा गया है?'

सुगंधी कुरूप तो नहीं थी। यह खयाल आते ही वे सारी परछाइयाँ एक एक करके उसकी आत्मा के सामन आन लगीं, जो इन पाँच बरसा के दौरान वह आइन में देख चुकी थी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि उसका रंग रूप अब वह नहीं रहा था, जो आज से पाँच साल पहले था, जबकि वह सारी चिन्ताओं से मुक्त, अपने माँ बाप के साथ रहा करती थी। लेकिन वह कुरूप तो नहीं हो गई थी। उसकी शक्ल सूरत उन आग औरतों की सी थी, जिनकी ओर मद गुजरते गुजरते धूरकर देख लिया करत है। उसमें वे सारी लूँकियाँ मौजूद थीं, जो सुगंधी के खयाल में हर मद उस औरत में जरूरी समझता है, जिसके साथ उसे एक दो रातें बितानी होती

हैं। वह जान थी, उमने अग मुचीन थे। वभी-वभी, नहाते समय तब उमकी निगाह अपनी गना पर पती था तो वह खुन उनकी गानाई और गदराहट की पसंद किया करनी थी। वह हगमुय थी। इन पाच वरमा के दौरान शायद ही कोई आदमी उमम नामुश होकर गया हो वही मिलनमार थी, वही महत्त्व थी। पिछन दिनो, निमस म, जब वह गोन पीठा म रहा करती था एक नीजवान लका उमके पास आया था। सुबह उठकर, जस उसने कमर म जाकर, गटी से अपना कोट उतारा तो बटुआ गायब पाया। सुग धी का नौकर यह बटुआ ले उया था। बेचारा बहुत परेशान हुआ। छुट्टिया बिताव के लिए हैटरावा म वम्बई आया था। अज उमके पास थापम जान के निण भी बिराया न था। सुग धी न तरस लाकर उसे उसके दस रुपये थापम द दिए थे।

‘मुभम क्या बुराई है?’ सुग धी त यह सवाल हर उम चीज से किया, जो उसकी आखा के सामन थी। गैस के अंध लैम्प लोह के खम्भे, फुट पाथ के चौकोर पत्थर और सड़क की उखड़ी हुई वजरी—इन सब चीजा की तरफ उसन बारी-बारी म दबा, फिर आनाश की ओर निगाह उठाई, जो उसके ऊपर झुका हुआ था, पर सुग धी को कोई जवाब न मिला।

जवाब उसके अंदर मौजूद था। वह जानती थी कि वह बुरी नहीं, अच्छी है पर वह चाहती थी कि कोई उमका समयन करे कोई कोई

उम वक्त कोई उसके कंधो पर हाथ रखकर सिफ इतना कह दे, सुग धी। कौन कहता है तू बुरी है? जो तुझे बुरा कहे, यह आप बुरा है। नहीं, यह कहन की कोई खाम जरूरत नहीं थी। किसीका इतना भर कह देना काफी था सुग धी, तू बहुत अच्छी है।’

वह सोचन लगी कि वह क्यों चाहती ह, कोई उसकी तारीफ करे? इससे पहले उसे इतनी गिहट से इस बात की जहरत महसूस न हुई थी। आज क्या वह बेजान चीजो को भी ऐसी नजरो से देखती है, तम उनपर अपन अच्छे होने का एहसास तारी करना चाहती हो। उमके जिस्म का जरा जरा क्या ‘मा बन रहा था? वह मा बनकर धरती की हर चीज को अपनी गोद म लेने के लिए क्या तैयार हो रही थी? उसका जी क्या चाहता था कि वह सामन वाले तम के खम्भे के माथ चिमट जाए और

उमके ठण्डे लोहे पर अपना गान रगट—आने गम-गम गान—और उसकी सारी सर्दी धूम ने ?

थोड़ी देर के लिए उस ऐसा लगा कि गैम के अर्धे सैम्प लाहे क खम्भे, फुटपाथ के चौबोरे पत्थर और हर वह चीज, जो रात के सन्नाटे में उसके आमपाम थी, हमदर्दी की नजरा से उस दब रही है और उमके ऊपर नुका हुआ आवाज भी, जो मटियाल रंग की ऐसी माटी चादर भालूम होना था, जिसमें अनगिनत छेद हो रहे हैं, उमकी गानें ममभना था और मुग की को भी ऐसा लगता था कि वह तारा का टिमटिमाना ममभनी है—परन्तु उमके अन्दर यह क्या गड़बड़ थी ? वह क्या अपने अन्दर उम मौसम की फिजा महसूस कर रही थी, जो बाग़िदा में पहले बजने में आया करती है ?—उसका जी चाहता था कि उसके जिम्मे का एक-एक तौम रंज गुल जाए और जो कुंठ उमके अन्दर उबल रहा है, उनके गस्ते बाहर निकल जाए। पर यह कैसे हो ?

सुगंधी गरी के नुक्कड़ पर रत टालने वाले गाल बम्बे के पास खड़ी थी। हवा के तज भोके में बम्बे की लोहे की जीभ जो उसके खुले हुए मुँह में लटकी रहती थी गन्गवाड़ी तो सुगंधी की निगाह एकदम उम और उठो, जिधर मोटर गई थी, पर उस कुछ दिशाई न दिया। उसके अन्दर कितनी जबरदस्त इच्छा थी कि वह सठ मीटर पर एक बार फिर आए और और

न आए बला से मैं अपनी जान क्या बेकार हलकान करूँ। घर चलते हैं और आराम में लम्बी तानका सीत हैं। इन भगडा में रस्ता ही क्या है ? मुपन की मिरन्दो ही तो है चल सुगंधी, घर चल ठण्डे पाती का एक डोंगा पी और थोड़ा सा वाम मलबर से जा फस्ट बराम मोद आएगी और सब ठीक हो जाएगा सठ और उस मोटर की ऐनी की तसी

यह सोचते हुए सुगंधी का वीम हलका हो गया, जैम वह किमी ठण्डे सलाख से नहा धोकर बाहर निकली हो। जिस तरह पूजा करन के बाद उसका शरीर हलका हो जाता था, उसी तरह अब भी हलका हो गया था।

घर की तरफ चलन लगी तो विचारा का बोझ न होन के कारण उसके कदम कई बार लड़खड़ाए ।

अपन मकान के पास पहुँची तो एक टीस के साथ फिर सारी घटना उसके मन में उठी और दद की तरह उसके रोए-रोए पर छा गई । कदम फिर बोझिल हो गए और वह इस बात को शिद्दत के साथ महसूस करने लगी कि घर से बुलाकर, बाहर बाजार में मुह पर रोशनी का चाटा मारकर, एक आदमी ने अभी-अभी उसकी हतक की है । यह खयाल आया तो उमन अपनी पसलियों पर किसीके सख्त अंगूठे महसूस किए, जैसे कोई उसे भेड़ बकरी की तरह दबा दबाकर देख रहा हो कि गोस्त भी है या बाल ही है । 'उस सेठ न, परमात्मा करे ' सुगंधी ने चाहा कि उसे क्षाप दे, पर सोचा, क्षाप देने से क्या बनगा । मजा तो तब था कि वह सामने होता और वह उसका बजूद के हर जेरे पर अपनी धक्कारें लिख देती उसके मुह पर कुछ ऐसी बात कहती कि वह जिदगी भर बेचन रहता ।

कपड़े फाड़कर उसके सामने नहीं हा जाती और कहती, 'यही लेने आया था न तू ? ल, दाम दिए बिना ले जा इमे पर जो कुछ मैं हूँ, जो कुछ मेरे अदर छिपा है वह तू क्या तेरा बाप भी नहीं खरीद सकता '

बदला देने के नये नये तरीके सुगंधी के दिमाग में आ रहे थे । अगर उस सेठ से एक बार, सिर्फ एक बार उसकी मुठभेड़ हो जाए तो वह यह करे—यू उमस बदला ले—नहीं, यू नहीं, यू—लेकिन जब सुगंधी सोचती कि सठ से उसका दाजारा मिलना असम्भव है तो वह उसे एक छोटी सी गाली देने पर ही खुद को राची कर लेती—बस, सिर्फ एक छोटी सी गाली, जो उसकी नाक पर चिपकू मक्खी की तरह बठ जाए और हमेशा वही जमी रह ।

इसी उधेड़बुन में वह दूसरी मजिल पर अपनी खोली के पास पहुँच गई । खोली में से चाबी निकालकर ताला खोलने के लिए हाथ बढ़ाया तो चाबी हवा ही में घूमकर रह गई । कुण्डे में ताला नहीं था । सुगंधी ने किवाड़ अदर की ओर दबाए तो हत्की-सी चरचराहट पैदा हुई । अदर से किसीन कुण्डी खाली और दरवाजे न जम्माई ली । सुगंधी अदर

दाखिन हो गई ।

माधो मूछा में हसा और दरवाजा बंद करके मुग़धी से कहा लगा, 'आज तून मरा कहना मान ही लिया—सुबह की सैर त दुग़स्ती के लिए बड़ी अच्छी होती है । हर रोज इसी तरह सुबह उठकर घूमन जाया करेगी तो तेरी नारी सुन्ती दूर हो जाएगी और तेरी कमर बा बह दद भी गायब हो जाएगा, जिनकी शिकायत तू आए दिन किया करती है । बिक्टोरिया गार्डन सब तो हा आई होगी तू ? क्यों ?'

मुग़धी ने कोई जवाब नहीं दिया और न माधो ने जवाब चाहा । दर-असल जब माधो बात किया करता था तो उसका मतलब यह नहीं होता था कि मुग़धी उसमें जरूर हिस्सा ले और मुग़धी जब कोई बात किया करती थी तो यह जरूरी नहीं होता था कि माधो उसमें भाग ले—बूँकि कोई बात करने की होती थी, इसलिए वे कुछ कह दिया करते थे ।

माधो बेंत की पुर्मी पर बठ गया, जिसकी पीठ पर उसके तेल चुपड़े मिर न मल का बहुत बड़ा घंवा बना रखा था, और टांग पर टांग रख-कर अपनी मूछा पर उगलिया करने लगा ।

मुग़धी पलंग पर बैठ गई और माधो से कहन लगी, 'मैं आज तेरी बाट ही देन रही थी ।'

माधो बड़ा सितपिटाया, 'मरी बाट । पर तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि मैं आज आन वाला हूँ ?'

मुग़धी के भिचें हुए हाठ खुले, उनपर एक पीली-सी मुस्कराहट नमू-दार हुई, 'मैं रात तुम्हें सपन में देखा था—उठी तो कोई भी न था । सो मन में कहा चलो, कहीं बाहर घूम आए और '

माधो मुग़ होकर बोला, 'और मैं आ गया भई, बड़े लोगा की बातें बड़ी पक्की होनी हैं । किसीन ठीक कहा है दिल को दिल से राह है तूने यह सपना कब देखा था ?'

मुग़धी ने उत्तर दिया, 'चार बजे के करीब ।'

माधो कुर्सी पर बैठकर मुग़धी के पास बैठ गया, 'और मैंने तुम्हें ठीक दो बजे सपने में देखा जैसे तू फूला वाली साड़ी अरे, बिलकुल यही साड़ी पहन मेरे पास खड़ी है । तेरे हाथों में क्या था तेरे हाथों

मे ? हा, तेरे हाथा मे रुपयो से भरी हुई थैली थी । तू न वह थैली मेरी भोली मे रख दी और कहा, माधो, तू चिन्ता क्यों करता है ? ले यह थैली अरे, तेरे-मेरे रुपये क्या दो हैं ? सुगंधी तरी जान की कम, फोरन उठा और टिकट बनाकर इधर का रस किया क्या बताऊ, बड़ी परेशानी है । बैठे बैठे एक केस हो गया है । अब बीस-तीस रुपये हा तो इस्पेक्टर की मुट्ठी गम करके छुटकारा मिले थक तो नहीं गई तू ? लेट जा, मैं तेरे पाव दवा दू । घूमन की आदत न हो तो थकन हो ही जाया करती है । इधर मेरी तरफ पैर करके लेट जा ।'

सुगंधी लेट गई । दोनों बाहा का तबिया बनाकर, वह उनपर सिर रखकर लेट गई और उस लहजे में, जो उसका अपना नहीं था, माधो स कहन लगी, 'माधो, यह किस मुए ने तुझपर केस किया है ? जेल वेल का डर हो तो मुझने कह दे । बीस तीस क्या, सौ पचास भी ऐसे मौका पर पुलिस के हाथ मे थमा दिए जाए तो फायदा अपना ही है—जान बची लाखा पाए । बस-बस, अब जाने दे, थकन कुछ ज्यादा नहीं है—मुट्ठी चापी छोड़ और मुझे सारी बात सुना । केस का नाम सुनते ही मेरा दिल धक धक करने लगा है वापस कब जाएगा तू ?'

माधो की सुगंधी के मुह मे शराब की बास आई । उसने यह मौका अच्छा समझा और झट से कहा, 'दोपहर की गाडी से वापस जाना पड़ेगा । अगर शाम तक सब इस्पेक्टर को सौ पचास न थमाए तो ज्यादा देने की जरूरत नहीं, मैं समझता हूँ, पचास मे काम चल जाएगा ।'

'पचास ।' यह कहकर सुगंधी बड़े आराम से उठी और उन चार तस्वीरो के पास धीरे धीरे गई, जो दीवार पर लटक रही थी । बायीं तरफ से तीसरे प्रेम मे माधो की तस्वीर थी । बड़े-बड़े फूलो वाले पर्दे के आगे, कुर्सी पर वह दोनों राना पर अपने हाथ रखे बैठे था । एक हाथ मे गुलाब का फूल था । पास ही तिपाई पर दो मोटी मोटी किताबें धरी थी । तस्वीर खिचवाते समय, तस्वीर खिचवान का खयाल माधो पर इतना छा गया था कि उसकी हर चीज तस्वीर से बाहर निकल निकलकर—जैसे पुकार रही थी—'हमारा फोटो उतरेगा ' 'हमारा फोटो उतरेगा ।

कैमरे की तरफ माधो आखें फाड़ फाड़कर देख रहा था और ऐसा

मालूम होता था कि फोटो उतरवाते समय उसे बड़ी तय्यारी हो रही है।

सुगंधी खिलखिलाकर हस पड़ी— उसकी हसी कुछ ऐसी तोली और नुकीली थी कि माधो को मुझ्या सी चुभो। पलंग पर स उठकर वह सुगंधी के पास आ गया, किम्वी तस्वीर देखकर तू इतने जोर में हसी है।'

सुगंधी न बाण हाथ की पहली तस्वीर की तरफ इशारा किया, जो म्युनिसिपैलिटी के सफाई-दारोगा की थी, 'इसकी मुनशीपालटी के इस दारोगा की जरा देख तो इमबा थोबड़ा, कहता था, एक रानी मुझपर आगि हो गई थी ऊह 'यह मुह और मसूर की दाल ' यह कहकर सुगंधी न फ्रेम को इस जोर से खोचा कि दीवार में से कील भी पलस्तर सहित उखड़ आई।

माधो का अचरज अभी दूर न हुआ था कि सुगंधी ने फ्रेम को बिड़की से बाहर फेंक दिया। दो मजिला से वह फ्रेम नीचे जमीन पर गिरा और काच टूटने की भनकार मुनाई दी। सुगंधी ने उस भनकार के साथ कहा, 'रानी भगिन बचरा उठाने आएगी तो मेरे इस राजा की भी माध से जाएगी।'

एक बार फिर उसी नुकीली और तीखी हसी की फुहार सुगंधी के होंठों से गिरनी शुरू हुई, जैसे वह उनपर चाकू या छुरी की धार तेज कर रही हो।

माधो बड़ी मुश्किल से मुस्कराया। फिर हसा, 'ही-ही ही ।'

सुगंधी ने दूसरा फ्रेम भी गोच लिया और बिड़की से बाहर फेंक दिया, 'इस साले का यहा क्या मतलब है ? भोण्डी शक्ल का कोई आदमी यहा नही रहगा क्या माधा ?'

माधो फिर बड़ी मुश्किल से मुस्कराया और फिर हसा, 'ही ही-ही ।'

एक हाथ से सुगंधी न पगड़ी वाले की तस्वीर उतारी और दूसरा उस फ्रेम की तरफ बनाया, जिसमें माधो का फोटो जड़ा था। माधो अपनी जगह पर सिमट गया, जैसे हाथ उसीकी तरफ बढ़ रहा हो। पल भर में फ्रेम कील सहित सुगंधी के हाथ में था।

जोर का ठहाका लगाकर उसने 'ऊह' की और दोनों फ्रेम एकमात्र खिड़की में से बाहर फेंक दिए। दो मजिला से जब फ्रेम जमीन पर गिरे और काच टूटन की आवाज आई तो माधो को ऐसा मालूम हुआ कि उसके अंदर कोई चीज टूट गई है। बड़ी मुश्किल से उसने हसकर इतना कहा, अच्छा किया। मुझे भी यह फोटो पसंद नहीं था।'

धीरे धीरे सुगंधी माधो के पास आई और कहने लगी तुम्हें यह फोटो पसंद नहीं था पर मैं पूछती हूँ, तुम्हें है ऐसी कौन सी चीज, जो किसीकी पसंद आ सकती है—यह तरी पक्कीडे सी नाक, यह तरावाना भरा माथा, ये तरे भूजे हुए नथुने ये तरे मुड़े हुए कान, यह तरा मुह की बास यह तर बदन का मैल। तुम्हें अपना फोटो पसंद नहीं था। ऊह! पसंद क्या होता, तेरे ऐव जो छिपा रखे थे उसने आजकल जमाना ही ऐसा है जो छेप छिपाए वही बुरा

माधो पीछे हटता गया। आखिर जब वह दीवार के साथ लग गया तो उसने अपनी आवाज में जोर पैदा करके कहा 'दस सुगंधी, मुझे ऐसा दिखाइ देता है कि तूने फिर स अपना धंधा शुरू कर दिया है अब तुम्हें आतिरी बार कहता हूँ

सुगंधी ने इससे आगे माधो की नकल उतारते हुए कहना शुरू किया 'अगर तून फिर से अपना धंधा शुरू किया तो बस तरी मेरी टूट जाएगी। अगर तून फिर किसीको अपने यहाँ ठहराया तो चूटिया से पकड़कर तुम्हें बाहर निकाल दूंगा इस महीने का खर्च मैं पूना पहुँचत ही मनीआडर कर दूंगा हा क्या भाटा है इस खोली का?'

माधो चकरा गया।

सुगंधी ने कहना शुरू किया, 'मैं बताती हूँ, पंद्रह रुपया भाटा है इस खोली का और दस रुपया भाटा है भरा और जैसा तुम्हें मालूम है, अठ्ठाई रुपय दलाल के। बाकी रह साढे मात, रह न साढे मात? उन साढे सात रुपयिया में मैंने ऐसी चीज देने का वचन दिया था जो मैं द ही नहीं सकती थी और तू ऐसी चीज लेन आया था, जो तू ले ही नहीं सकता था तेरा मेरा नाता ही क्या था? कुछ भी नहीं। बस, य दस रुपय तरे और मेरे बीच में बज रहे थे, सो हम दोनों ने मिलकर ऐसी बात

की कि तुम्हें मेरी जरूरत हुई और मुझे तेरी पहले तरे और मेरे बीच म दस रुपये बजत थे, आज पचास बज रहे हैं। तू भी उनका बजना सुन रहा है और मैं भी उनका बजना सुन रही हूँ यह तूने अपने वाला का क्या सत्यानाश कर रखा है ?'

यह कहकर सुगंधी ने माधो की टोपी उगली से एक तरफ उड़ा दी। यह हरकत माधो की बहुत घुरी लगी। उसने बड़े कड़े स्वर में कहा, 'सुगंधी !'

सुगंधी ने माधो की जेब में हाथ डालकर सूया और जमीन पर फेंक दिया, ये चिथड़े, ये चिथिया उफ ! कितनी घुरी घाम आती है, उठाके बाहर फेंक डालो !'

माधो बितलाया, 'सुगंधी !'

सुगंधी ने तब लहजे में कहा, 'सुगंधी के बच्चे, तू याया किमलिए है यहा ? तेरी मा रहती है इस जगह, जो तुम्हें पचास रुपये देगी ? या तू कोई एमा बड़ा मद्धर जवान है जो मैं तुम्हपर आशिक हो गई हूँ ? कुत्ते, बमीन ! मुम्हपर रोव गाठता है ! मैं तेरी तबल हूँ क्या ? भिन्नमग, तू अपने आपका समझ क्या बठा है ? मैं पूछती हूँ तू है कौन ? चोर या गठकतरा ? इस समय तू मेरे मकान में क्या करने आया है ?

बुनाऊ पुलिस को ? पून में तुम्हपर बस हो या न हा यहा तो तुम्ह पर एक केस लडा कर दू

माधो सन्न गया। दब लहजे में सिर्फ इतना कह सका सुगंधी, तुम्हें क्या हो गया है ?

तेरी मा का सिर तू होता कौन है मुम्हने एमे सवाल करने वाला ? भाग यहा से, नहीं तो ' सुगंधी की ऊंची आवाज सुनकर उसका लाज-मारा कुत्ता, जो भूखी हुई चप्पला पर मुह रखे सो रहा था, हडबडा कर उठा और माधो की तरफ मुह उठाकर भूकने लगा। कुत्ते के भूकने के साथ ही सुगंधी जोर जोर से हसन लगी।

माधो डर गया। गिरी हुई टोपी उठान के लिए वह झुका तो सुगंधी की गरज मुनाई दी, 'खबरदार पड़ी रहने द वही तू जा, तेरे पूना पट्टते ही मैं इसका मनीआहर कर दूंगी।' यह कहकर वह जोर से हसी और

हसती-हसती बेंत की कुर्सी पर बैठ गई। उसके खाज मारे कुत्ते ने मूक भक्-
 कर माधो की कमरे से बाहर निकाल दिया। उस सीढ़िया उतार जब कुत्ता
 अपनी रुण्डमुण्ड दुम हिलाता सुग धी के पास आया और उसके कदमों के
 पाम बैठकर कान फड़फड़ान लगा तो सुग धी चौंकी। उसने अपने चारों
 ओर एक भयानक सनाटा देखा—ऐसा सनाटा, जो उसने पहल कभी न
 देखा था। उसे ऐसा लगा कि हर चीज खाली है। जैसे मुसाफिरों से लदी
 हुई रेलगाड़ी सब स्टेशन पर मुसाफिर उतारकर अब तोह के शेड में
 बिलकुल अकेली खड़ी है। यह खालीपन, जो अचानक सुग धी के अंदर
 पैदा हो गया था, उस बहुत तकलीफ दे रहा था। उसने काफी देर तक
 उस गूँथ को भरने का प्रयास किया लेकिन व्यर्थ। वह एक ही समय में
 अनगिनत विचार अपने दिमाग में ठूसती थी, पर एकदम छलनी का सा
 हिसाब था। इधर दिमाग को भरती थी, उधर वह खाली हो जाता था।

बड़ी देर तक वह बेंत की कुर्सी पर बैठी रही। सोच विचार के बाद
 जब उसको अपना मन बहलाने का कोई तरीका न सूझा तो उसने अपने
 खाज मार कुत्ते को गोद में उठाया और सागवान के चौड़े पत्तों पर उस
 बगल में लिटाकर सो गई।

ममद भाई

फारस रोड स आप उस आर भीतर गली में चले जाइए जो सफेद गली कहाती हु तो उसके अन्तिम सिरे पर आपको कुछ होटल मिलेंगे । यो तो बम्बई में कम्प कदम पर होटल और रेस्टोरा होते हैं लेकिन ये रेस्टोरा इसलिए बहुत न्लिचस्प और अनूठे है क्योंकि ये उस इलाने में हैं जहा भान भात की वेश्याए बसती हैं ।

एक युग बीत चुका है । बस, आप यही समझिए कि बीस वष के लग-भग जब इन रेस्टोराओ में मैं चाय पीया करता था और खाना खाया करता था । सफेद गली से आगे निकलकर 'प्ले हाउस' आता है । उधर दिन भर शोर शराबा रहता है । सिनेमा के शौ दिन-भर चलते रहते थे । चम्पिया होती थी । सिनेमा घर शायद चार थे । उनके बाहर बड़े विविध ढंग से सिनेमा के कमचारी घटिया बजा बजाकर लोगो को निमन्त्रण देते थे—'आओ, आओ,—दो आन में—फस्ट क्लास खेल दो आन में ।'

फभी-फभी ये घटिया बजाने वाले जबदस्ती लोगो को भीतर ढकेल देते थे—बाहर कुर्सियो पर चम्पी कराने वाले बैठे होते थे जिनकी खोपडियो की मरम्मत बड़े वज्ञानिक ढंग से की जाती थी । मालिश अच्छी चीज है लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि बम्बई के रहने वाले इसपर इतने मोहित क्यों है । दिन को और रात को हर समय उन्हें तेल मालिश की आवश्यकता अनुभव होती है । आप यदि चाह तो रात के तीन बजे बड़ी घामानी से तेल मालिशमा' बुलवा सकते हैं । या भी सारी रात, चाहे आप बम्बई के किसी कौन में हो, आप अवश्य ही यह आवाज सुनते रहेंगे—पी—पी—पी ।'

मह 'पी' चम्पी का संक्षिप्त रूप है ।

फारस रोड या तो एक सड़क का नाम है लेकिन वास्तव में यह उस कान्हे का नाम है जहा वेश्याए रहती हैं । यह बहुत बड़ा इलाका है । इसमें कई गलिया हैं, जिनके विभिन्न नाम हैं लेकिन सुविधास्वरूप

इसकी हर गली को फारस रोड या सफेद गली कहा जाता है। इसमें गल लगी हुई सैकड़ों दुकानें हैं, जिनमें छोटी बड़ी आयु और अच्छे बुरे रंग की स्त्रियाँ अपना शरीर बेचती हैं। विभिन्न दामों पर आठ आने से आठ रुपये तक, आठ रुपये से आठ सौ रुपये तक—हर दाम की स्त्री आपका इस इलाके में मिल सकती है।

यहूदी, पंजाबी, मराठी, काश्मीरी, गुजराती, बंगाली, एंग्लो इंडियन, फ्रांसीसी, चीनी, जापानी अर्थात् हर प्रकार की स्त्री आपको यहां मिल सकती है—य स्त्रियाँ कभी होती हैं—भ्रमा कीजिए, इस समय मैं आप सुभ्रम कुछ न पूछिए—बस स्त्रियाँ होती हैं—और उनको ग्राहक मिल ही जाते हैं।

इस इलाके में बहुत से चीनी भी आवाज़ हैं। मालूम नहीं क्या कारोबार करते हैं लेकिन रहते इसी इलाके में हैं। कुछ एक तो रम्टारा चलाते हैं जिनके बाहर बोर्डों पर ऊपर नीचे कीड़े मकौड़े की शक्लें कुछ लिखा होता है—मालूम नहीं क्या।

इस इलाके में हर विजनेस और हर जाति के लोग आवाज़ हैं। एक गली है जिसका नाम अरब लेन है। वहां के लोग उसे अरब गली कहते हैं। उन दिनों, जिन दिनों मैं मैं बात कर रहा हूँ इस गली में लगभग बीस पच्चीस अरब रहते थे जो स्वयं को मोतियों के व्यापारी कहते थे बाकी आबादी पंजाबिया और रामपुरियों की थी।

इस गली में मुझे एक कमरा मिल गया था जिसमें कभी सूरज का प्रकाश न आ पाता था। हर समय विजली का बल्ब जलता रहता था। इसका बिराया साढ़े नौ रुपये मासिक था।

आप यदि कभी बम्बई में नहीं रहे तो शायद आप मुश्किल ही मैं विश्वास करेंगे कि वहां किसीको किसी दरमर से सरोकार नहीं होता। यदि आप अपनी खोली में मर रहे हैं तो आपको कोई नहीं पूछेगा। आपके पड़ोस में हत्या हो जाय क्या मजाल जो आपको उसकी खबर हो जाय—लेकिन वहां अरब गली में केवल एक व्यक्ति ऐसा था जिसे अड़स पड़ोस के हर व्यक्ति से दिलचस्पी थी—और उसका नाम ममद भाई था।

ममद भाई रामपुर का रहा वाला था। कमाल का फकीर गतके

और वनोट की कता में निपुण—मैं जब घरव गली में आया तो अक्मर होटनो में उमका नाम मुनने में आया लेकिन बहुत दिनों तक उससे मुलाकात न हो सकी ।

मैं सुबह-मवेरे अपनी सोनी से निकल जाता था और बहुत रात गए लौटता था—लेकिन ममद भाई से मिलने की बड़ी उत्सुकता थी, क्योंकि उनके सम्बन्ध में घरव गली में बहुत सी कहानियाँ प्रचलित थीं—कि बीस गन्धीस आदमी यदि लाठियों से सँस होकर उसपर टूट पड़ें, तो भी वे उसका बाल तक बाका नहीं कर सकते । एक मिनट के अन्दर अन्दर वह उन सबकी चित कर देता है और यह कि उम जैसा छुरीमार सार सम्बन्ध में नहीं मिल सकता । या छुरी मारता है कि जिसके लगती है उसे पता भी नहीं चलता—सौ कदम तक बिना कुछ अनुभव किए चलता रहता है और अन्त में एकदम ढेर हो जाता है । लोग कहते हैं कि यह उसके हाथ की सफाई है ।

उसके हाथ की यह सफाई देखने की मुझे उत्सुकता नहीं थी लेकिन यो उनके बारे में अनेक बातें मुन-मुनकर मेरे मन में यह इच्छा अवश्य उत्पन्न हो चुकी थी कि मैं उसे दूँ । उससे बानें न करूँ लेकिन निश्चय से देख लूँ कि क्या है—इस पूरे इलाके पर उमका व्यक्तित्व छाया हुआ था । वह बहुत बड़ा दादा अर्थात् बढमाश था लेकिन इसके बावजूद लोग कहते थे कि उसने किसीकी बहू बेटी की ओर कभी आँख उठाकर नहीं देखा । 'लंगोट का बहुत पक्का है'—'गरीबा के दुख दद का साझी-दार है ।' केवल घरव गली ही नहीं, आस पास जितनी गलियाँ थी उनमें जितनी दीन, दरिद्र स्त्रियाँ थी, सब ममद भाई को जानती थी क्योंकि वह प्रायः उनकी आर्थिक सहायता करता रहता था । लेकिन वह स्वयं कभी उनके पास नहीं जाता था, अपने किसी कम आयु के शिष्य को भेज देता था और उनका कुशल पूछ लेता था ।

मुझे मालूम नहीं कि उसकी आय के क्या साधन थे, अच्छा खाता था, अच्छा पहनाता था । उसके पास एक छोटा-सा तागा था जिसमें बड़ा स्वस्थ टट्टू जुता होता था । वह स्वयं ही उसे चलाना था । साथ दो तीन शिष्य होते थे । भिड़ी बाजार का एक चक्कर लगाकर या किसी दरगाह में

होकर वह उस तागे पर वापस अरब गली आ जाता था और किसी ईरानी के होटल में बैठकर अपने गिप्या के साथ गतके और वनोट की बातों में निमग्न हो जाता था।

मरी खोली के साथ ही एक और खोली थी जिमम मारवाड का एक मुसलमान नतक रहता था। उसने मुझे ममद भाई की सैकड़ा कहानियाँ सुनाई—उसने मुझे बताया कि ममद भाई लाख रुपये का आदमी है। एक बार उसे जेजा हो गया था। ममद भाई को पता चला तो उसने फारस रोड के सबके साथ डाक्टर उसकी खाली में इकट्ठे कर दिये और उनसे कहा, 'दखो, अगर आशिक हुसैन को कुछ हो गया तो मैं तुम सब का मफाया कर दूंगा।' आशिक हुसैन ने बड़े आदरपूर्ण स्वर में मुझसे कहा—'मटो साहन! ममद भाई फरिश्ता है—फरिश्ता। जब उसने डाक्टरों को धमकी दी तो वे सब वापस लगे। ऐसा लगकर इलाज किया कि मैं दो ही दिन में ठीक-ठाक हो गया।

ममद भाई के सम्बन्ध में अरब गली के गंद और बेहूदा रेस्टोरांता में मैं और भी बहुत कुछ सुन चुका था। एक व्यक्ति ने जो शायद उसका गिप्य था और स्वयं को बहुत बड़ा फकीर समझता था, मुझसे कहा था कि ममद भाई अपने नफे में एक ऐसा आबदार खजर हमेशा उडसकर रखता है जो उस्तरे की तरह शैव भी कर सकता है—और यह खजर म्यात में नहीं होता—सुला रहता है—बिल्कुल नया और वह भी उसके पेट के साथ। उसकी नोक इतनी तीखी है कि यदि बातें करते हुए भुक्त हुए उससे जरा सी गलती हो जाय तो ममद भाई का एकदम काम तमाम हो जाय।

प्रत्यक्ष है कि उसको देखने और उसमें मिलने की उत्सुकता दिन प्रतिदिन मेरे मन में बढ़ती गई। मालूम नहीं, मैं अपनी कल्पना में उसके चेहर मोहर का क्या रेखाचित्र बनाया था। जो हो, इतने समय के बाद मुझे बस इतना स्मरण है कि मैं एक देखावट व्यक्ति को अपनी मानसिक आत्मा के सामने देखता था जिसका नाम ममद भाई था—उस प्रकार का व्यक्ति जो हरक्युलिस साइक्लिस्ट पर विचारण स्वरूप दिया जाता है।

मैं सुबह सवेरे अपने काम पर निकल जाता था और रात के दस बजे

वे लगभग खान आदि से निरटकर वापस आकर तुरंत सो जाता था। इस बीच मैं मदद भाई से मुलाकात हो सकती थी। मैंने कई बार सोचा कि काम पर न जाऊं और सारा दिन अरज गली में गुजार कर मदद भाई को देखने की कोशिश करूँ, लेकिन अफसोस कि मैं ऐसा न कर सका, इसलिए कि मेरी नौकरी बड़ी बहाना ढग की थी।

मदद भाई से मुलाकात कराने की सोच ही रहा था कि अचानक इफ्लुएन्जा ने मुझ पर घार आक्रमण किया—ऐसा आक्रमण कि मैं बीछला गया। मुझे भय था कि यह बिग-बग कहीं निमोनिया में परिवर्तित न हो जाय क्योंकि अरज गली के एक डाक्टर ने ऐसा ही कहा था। मैं बिल्कुल अकेला था। मेरे साथ जो एक व्यक्ति रहता था, उस पूना में एक नौकरी मिल गई थी, इसलिए वह भी पाम न था। बुखार में फुका जा रहा था, प्यास इतनी लगती थी कि जो पानी सौली में रखा था मेरे लिए काफी नहीं था, और मित्र सम्बन्धी कोई पास नहीं था जो मेरी देख रेख करता। मैं बहुत 'सहन जान' हूँ, दम रख की मुझे प्रायः आवश्यकता नहीं हुआ करती, लेकिन न जाने यह कैसा बुखार था, इफ्लुएन्जा था, मलेरिया था या कुछ और था, लेकिन उसने मेरी रीढ़ की हड्डी तोड़ दी। मैं बिल-विलान लगा। मेरे मन में पहली बार इच्छा उत्पन्न हुई कि मेरे पास कोई हो जो मुझे ढारस दे। ढारस न दे तो कम से कम क्षण भर के लिए अपनी शकल दिखाकर चला जाय, ताकि मुझे इसीसे ढारस हो जाय कि कोई मुझे पूछने वाला भी है।

दो दिन तक मैं बिस्तर पर पड़ा कराहता रहा, लेकिन कोई न आया—माता भी कौन? मेरी जान पहचान के आदमी ही किनने थे—दो, तीन या चार—और वे इतनी दूर रहते थे कि उन्हें मेरी मृत्यु का भी पता न चल सकता था। और फिर वहाँ बम्बई में कौन किसको पूछता है—कोई मर या जिए उनकी बला से।

मेरी बहुत बुरी हालत थी। आशिक हुसैन नतक की पत्नी बीमार थी, इसलिए वह अपने घर जा चुका था। यह मुझे होटल के छोकरे न बताया था। अब मैं किसका बुलाता?

बड़ी निढाल स्थिति में था और सोच रहा था कि स्वयं नीचे उतरूँ

और किसी डाक्टर के पास जाऊ कि किसीन दरवाजा खटखटाया। मैं सोचा कि होटल का छोरवा, जिस बम्बई की भाषा में 'बाहिर बाता' कहते हैं होगा। बड़े मरियल स्वर में कहा, 'आ जाओ।'।

दरवाजा खुला और एक छरहर उठन का व्यक्ति न, जिसकी मूर्छे मुझे सबसे पहले दिखाई दी भीतर प्रवेश किया।

उसकी मूर्छे ही में कुछ थी। मेरा मतलब यह है कि यदि उसकी मूर्छे न होती तो बहुत सम्भव है कि वह कुछ भी न होता। ऐसा मालूम होता था कि उसकी मूर्छा न ही उसके पूरे अस्तित्व की जीवन प्रदान कर रहा है।

वह भीतर आया और अपनी विलियम बेमर एसी मूर्छा का एक उगली से ठीक भरत हुए मेरी साट्टा पाम गाया। उसके पीछे तीन चार व्यक्ति थे। विभिन्न मुद्राकृतियां थी उनकी—मैं बहुत हैरान था कि यकीन है और मेरे पास क्या आए हूँ ?

विलियम बेमर एसी मूर्छा और छरहरे बढ़ा बाल व्यक्ति न मुझमें बड़े घोरमल स्वर में कहा 'विन्टो साहब आपन हृद कर दी, साला मुझे इतना क्या न दी ?

मटो का विन्टो बन जाना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी। उसके अतिरिक्त मैं इस मूढ़ में भी नहीं था कि मैं उसका सुधार करता। मैं अपने क्षीण स्वर में उसकी मूर्छा से केवल इतना कहा—'आप कौन हैं ?'

उसने सक्षिप्त सा उत्तर दिया—'ममद भाई।'।

मैं उठकर बैठ गया। ममद भाई तो तो आप ममद भाई हैं—ममद भाई दादा।

मैं यह तो कह लिया लेकिन तुरन्त मुझे अपने बड़ेपन का अनुभव हुआ और मैं रुक गया। ममद भाई ने छाटी उगली से अपनी मूर्छा के सरत बाल जरा ऊपर किए और मुस्कराया—'हा विन्टो भाई—ममद भाई—यहा का ममद भाई—मुझे बाहिर बाते से मालूम हुआ कि तुम बीमार हो—साला यह भी कोई बात है कि तुमने मुझे खबर न की। ममद भाई का मस्तक फिर जाता है जब कोई ऐसी बात होती है।'।

मैं उत्तर में कुछ करने वाला था कि उसने अपना साथिया मे से एक स सम्बोधित होकर कहा, 'अरे क्या नाम है तारा जा भागकर जा, और क्या नाम है उस डाक्टर का ममद भग ना, उससे कह कि ममद भाई तुम्हें बुलाता है एकदम जल्दी आ एकदम सब काम छोड़ दे और जल्दी आ और देख, सालों से कहना सब दबाए लेता आए ।'

ममद भाई ने जिसकी यह आदेश दिया था, वह एकदम चला गया । मैं सोच रहा था—मैं उसको देख रहा था—वे समस्त कहानिया मेरे मस्तिष्क में फिर रही थी जो मैं उसके सम्बन्ध में लोगो से सुन चुका था, लेकिन गडुमडु रूप में क्योंकि बार बार उसकी ओर देखने का कारण उसकी मूर्छें सब पर छा जाती थी—बड़ी भयानक लेकिन बड़ी सुंदर मूर्छें थी । लेकिन ऐसा लगता था कि उस बेहरे को, जिसके नयन नक्श बड़े कामता हैं केवल भयानक बनाने के लिए यह मूर्छें रखी गई है । मैं सोचा कि वास्तव में यह व्यक्ति उतना भयानक नहीं है जितना कि उसने स्वयं को बना रखा है ।

दाली में कोई पुर्सी नहीं थी । मैं ममद भाई से कहा कि वह मेरी बारपाद पर बैठ जाए लेकिन उसने इन्कार कर दिया और बड़े स्वर से कहा, 'ठीक है—हम रुके रहेंगे ।'

फिर उसने टहलते हुए—हालांकि उस खोली में इस ऐश्वर्य की कोई गुंजाइश नहीं थी—कसों का दामन उठाकर पायजामे के नफे से एक खजर निकाला—मैं समझा चांदी का है । इस प्रकार चमक रहा था कि मैं आपस ध्या करू । यह खजर निकालकर पहले उसने अपनी कलाई पर फेरा जो बाल उसकी पकड़ में आ गए, सब साफ हो गए । इसपर वह स तुष्ट ना हो अपना नाखून तराशने लगा ।

उसके आगमन ही से मेरा खुमार कई डिग्री कम हो गया था । अब मैं कुछ होश में आकर कहा—'ममद भाई ! यह छुरी तुम इस तरह नफे में यानी बिल्कुल अपने पेट के साथ रखत हो—इतनी तेज है, क्या तुम्हें डर नहीं लगता ?'

ममद ने खजर से अपना नाखून की एक फाक बड़ी सफाई से उठाने हुए उत्तर दिया 'किटो भाई ! यह छुरी दूसरा के लिए है । यह अच्छी

तरह जानती है। साली अपनी चीज है, मुझे कैसे नुकसान पहुँचाएगी।'

छुरी सजा सम्बन्ध उसने स्थापित किया था, वह कुछ ऐसा ही था जम कोई माया वाप कह कि यह मेरा बेटा है या बटी है, इसका मुझपर कैसे हाथ उठ सकता है ?

डाक्टर आ गया—उसका नाम पिंटो था और मैं विम्टा। उसने ममद भाई को अपने निश्चयनद्वारा भस्म किया और पूछा कि मामला क्या है।

जो मामला था वह ममद भाई ने बताया—सक्षिप्त, लेकिन कड़े शब्दों में, जिनमें आना थी कि देखा, अगर तुमने विम्टो भाई का इलाज अच्छी तरह न किया तो तुम्हारी खर नहीं।

डाक्टर पिंटो ने आनाकारी बन्ध की तरह अपना काम किया। भरी नब्ब देखी। स्टेथेस्कोप लगाकर मेरी छाती और पीठ का निरीक्षण किया। हृन्ड प्रेशर देखा। मुझमें मेरी बीमारी का विवरण पूछा। उसने बाद उसने मुझसे नहीं, ममद भाई से कहा 'कोई फिक्र की बात नहीं—मले रिया है—मैं इन्जेक्शन लगा देता हूँ।'

ममद भाई मुझमें कुछ दूर खड़ा था। उसने डाक्टर की बात सुनी और खजर से अपनी कलाई के बाल उठाते हुए कहा 'मैं कुछ नहीं जानता—इन्जेक्शन देना है तो द दो, लेकिन अगर इस कुछ हा गया तो '

डाक्टर पिंटो काप उठा, 'नहीं ममद भाई सब ठीक हो जाएगा।'

ममद भाई ने खजर अपने नेफे में उबस लिया। तो ठीक है।

तो मैं इन्जेक्शन लगाता हूँ,' डाक्टर ने अपना बैग खोला और मिरिज निकाली।

ठहरो ठहरो।'

ममद भाई धवरा गया था। डाक्टर ने सुरत मिरिज वग में वापस रख ली और भिमयाते हुए ममद भाई से बोला, क्या ?'

'बस—मैं किसीके सुई लगत नहीं देख सकता,' यह कहकर वह खोली से बाहर चला गया। उसके साथ ही उसके साथी भी चले गए।

डाक्टर पिंटो ने मुझे कुनीन का इन्जेक्शन लगाया, बड़ी सावधानी से अथवा मलरिया का यह इन्जेक्शन बड़ा कष्टदायक होता है। जब

वह अपना काम कर चुका ती मैन उससे उसकी फीम पूछी । उसने कहा—
 'दस रुपये ।' मैं तबिए के नीचे स अपना बटुआ निकाल रहा था कि ममद
 भाई भीतर आ गया । उस समय मैं दस रुपये का नोट डाक्टर पिंटो को
 द रहा था ।

ममद भाई ने थुड़ नजग से मुझे और डाक्टर को दत्ता और गरज-
 कर कहा, 'यह क्या हो रहा है ?'

मैन कहा, 'फीम द रहा हू ।'

ममद भाई पिंटो से सम्बाधित हुआ, 'साले ! यह फीम कैसी ल रहा
 हो ?'

डाक्टर पिंटो बोखला गया, 'मैं क्या ले रहा हू—ये दे रहा थे ।'

'भाला, हमसे फीस लेते हो—वापस करो यह नोट,' ममद भाई के
 स्वर में उसके खजर जैसी तेजी थी ।

डाक्टर पिंटो ने मुझे नोट वापस कर दिया और बँग बंद करके
 ममद भाई से लमा भागते हुए चला गया ।

ममद भाई ने एव उगली से अपनी धाटा जैसी मूछा को ताव दिया
 और मुस्कराया, पिंटो भाई, यह भी कोई बात है कि इस इलाके का
 डाक्टर तुमसे फीस ले तुम्हारी बसम अपनी मूछें मुडवा देता, अगर इस
 साले ने फीस ली होती—यहा सब तुम्हारा गुलाम हैं ।'

श्चित्त विलम्ब के बाद मैंने उससे पूछा, 'ममद भाई ! तुम मुझे कैसे
 जानते हो ?'

ममद भाई की मूछें धरधराईं, 'ममद भाई जिसे नहीं जाता—हम
 यहा के बादशाह हैं प्यार—अपनी रियाया का लयाल रखत है । हमारी
 सी० धाई० बी० है । वह हमे बताती रहती है, कौन आया है, कौन गया
 है, कौन अच्छी हालत में है कौन बुरी हालत में है तुम्हारे बारे में हम
 सब कुछ जानते हैं ।'

मैंने मा ही मजाक के तौर पर कहा, 'क्या जानते हैं आप ?'

'भाला, हम क्या नहीं जानते—तुम धमृतसर का रहने वाला है—
 काश्मीरी है, यहा असबारा में काम करता है । तुमो बिस्मिल्ला होटल के
 दस रुपये देने हैं, इसलिए तुम उधर से नहीं गुजरते । भिण्डी बाजार में

एक पान वाला तुम्हारी जान को रोता है। उससे तुम बीस रुपये दस आने के मिगरट लेकर फूक चुके हो।’

मैं लज्जावन्त पानी पानी हो गया।

ममद भाई ने अपनी कटीली मूछो पर एक उगली फेरी और मुक्करा-कर कहा, ‘विम्टो भाई, कुछ फिक्र न करो। तुम्हारे सब बज चुका दिए गए हैं, अब तुम ग्यारह सिर से मामला शुरू कर सकते हो। मैं इन साला से कह दिया है कि खपरदार, अगर विम्टो भाई को तुमने तग किया और ममद भाई तुमसे कहता है कि इशाअल्ला कोई तुम्हें तग नहीं करेगा।’

मेरी ममझ में तहा आता था कि उससे क्या कहूँ। बीमारी था, कुनीन का टीका लग चुका था जिसके कारण बाना में शाय शाय हो रही थी। इसके अतिरिक्त मैं उसके उपकारों तले इतना दब चुका था कि यदि कोई मुझे उस बोझ के नीचे से निवालन का प्रयत्न करता तो उस बड़ी महत्त करनी पड़ती। मैं केवल इतना कह सका, ममद भाई, खुदा तुम्हें जिंदा रखे। तुम खुश रहो।।’

ममद भाई ने अपनी मूछो के बाल जरा ऊपर किए और कुछ कह बिना चला गया।

डाक्टर पिंटो प्रतिदिन सुबह शाम आता रहा। मैं उससे कई बार फीस का जिक्र किया लेकिन उसने बाना को हाथ लगाकर कहा, ‘नहीं, मिस्टर विम्टो, ममद भाई का मामला है, मैं एक धेला भी नहीं ले सकता।’

मैं सोचा, यह ममद भाई कोई बहुत बड़ा आदमी है—अथात भया नष्ट आदमी, जिससे डाक्टर पिंटो, जो बड़ा ओछा व्यक्ति है, डरता है और मुझसे फीस लेने का साहस नहीं करता हालांकि वह अपनी जेब से इज्जतना का रुपया खर्च कर रहा है।

बीमारी के दिनों में ममद भाई हर रोज भर रहा आता रहा—कभी सुबह कभी शाम, अपने छ सात सिप्या के साथ और मुझे हर सभव ढंग से डारस देता था कि मामूली मलेरिया है। तुम डाक्टर पिंटो के इलाज से इशाअल्ला बहुत जल्द ठीक ठाक हो जाओगे।’

पाँच रोज के बाद मैं ठीक ठाक हो गया। इस बीच में मैं ममद भाई

का प्रत्येक नयन-नवश अच्छी तरह देख चुका था ।

जैसा कि मैं इससे पहले कह चुका हूँ, वह छरहरे बदन का व्यक्ति था । आयु यही पच्चीस-तीस के बीच होगी, पतली पतली बाहें, टांगें भी ऐसी ही थीं । हाथ बला के फुर्तिले थे । उनसे जब वह छोटा सा तेज-धार चाकू किमी दशु पर फेंकता था तो वह सीधा उसके दिल में खुबता था—यह मुझे अरब गली के लोगो ने बताया था ।

उसके सम्बन्ध में अनगिनत बातें प्रसिद्ध थीं । उसने किसीको कत्ल किया था यह तो मैं नहीं कह सकता, हाँ, छुरीमार वह कमाल का था, बनोट और गतके में प्रवीण । सब कहते थे कि वह सबड़ो हत्याएँ कर चुका है लेकिन मैं यह अब भी मानने को तैयार नहीं ।

लेकिन जब मैं उसके खजर के बारे में सोचता हूँ तो मेरे तन बदन में झुरझुरी सी दौड़ जाती है । यह भयानक हथियार वह क्यों हर समय अपनी सलवार के नफे में उल्टे रहता है ?

मैं जब अच्छा हो गया तो एक दिन अरब गली के एक थड क्लास चीनी रस्टोरा में मेरी उससे मुलाकात हुई—वह अपना वही खजर निकालकर अपने नामून काट रहा था—मैं उससे पूछा—‘ममद भाई ! आजकल बद्रूक पिस्तौल का जमाना है—तुम यह खजर क्या गिना फिरत हो ?’

ममद भाई ने अपनी कटीली मूछों पर एक जगती फेरी और कहा—
विम्टो भाई बद्रूक पिस्तौल में कोई मजा नहीं—उह कोई बच्चा नी चला सकता है । घोडा दबाया और ठस इसमें क्या मजा है ? यह चीज यह खजर यह छुरी यह चाकू मजा आता है ना, खुदा की कसम—यह वह है तुम क्या कहा करत हो ? हाँ आट इसमें आट है मेरी जान ! जिस चाकू या छुरी चलाने का आट न आता हो, वह एकदम कडम है—पिस्तौल क्या है, सिलौना है जो नुकसान पहुँचा सकता है, पर इसमें क्या लुफ आता है—कुछ भी नहीं—तुम यह खजर देखो—इसकी तेज धार देखो ।’ यह कहते हुए उसने अगूठे पर थूक लगाया और अगूठा उसकी धार पर फेरा, इससे धमाका नहीं होता—बस, यो पेट के अंदर दाखिल कर दो—इस सफाई से कि किसी माले को मालूम भी न हो

बहुत पिस्तौल सब बकबाग है।

ममद भाई से अब मेरी हर रोज किसी-न किसी समय मुलाकात होती थी। मैं उसका आभारी था लेकिन जब मैं इसका जिक्र करता था तो वह नाराज हो जाता था—कहता था कि 'मैं तुमपर कोई एहसान नहीं किया यह तो मेरा फज था।'।

जब मैं कुछ खोज पड़ताल की तो मुझे मालूम हुआ कि वह फारम रोड के इलाके का एक प्रकार का शामक था—एग्रा दागक जो प्रत्येक व्यक्ति की देख रख करता था। कोई बीमार हो किसीका कोई फट्ट हो, ममद भाई उसके पाम पहुँच जाता था और यह उसकी मा० दाई० डी० का काम था जो उस हर बात सूचित रखती थी।

वह 'दादा' अर्थात् एक सतरनार गुडा—सबिन् मेरी समझ में अब भी नहीं आता कि वह किस रूप स गुडा था। मैं तो कभी उसमें कोई गुडापन नहीं देखा बस एक उसकी मूँछें जरूर ऐसी थी जो उस भयावह बनाए रखती थी। लेकिन उस उनसे प्यार था। यह उनका कुछ इस प्रकार पालन करता था जैसा कोई अपन बच्चे की कर।

उसकी मूँछों का एक एक बात सदा था—मुझे किसी न बताया था कि ममद भाई हर रोज अपनी मूँछों को बासाईं तिलाता है। जब गाना खाता है तो गोरवा भरी उगलियां न अपनी मूँछें जरूर मरोड़ता है क्या कि, घुजुगों के बघनानुमार, वो वालो न गबिन आती है।

मैं इससे पहले शायद कई बार यह चुबा हूँ कि उसकी मूँछें बड़ी भयानक थी—वास्तव में उन मूँछों का नाम ही ममद भाई था—या उस गजर का जो उसकी तंग घेरे की सलवार के नेपे में हर समय मौजूद रहता था—मुझे इन दोनों चीजों से डर लगता था, न जान क्या।

ममद भाई यों तो उस इलाके का बहुत बड़ा दाग था लेकिन वह सबका दुर्भचिन्सक था। मानूँ नहीं कि उसकी आय के क्या साधन थे लेकिन त्रिम किंगीकी सहायता की आवश्यकता होती थी वह अवश्य उसकी भयायना करता था। इस इलाके की समस्त ब्याएँ उन पर गुर माली थीं। चूँकि वह एक माता हुआ गुडा था इसलिए आवश्यक था कि उगका सम्बन्ध वहाँ की किंगी के साथ होना, सबिन् मुझे पता पता

किया कि उसे अपने जीवन का सबसे बड़ा धक्का पहुँचा है। उसकी मूर्छे जो भयावह रूप से ऊपर का उठी हुई थी, अब कुछ झुक सी गई थी।

चीनी के होटल में उससे मेरी मुलाकात हुई। उसके कपड़े, जो हमेशा उजले होते थे, मैले थे। मैं उससे कत्ल के सम्बन्ध में कोई बात नहीं ले कि उसने स्वयं ही कहा, 'विम्टो साहब'। मुझे इस बात का अफ़मोस है कि साला देर से मरा—छुरी मारने में मुझसे चूक हो गई हाथ टड़ा पड़ा—लेकिन वह भी उस साले का बसूर था—एकदम मुड गया—इस वजह से सारा मामला बडम हो गया—लेकिन मर गया—जरा तकलीफ़ के साथ, जिसका मुझे अफ़मोस है।'।

आप स्वयं सोच सकते हैं कि यह सुनकर मेरी प्रतिक्रिया क्या हुई होगी। अर्थात् उसे यदि अफ़मोस था तो केवल इस बात का कि मरने वाले को जरा तकलीफ़ हुई थी।

मुकदमा चलना था—और ममद भाई उससे बहुत धरता था। उसने अपने जीवन में कभी बहचरी की शकल तक नहीं देखी थी। न जान उसने इससे पहले भी कत्ल किए थे या नहीं, लेकिन जहाँ तक मुझे पता है वह मजिस्ट्रेट, वकील और गवाह के बारे में कुछ नहीं जानता था, इस लिए कि इन लोगों में उसका कभी सरोकार नहीं पड़ा था।

वह बहुत चिन्तित था—पुलिस ने जब केस पेश करना चाहा और तारीख़ नियत हो गई तो ममद भाई बहुत परगान हो गया। अगलत में मजिस्ट्रेट के सामने कैसे हाजिर हुआ जाता है, इस बारे में उसे कुछ मालूम नहीं था। बार बार अपनी बटीली मूर्छों पर उगलिया फेरता था और मुझसे कहता था—विम्टो साहब! मैं मर जाऊँगा, पर बहचरी में नहीं जाऊँगा—साली मालूम नहीं कौसी जगह है?'।

अब गली में उसके कई मित्र थे। उन्होंने उस ढाढस बघाया कि मामला सही नहीं है। कोई गवाह मौजूद नहीं, एक केवल उसकी मूर्छे हैं जो मजिस्ट्रेट के दिल में उसके विरुद्ध कोई विरोधी भाव उत्पन्न कर सकती हैं।

जैसा कि मैं दूसरे पहलू में कह चुका हूँ, उसकी केवल मूर्छे ही थी जो उसको भयावह बनाती थी—यदि यह नहीं होती तो वह किसी पहलू में भी

‘दादा’ दिखाई न देता ।

उसने बहुत सोचा । उसकी अमानत थाने में ही हो गई थी, अब उसे कचहरी में पेश होना था । मजिस्ट्रेट से वह बहुत घबराता था । ईरानी के होटल में जब मेरी उसकी मुलाकात हुई तो मैंने महसूस किया कि वह बहुत परेशान है । उसे अपनी मूर्खों की बड़ी चिन्ता थी, वह सोचता था कि यदि मूर्खों के साथ वह कचहरी में पेश हुआ तो बहुत सम्भव है, उसको सजा हो जाए ।

आप समझते हैं कि यह कहानी है, लेकिन यह वास्तविकता है कि वह बहुत परेशान था । उसके समस्त शिष्य हीरान थे—इसलिए कि वह कभी हीरान परेशान नहीं हुआ था । उसे अपनी मूर्खों की चिन्ता थी क्यों कि उसके कुछ अभिन मित्रों ने उससे कहा था—‘ममद भाई ! कचहरी में जाना है तो इन मूर्खों के साथ कभी न जाना—मजिस्ट्रेट तुमको अदर कर देगा ।’

और वह सोचता था हर समय सोचता था कि उसकी मूर्खों ने उस आदमी को बर्तन किया है या उसने—लेकिन वह किसी परिणाम पर नहीं पहुँच पाता था । उसने अपना खजर, मालूम नहीं जो पहली बार लहू में डूबा था या इससे पहले कई बार डूब चुका था, अपने नेक में निशाना और होटल के बाहर गली में फेंक दिया ।

मैंने आश्चर्य से उससे पूछा ‘मदद भाई ! यह क्या ?’

‘कुछ नहीं बिम्बो भाई—बहुत धोड़ाला हो गया है—कचहरी में जाना है—यार दोस्त कहते हैं कि तुम्हारी मूर्खें देखकर वह जरूर तुमको सजा देगा—अब बोलो क्या करू ?’

मैं क्या बोल सकता था ? मैंने उसकी मूर्खों की ओर देखा जो सचमुच भयानक थी । मैंने उससे केवल इतना कहा, ‘मदद भाई बात तो ठीक है—तुम्हारी मूर्खें मजिस्ट्रेट के फॉर्मले पर जरूर असर डालेंगी—सच पूछो तो जो कुछ होगा, तुम्हारे खिलाफ नहीं, तुम्हारी मूर्खों के खिलाफ होगा ।’

‘तो मैं मुड़वा दूँ ?’ मदद भाई ने अपनी चहेती मूर्खों पर बड़े प्यार से उगली फेंकी ।

मैंने उससे पूछा, 'तुम्हारा क्या खयाल है ?'

मेरा खयाल जो कुछ भी है, वह मत पूछो—लेकिन यहाँ हर किसी का यही खयाल है कि मैं इन्हें मुड़वा दूँ—वह साला मजिस्ट्रेट मेहरवान हो जाएगा। तो मुड़वा दूँ बिम्टो भाई ?'

किंचित विलम्ब के बाद मैंने उससे कहा—'हाँ, अगर तुम मुनासिब समझते हो तो मुड़वा दो—कचहरों का मामला है और तुम्हारी मूर्छें सचमुच बड़ी भयानक हैं।'

दूसरे दिन ममद भाई ने अपनी मूर्छें—अपनी प्राणा स प्यारी मूर्छें—मुड़वा डाली क्योंकि उसकी इज्जत खतरे में थी, लेकिन केवल दूसरी के मशविरे पर।

मिस्टर एफ० एच० टेल की कचहरी में उसका मुकद्दमा पेश हुआ। ममद भाई मूर्छों के बिना पेश हुआ। मैं भी वहाँ मौजूद था। उसके खिलाफ कोई गवाह मौजूद नहीं था। लेकिन मजिस्ट्रेट साहब ने उसको गुंडा सिद्ध कर 'तडी पाड' अर्थात् प्रात छोड़ देने का दण्ड दे दिया। उसे केवल एक दिन मिला था जिसमें उसे अपना सब कुछ समेट बटोरकर बम्बई छोड़ देना था।

कचहरी से निकलकर उसने मुझसे कोई बात नहीं की। उसकी छोटी-बड़ी उगलिया बार बार ऊपर के छोठ की ओर बढ़ती थी लेकिन वहाँ एक बाल तक न था।

शाम की जब उसे बम्बई छोड़कर वहाँ और जाना था मेरी उसकी मुलाकात ईरानी के होटल में हुई। उसके दम-वीस गिण्ट आस पास की कुर्सियों पर बैठे चाय पी रहे थे। जब मैं उससे मिला तो उसने मुझसे कोई बात नहीं की। मूर्छों के बिना वह बहुत भद्र पुरुष दिखाई दे रहा था लेकिन मैंने महसूस किया कि वह बहुत दुखी है।

उसके पास कुर्सी पर बैठकर मैंने उससे कहा, 'क्या बात है ममद भाई ?'

उसने उत्तर में एक बहुत बड़ी गाली भगवान जान किसी की ओर कहा, 'साला अब ममद भाई ही नहीं रहा।'

मुझे मालूम था कि उसे प्रात छोड़ने का दण्ड दिया जा चुका है। मैंने

वहा, 'कोई बात नहीं ममद भाई—यहा नहीं तो किसी और जगह सही।'।

उसने समस्त जगहा को अनगिनत गालिया दी—'साला—अप्यन को यह गम नहीं—यहा रह या किसी और जगह रह—यह साला मूछें क्या मुडवाई।' फिर उसन उन लोगा को जिहने उसको मूछें मुडवाने का मगविरा दिया था, एरु करोड गालिया दी और वहा, 'साला अगर मुझे 'तडी पाड ही होना था तो मूछा क साथ क्यों न हुआ।'।

मुझे हसी आ गई—वह लाल भभूका हो गया—'साला तुम क्या आदमी है विम्टो—हम सब कहना है खुदा की कसम—फासा लगा देते पर यह बक्कूफी तो हमन खुद की आज तक किसीसे नहीं डरा था साला अपनी मूछा से डर गया।' यह कहकर उसन अपने मुह पर दोहत्तड मारा और चिल्लाकर बोला, 'ममद भाई, सानत है तुझ पर—साला—अपनी मूछा न डर गया—अब जा अपनी मा के

और उसकी आखा मे आसू आ गए जा उसकी मूछा मे खाली चेहरे पर कुछ विचित्र दिसाई देते थे।

